श्री वर्द्धमान जैन ज्ञान पीठ टेमूर्णि

प्रेरक संस्कृत विशारद मूनिश्री भगवतीलालजी म. सा. निर्मल

आधार स्थम्भ

१००१)श्रीमान् दानवीर सेठ वंकटलालजी विलास कुमारजी -टेमूर्णि

स्थम्भ

५००) श्रीमान् धर्म प्रेमी शा० रावतमल वनेचन्द एन्ड सन्स शिमोगा
५००) ,, धर्म प्रेमी शा० गुलाबचन्दजी जुगराजजी बांठिया भद्रावती

सम्माननीय सदस्य

३०१) शा. पुखराजजी चैनराजजी गादिया सीकारपुर
२०१) शा. पुखराजजी गुलावचन्दजी बांठिया भद्रावती
२०१) शा. मोहनलालजी मांगीलालजी सिंघवी शिमोगा
१०१) शा. मदनलालजी अमृतलालजी सुराणा सीकारपुर

॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

* प्राक्कथन *

(श्री स्वाध्यात्मक मार्ग राही)

जीवन को प्रशस्त मार्ग की ओर प्रवृत करने के लिए अर्हनदेव ने भिन्न २ मार्ग अंगित किये हैं, कोई सुगमपथ है तो कोई दुर्गम कोई साधारण परिश्रम से साध्य होजाता है तो कोई अति कठिन मार्ग से, तप उपवास अनशनादि पाथेय श्रम साध्य तो स्वाध्याय स्वलप श्रम साध्य, भगवंतकी द्वादशांग गणि पिटक रूप वचनो का स्वाध्याय चिन्तन मनन अनुपेक्ष्य द्वारा जीव को उर्ध्व गामिनी बनाना सफल साधक का प्रथम कर्तव्य है।

शास्त्र स्वाध्याय के प्रवेशार्थियों को प्रथम ही शिक्षा दी जाती थी कि .. ..

स्वाध्याय का प्रमाद

जीवन के अन्य दैनिक कार्यों में प्रमाद हो तो एतराज नहीं किन्तु स्वाध्याय के लिये प्रमाद नहीं करना चाहिए "समयं गोयममा पम्मावए"

शास्त्र स्वाध्याय को तप भी कहते हैं "शास्त्राभ्यासन चेव तपः वाङ्मयं मुच्यते" कहकर गीताकार शास्त्र स्वाध्याय को तप उद्घोषित करते हैं। अनेक संशय विच्छेदक संशयपिशाच्च संहारक स्वाध्याय स्वरूप चिन्ता मणि अमूल्यरत्न को पाकर यदि मानव भाँति रत्न को पाने के लिए भटकता रहता है तो उसे मूर्ख

ही कहना होगा। मोक्षार्थियों को प्रातः सांय मध्यान् स्वाध्याय तो अवश्य करते रहना चाहिए कम से कम उतराध्ययन सूत्र के अध्ययन ६-१२-१५-२८ एवं ३६ वा तो अवश्य ही करना चाहिए।

वर्तमान समय में शास्त्र स्वाध्याय को सुगम बनाने के लिए अनेक भांति एवं नाना आवृतियें निकल चुकी हैं किन्तु वर्तमान समय में उपलब्ध नहीं है अतः प्रस्तुतावृति सुन्दर एवं पूर्णरूप से सज्जित स्वाध्याय-प्रेमियों के लिए सुलभ रूप से उपलब्ध हो सके इसी भावना से यह अमूल्य ग्रन्थ आपके सामने है कैसा है क्या है इसका परीक्षण विज्ञजन करेंगे, सुज्ञेषु किं बहुना इत्यलम्

मागड़ी रोड़,
बैंगलोर-२३
ता. १४-३-६७

आपका शुभेच्छुक
मुनि निर्मल जैन

अनुक्रमणिका

प्रकीर्ण गाथाओ

नमिऊणं असुर-सुर-गरूल-भूयंग-परिवंदिए गयकिलेसे
अरिहंत-सिद्धायरिय,-उवज्झाय-सव्वसाहूणं ॥१॥

सिद्धाणं बुद्धाणं पारगयाणं परंपारगयाणं ।
लोअग्गमुक्गयाणं, नमो सया सव्व-सिद्धाणं ॥२॥

जो देवाणमवि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति ।
तं देवं देवमहियं सिरसा वन्दे महावीरं ॥३॥

इक्को वि नमुकारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स ।
संसार-सागराओ तारेइ, नरं व नारिं वा ॥४॥

उज्जितसेल-सिहरे, दिक्खा नाणं निसिहिआ जस्स ।
तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं नमंस्सामि ॥५॥

चत्तारि अट्ठदस दोय, वंदिया जिणवरा चउव्विसं ।
परमट्ठ निट्ठिअट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥६॥

सिद्धाणं नमो किच्चा, संजयाणं च भावओ ।
सन्ती सन्तीकरे लोए, पत्तो गइमणुत्तरं ॥७॥

अर्थः—इच्छित कार्य सिद्ध करवाने माटे प्रथम इष्ट देवने नमस्कार करवामां आवे छे. सिद्धाणं अर्थात् सिद्ध भगवान ने नमस्कार हो.

संजयाणं अर्थात् संयति-आचार्य, उपाध्याय तथा सर्व साधु-साध्वीजी महाराजने नमस्कार हो. सकल लोकमां शांति करनारा एवा श्रीशान्तिनाथजी भगवानने त्रिकरण शुद्ध भावपूर्वक नमस्कार हो.

चइत्ता भारहं वासं, चक्कवट्टी महड्ढिओ
सन्ती सन्तीकरे लोए, पत्तो गइमणुत्तरं ॥८॥

अर्थः—अखिल विश्वमां शांति स्थापित करनारा, सोळमा श्रीशांतिनाथ नामना चक्रवर्ती महान ऋद्धि सिद्धिवाळुं भरत क्षेत्रनुं राज्य छोड़ीने, उत्तम (मोक्ष) गतिने प्राप्त थया.

रूप अनुपम तुल्य न कोइ, वाणी सुणतां श्रवण सुख होइ !
देह सुगंधी हरे पुष्पवास, चउसठ इंद्र रहे प्रभु पास ॥१॥
चउद पूरवधार कहीए, ज्ञान चार वखाणीए।
जिन नहि पण जिन सरिखा, श्रीसुधर्म स्वामी जाणिए ॥२॥
मात, पिता, कुळ, जात निर्मल, रूप अनुपम वखाणीए।
देवताने वल्लभ एवा, श्रीजंबुस्वामी जाणीए ॥३॥

औपदेषिक गाथाओ

अलद्धं पुव्वलद्धं, जिणवयणसुभासियं अमियं।
भूइ सुइगइमग्गं, ना मरणाय वीयामो ॥१॥
जा जा वच्चइ रयणी, न सा पडिनियत्तइ।
अहम्मं कुणमाणस्स, अफला जंति राइओ ॥२॥
जा जा वच्चइ रयणी, न सा पडिनियत्तइ।
धम्मं च कुणमाणस्स, सफला जंति राइओ ॥३॥
एवं लोए पभित्तम्मि, जराए मरणेण य।
अप्पाणं तारइस्सामि, तुब्मेहिं अणुमन्निओ ॥४॥
एगे जिए जिया पंच, पंच जिए जिया दस।
दसहा उ जिणित्ताणं, सव्व सत्त जिणामहं ॥५॥

× × ×

तुमे तरणतारण, दुःखनिवारण, भविक जीव-आराधनं ।
श्रीनाभिनंदन जगतवंदन, नमो सिद्ध निरंजनं ॥१॥
तुमे मुक्तिदाता, कर्मघाता, दीन जाणी दया करो ।
श्रीसिद्धारथनंदन जगतवंदन, महावीर जिनेश्वरं ॥२॥
धन्य साधु धन्य साधवी, धन्य श्रीजैनधर्म ।
धन्य (जेने) सेव्यां पातक टळे, तूटे आठे कर्म ॥३॥
तुमे तरणतारण दुःखनिवारण, भविक जन-आराधनं ।
श्रीनाभिनंदन जगतवंदन, श्रीआदिनाथ जिनेश्वरम् ॥४॥
एकसठ माता ने बावन पिता, नव नव तीना ने बारे चोवीसा ।
ओगणसाठ मीत्रा ने साठ शरीरा, त्रेसठ पुरुषा ने पुरुष जगीशा ५

कामधेनु गो शब्दथी तटे तरु सुरवृक्ष ।
भजो मणी चिंतामणि, गौतम नाम प्रत्यक्ष ॥६॥

अष्टापद श्रीआदिजिनवर, वीर पावापुरीवरो ।
वसुपूज्य चंपानगरी सिद्धा नेम सिद्धा गिरिवरो ॥७॥
समेतशिखर वीस जिनवर, मुगते पहोंच्या मुनिवरो ।
चोवीस जिनवर नित्य नित्य वदुं, संघमें मंगलकरो ॥८॥

श्रीवीर जिनेश्वर जपोजी, मुनिवर वीर भवजलतार णं।
वर्धमान स्वामी मोक्षे महोंत्या, अष्टकर्म निवारीने........
प्राणी दुष्ट कर्म निवारीने............ ॥९॥

सिद्धारथनंदन जगतवंदन, करोजी कृपा मुज भणी ।
कर जोड़ी सेवक वीनवे, प्रभु पूरोजी आश अम तणी ॥१०॥

चोवीसे तीर्थंकरनो परिवार, चौदसें बावन गणधार ।
लाख अठावीस सहस अडीआल, एहवा मुनिवर
वंदुं त्रिकाल ॥११॥

× × ×

वीरः सर्वसुरासुरेन्द्रमहितो वीरं बुधाः संश्रिता
वीरेणाभिहतः स्वकर्मनिचयोः वीराय नित्यं नमः ।
वीरात्तीर्थमिदं प्रवृत्तमतुलं, वीरस्य घोरं तपो
वीरे श्रीधृतिकीर्तिकांतिनिचयः श्रीवीरभद्रं दिश ॥१॥

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धिस्थिता
आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः ।
श्रिसिद्धान्तसुपाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः
पंचैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु वो मंगलम् ॥२॥

॥ सूत्रकृताङ्गसूत्रे वीरस्तुत्याख्यं (पुच्छिस्सु णं) षष्ठमध्ययनम् ॥

पुच्छिस्सु णं समणा माहणा य, अगारिणो या परितित्थिआ य ।
से केइ णेगंतहियं धम्ममाहु, अणेलिसं साहुसमिक्खयाए ॥१॥

कहं च णाणं कहं दंसण से, सील कह नायसुयस्स आसि ।
जाणासि णं भिक्खु जहातहेणं अहासुय बूहि जहा णिसंतं ॥२॥

खेयन्ने से कुसले-महेसी, अणंतनाणी य अणंतदंसी ।
जसंसिणो चक्खुपहे ठियस्स, जाणाहि धम्मं च धिइं च पेहि ॥३॥

उड्ढं अहे यं तिरियं दिसासु, तसा य जे थावर जे य पाणा ।
से णिच्चणिच्चेहि समिक्ख पन्ने, दीवे व धम्मं समियं उदाहु ॥४॥

से सव्वदंसी अभिभूयनाणी, णिरामगंधे धिइमं ठियप्पा ।
अणुत्तरे सव्वजगंसि विज्जं, गंथा अईए अभए अणाऊ ॥५॥

से भूइपण्णे अणिए अचारी, ओहंतरे धीरे अणंतचक्खू ।
अणुत्तरं तप्पइ सूरिए वा, वइरोयणिन्दे व तमं पगासे ॥६॥

अणुत्तरं धम्ममिणं जिणाणं, णेया मुणी कासव आसुपन्ने ।
इदेव देवाण महाणुभावे, सहस्सणेया दिविणं विसिट्ठे ॥७॥

से पन्नया अक्खयसागरे वा, महोदही वावि अणंतपारे ।
अणाइले वा अकसाइ मुक्के(भिक्खु), सक्के व देवाहिवई जुईमं ॥८॥

से वीरिएणं पडिपुन्नवीरिए, सुदंसणे वा णगसव्वसेट्ठे ।
सुरालए वासि मुदागरे से, विरायए णेगगुणोववेए ॥९॥

सयं सहस्साण उ जोयणाणं, तिकंडगे पंडगवेजयंते ।
से जोयणे णवणवइसहस्से, उड्ढुस्सितो हेट्ठ सहस्समेगं ॥१०॥

पुट्ठे णभे चिट्ठइ भूमिवट्ठिए, जं सूरिया अणुपरिवट्टयंति ।

से हेमवन्ने वहुनंदणे य, जंसि रतिं वेदयती महिंदा ॥११॥

से पव्वए सद्दसहप्पगासे, विरायती कंचणमट्ठवन्ने ।
अणुत्तरे गिरिसु व पव्वदुग्गे, गिरीवरे से जलिएव भोमे ॥१२॥

महीए मज्झंमि ठिए णगिंदे, पन्नायते सूरिए सुद्धलेसे ।
एवं सिरीए उ स सूरिवन्ने, मणोरमे जोयइ अच्चिमाली ॥१३॥

सुदंसणस्सेव जसो गिरिस्स, पवुच्चइ महतो पव्वयस्स ।
एतोवमे समणे नायपुत्ते, जातिजसोदंसणनाणसीले ॥१४॥

गिरीवरे वा निसहाऽऽययाणं, रुयए व सेट्ठे वलयायताण ।
तओवमे से जगभूइपन्ने, मुणीण मज्झे तमुदाहु पन्ने ॥१५॥

अणुत्तरं धम्ममुइ रइत्ता, अणुत्तरं झाणवरं झियाइ ।
सुसुक्कसुक्कं अपगंडसुक्कं, संखिंदुएगंतवदातसुक्कं ॥१६॥

अणुत्तरग्गं परमं महेसी, असेसकम्मं स विसोहइत्ता ।
सिद्धिं गए साइमणंतपत्ते, नाणेण सीलेण य दंसणेण ॥१७॥

रुक्खेसु णाए जह सामली वा, जंसि रइं वेदयइ सुवन्ना ।
वणेसु वा णंदणमाहु सेट्ठं, नाणेण सीलेण य भूइपन्ने ॥१८॥

थणियं व सद्दाण अणुत्तरे उ, चंदो व ताराण महाणुभावे ।
गंधेसु वा चंदणमाहु सेट्ठं, एवं मुणीणं अपडिन्नमाहु ॥१९॥

जहा सयंभू उदहीण सेट्ठे नागेसु वा धरणिंदमाहु सेट्ठे ।
खोओदए वा रस वेजयंते, तवोवहाणे मुणिवेजयंते ॥२०॥

हत्थीसु एरावणमाहु नाए, सीहो मिगाण सलिलाण गङ्गा ।
पक्खीसु वा गरुले वेणुदेवो, निव्वाणवादीणिह नायपुत्ते ॥२१॥

जोहेसु नाए जह वीससेणे, पुप्फेसु वा जह अरविंदमाहु ।
खत्तीण सेट्ठे जह दंतवक्के, इसीण सेट्ठे तह वद्धमाणे ॥२२॥

दाणाण सेट्ठं अभयप्पयाणं सच्चेसु वा अणवज्जं वयंति ।
तवेसु वा उत्तम बंभचेरं, लोगुत्तमे समणे नायपुत्ते ॥२३॥

ठिईण सेट्ठा लवसत्तमा वा, सभा सुहम्मा व सभाण सेट्ठा ।
निव्वाणसेट्ठा जह सव्वधम्मा न नायपुत्ता परमत्थि नाणी ॥२४॥

पुढोवमे धुणइ विगयगेहि, न सण्णिहिं कुव्वइ आसुपन्ने ।
तरिउं समुद्दं च महाभवोघं, अभयंकरे वीर अणंतचक्खू ॥२५॥

कोहं च माणं च तहेव मायं, लोभं चउत्थं अज्झत्थदोसा ।
एयाणि वंता अरहा महेसी, ण कुव्वई पाव ण कारवेइ ॥२६॥

किरियाकिरियं वेणईयाणुवाणं, अण्णाणियाणं पडियच्च ठाणं ।
से सव्ववायं इह वेयइत्ता, उवट्ठिए धम्मस दीहरायं ॥२७॥

से वारिया इत्थी सराइभत्तं, उवहाणवं दुक्खखयट्ठयाए ।
लोगं विदित्ता आरं पारं च, सव्वं पभू वारिय सव्ववारं ॥२८॥

सोच्चा य धम्मं अरिहंतभासियं, समाहियं अट्ठपओविसुद्धं ।
तं सद्दहाणा य जणा अणाऊ, इंदे व देवाहिव आगमिस्संति ॥२९॥

❋ सुभाषित ❋

पंच-महव्वय-सुव्वय-मूलं, समण-मणाइल साहू सुच्चीन्नं ।
वेरविरामणपज्जवसाणं, सव्वसमुद्दमहादधी तित्थं ॥१॥

तित्थंकरेहिं सुदेसियमग्गं, नरग तिरिय विवज्जिय-मग्गं ।
सव्वं-पवित्तं सुनिम्मियसारं, सिद्धिविमाणं अवंगुय-दारं ॥२॥

देव नरिंद नमंसिय-पूइयं, सव्वजगुत्तम-मंगल मग्गं ।
दुद्धरिसं गुण-नायगमेगं, मोक्खपहस्स-वडिंसगभूयं ॥३॥

धम्मारामे चरे भिक्खू, धिइमं धम्म-सारही ।
धम्मारामरया दंते, बंभचेर-समाहिए ॥४॥

देव-दाणव-गंधव्वा, जक्ख-रक्खस्स-किन्नरा ।
बंभयारिं नमंसंति दुक्करं जे करन्ति ते ॥५॥

एस धम्मे धुवे निच्चे, सासए जिणदेसिए ।
सिद्धा सिज्झंति चाणेणं, सिज्झिस्संति तहावरे ॥६॥

अरिहंत सिद्ध पवयण गुरू थेर वहुस्सुए तवस्सीसु ।
वच्छल्लया य तेसिं अभिक्खनाणोवओगे य ॥७॥

दंसण विणय आवस्सए य, सीलव्वए निरइयारे ।
खणलव तव च्चियाए, वेयावच्चे समाहीए ॥८॥

अपुव्वनाणग्गहणे सुयभत्ती पव्वयणे पभावणया ।
एएहिं कारणेहिं तित्थयरत्तं लहइ जीओ ॥९॥

जिणवयणे अणुरत्ता जिणवयणं जे करंति भावेणं ।
अमला असंकिलिट्ठा ते हुंति परित्तसंसारि ॥१०॥

एवंखु नाणी णो सारं, जं न हिंसइ किंचणं ।
अहिंसा समयं चेव, एतावत्तं-वियाणिया ॥११॥

जाइं च वुड्ढिं च इहेज्ज-पासं, भूतेहिं जाणे पडिलेह सायं ।
तम्हातिविज्जो परमंति णच्चा, सम्मत्तदंसी न करेइ पावं ॥१२॥

उम्मुच्चपासं इहमच्चिएहिं, आरंभजीवी उभयाणुपस्सी ।
कामेसु गिद्धा णिचयं करंति, संसिंचमाणा पुणरेंति गब्भं ॥१३॥

सवणे नाणे विन्नाणे, पच्चक्खाणे य संजमे ।
अणहए तवे चेव, वोदाणे अकिरियासिद्धि ॥१४॥

एगोहं नत्थि मे कोइ, नाहमन्नस्स कस्सई ।
एवं अदीणमणस्सा, अप्पाणमणुसासई ॥१५॥

एगो मे सासओ अप्पा, नाणदंसणसंजओ ।
सेसा मे वाहिरा भावा, सव्वसंजोगलक्खणा ॥१६॥

जीविओ नाभिगच्छेज्जा मरणं नोवि पत्थए ।
दुहउवि न इच्छेज्जा, जीविओ मरणं तहा ॥१७॥

सारं दंसण नाणं, सारं तव नियम संजम सीलं ।
सारं जिणवरधम्मं, सारं संलेहणा पंडियमरणं ॥१८॥

कल्लाणकोडिकारिणी, दुग्गइदुहनिठवणी ।
संसारजलतारिणी, एगंत होइ जीवदया ॥१९॥

आरंभे नत्थि दया, महिलासंगेण नासइ बंभं ।
संकाए सम्मत्तं नासइ, पव्वज्जा अत्थ गहणेणं च ॥२०॥

मज्जविसयकसाया, निद्दा विकहा य पंचमी भणिया ।
एए पंच प्पमाया, जीवा पाडंति संसारे ॥२१॥

लब्भंति विमलाभोए, लब्भंति सुरसंपया ।
लब्भंति पुत्तमित्तं च, एगा धम्मो लब्भई ॥२२॥

नवि सुही देवता देवलोए, नवि सुही पुढवीपइ राया ।
नवि सुही सेठि सेणावइ य, एगंतसुहीमुणोवीयरागी ॥२३॥

नगरी सोहंती जलवृक्षभागा, राजा सोहंता चतुरंगीसेना ।
नारी सोहंति परपुरुषत्यागी, साधु सोहंता अमृतवाणी ॥२४॥

चलंति मेरु चलंति मंदिरं, चलंति ताराविचंद्रमंडलं ।
कदापि काले पृथ्वी चलंति, साहुपुरुषवाक्यो न चलंति धर्मे ॥२५॥

अशोकवृक्षः सुरपुष्पवृष्टि-र्दिव्यध्वनिश्चामरमासनं च ।
भामण्डल दुन्दुभिरातपत्रं, सत्प्रातिहार्याणि जिनेश्वराणाम् ॥२६॥

अप्पा नई वेयरणी, अप्पा मे कुडसामली ।
अप्पा कामदुहा धेणू, अप्पा मे नंदणं वणं ॥२७॥

अप्पा कत्ता विकत्ता य, दुहाण य सुहाण य ।
अप्पा मित्तममित्तं च, दुप्पट्ठिय सुपट्ठिओ ॥२८॥

जो सहस्सं सहस्साणं, संगामे दुज्जए जिए ।
एगं जिणेज्ज अप्पाणं एस से परमो जओ ॥२६॥

लाभालाभे सुहे दुक्खे, जीवीए मरणे तहा ।
समो निंदापसंसासु, तहा माणावमाणओ ॥३०॥

प्रकीर्ण गाथाओ

नमिऊणं असुर-सुर-गरूल-भूयंग-परिवंदिए गयकिलेसे
अरिहंत-सिद्धायरिय,–उवज्झाय-सव्वसाहूणं ॥१॥

सिद्धाणं बुद्धाणं पारगयाणं परंपारगयाणं ।
लोअग्गमुवगयाणं, नमो सया सव्व–सिद्धाणं ॥२॥
जो देवाणमवि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति ।
तं देवं देवमहियं सिरसा वन्दे महावीरं ॥३॥
इक्को वि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स ।
संसार-सागराओ तारेइ, नरं व नारिं वा ॥४॥
उज्जितसेल-सिहरे, दिक्खा नाणं निसिहिआ जस्स ।
तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं नमंस्सामि ॥५॥
चत्तारि अट्ठदस दोय, वंदिया जिणवरा चउव्विसं ।
परमट्ठ निट्ठिअट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥६॥
सिद्धाणं नमो किच्चा, संजयाणं च भावओ ।
सन्ती सन्ती करे लोए, पत्तो गइमणुत्तरं ॥७॥

अर्थ:—इच्छित कार्य सिद्ध करवाने माटे प्रथम इष्ट देवने नमस्कार करवामां आवे छे. सिद्धाणं अर्थात् सिद्ध भगवान ने नमस्कार हो.

संजयाणं अर्थात् संयति-आचार्य, उपाध्याय तथा सर्व साधु-साध्वीजी महाराजने नमस्कार हो. सकल लोकमां शांति करनारा

एवा श्रीशान्तिनाथजी भगवानने त्रिकरण शुद्ध भावपूर्वक नमस्कार हो.

चइत्ता भारहं वासं, चक्कवट्टी महड्ढिओ
सन्ती सन्ती करे लोए, पत्तो गइमणुत्तरं ॥८॥

अर्थः—अखिल विश्वमां शांति स्थापित करनारा, सोळमा श्रीशांतिनाथ नामना चक्रवर्ती महान ऋद्धि सिद्धिवालुं भरत क्षेत्रनुं राज्य छोडीने, उत्तम (मोक्ष) गतिने प्राप्त थया.

रूप अनुपम तुल्य न कोइ, वाणी सुणतां श्रवण सुख होइ,
देह सुगंधी हरे पुष्पवास, चउसठ इंद्र रहे प्रभु पास ॥१॥
चउद पूरवधार कहीए, ज्ञान चार वखाणीए।
जिन नहि पण जिन सरिखा, श्रीसुधर्म स्वामी जाणिए ॥२॥
मात, पिता, कुळ, जात निर्मल, रूप अनुपम वखाणीए।
देवताने वल्लभ एवा, श्रीजंबुस्वामी जाणीए ॥३॥

औपदेषिक गाथाओ

अलद्धं पुव्वलद्धं, जिणवयण सुभासियं अमियं।
भूइ सुइगइमग्गं, ना मरणाय बोयामो ॥१॥
जा जा वच्चइ रयणी, न सा पडिनियत्तइ।
अहम्मं कुणमाणस्स, अफला जंति राइओ ॥२॥
जा जा वच्चइ रयणी, न सा पडिनियत्तइ।
धम्मं च कुणमाणस्स, सफला जंति राइओ ॥३॥
एवं लोए पभित्तम्मि, जराए मरणेण य।
अप्पाणं तारइस्सामि, तुब्मेहिं अणुमन्निओ ॥४॥
एगे जिए जिया पंच, पंच जिए जिया दस।
दसहा उ जिणित्ताणं, सव्व सत्त जिणामहं ॥५॥

तुमे तरण तारण, दुःखनिवारण, भविक जीव-आराधनं।
श्रीनाभिनंदन जगतवंदन, नमो सिद्ध निरंजनं ॥१॥
तुमे मुक्तिदाता, कर्मघाता, दीन जाणी दया करो।
श्रीसिद्धारथनंदन जगतवंदन, महावीर जिनेश्वरं ॥२॥
धन्य साधु धन्य साधवी, धन्य श्रीजैनधर्म।
धन्य (जेने) सेव्यां पातक टळे, टूटे आठे कर्म ॥३॥
तुमे तरण तारण दुःखनिवारण, भविक जन-आराधनं।
श्रीनाभिनंदन जगतवंदन, श्रीआदिनाथ जिनेश्वरम् ॥४॥
एकसठ माता ने बावन पिता, नव नव तीना ने बारे चोवीसा।
ओगणसाठ मित्रा ने साठ शरीरा, त्रेसठ पुरुषा ने पुरुष जगीशा॥५।

कामधेनु गो शब्दथी तटे तरु सुरवृक्ष।
भजो मणी चिंतामणि, गौतम नाम प्रत्यक्ष ॥६॥

अष्टापद श्रीआदिजिनवर, वीर पावापुरीवरो।
वसुपूज्य चंपानगरी सिद्धा नेम सिद्धा गिरिवरो ॥७॥
समेतशिखर वीस जिनवर, मुगते पहोंच्या मुनिवरो।
चोवीस जिनवर नित्य नित्य वंदुं, संघमें मंगळकरो ॥८॥

श्रीवीर जिनेश्वर जपोजी, मुनिवर वीर भवजल तारणं।
वर्धमान स्वामी मोक्षे महोंत्या, अष्टकर्म निवारीने.......
प्राणी दुष्ट कर्म निवारीने........... ॥९॥

सिद्धारथनंदन जगतवंदन, करोजी कृपा मुज भणी।
कर जोड़ी सेवक वीनवे, प्रभु पूरोजी आश अम तणी ॥१०॥

चोवीसे तीर्थंकरनो परिवार, चौदसें बावन गणधार।
लाख अठावीस सहस अडीआल, एहवा मुनिवर
वंदुं त्रिकाल ॥११॥

× × ×

वीरः सर्वसुरासुरेन्द्रमहितो वीरं बुधाः संश्रिता
वीरेणाभिहतः स्वकर्मनिचयोः वीराय नित्यं नमः ।
वीरात्तीर्थमिदं प्रवृत्तमतुलं, वीरस्य घोरं तपो
वीरे श्रीधृतिकीर्तिकांतिनिचयः श्रीवीर भद्रं दिश ॥१॥

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धिस्थिता
आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः ।
श्रिसिद्धान्तसुपाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः
पंचैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु वो मंगलम् ॥२॥

ॐ

जीवन-श्रेयस्कर-पाठमाला

श्रीसुखविपाक सूत्रम्

(१) तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णामं णयरे होत्था। रिद्धित्थिमियसमिद्धे गुणसिलए चेइए सुहम्मे अणगारे समोसढे। जंबू जाव पज्जुवासइ-एवं वयासि जइ णं भंते! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं दुहविवागणं अयमट्ठे पण्णत्ते। सुहविवागाणं भंते! समणेणं भगवया महावीरेणं ज व संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते! तएणं से सुहम्मे अणगारे जंबू अणगारं एवं वयासि एव खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सुहविवागाणं दस अज्झयणा पण्णता। तं जहा सुबाहू[1] भद्दनंदी[2] य सुजाए[3] सुवासवे[4] तहेव जिणदासे,[5] धणवई[6] य महब्बले[7] भद्दनंदी,[8] महचंदे[9] वरदत्त[10]।

जइ णं भंते! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव सपत्तेणं सुहविवागाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता। पढमस्स णं भंते! अज्झयणस्स सुहविवागाणं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते? तएणं से सुहम्मे अणगारे जंबू अणगारं एवं वयासि-एवं खलु जंबू! तेणं कालेण तेणं समएणं हत्थिसी से

णामंणयरे होत्था । रिद्धित्थिमियसमिद्धे । तस्सणं हत्थिसीसस्स णयरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए एत्थणं पुष्फकरंडए णामं उज्जाणे होत्था। सव्वउ य पुप्फफलसमिद्धे, रम्मे, नंदण-वणप्पगासे पासाइअे ४। दरिसणे ज्ज अभिरूवे पडिरूवे तत्थ णं कयवणमालपियस्स जक्खस्स जक्खायतणे होत्था दिव्वे।

तत्थ ण हत्थिसीसे णयरे अदीणसत्तू नामं राया होत्था। महया हेमवंते रायवण्णाउ। तस्सणं अदीणसत्तुस्स रण्णो धारिणी पामोक्ख देवी सहस्सं उरोहेया वि होत्था तएणं सा धारिणी देवी अन्नया कयाइं तंसिं तारिसगंसि वासभवणंसि सीहं सुमिणे जहा मेहजम्मणं तहा भाणियव्वं णवरं सुबाहुकुमारे जाव । अलं भोगसमत्थे यावि जाणति २ त्ता अम्मापियरो पंच पासाय-वडिसगसयाइ करेंति अम्भुग्गयमुसियपहसाएवि भवणं।

एवं जहा महव्वलस्स रण्णो। णवरं पुप्फचूला पामोक्खाणं। पंचण्हं रायवरकण्णा सयाग एग दिवसेणं पाणि गेण्हावेइ तहेव पंचसइओ दाउ जाव उप्पिपासाय वरगते फुट्टमाणा जाव विहरंति। तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवए महावीरे समोसढ़े। परिसा निग्गया अदीणसत्तू जहा कोणिए निग्गए। सुबाहुकुमारे वि जहा जमाली तहा रहेण निग्गए। जाव धम्मो कहिउ राया परिसा पडिगया।

तए णं से सुबाहुकुमारे समणस्स भगवउ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठ तुट्ठे उट्ठाए उट्ठाइ जाव एवं वयासि सद्दहामि णं भंते! निग्गंथं पावयणं जीव जहाणं देवाणुप्पियाणं अंतिए वहवे राईसर तलवर माडंवीय कोडुंबिय इब्भसेठी सेणावइ सत्थवाह पभइउ मुंडे भवित्ता आगाराउं अणगारियं पव्वइया। नो खलु अहं तहा संचाएमि मुंडे भवित्ता

आगाराउ अणगारियं पव्वइत्तए अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वयाइं सत्तसिक्खावयाइं-दुवालसविहं-गिहधम्मं पडिव्वजिस्सामि। अहा सुहं. देवणुप्पिया। मा पडिवंधं करेह।

तए णं से सुबाहुकुमारे समणस्स भगवउ महावीरस्स अंतिए पंचाणुव्वयाइ सत्तसिक्खाव्वयाइं पडिवज्चइ २ त्ता, तामेव, चाउघंटं दुरुहइ २ त्ता जामेव दिसं आसरह पाउभूए तामेव दिसं पडिगए। तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवउ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई णामं अणगारे जाव एवं वयासी दुवालसविहं गिहिधम्मं।

अहो णं भन्ते! सुवाहुकुमारे इट्ठे इट्ठरुवे १ कंते कंतरूवे २ पिये पियरुवे ३ मणुन्ने मणुन्नरुवे ४ मणामे मणामरुवे ५ सोमे सुभगे पियदंसणे सुरुवे; वहुजणस्सवि य णं भंते! सुवाहुकुमारे इट्ठे इट्ठरूवे ५ सोमे जाव सुरुवे। साहुजणस्सवि य णं भंते! सुबाहुकुमारे इट्ठे इट्ठरुवे ५ जाव सुरुवे। सुबाहुणा भंते! कुमारेण इमे एयारूवा उराला माणुस्सरिद्धी किण्णा लद्धा किण्णा पत्ता किण्णा अभिसमण्णा गया? को वा एस आसी पुव्वभवे किं नामए वा किं गोतए कयरंसीवा, गामंसीवा, सन्नीवेसंसीवा, किं वा दच्चा किं वा भोच्चा किं वा समायरित्ता करस वा तहारुवस्स समणस्स वा हणस्स वा अंतिए एगमवि आयरिय धम्मियं सुवयणं साच्चा निस्सम्म सुवाहुकुमारेणं इमे इयारूवा माणुस्सरिद्धी लद्धा पत्ता अभिसमण्णा गया।

एवं खलु गोयमा! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंवूहीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणाउरे णामं णयरे रिद्धित्थिमियसमिद्धे वण्णउ। तत्थ णं हत्थिणाउरे णयरे सुमुहे णामं गाहावई

परिवसइ अड्ढे दित्ते जाव अपरिभूए। तेणं कालेणं तेणं समएणं धम्मघोसे णामं थेरे जाइसंपन्ने जहेव सुहुम सामी तहेव पंचहिं समणसएहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दुइज्जमाणे जेणेव हत्थिणाउरे णयरे जेणेव सहस्संबवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता अहा पडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हइ २ त्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।

तेणं कालेणं तेणं समएणं धम्मघोसाणं थेराणं अंतेवासी सुदत्ते णामं अणगारे उराले जाव तेउलेसे मासं मासेणं खममाणे विहरइ। तएणं सुदत्तो अणगारे मासखमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेइ। बियाए पोरिसीए झाणं झियाएइ, जहा गोयमे तहेव धम्मघोसं थेरं आपुच्छइ जाव अडमाणे सुमुहस्स गाहावइस्स गिहं अणुपविट्ठे तएणं से सुमुहे गाहावई सुदत्तं अणगारं एज्जमाणं पासइ २ त्ता हट्ठ तुट्ठे आसणाउ अब्भुट्ठेइ २ त्ता पायपीढाउ पच्चोरुहइ २ त्ता पाउयाउ उमुयति २ त्ता एगसाडियं उत्तरासगं करेइ २ त्ता सुदत्तं अणगारं सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ २ त्ता तिखुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ २ त्ता वंदइ णमंसइ २ त्ता जेणेव भत्तघरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता सयहत्थेणं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं पडिलाभिस्सामि त्ति कट्टु तुट्ठे पडिलाभेमाणे वि तुट्ठे पडिलाभिए त्ति तुट्ठे।

तए ण तस्स सुमुहस्स गाहावइस्स तेणं दव्वशुद्धेणं दावग सुद्धेणं पडिगाह य सुद्धेणं तिविहेणं तिकरण सुद्धेणं सुदत्ते अणगारे पडिलाभिए समाणे संसारे परित्तीकए, मणुस्साऊए निबद्धे गिहंसि य से इमाइं पच दिव्वाइं पाउभूयाइं। तं जहा-वसुहारा वुट्ठा १ दसद्धवण्णे कुसुमे निवाइए २ चेलुक्खेवेकए ३ आहयाउ देवदुंदुहीउ अंतरा वियणं आगासंसि अहो दाणं

महोदाणं घुट्ठे य ५ . तए णं हत्थिणाउरे णयरे सिंघाडग जाव पहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एव माइक्खइ ४ धन्नेणं देवाणुप्पिया सुमुहे गाहावई । सुकयपुण्णे कयलक्खणे सुलद्धेणं माणुस्सजम्मे सुकयत्थरिद्धि य ॥

तए णं से सुमुहे गाहावई बहुइं वासासयाइं आउयं पालेइ २ त्ता कालमासे कालं किच्चा इहेव हत्थिसीसे णयरे अदीणसत्तुस्सणो धारिणीए देवीए कुच्छिंसि पुत्तत्ताए उववण्णे । तए णं सा धारिणी देवी सयणिज्जेंसि सुत्तजागराओहीरमाणी २ तहेव सीहं पासइ । सेसं तं चेव उप्पिंगपासाए विहरइ तं एवं खलु गोयमा सुबाहुणा कुमारेणं इमे एयारुवा माणुस्सरिद्धी लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया । पभूणं भंते ! सुबाहुकुमारे देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता आगाराउ अणगारियं पव्वइत्तए ? हंता पभू तहेणं । से भगव गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ २ त्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमणि विहरइ ।

तए णं से समणे भगवं महावीरे अण्णया कयाइं हत्थिसीसाउ णयराउ पुप्फकरंडयाउ उज्जाणाउ कयवणमालप्पियस्स जक्खस्स जक्खायतणाउ पडिनिक्खमइ २ त्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ । तए णं से सुबाहुकुमारे समणोवासए जाए अभिगयजीवाजीवे जाव पडिलाभेमाणे विहरइ । तए णं से सुबाहुकुमारे अण्णयाकयाइं चाउद्दसट्ठपुण्णमासिणीसु जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ २ त्ता पोसहसाला पमुज्जइ २ त्ता उच्चारपासवणं भूमिं पडिलेइ २ त्ता दब्भसंथारग संथरेइ २ त्ता, दब्भसंथारगं दुरुहइ २त्ता अट्ठमभत्तं पगिण्हइ २ त्ता पोसहसालाए पोसहिए अट्ठम भत्तिए पोसहं पडिजागरमाणे विहरइ ।

तए णं तस्स सुबाहुस्स कुमारस्स पुव्वरत्तावरत्तकाले धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमे एयारूवे अज्झत्थिए

चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे ५ ; समुप्पन्ने धण्णाणं ते गामा-गर-णगरस्स जाव सन्निवेसा जत्थ णं समणे भगवं महावीरे विहरइ । धन्नाणं ते राईसरं जाव सत्थवाह पभइउ जे ण समणस्स भगवउ महावीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ता आगाराउ अणगारियं पव्वइयंति धण्णाणं ते राईसरं जाव सत्थवाह पभइउजेणं समणस्स भगवउ महावीरस्स अंतिए धम्मं पडिसुणंति ते जइ णं समणे भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्वं चरमणे जाव गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागच्छेज्जा जाव विहरेज्जा । तए णं अह समणस्स भगवउ महावीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ता जाव पव्वएज्जा ।

तए णं समणे भगवं महावीरे सुबाहुस्स कुमारस्स इमं एयारूवं अज्झत्थियं जाव वियाणित्ता पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे जाव गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव हत्थिसीसे णंयरे जेणेव पुप्फकरंडे उज्जाणे जेणेव कयवाणमालपियस्स जक्खस्स जक्खायतणे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता अहापडिरूवं उग्गहं उगिण्हित्ता संजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ । परिसा, राय निग्गया । तए ण तस्स सुवाहुस्स कुमारस्स तं महया जहा पढ़मं तहा निग्गओ । थम्मो कहिआ परिसा राया पडिगया ।

तए णं से सुबाहुकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्म सोच्चा निसम्म हट्ठ-तुट्ठे । जहा मेहो तहा अम्मा-पियरो आबुच्छइ निखमणाभिसेओ तहेव जाव अणगारे जाए इरिया समिए जाव गुत्तबंभयारी । तए णं से सुबाहु अणगारे समणस्स भगवउ महावीरस्स तहारुवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइ एकारस्स अंगाइं अहिज्जइ २ त्ता वहहिं चउत्थ-छट्ठऽट्ठमतवो विहाणेहिं अप्पाणं भवित्ता बहूइं वासाइं सामण्ण-परियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसित्ता सट्ठिं

भत्ताइं अणसणाइं छेदित्ता आलोइयं पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे देवताए उववरणे।

से णं ताउ देवलोगाउ आउक्खएणं भवक्खयेणं ठिइक्खएणं अणंत्तरं चयं चेइत्ता माणुस्सं विग्गहं लभिहिइ २ त्ता केवल-बोहिं वुज्झिहिए २ त्ता तहारुवाणं थेराणं अंतिए मुंडे भवित्ता जाव पव्वइस्सइ। से णं तत्थ वहूइं वासाइ सामाएणपरियागं पाउणिहिइ २ त्ता आलोइयं पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कलां किच्चा सणंकुमारे कप्पे देवत्ताए उववरणे। सेणं ताओ देवलोगाउ माणुस्स जाव पव्वज्जा वंभलोए। ताओ माणुस्सं महासुक्के॥ ततो माणुस्सं आणए देवे। ततो माणुस्सं। ततो आरणे। ततो माणुस्सं सव्वट्ठसिद्धे।

से णं ताउ अणंतरं चयं चइत्ता महाविदेहे वासे जाव अड्ढे जहा दढपइन्ने सिज्झिहिति वुज्झिहिति मुच्चिहिति परि निव्वाहिति सव्वदुक्खाणमतंकरेहिति। एवं खलु जंवु। सम-णेणं भगवया महावीरेणं जाव संपएणं सुहविवागाणं पढम-स्स अज्झयणंस्स अयमट्ठे पएणते त्तिवेमि॥

इइ सुहविवागस्स पढमं अज्झयणं सम्मतं॥१॥

(२) वितियस्स उक्खेवउ। एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं तेणं समएणं उसभपुरे णाम णयरे थूभकरंडगं उज्जाण! धएणो जक्खो। धणवहो राया सरस्सई देवी। सुमिणदंसणं कहणं जम्म वालत्तणं कलाउ य जोवणं पाणिगहणं दाउ पासादय भोगा य जहा सुवाहुस्स णवरं भद्दनंदी कुमारे। सिरीदेवी पामोक्खाणं पंचसया कन्ना पाणिगहणं। सामिस्स समोसरणं सावगधम्मं पडिवज्जे पुव्वभवं पुच्छा महाविदेहवासे पुंड-रिगिणि नगरीए विजए कुमारे जुगवाहू तित्थयरे पडिलाभिए मणुस्साऊए निवद्धे इहंउववरणे। सेसं जहा सुवाहुस्स जाव

महाविदेहवासे सिज्झिहिति बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिनिव्वाहिति सव्वदुक्खाणमंतं करेहिति । एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सुहविवागाणं बितियस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्ति बेमि ।

इइ सुहविवागस्स वीयं अज्झयणं सम्मत्तं ॥२॥

(३) तइयस्स उक्खेवउ । वीरपुरे णामं णयरे । मणोरमे उज्जाणे वीरकण्हे जक्खे, मित्ते राया सिरी देवी सुजाए कुमारे । बलसिरि पामोक्खाणं पंचसया कन्ना । सामी समोसरिए । पुव्वभवं पुच्छा । उसुयारे णयरे उसभदत्ते गाहावई पुप्फदंते अणगारे पडिलाभिए मणुस्साऊए निबद्धे इह उववण्णे जाव महाविदेहे वासे सिज्झिहिति ५ ।

इह सुहविवागस्स तइय अज्झयणं सम्मत्तं ॥३।

(४) चउत्थस्स उक्खेवउ । विजयपुरे णयरे । णंदणवणे उज्जाणे । असोगो जक्खो । वासवदत्तो राया । कण्हसिरी देवी । सुवासवे कुमारे । भद्दा पामोक्खाणं पंचसया कन्ना जाव पुव्वभवं पुच्छा । कोसवी णयरी । धणपालो राया । वेसमणभद्दे अणगारे पडिलाभिए इह उववण्णे जाव सिद्धे ।

इइ सुहविवागस्स चउत्थं अज्झयण सम्मत्तं ॥४॥

(५) पंचमस्स उक्खेवउ । सोगंधिया णयरी । नीलासोगे उज्जाणे । सुकालो जक्खो । अपडिहयो राया । सुकण्हा देवी । महचंदे कुमारे । तस्स अरहदत्ता भारिया । जिणदासो पुत्तो तित्थयरागमणं जिणदासो पुव्वभवं पुच्छा । मज्झमिया नयरी । मेहरहे राया । सुधम्मे अणगारे पडिलभिए जाव सिद्धे ।

इइ सुहविवागस्स पंचमं अज्झयणं सम्मत्तं ॥५॥

(६) छट्ठस्स उक्खेवउ। कणगपुरे णयरे सेयासोये उज्जाणे। वीरभद्दो जक्खो! पियचंदे राया। सुभद्दा देवी। वेसमणे कुमारे जुवराया। सिरीदेवी पामोक्खाणं पंचसया। तित्थयरागमणं धणवई जुवरायपुत्ते जाव पुव्वभवं पुच्छा। मणिवइए णयरी। मित्तेराया संभूइविजए अणगारे पडिलाभिए

इइ सुहविवागस्स छट्ठं अज्झयणं सम्मत्तं ॥ ६ ॥

(७) सत्तमस्स उक्खेवउ। महापुरे णयरे। रत्तासोगे ऊज्जाणे। रत्तपाउ जक्खो। वले राया। सुभद्दा देवी। महाबले कुमारे। रत्तवई पामोक्खाणं पचसया कन्ना। तित्थयरागमणं जाव पुव्वभवं पुच्छा! मणिपुरे णयरे। णागदत्ते गाहावई इंददत्ते अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे।

इइ सुहविवागस्स सत्तमं अज्झयणं सम्मत्तं ॥ ७ ॥

(८) अट्ठमस्स उक्खेवउ। सुघोसे णयरे। देवरमणे उज्जाणे। वीरसेणो जक्खो। अज्भुणो राया। रत्तवई देवी। भद्दनंदी कुमारे। सीरीदेवी पामोक्खाणं पंचसया कन्ना जाव पुव्वभवं पुच्छा। महाघोसे णयरे। धम्मघोसे गाहावई। धम्मसीहे अणगारे। पडिलाभिए जाव सिद्धे।

इइ सुहविवागस्स अट्ठमं अज्झयणं सम्मत्तं ॥ ८ ॥

(९) नवमस्स उक्खेवउ। चंपा णयरी। पुण्णभद्दे उज्जाणे। पुण्णभद्दो जक्खो। दत्ते राया। रत्तलई देवी। महचंदे कुमारे। जुवराया सिरीकंता पामोक्खाणं पंचसया कन्ना जाव पुव्वभवं पुच्छा। तिगिच्छा णयरी। जियसत्तु राया। धम्मविरिए अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे!

इइ सुहविवागस्स नवमं अज्झयणं सम्मत्तं ॥६॥

(१०) जइ णं भंते ! दसमस्स उक्खेवओ । एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं साइए णामं णयरे होत्था। उत्तरकुरु उज्जाणे पासामिउ जक्खो मित्तनंदी राया। सिरीकंता देवी। वरदत्ते कुमारे वीरसेणा पामोक्खाणं पंचदेवी सया । तित्थयरागमणं सावगधम्मं पुव्वभवं पुच्छा । सयदुवारे णयरे। विमलवाहणे राया। धम्मरुई अणगारे पडिलाभिए मणुस्साऊए निबद्धे इइ उववरणे। सेसं जहा सुबाहुस्स चिंता जाव पवज्जा कप्पंतरिए जाव सव्वट्ठसिद्धे। तओ महाविदेहे जहा दढपइण्णे जाव सिज्झिहिति ५। एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेण सुहविवागाणं दसमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते सेवं भंते २ त्ति वेमि।

इइ सुहविवागस्स दसंम अज्झयणं सम्मत्तं।

णमो सुयदेवाए विवागसुयस्स दो सुयखंधा दुहविवागे य सुहविवागे य। तत्थ दुहविवागे दस अज्झयणा एक्कासरगा दससु चेव दिवसेसु उद्दिसिजंति । एवं सुहविवागे वि सेसं जहा आयरस्स ॥ १० ॥

॥ इति सुखविपाकसूत्रम् ॥

उववाई सूत्र

बावीस गाथाएँ

कहिं पडिहया सिद्धा ? कहिं सिद्धा पइट्ठिया ?।
कहिं वोंदिं चइत्ताणं, कत्थ गंतूण सिज्झई ॥ १ ॥
अलोगे पडिहया सिद्धा, लोयग्गे य पडिट्ठिया।
इह वोंदिं चइत्ताणं, तत्थ गंतूण सिज्झई ॥ २ ॥

जं संठाणं तु इहं भवं चयं तस्स चरिमसमयंमि ।
आसी य पएसघण तं संठाणं तहिं तस्स ॥ ३ ॥
दीहं वा हस्सं वा जं चरिमभवे हवेज्ज संठाणं ।
तत्तो तिभागहीण सिद्धाणोगाहणा भणिया ॥ ४ ॥
तिण्णि सया तेत्तीसा धणुत्तिभागो य होइ बोद्धव्वा ।
एसा खलु सिद्धाणं उक्कोसोगाहणा भणिया ॥ ५ ॥
चत्तारि य रयणीओ रयणित्ति भागूणिया य बोद्धव्वा ।
एसा खलु सिद्धाण मज्झिमओगाहणा भणिया ॥ ६ ॥
एक्को य होइ रयणी साहीवा अंगुलाइ कट्ठ भवे ।
एसा खलु सिद्धाणं जहण्णओगाहणा भणिया ॥ ७
ओगाहणाए सिद्धा भवत्तिभागेण होइ परिहीणा ।
संठाणमणित्थंथं जरामरणविप्पमुक्काणं ॥ ८ ॥
जत्थ य एगो सिद्धो तत्थ अणंता भवक्खयविमुक्का ।
अण्णोण्णसमोगाढा पुट्ठा सव्वे य लोगंते ॥ ९ ॥
फुसइ अणंते सिद्धे- सव्वपएसेहि णियमसा सिद्धो ।
ते वि असंखेज्जागुणा देसपएसेहिं जे पुट्ठा ॥ १० ॥
असरीरा जीवघणा उवउत्ता दंसणे य णाणे य ।
सागारमणागारं लक्खणमेयं तु सिद्धाणं ॥ ११ ॥
केवलणाणुवउत्ता जाणेहिं सव्वभावगुणभावे ।
पासंति सव्वओ खलु केवलदिट्ठिअणंताहिं ॥ १२ ॥
णवि अत्थि माणुसाणं तं सोक्खं णविय सव्वदेवाणं ।
जं सिद्धाणं सोक्खं अव्वावाहं उवगयाणं ॥ १३ ॥
जं देवाणं सोक्खं सव्वद्धपिंडियं अणंतगुणं ।
ण य पावइ मुक्तिसुहं णंताहिं वग्गवग्गूहि ॥ १४ ॥

सिद्धस्स सुहो रासो सव्वद्धापिंडिओ जइ हवेज्जा ।
सोणंतवग्गभइओ सव्वागासे :ण माएज्जा ॥ १५॥
जह णाम कोई मिच्छो णगरगुणे बहुविहे वियाणंतो ।
ण चएइ परिकहेउं उवमाए तहिं असंतीए ॥ १६ ॥
इय सिद्धाणं सोक्खं अणोवमं णत्थि ओवम्मं ।
किंचि विसेसेणेत्तो ओवम्ममिणं सुणह वोच्छं ॥ १७ ।
जह सव्वकामगुणियं पुरिसो भोत्तूण भोयणं कोई ।
तण्हाछुहाविमुक्को अच्छेज्ज जहा अमियतित्तो ॥ १८ ॥
इय सव्वकालतित्ता अतुलं निव्वाणमुवगया सिद्धा ।
सासयमव्वावाहं चिट्ठंति सुही सुहं पत्ता ॥ १९ ॥
सिद्धत्ति य बुद्धत्ति य पारगयत्ति य परंपरगयत्ति ।
उम्मुक्ककम्मकवया अजरा अमरा असंगा य ॥ २० ॥
णिच्छिण्णसव्वदुक्खा जाइजरामरणबंधणविमुक्का ।
अव्वावाहं सुक्खं अणुहोंती सासयं सिद्धा ॥ २१ ॥
अतुलसुहसागरगया अव्वाबाहं अणोवमं पत्ता ।
सव्वमणागयमद्धं चिट्ठंति सुहं पत्ता ॥ २२ ॥

मोक्षमार्गनामकं एकादशाध्ययनम्

कयरे मग्गे अक्खाए, माहणेणं मईम या ।
जं मग्गं उज्जु पावित्ता ओहं तरइ दुत्तरं ॥ १ ॥
तं मग्गं णुत्तरं सुद्धं, सव्वदुक्खविमोक्खणं ।
जाणासि णं जहा भिक्खु, तं णो बूहि महामुणी ॥ २ ॥

जइ णो केइ पुच्छेज्जा, देवा अदुव माणसा।
तेसिं तु कयरं मग्गं, आइक्खेज्ज ? कहाहि णो ॥ ३ ॥

जइ वो केइ पुच्छेज्जा, देवा अदुव माणुसा।
तेसिमं पडिसाहेज्जा, मग्गसारं सुणेह मे ॥ ४ ॥

अणुपुव्वेण महाघोरं कासवेण पवेइयं।
जमायाय इओ पुव्वं; समुद्दं ववहारिणो ॥ ५ ॥

अंतुरिंसु तरंतेगे, तरिस्संति अणागया।
तं सोच्चा पडिवक्खामि, जंतवो तं सुणेह मे ॥ ६ ॥

पुढवीजीया पुढो सत्ता, आउजीवा तहाऽगणी।
वाउजीवा पुढो सत्ता, तणरुक्खा सबीयगा ॥ ७ ॥

अहावरा तसा पाणा, एवं छक्काय आहिया।
एयावए जीवकाए, णावरे विज्जई काए ॥ ८ ॥

सव्वाहिं अणुजुत्तीहिं, मइमं पडिलेहिया।
सव्वे अक्कंतदुक्खा य, अओ सव्वे अहिंसया ॥ ९ ॥

एयं खु णाणिणो सारं, जं न हिंसइ किंचणं।
अहिंसा समयं चेव, एतावतं वियाणिया ॥ १० ॥

उड्ढं अहे य तिरियंच, जे केइ तसथावरा।
सव्वत्थ विरइं कुज्जा संति निव्वाणमाहियं ॥ ११ ॥

पभू दोसे निराकिच्चा, ण विरुज्झेज्ज केणई।
मणसा वयसा चेव, कायसा चेव अंतसो ॥ १२ ॥

संवुडे से महापन्ने, धीरे दत्तेसणं चरे।
एसणासमिए णिच्चं, वज्जयंते अणेसणं ॥ १३ ॥

भूयाइं च समारंभ, तमुद्दिस्सा य जं कडं।
तारिसं तु न गिण्हेज्जा, अन्नपाणं सुसंजए ॥ १४ ॥

पूईकम्मं न सेवेज्जा एस धम्मे वुसीमओ।
जं किंचि अभिकंखेज्जा, सव्वसो तं न कप्पए ॥ १५ ॥
हणंतं णाणुजाणेज्जा, आयगुत्ते जीइंदिए।
ठाणाइं संति सड्ढीणं गामेसु नगरेसु वा ॥ १६ ॥
तहा गिरं समारब्भ, अत्थि पुण्णंति णो वए।
अहवा णित्थ पुण्णंति, एवं मेयं महब्भयं ॥ १७ ॥
दाणट्ठया य जे पाणा, हम्मंति तस थावरा।
तेसिं सारक्खणट्ठाए, तम्हा अत्थि ति णो वए॥ १८ ॥
जेसिं तं उवकप्पंति, अन्नपाणं तहाविहं।
तेसिं लाभंतरायंति, तम्हा णत्थिति णो वए ॥ १९ ॥
जे य दाणं पसंसंति, वहमिच्छंति पाणिणं।
जे य णं पडिसेहंति, वित्तिच्छेयं करंति ते ॥ २० ॥
दुहओवि ते ण भासति, अत्थि वा नत्थि वा पुणो।
आयं रयस्स हेच्चा णं निव्वाणं पाउणंति ते ॥ २१ ॥
निव्वाणं परमं बुद्धा, णक्खत्ताणं व चंदिमा।
तम्हा सया जए दंते, निव्वाणं संधए मुणी । २२ ।
वुज्झमाणाण पाणाणं, किच्चताण सकम्मुणा।
आघाइ साहु तं दीवं, पतिट्ठेसा पवुच्चई ॥ २३ ॥
आयुगत्ते सया दन्ते, छिन्नसोए अणासवे।
जे धम्मं सुद्धमक्खाइ, पडिपुन्नमणेलिसं ॥ २४ ।
तमेव अवियाणन्ता, अबुद्धा बुद्धमाणिणो।
बुद्धा मोत्ति य मन्नंता, अंत एते समाहिए ॥ २५ ।
ते य बीओदगं चेव तमुद्दिस्सा य जं कडं।
भोच्चा झाणं झियायंति, अखेयन्ना [अ] समाहिया ॥ २६ ॥

जहा ढंका य कंका य, कुलला, मग्गुका सिही ।
मच्छेसणं झियायंति झाणं ते कलुसाहमं ॥ २७ ॥
एवं तु समणा एगे, मिच्छदिट्ठि अणारिया ।
विसएसणं झियायंति, कंका वा कलुसाहमा ॥ २८ ॥
सुद्धं मग्गं विराहित्ता, इहमेगे उ दुम्मई ।
उम्मग्गगया दुक्खं, घायमेसंति तं तहा ॥ २९ ॥
जहा आसाविणिं नाव जाइअंधो दुरुहिया ।
इच्छई पारमागंतु अंतरा य विसीयइ ॥ ३० ॥
एवं तु समणा एगे, मिच्छदिट्ठी अणारिया ।
सोयं कसिणमावन्ना, आगंतारो महब्भयं ॥ ३१ ॥
इमं च धम्ममायाय, कासवेण पवेदितं ।
तरे सोयं महाघोरं, अत्तत्ताए परिव्वए ॥ ३२ ॥
विरए गामधम्मेहिं, जे केई जगई जहा ।
तेसिं अत्तुवमायाए, थामं कुव्वं परिव्वए ॥ ३३ ॥
अइमाणं च मायं च, तं परिन्नाय पंडिए ।
सव्वमेयं णिराकिच्चा, णिव्वाणं संधए मुणी ॥ ३४ ॥
संध-(इ) ए साहुधम्मं च, पावधम्मं णिराकरे ।
उवहाणवीरिए भिक्खू, कोहं माणं च वज्जए ॥ ३५ ॥
जे य बुद्धा अतिक्कंता, जे य बुद्धा अणागया ।
संति तेसिं पइट्ठाणं, भूयाणं जगई जहा ॥ ३६ ॥
अह णं वयमावन्नं, फासा उच्चावया फुसे ।
ण तेसु विणिहण्णेज्जा वाएण व महागिरि ॥ ३७ ॥
संवुडे से महापन्ने, धीरे दत्तेसणं चरे ।
निव्वुडे कालमाकंखी, एवं (यं) केवलिणामयं ॥ ३८ ॥

॥ इति मोक्षमार्गनामकं एकादशमध्ययनम् ॥

॥ दशवैकालिक सूत्रम् ॥

॥ दुमपुप्फिया पढमं अज्झयणं ॥ १ ॥

धम्मो मंगलमुक्किट्ठं, अहिंसा संजमो तवो।
देवा वि तं नमंसन्ति, जस्स धम्मे सया मणा ॥ १ ॥

जहा दुमस्स पुप्फेसु, भमरो आवियई रसं।
ण य पुप्फं किलामेइ, सो य पीणेई अप्पयं ॥ २ ॥

एमेए समणा मुत्ता, जे लोए संति साहुणो।
विहंगमा व पुप्फेसु, दाण-भत्तेसणा रया ॥ ३ ॥

वयं च वित्तिं लब्भामो, ण य कोइ उवहम्मइ।
अहागडेसु रीयंते, पुप्फेसु भमरा जहा ॥ ४ ॥

महुकारसमा बुद्धा, जे भवन्ति अणिस्सिया
नाणापिंडरया दन्ता, तेण वुच्चन्ति साहुणो त्ति बेमि ॥ ५ ॥

इति दुमपुप्फियानामं पढममज्झयणं समत्तं ॥ १ ॥

॥ अह सामण्णपुव्वयं दुइअं अज्झयणं ॥ २ ॥

कहं नु कुज्जा सामण्णं, जो कामे न निवारए।
पए-पए विसीयंतो, संकप्पस्स वसं गओ ॥ १ ॥

वत्थ-गंध-मलंकारं, इत्थीओ सयणाणि य।
अच्छंदा जे न भुञ्जन्ति, न से "चाइ"-त्ति वुच्चई ॥२ ॥

जे य कंते पिए भोए, लद्धे विपिट्ठि कुव्वई।
साहीणे चयइ भोए, से हु "चाइ"-त्ति वुच्चई ॥३॥

समाइ पेहाए परिव्वयंतो, सिया मणो निस्सरई वहिद्धा।
"न सा महं नोवि अहंपि तीसे" इच्चेव ताओ विणएज्ज राग ॥४॥
आयावयाही ! चय सोगमल्लं, कामें कमाही कमियं खु दुक्खं ॥
छिन्दाहि दासं विणएज्ज रागं, एवं सुही होहिसि सम्पराए ॥५॥

पक्खन्दे जलियं जोइ, धूमकेउं दुरासयं।
नेच्छन्ति वन्तयं भोत्तुं कुले जाया अगन्धणे ॥६॥
धिरत्थु तेऽजसोकामी, जो तं जीवियकारणा।
वन्तं इच्छिसि आवेउं, सेयं ते मरणं भवे ॥७॥
अहं च भोगरायस्स तं चऽसि अंधगवण्हिणो।
मा कुले गंधणा होमो सञ्जमं निहुओ चर ॥८॥
जइ तं काहिसि भावं, जा जा दिच्छसि नारिओ।
वायाविद्धो व्व हडो. अट्ठिअप्पा भविस्ससि ॥९॥
तीसे सो वयणं सोच्चा, संजयाए सुभासियं।
अङ्कुसेण जहा नागो, धम्मे सम्पडिवाइओ ॥१०॥
एवं करेन्ति सम्बुद्धा पण्डिया पवियक्खणा।
विणियट्टन्ति भोगेसु, जहा से पुरिसुत्तमो। त्ति:बेमि ॥११॥

इति सामण्णपुव्वयं नामं अज्झयणं समत्तं ॥२॥

॥ अह खुड्डियायारकहा तइयं अज्झयणं ॥३॥

सञ्जमे सुट्ठिअप्पाणं विप्पमुक्काण ताइणं।
तेसिमेयमणाइण्णं, निग्गंथाण महेसिणं ॥१॥
उद्देसियं[1] कीयगडं[2] नियागं[3] अभिहडाणि[4] य।
राइ भत्ते[5] सिणाणे[6] य, गंध[7] मल्ले[8] य वीयणे[9] ॥२॥
सन्निही गिही-मत्ते य, रायपिण्डे किमिच्छए।
सम्बाहणा-दन्तपहोयणा य, सम्पुच्छणा देह पलोयणाय ॥३॥

अट्ठावए य नालीए, जत्तस्स य धारणट्ठाए ।
तेयिच्छं पाहणा पाए, समारम्भं च जोइणो ॥४॥

सज्जायर-पिण्डं च, आसन्दी पलीयङ्कए ।
गिहन्तरनिसेज्जा य गायस्सुव्वट्टणाणि य ॥५॥

गिहिणो वेआवडियं, जा य आजीववत्तिया ।
तत्तानिव्वुडभोइत्तं, आउरस्सरणाणि य ॥६॥

मूलए सिङ्गवेरे य, उच्छुखण्डे अनिव्वुडे ।
कन्दे मूले य सच्चित्ते, फले बीए य आमए ॥७॥

सोवच्चले सिन्धवे लोणे रोमा-लोणे य आमए ।
सामुद्दे पंसु-खारे य, काला लोणे य आमए ॥८॥

धूवणेत्ति वमणे य, वत्थीकम्मविरेयणे ।
अञ्जणे दन्तवणे य, गायब्भङ्गविभूसणे ॥९॥

सव्वमेयमणाइन्नं, निग्गंथाण महेसिणं ।
सञ्जमम्मि अ जुत्ताणं, लहुभूयविहारिणं ॥१०॥

पञ्चासवपरिण्णाया, तिगुत्ता छसु सञ्जया ।
पञ्चनिग्गहणा धीरा, निग्गन्था उज्जुदंसिणो ॥११॥

आयावयन्ति गिम्हेसु, हेमन्तेसु अवाउडा ।
वासासु पडिसंलीणा, सञ्जया सुसमाहिया ॥१२॥

परीसहरिऊदन्ता, धूअमोहा जिइन्दिया ।
सव्वदुक्खपहीणट्ठा, पक्कमन्ति महेसिणो ॥१३॥

दुक्कराइं करित्ताणं, दुस्सहाइं सहित्तु य ।
केइऽत्थ देवलोएसु, केइ सिज्झन्ति नीरया ॥१४॥

खवित्ता पुव्वकम्माइं, सञ्जमेण तवेण य ।
सिद्धिमग्गमणुप्पत्ता, ताइणो परिणिव्वुडा । त्ति बेमि ॥१५॥

॥ इति खुड्डियायारकहा नामं तइयमज्झयणं समत्तं ॥३॥

॥ अह छज्जीवणियानामं चउत्थं अज्झयणं ॥ ४ ॥

सुयं मे आउसंतेणं भगवया एवमक्खायं, इह खलु छज्जीवणिया नामज्झयणं समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया सुयक्खाया सुपन्नत्ता सेयं मे अहिज्जिउं अज्झयणं धम्मपण्णत्ती ।

कयरा खलु सा छज्जीवणिया नामज्झयणं समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया सुयक्खाया सुमन्नत्ता सेयं मे अहिज्जिउं अज्झयणं धम्मपण्णत्ती ।

इमा खलु सा छज्जीवणिया नामज्झयणं समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेण पवेइया सुयक्खाया सुपन्नत्ता सेयं मे अहिज्जिउ अज्झयणं धम्मपण्णती ।

तं जहा—पुढवि काइया १, आउ-काइया २, तेउ-काइया ३. वाउ-काइया ४, वणस्सइ-काइया ५, तस-काइया ५ । पुढवी चित्तमंतमक्खाया अणेग-जीवा पुढो-सत्ता अन्नत्थ सत्थ-परिणएणं। आऊ चित्तमन्तमक्खाया अणेग-जीवा पुढो-सत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणं । तेऊ चित्तमन्तमक्खाया अणेग-जीवा पुढो-सत्ता अन्नत्थ सत्थ-परिणएणं । वाऊ चित्तमन्त-मक्खाया अणेग-जीवा पुढो-सत्ता अन्नत्थ सत्थ-परिणएणं। वणस्सई चित्तमन्तमक्खाया अणेग-जीवा पुढो सत्ता अन्नत्थ सत्थ- परिणएणं। तं जहा-अग्ग-वीया, मूल-वीया, पोर-वीया; खन्ध-वीया वीय-रुहा, सम्मुच्छिमा. तण-लया वणस्सइ-काइया, सवीया, चित्तमन्तमक्खाया अणेग-जीवा, पुढो-सत्ता, अन्नत्थ सत्थ-परिणएणं। से जे पुण इमे अणेगे वहवे तसा पाणा; तं जहा अंडया, पोयया, जराउया, रसया, संसेइमा, सम्मुच्छिमा,

उब्भिया, उववाइया, जेसिं केसिं चः पाणाणं, अभिक्कन्तं, पडिकन्तं सङ्कुचियं पसारियं रुयं, भन्तं, तसियं, पलाइयं आगइ गइ-विन्नाया, जे य कीऽपयङ्गा जा य कुन्थु पिपीलिया, सव्वे बेइन्दिया, सव्वे तेइन्दिया, सव्वे चउरिन्दिया, सव्वे पञ्चि-न्दिया, सव्वे तिरिक्खजोणिया, सव्वे नेरइया, सव्वे मणुआ, सव्वे देवा, सव्वे पाणा, परमाहम्मिआ, एसो खलु छट्ठी जीव-निकाओ तसकाओ तसकाओ त्ति पवुच्चइ।

इच्चेसिं छण्हं जीवनिकायाणं नेव सयं दण्ड समारम्भेज्जा, नेवन्नेहिं दण्डं समारम्भावेज्जा, दण्डं समारम्भन्तेऽवि अन्ने न समणुजाणेज्जा, जावज्जीवाए, तिविहं तिविहेण मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करन्तंपि अन्नं न समणुजाणामि। तस्स भन्ते पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

पढमे भन्ते! महव्वए पाणाइवायाओ वेरमणं। सव्वं भन्ते! पाणाइवायं पच्चक्खामि। से सुहुमं वा, बायरं वा, तसं वा, थावरं वा, नेव सयं पाणे अइवाएज्जा, नेवऽन्नेहिं पाणे अइवायावेज्जा, पाणे अइवायन्तेऽवि अन्ने न समणुजाणेज्जा, जावज्जीवाए, तिविहं तिविहेण मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करन्तंपि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भन्ते! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि। पढमे भन्ते! महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं ॥ १ ॥

अहावरे दुच्चे भन्ते! महव्वए पाणाइवायाओ वेरमणं। सव्वं भन्ते! मुसावायं पच्चक्खामि। से कोहा वा, लोहा वा, भया वा हासा वा, नेव सयं मुसं वएज्जा नेवऽन्नेहिं

मुस वायावेज्जा, मुसं वयन्तेऽवि अन्ने न समणुजाणेज्जा, जावज्जीवाए, तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करन्तंपि अन्नं न समणुजाणामि । तस्स भन्ते ! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि । दुच्चे भन्ते ! महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं ।।२।।

अहावरे तच्चे भन्ते ! महव्वए अदिन्नादाणाओ वेरमणं । सव्वं भन्ते ! अदिन्नादाणं पच्चक्खामि । से गामे वा, नगरे वा, रण्णे वा, अप्पं वा, बहुं वा अणुं वा, थूलं वा, चित्तमन्तं वा, अचित्तमन्तं वा, नेव सयं अदिन्नं गिण्हेज्जा नेवऽन्नेहिं अदिन्नं गिण्हावेज्जा, अदिन्नं गिण्हन्तेऽवि अन्ने न समणुजाणेज्जा, जावज्जीवाए, तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करन्तंपि अन्नं न समणुजाणामि । तस्स भन्ते ! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि । तच्चे भन्ते ! महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ अदिन्नादाणाओ वेरमणं ।।६।।

अहावरे चउत्थे भन्ते ! महव्वए मेहुणाओ वेरमणं । सव्वं भन्ते ! मेहुणं पच्चक्खामि । से दिव्वं वा, माणुसं वा, तिरिक्खजोणियं वा, नेव सयं मेहुणं सेवेज्जा, नेवऽन्नेहिं मेहुणं सेवावेज्जा, मेहुणं सेवन्तेऽवि अन्ने न समणुजाणेज्जा, जावज्जीवाए, तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करन्तंपि अन्नं न समणुजाणामि । तस्स भन्ते ! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि । चउत्थे भन्ते ! महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ मेहुणाओ वेरमणं ।।४।।

अहावरे पञ्चमे भन्ते! महव्वए परिग्गहाओ वेरमणं। सव्वं भन्ते! परिग्गहं पच्चक्खामि। से अप्पं वा, बहुं वा, अणुं वा, थूलं वा, चित्तमन्तं वा अचित्तमन्तं वा। नेव सयं परिग्गहं परिगिण्हेज्जा, नेवऽन्नेहिं परिग्गहं परिगिण्हावेज्जा परिग्गहं परिगिण्हन्तेऽवि अन्ने न समणुजाणेज्जा, जावज्जीवाए, तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करन्तंपि अन्नं न समणुजाणामि। तस्स भन्ते! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि। पञ्चमे भन्ते! महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं॥ ५॥

अहावरे छट्ठे भन्ते! वए राइ-भोयणाओ वेरमणं। सव्वं भन्ते! राइ भोयणं पच्चक्खामि। से असणं वा, पाणं वा, खाइमं वा, साइमं वा। नेव सयं राइं भुञ्जेज्जा नेवऽन्नेहिं राइं भुञ्जावेज्जा, राइं भुञ्जन्तेऽवि अन्न न समणुजाणेज्जा, जावज्जीवाए, तिविहं तिविहेणं मणेण वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करन्तंपि अन्नं न समणुजाणामि। तस्स भन्ते! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि। छट्ठे भन्ते! वए उवट्ठिओमि सव्वाओ राइ भोयणाओ वेरमणं॥ ६॥ इच्चेयाइं पञ्च महव्वयाइं राइ-भोयण-वेरमण-छट्ठाइं अत्तहियट्ठियाए उवसंपज्जित्ता णं विहरामि॥

से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा, सञ्जय-विरय-पडिहय-पच्चक्खाय-पावकम्मे दिआ वा, राओ वा, एगओ वा, परिसागओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से पुढविं वा, भित्तिं वा, सिलं वा, लेलुं वा, ससरक्खं वा कायं, ससरक्खं वा वत्थं हत्थेण वा, पाएण वा, कट्ठेण वा, किलिंचेण वा, अंगुलियाए वा, सिलागए वा, सिलागहत्थेण वा, न आलिहेज्जा, न विलि-

हेज्जा, न घट्टेज्जा, न भिन्देज्जा अन्नं न आलिहावेज्जा, न विलिहावेज्जा, न घट्टावेज्जा, न भिन्दावेज्जा। अन्नं आलिहन्तं वा, जावज्जीवाए, तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करन्तंपि अन्न न समणुजाणामि। तस्स भन्ते! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥१॥

से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा सज्जय-विरय-पडिहय-पच्चक्खाय-पावकम्मे, दिआ वा, राओ वा, एगओ वा, परिसागओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से उदगं वा, ओसं वा, हिमं वा, महियं वा, करगं वा, हरितणुगं वा, सुद्धोदगं वा, उदउल्लं वा कायं, उदउल्लं वा वत्थं, ससिणिद्धं वा कायं, ससिणिद्धं वा वत्थं, न आमुसेज्जा, न सम्फुसेज्जा, न आवीलेज्जा, न पवीलेज्जा, न अक्खोडेज्जा, न पक्खोडेज्जा, न अयावेज्जा, न पयावेज्जा, अन्नं न आमुसावेज्जा, न सम्फुसावेज्जा, न आवीलावेज्जा न पवीलावेज्जा न अक्खोडावेज्जा, न पक्खोडावेज्जा, न आयावेज्जा, न पयावेज्जा, अन्नं आमुसन्तं वा, सम्फुसन्तं वा, आवीलन्तं वा, पवीलन्तं वा, अक्खोडन्तं वा, पक्खोडन्तं वा, आयावन्तं वा, पयावन्तं वा न समणुजाणेज्जा, जावज्जीवाए, तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारावेमि करन्तंपि अन्नं न समणुजाणामि। तस्स भन्ते! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ २ ॥

से भिक्खू वा, भिक्खुणीवा, सज्जय-विरय-पडिहय-पच्चक्खाय-पावकम्मे, दिआ वा, राओ वा, एगओ वा, परिसागओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, अगणिं वा, इङ्गालं वा, मुम्मुरं वा, अच्चिं, वा, जालं वा अलायं वा, सुद्धागणिं वा,

उक्कं वा, न उज्जेज्जा, न घट्टेज्जा, न भिन्देज्जा, न उज्जालेज्जा, न पज्जालेज्जा, न निव्वावेज्जा, अन्नं न उज्जावेज्जा, न घट्टावेज्जा, न भिन्दावेज्जा, न उज्जालावेज्जा, न पज्जालावेज्जा, न निव्वावेज्जा अन्नं उज्जन्तं वा, घट्टन्तं वा, भिंदन्तं वा, उज्जालन्तं वा, पज्जालन्तं वा, निव्वावन्तं वा, न समणुजाणेज्जा, जावज्जीवाए, तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करन्तंऽपि अन्नं न समणुजाणामि । तस्स भन्ते ! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥३॥

से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा, संजय विरय–पडिहय–पच्चक्खाय- पावकम्मे, दिआ वा, राओ वा, एगओ वा, परिसा-गओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से सिएण वा, विहुयणेण वा, तालियण्टेण वा, पत्तेण वा, पत्तभङ्गेण वा, साहाए वा, साहा-भंगेण वा, पिहुणेण वा, पिहुण–हत्थेण वा, चेलेण वा, चेल-कन्नेण वा, हत्थेण वा, मुहेण वा, अप्पणो वा कायं, वाहिरं वावि पुग्गलं न फुमेज्जा, न वीएज्जा, अन्नं न फुमावेज्जा. न विआवेज्जा, अन्नं फुमन्तं वा वीअंतं वा न समणुजाणेज्जा, जावज्जीवाए, तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करन्तंऽपि अन्नं न समणुजाणामि । तस्स भन्ते ! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥४॥

से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा, संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खाय-पावकम्मे, दिआ वा, राओ वा एगओ वा, परिसा–गओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से बीएसु वा बीय पइट्ठेसु वा, रुढेसु वा. रुढ-पइट्ठेसु वा, जाएसु वा, जाय-पइट्ठेसु वा, हरिएसु वा, हरिय-पइट्ठेसु वा, छिन्नेसु वा, छिन्न-पइट्ठेसु वा, सचित्तेसु वा, सचित्त-कोलपडिनिस्सिएसु वा, न गच्छेज्जा,

न चिट्ठेज्जा, न निसीएज्जा, न तुअट्टेज्जा, अन्नं न गच्छावेज्जा, न चिट्ठावेज्जा. न निसीयावेज्जा, न तुयट्टावेज्जा, अन्नं गच्छन्तं वा, चिट्ठन्तं वा, निसीयन्तं वा, तुयट्टन्तं वा न समणुजाणेज्जा, जावज्जीवाए, तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करन्तंपि अन्नं न समणुजाणामि। तस्स भन्ते! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि। ५॥

से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा, संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खाय-पावकम्मे, दिआ वा, राओ वा, एगओ वा, परिसा-गओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से कीडं वा, पयङ्गं वा, कुन्थुं वा, पिपीलियं वा, हत्थंसि वा, पायंसि वा, बाहुंसि वा, उरुंसि वा, उदरंसि वा, सीसंसि वा, वत्थंसि वा, [पडिग्गहंसि वा; कंबलंसि वा, पायपुच्छणंसि वा,] रयहरणंसि वा, गुच्छगंसि वा, उंडगंसि वा, दण्डगंसि वा, पीढगंसि वा, फलगंसि वा, सेज्जंसि वा, संथारगंसि वा, अन्नयरंसि वा, तह-प्पगारे उवगरणजाए तओ सज्जयामेव पडिलेहिय-पडिलेहिय पमज्जिअ-पमज्जिअ एगन्तमवणेज्जा, नो णं सङ्घायमावज्जेज्जा ॥६॥

अजयं चरमाणो अ, पाणभूयाइं हिंसइ।
बन्धइ पावयं कम्मं तं से होइ कडुयं फलं ॥१॥
अजयं चिट्ठमाणो अ, पाणभूयाइं हिंसइ।
बन्धइ पावयं कम्मं तं से होइ कडुयं फलं ॥२॥
अजयं आसमाणो अ, पाणभूयाइं हिंसइ।
बन्धइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं ॥३॥
अजयं सयमाणो अ, पाणभूयाइं हिंसइ।
बन्धइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं ॥४॥

अजयं भुञ्जमाणो अ, पाणभूयाइं हिंसइ।
बन्धइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं ॥५॥

अजयं भासमाणो अ, पाणभूयाइं हिंसइ।
बन्धइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं ॥६॥

कहं चरे कहं चिट्ठे, कहमासे कहं सए।
कहं भुञ्जन्तो भासन्तो, पावकम्मं न बन्धइ ॥७॥

जयं चरे जयं चिट्ठे, जयमासे जयं सए।
जयं भुञ्जन्तो भासंतो, पावकम्मं न बन्धइ ॥८॥

सव्व-भूयप्प-भूयस्स सम्मं भूयाइ पासओ।
पिहिआसवस्स दन्तस्स पावकम्मं न बन्धइ ॥९॥

पढमं नाणं तओ दया, एवं चिट्ठइ सव्व संजए।
अन्नाणी किं काही, किंवा नाही य सेयपावगं ॥१०॥

सोच्चा जाणइ कल्लाणं सोच्चा जाणइ पावगं।
उभयंऽपि जाणइ सोच्चा, जं सेयं तं समायरे ॥११

जो जीवेऽवि न याणइ अजीवेऽवि न याणइ।
जीवाजीवे अयाणन्तो, कहं सो नाहिउ संजमं ॥१२॥

जो जीथेऽवि वियाणइ अजीवेऽवि वियाणइ।
जीवाजीवे वियाणन्तो, सो हु नाहिउ संजमं ॥१३॥

जया जीवमजीवे य, दोवि एए वियाणइ।
तया गइं बहुविहं, सव्वजीवाण जाणइ ॥१४॥

जया गइं बहुविहं, सव्वजीवाण जाणइ।
तया पुण्णं च पावं च, बन्धं मुक्खं च जाणइ ॥१५॥

जया पुण्णं च पावं च, बन्धं मुक्खं च जाणइ।
तया निव्विन्दए भोए, जे दिव्वे जे य माणुसे ॥१६॥

न चिट्ठेज्जा, न निसीएज्जा, न तुअट्टेज्जा, अन्नं न गच्छावेज्जा, न चिट्ठावेज्जा. न निसीयावेज्जा, न तुयट्टावेज्जा, अन्नं गच्छन्तं वा, चिट्ठन्तं वा, निसीयन्तं वा, तुयट्टन्तं वा न समणुजाणेज्जा, जावज्जीवाए, तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करन्तंपि अन्नं न समणुजाणामि। तस्स भन्ते! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि। ५॥

से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा, संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खाय-पावकम्मे, दिआ वा, राओ वा, एगओ वा, परिसा-गओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से कीडं वा, पयङ्गं वा, कुन्थुं वा, पिपीलियं वा, हत्थंसि वा, पायंसि वा, वाहुंसि वा, उरुंसि वा, उदरंसि वा, सीसंसि वा, वत्थंसि वा, [पडिग्गहंसि वा; कंवलंसि वा, पायपुच्छणंसि वा,] रयहरणंसि वा, गुच्छगंसि वा, उंडगंसि वा, दण्डगंसि वा, पीढगंसि वा, फलगंसि वा, सेज्जंसि वा, संथारगंसि वा, अन्नयरंसि वा, तह-प्पमारे उवगरणजाए तओ सञ्जयामेव पडिलेहिय-पडिलेहिय पमज्जिअ-पमज्जिअ एगन्तमवणेज्जा, नो णं सङ्घायमावज्जेज्जा ॥६॥

अजयं चरमाणो अ, पाणभूयाइं हिंसइ।
वन्धइ पावयं कम्मं तं से होइ कडुयं फलं ॥१॥
अजयं चिट्ठमाणो अ, पाणभूयाइं हिंसइ।
वन्धइ पावयं कम्मं तं से होइ कडुयं फलं ॥२॥
अजयं आसमाणो अ, पाणभूयाइं हिंसइ।
वन्धइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं ॥३॥
अजयं सयमाणो अ, पाणभूयाइं हिंसइ।
वन्धइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं ॥४॥

अजयं भुञ्जमाणो अ, पाणभूयाइं हिंसइ।
बन्धइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं ॥५॥

अजयं भासमाणो अ, पाणभूयाइं हिंसइ।
बन्धइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं ॥६॥

कहं चरे कहं चिट्ठे, कहमासे कहं सए।
कहं भुञ्जन्तो भासन्तो, पावकम्मं न बन्धइ ॥७॥

जयं चरे जयं चिट्ठे, जयमासे जयं सए।
जयं भुञ्जन्तो भासंतो, पावकम्मं न बन्धइ ॥८॥

सव्व-भूयप्प-भूयस्स सम्मं भूयाइ पासओ।
पिहिआसवस्स दन्तस्स पावकम्मं न बन्धइ ॥९॥

पढमं नाणं तओ दया, एवं चिट्ठइ सव्व संजए।
अन्नाणी किं काही, किंवा नाही य सेयपावगं ॥१०॥

सोच्चा जाणइ कल्लाणं सोच्चा जाणइ पावगं।
उभयंऽपि जाणइ सोच्चा, जं सेयं तं समायरे ॥११

जो जीवेऽवि न याणइ अजीवेऽवि न याणइ।
जीवाजीवे अयाणन्तो, कहं सो नाहिउ संजमं ॥१२॥

जो जीथेऽवि वियाणइ अजीवेऽवि वियाणइ।
जीवाजीवे वियाणन्तो, सो हु नाहिउ संजमं ॥१३॥

जया जीवमजीवे य, दोवि एए वियाणइ।
तया गइं बहुविहं, सव्वजीवाण जाणइ ॥१४॥

जया गइं बहुविहं, सव्वजीवाण जाणइ।
तया पुण्णं च पावं च, बन्धं मुक्खं च जाणइ ॥१५॥

जया पुण्णं च पावं च, बन्धं मुक्खं च जाणइ।
तया निव्विन्दए भोए, जे दिव्वे जे य माणुसे ॥१६॥

जया निव्विन्दए भोए, जे दिव्वे जे य माणुसे ।
तया चयइ संजोगं, सब्भिन्तर च वाहिरं ॥१७॥

जया चयइ संजोगं, सब्भिन्तर च वाहिरं ।
जया मु डे भवित्ताणं, पव्वइए अणगारियं ॥१८॥

जया मु डे भवित्ताणं, पव्वइए अणगारियं ।
जया सम्वरमुक्किट्ठं, धम्मं फासे अणुत्तरं ॥१९॥

जया सम्वरमुक्किट्ठं, धम्मं फासे अणुत्तरं ।
तया घुणइ कम्म-रयं, अवोहि-कलुसकड ॥२०॥

जया धणुइ कम्म-रयं, अवोहि-कलुसंकडं ।
तया सव्वत्त-गं नाणं, दंसणं चाभिगच्छइ ।२१॥

जया सव्वत्त-गं नाणं, दंसणं चाभिगच्छइ ।
तया लोगमलोगं च, जिणो जाणइ केवली ॥२२।।

जया लोगमलोगं च, जिणो जाणइ केवली ।
तया जोगे निरुम्भित्ता, सेलेसिं पडिवज्जइ ॥२३॥

जया जोगे निरुम्भित्ता, सेलेसिं पडिवज्जइ ।
तया कम्मं खवित्ताणं, सिद्धिं गच्छइ नीरओ ॥२४॥

जया कम्मं खवित्ताणं, सिद्धिं गच्छइ नीरओ ।
तया लोग-मत्थय-त्थो, सिद्धो हवइ सासओ ॥२५॥

सुह-सायगस्स समणस्स, सायाउलगस्स निगामसाइस्स ।
उच्छोलणा-पहोअस्स, दुल्लहा सुगइ तारिसगस्स ॥२६॥

तवो गुण-पहाणस्स, उज्जुमइ खन्ति-संजम-रयस्स ।
परीसहे जिणन्तस्स, सुलहा सुगई तारिसगस्स ॥२७॥

(पच्छा वि ते पयाया खिप्पं गच्छन्ति अमर-भवणाइं ।
जेसि पिओ तवो संजमो अ, खंति अ बम्भचेरं च) ॥२८॥

इच्चेयं छज्जीवणिअं, सम्मद्दिट्ठी सया जए ।
दुल्लहं लहित्तु सामण्णं, कम्मुणा न विराहिज्जासि ॥
त्ति बेमि ॥२६॥

॥ इति छज्जीवणिआ णामं चउत्थं अज्झयणं समत्तं ॥४॥

अह पिण्डेसणा णाम पञ्चमज्झयणं ॥५॥

सम्पत्ते भिक्ख-कालम्मि, असम्भन्तो अमुच्छिओ ।
इमेण कम्म-जोगेण, भत्त पाणं गवेसए ॥१॥
से गामे वा नगरे वा, गोअरग्ग गओ मुणी ।
चरे मन्दमणुव्विग्गो, अव्वक्खित्तेण चेयसा ॥२॥
पुरओ जुग मायाए, पेहमाणो महिं चरे ।
वज्जन्तो बीय-हरियाइं, पाणे य दगं मट्टिअं ॥३॥
ओवायं विसमं खाणु, विज्जलं परिवज्जए ।
सङ्कमेण न गच्छेज्जा, विज्जमाणे परक्कमे ॥४॥
पवडन्ते व से तत्थ, पक्खलन्ते व संजए ।
हिंसेज्ज पाण-भूयाइं, तसे अदुव थावरे ॥५॥
तम्हा तेण न गच्छेज्जा, संजए सु-समाहिए ।
सइ अण्णेण मग्गेण, जयमेव परक्कमे ॥६॥
इंगालं छारियं रासिं, तुस रासिं च गोमयं ।
ससरक्खेहिं पाएहिं सञ्जओ तं नइक्कमे ॥७॥
न चरेज्ज वासे वासन्ते, महियाए व पडन्तिए ।
महा-वाए व वायन्ते तिरिच्छ सम्पाइमेसु वा ॥८॥
न चरेज्ज वेस-सामन्ते, बम्भचेर-वसाणुए ।
बम्भयारिस्स, दन्तस्स, होज्जा तत्थ विसोहिआ ॥९॥
अणाययणे चरन्तस्स, संसग्गीए अभिक्खणं ।
होज्ज वयाणं पीला, सामण्णम्मि असंसओ ॥१०॥

तम्हा एअं विआणित्ता, दोसं दुग्गइ-वड्ढणं।
वज्जए वेस-सामन्तं, मुणी एगन्तमस्सिए ॥११॥

साणं सूइअं गाविं, दित्तं गोणं हयं गयं।
संडिब्भं कलहं जुद्धं, दूरओ परिवज्जए ॥१२॥

अणुन्नए नावणए, अप्पहिट्ठे अणाउले।
इन्दियाइं जहाभागं, दमइत्ता मुणी चरे ॥१३॥

दवदवस्स न गच्छेज्जा, भासमाणो य गोयरे।
हसन्तो नाभिगच्छेज्जा, कुलं उच्चावयंसया ॥१४॥

आलोअं थिग्गलं दारं, सन्धि-दग-भवणाणि य।
चरन्तो न विणिज्झाए, संङ्कठाणं विवज्जए ॥१५॥

रन्ना गिहवईणं च, रहस्सारक्खियाणि य।
संकिलेस-करं ठाणं, दूरओ परिवज्जए ॥१६॥

पडिकुट्ठं कुलं न पविसे, मामगं परिवज्जए।
अचियत्तं कुलं न पविसे, चियत्तं पविसे कुलं ॥१७॥

साणी-पावार-पिहिअं, अप्पणा नावपङ्गुरे।
कवाडं नो पणुलेज्जा, उग्गहंसी अजाइया ॥१८॥

गोअरग्ग-पविट्ठो अ, वच्च मुत्तं न धारए।
ओगासं फासुयं नच्चा, अणुन्नवि य वोसिरे ॥१९॥

नीयं दुवारं तमसं, कुट्ठगं परिवज्जए।
अचक्खु-विसओ जत्थ, पाणा दुप्पडिलेहगा ॥२०॥

जत्थ पुप्फाइं बीआइं, विप्पइन्नाइं कोट्ठए।
अहुणोवलित्तं उल्लं, दट्ठूणं परिवज्जए ॥२१॥

एलगं दारगं साणं, वच्छगं वावि कुट्ठए।
उल्लंघिआ न पविसे विउहित्ताण व संजए ॥२२॥

असंसत्तं पलोएज्जा नाइदूरावलोअए।
उप्फुल्लं न विनिज्झाए, नियट्टेज्ज अयंपिरो ॥२३॥

अइभूमिं न गच्छेज्जा गोअरग्ग-गओ मुणी।
कुलस्स भूमिं जाणित्ता, मिअं भूमिं परक्कमे ॥२४॥

तत्थेव पडिलेहेज्जा भूमिभागं विअक्खणो।
सिणाणस्स य वच्चस्स, संलोगं परिवज्जए ॥२५॥

दग-मट्टिअआयाणे, बीआणि हरियाणि य।
परिवज्जन्तो चिट्ठेज्जा सव्विन्दिय समाहिए ॥२६॥

तत्थ से चिट्ठमाणस्स, आहारे पाण भोअणं।
अकप्पिअं न इच्छेज्जा पडिगाहेज्ज कप्पिअं ॥२७॥

आहारन्ती सिआ तत्थ, परिसाडेज्ज भोअणं।
दिन्तियं पडिआइक्खे, "न मे कप्पइ तारिसं" ॥२८॥

सम्मद्दमाणी पाणाणि, बीआणि हरिआणी य।
असंजम-करिं नच्चा, तारिसिं परिवज्जए ॥२९॥

साहट्टु निक्खिवित्ता णं सचित्तं घट्टियाणि य।
तहेव समणट्ठाए, उदगं सम्पणुल्लिया ॥३०॥

ओगाहइत्ता चलइत्ता आहारे पाण भोअणं।
दिन्तियं पडियाइक्खे "न मे कप्पइ तारिसं" ॥३१॥

पुरेकम्मेण हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा।
दिन्तियं पडियाइक्खे, "न मे कप्पइ तारिसं" ॥३२॥

एवं उदउल्ले ससिणिद्धे, ससरक्खे मट्टिआऊसे।
हरिआले हिङ्गुलए, मणोसिला अञ्जणे लोणे ॥३३॥

गेरुअ वन्निअ सेढिअ, सोरट्ठियपिट्ठकुक्कुसकए य।
उक्किट्ठमसंसट्ठे, संसट्ठे चेव बोद्धव्वे ॥३४॥

असंसट्ठेण हत्थेणं, दव्वीए भायणेण वा ।
दिज्जमाणं न इच्छेज्जा, पच्छाकम्मं जहिं भवे ॥३५॥

संसट्ठेण य हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा ।
दिज्जमाणं पडिच्छेज्जा, जं तत्थेसणियं भवे ॥३६॥

दुण्हं तु भुञ्जमाणाणं, एगो तत्थ निमन्तए ।
दिज्जमाणं न इच्छेज्जा, छन्दं से पडिलेहए ॥३७॥

दुण्हं तु भुञ्जमाणाणं, दोवि तत्थ निमन्तए ।
दिज्जमाणं पडिच्छेज्जा, जं तत्थेसणियं भवे ॥३८॥

गुव्विणीए उवण्णत्थं, विविहं पाण-भोअणं ।
भुञ्जमाणं विवज्जेज्जा, भुत्त-सेसं पडिच्छए ॥३९॥

सिआ य समणट्ठाए गुव्विणी कालमासिणी ।
उट्ठिआ वा निसीएज्जा, निसन्ना वा पुणुट्ठए ॥४०॥

तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाणं अकप्पियं ।
दिन्तियं पडिआइक्खे, "न मे कप्पइ तारिसं" ॥४१॥

थणगं पिज्जमाणी, दारगं वा कुमारियं ।
तं निक्खिवित्तु रोयन्तं, आहारे पाण-भोयणं ॥४२॥

तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाणं अकप्पियं ।
दिन्तियं पडिआइक्खे, "न मे कप्पइ तारिसं" ॥४३॥

जं भवे भत्तपाणं तु, कप्पाकप्पम्मि संङ्किय ।
दिन्तियं पडिआइक्खे, "न मे कप्पइ तारिसं" ॥४४॥

दग-वारेण पिहियं, नीसाए पीढएण वा ।
लोढेण वा विलेवेण, सिलेसेण वा केणइ ॥४५॥

तं च उब्भिन्दिया देज्जा, समणट्ठाए व दावए ।
दिन्तियं पडिआइक्खे, "न मे कप्पइ तारिसं" ॥४६॥

असणं पाणगं वावि, खाइमं साइमं तहा।
जं जाणेज्जा सुणेज्जा वा, "दाणट्ठा पगडं इमं" ॥४७॥

तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाणं अकप्पियं।
दिन्तियं पडिआइक्खे, "न मे कप्पइ तारिसं" ॥४८॥

असणं पाणगं वावि, खाइमं साइमं तहा।
जं जाणेज्जा सुणेज्जा वा, "पुण्णट्ठा पगडं इमं" ॥४९॥

तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाणं अकप्पियं।
दिन्तियं पडिआइक्खे, "न मे कप्पइ तारिसं" ॥५०॥

असणं पाणगं वावि, खाइमं साइमं तहा।
जं जाणेज्जा सुणेज्जा वा, "वणिमट्ठा पगडं इमं" ॥५१॥

तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाणं अकप्पियं।
दिन्तियं पडिआइक्खे, "न मे कप्पई तारिसं" ॥५२॥

असणं पाणगं वावि, खाइमं साइमं तहा।
जं आणेज्जा सुणेज्जा वा, "समणट्ठा पगडं इमं" ॥५३॥

तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाणं अकप्पियं।
दिन्तियं पडिआइक्खे, "न मे कप्पइ तारिस" ॥५४॥

उद्देसियं कीयगडं पूई-कम्मं च आहडं।
अज्झोयरपामिच्चं, मीस जायं विवज्जए ॥५५॥

उग्गमं से य पुच्छेज्जा, कस्सट्ठा केण वा कडं।
सुच्चा निस्सङ्कियं सुद्धं, पडिगाहेज्ज संजए ॥५६॥

असणं पाणगं वावि, खाइमं साइमं तहा।
पुप्फेसु हुज्ज उम्मीसं, बीएसु हरिएसु वा ॥५७॥

तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण-अकप्पियं।
दिन्तियं पडिआइक्खे, "न मे कप्पई तारिसं" ॥५८॥

असणं पाणगं वावि, खाइमं साइमं तहा।
उदगम्मि हुज्ज निक्खित्तं, उत्तिङ्ग-पणगेसु वा ॥५९॥

तं भवे भत्तपाणं तु, सञ्जयाणं अकप्पियं।
दिन्तियं पडिआइक्खे, "न मे कप्पइ तारिसं" ॥६०॥

असणं पाणगं वावि, खाइमं साइमं तहा।
अगणिम्मि होज्जा निक्खित्तं, तं च संघट्टिआ दए ॥६१॥

तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाणं अकप्पियं।
दिन्तियं पडिआइक्खे, "न मे कप्पइ तारिसं ॥६२॥

एवं उस्सक्किया ओसक्किया, उज्जालिआ पज्जालिआ निव्वाविया।
उस्सिञ्चिया निस्सिञ्चिया उववत्तिया ओवारिया दए ॥६३॥

तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पियं।
दिन्तियं पडिआइक्खे, "न मे कप्पइ तारिसं" ॥६४॥

हुज्ज कट्ठं सिलं वावि, इट्टालं वावि एगया।
ठवियं संकमट्ठाए, तं च हुज्ज चलाचलं ॥६५॥

न तेण भिक्खू गच्छेज्जा, दिट्ठो तत्थ असंजमो।
गम्भीरं झुसिरं चेव, सव्विन्दिअ-समाहिए ॥६६॥

निस्सेणिं फलगं पीढं, उस्सवित्ताण मारुहे।
मंचं कीलं च पासाय, समणट्ठाए व दावए ॥६७॥

दुरुहमाणी पवडेज्जा (पडिवज्जा), हत्थं पायं व लूसए।
पुढवी-जीवेऽवि हिंसेज्जा, जं य त-न्निस्सिआ जगे ॥६८॥

एयारिसे महा-दोसे, जाणिऊण महेसिणो।
तम्हा मालोहडं भिक्खं, न पडिगिण्हन्ति संजया ॥६९॥

कन्दं मूलं पलम्बं वा, आमं छिन्नं च सन्निरं।
तुम्बागं सिङ्गबेरं च, आमगं परिवज्जए ७०॥

तहेव सत्तु-चुन्नाइं, कोल-चुन्नाइं आवणे ।
सक्कुलिं फाणियं पूयं, अन्नं वावि तहाविहं ॥७१॥

विक्कायमाणं पसढं, रएण परिफासियं ।
दिन्तियं पडिआइक्खे, "न मे कप्पइ तारिसं" ॥७२॥

बहु-अट्ठिअं पुग्गलं, अणिमिसं वा बहु-कंटयं ।
अत्थियं तिन्दुयं बिल्लं, उच्छु-खंड व सिम्बलिं ॥७३॥

अप्पे सिया भोयण-जाए, बबु उज्झिय-धम्मिए ।
दिन्तियं पडिआइक्खे, ',न मे कप्पइ तारिसं" ॥७४॥

तहेवुच्चावयं पाणं, अदुवा वार-धोयणं ।
संसेइमं चाउलोदगं, अहुणा-धोयं विवज्जए ॥७५॥

जं जाणेज्ज चिराधोयं, मईए दंसणेण वा ।
पडिपुच्छिऊण सुच्चा वा, जं च निस्सङ्कियं भवे ॥७६॥

अजीवं पडिणयं नच्चा, पडिगाहेज्ज संजए ।
अहसङ्कियं भवेज्जा, आसाइत्ताण रोअए ॥७७॥

"थोवमासायणट्ठाए, हत्थगम्मि दलाहि मे ।
मा मे अच्चम्बिलं पुयं, नालं तिण्हं विणित्तए ॥७८॥

तं च अच्चम्बिल पूई, नालं तिण्हं विणित्तए ।
दिन्तियं पडिआइक्खे, "न मे कप्पइ तारिसं" ॥७९॥

तं च हुज्ज अकामेण, विमणेण पडिच्छियं ।
तं अप्पणा न पिवे, नोवि अन्नस्स दावए ॥८०॥

एगंतमवक्कमित्ता, अचित्तं पडिलेहिया ।
जयं पडिट्ठवेज्जा, परिट्ठप्प पडिक्कमे ॥८१॥

सिया य गोयरग्ग गओ, इच्छेजा परिभुत्तुयं ।
कुट्ठगं भित्ति-मूलं वा, पडिलेहित्ताण फासुयं ॥८२॥

अणुन्नवित्तु मेहावी, पडिच्छिन्नम्मि संवुडे।
हत्थगं सम्पमज्जित्ता, तत्थ भुञ्जेज्ज संजए ॥८३॥

तत्थ से भुञ्जमाणस्स अट्ठियं कंटओ सिआ।
तण-कट्ठ-सक्करं वावि, अन्नं वावि तहाविहं ॥८४॥

तं उक्खिवित्तु न निक्खिवे, आसएण न छड्डए।
हत्थेण तं गहेऊण, एगन्तमवक्कमे ॥८५॥

एगन्तमवक्कमित्ता, अचित्तं पडिलेहिया।
जयं परिट्ठवेज्जा, परिठ्ठप्प पडिक्कमे ॥८६॥

सिया य भिक्खु इच्छेज्जा, सिज्जामागम्म भुत्तुयं।
स पिंडपायमागम्म, उंडुयं पडिलेहिया ॥८७॥

विणएण पविसित्ता, सगासे गुरुणो मुणी।
इरियावहियमायाय, आगओ य पडिक्कमे ॥८८॥

आभोइत्ताण नीसेसं, अइयारं च जहक्कमं।
गमणागमणे चेव, भत्तपाणे व संजए ॥८९॥

उज्जु-प्पन्नो अणुव्विग्गो, अवक्खित्तेण चेअसा।
आलोए गुरुसगासे, जं जहा गहियं भवे ॥९०॥

न सम्ममालोइयं हुज्जा, पुव्विं पच्छा व जं कडं।
पुणो पडिक्कमे तस्स, वोसट्ठो चिन्तए इमं ॥९१॥

अहो! जिणेहिं असावज्जा, वित्ती साहूण देसिया।
मुक्ख-साहूणहेउस्स, साहु-देहस्स धारणा ॥९२॥

णमुक्कारेण पारित्ता, करित्ता जिण-सन्थवं।
सज्झायं पट्ठवित्ताणं, वीसमेज्ज खणं मुणी ॥९३॥

वीसमन्तो इमं चिन्ते, हियमट्ठं लाभमट्ठिओ।
जइ मे अणुग्गहं कुज्जा, साहु हुज्जामि तारिओ ॥९४॥

साहवो तो चिअत्तेणं, निमन्तेज्ज जहक्कमं ।
जइ तत्थ केइ इच्छेज्जा, तेहिं सद्धिं तु भुञ्जए ॥९५॥

अह कोई न इच्छेज्जा तओ भुञ्जेज्ज एगओ ।
आलोए भायणे साहु, जयं अपरिसाडिअं ॥९६॥

तित्तगं च कडुयं च कसायं अंविलं च महुरं लवणं वा ।
एयलद्धमन्नत्थ-पउत्तं, महु-घयं व भुञ्जेज्ज संजए ॥९७॥

अरसं विरसं वावि, सूइयं वा असूइयं ।
उल्लं वा जइ वा सुक्कं, मंथु-कुम्मास-भोअणं ॥९८॥

उप्पण्णं नाइहीलेज्जा, अप्पं वा बहु फासुयं ।
मुहा-लद्धं मुहा-जीवी, भुंजेज्जा दोस-वज्जियं ॥९९॥

दुल्लहाओ मुहा-दाई, मुहा-जीवी वि दुल्लहा ।
मुहा-दाई मुहा-जीवी, दोवि गच्छन्ति सुग्गइं ॥ त्ति बेमि ॥१००॥

॥ इति पिण्डेसणाए पढमो उद्देसो समत्तो ॥१॥

॥ अह पिण्डेसणाए बीओ उद्देसो ॥१॥

पडिग्गहं संलिहित्ताणं, लेव-मायाइ संजए ।
दुगंधं वा सुगंधं वा, सव्वं भुंजे न छड्डुए ॥१॥

सेज्जा निसीहियाए, समावन्नो य गोयरे ।
अयावयट्ठा भुच्चाणं जेइ तेणं न संथरे ॥२॥

तओ कारण-समुपण्णे, भत्तपाणं गवेसए ।
विहिणा पुव्व-उत्तेण, इमेणं उत्तरेण य ॥३॥

कालेण निक्खमे भिक्खू, कालेण य पडिक्कमे ।
अकालं च विवज्जत्ता, काले कालं समायरे ॥४॥

"अकाले चरसि भिक्खू, कालं न पडिलेहसि ।
अप्पाणं च किलामेसि, सन्निवेसं च गरिहसि" ॥५॥

सइ काले चरे भिक्खू, कुज्जा पुरिसकारियं ।
"अलाभो"-त्ति न साएज्जा, "तवो"-त्ति अहियासए ॥६॥

तहेवुच्चावया पाणा, भत्तट्ठाए समागया ।
तं उज्जुयं न गच्छेज्जा, जयमेव परक्कमे ॥७॥

गोयरग्ग-पविट्ठो य, न निसीएज्ज कत्थइ ।
कहं च न पबन्धेज्जा, चिट्ठित्ताण व संजए ॥८॥

अग्गलं फलिहं दारं; कवाडं वावि संजए ।
अवलंबिआ न चिट्ठेज्जा, गोयरग्ग-गओ मुणी ॥९॥

समणं माहणं वावि, किविणं वा वणीमगं ।
उवसंकमन्तं भत्तट्ठा, पाणट्ठाए व संजए ॥१०॥

तमइक्कमित्तु न पविसे, न चिट्ठे चक्खू-गोयरे ।
एगंतमवक्कमित्ता, तत्थ चिट्ठेज्ज संजए ॥११॥

वणीमगस्स वा तस्स, दायगस्सुभयस्स वा ।
अप्पत्तियं सिया हुज्जा, लहुत्तं पवयणस्स वा ॥१२॥

पडिसेहिए व दिन्ने वा, तओ तम्मि नियत्तिए ।
उवसंकमेज्ज भत्तट्ठा, पाणट्ठाए व संजए ॥१३॥

उप्पलं पउमं वावि, कुमुयं वा मगदन्तियं ।
अन्नं वा पुप्फ-सच्चित्तं, तं च संलुंचिया दए ॥१४॥

तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पियं ।
दिन्तियं पडिआइक्खे, "न मे कप्पइ तारिसं" ॥१५॥

उप्पलं पउमं वावि कुमुयं या मगदन्तियं ।
अन्नं वा पुप्फ-सच्चितं, तं च सम्मद्दिया दए ॥१६॥

तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पियं ।
दिन्तियं पडिआइक्खे, "न मे कप्पइ तारिसं" ॥१७॥

उप्पलं पउमं वावि, कुमुयं वा मग्गदन्तियं ।
अन्नं वा पुप्फ-सच्चित्तं, तं च संघट्टिआ दए ॥१८॥

तं भवे भत्तापाणं तु, संजयाण अकप्पियं ।
दिन्तियं पडिआइक्खे, "न मे कप्पइ तारिसं" ॥१९॥

सालुयं वा विरालंय, कुमुयं उप्पल-नालियं ।
मुणालियं सासव-नालियं, उच्छुखंडं अनिव्वुडं ॥२०॥

तरुणगं वा पवालं, रुक्खस्स तणगस्स वा ।
अन्नस्स वावि हरिअस्स, आमगं परिवज्जए ॥२१॥

तरुणियं वा छिवाडिं, आमियं भजियं सयं ।
दिन्तियं पडिआइक्खे, "न मे कप्पइ तारिसं" ॥२२॥

तहा कोलमणुस्सिन्नं; वेलुयं कासव-नालियं ।
तिल-पप्पडगं नीमं, आमगं परिवज्जए ॥२३॥

तहेव चाउलं पिट्ठं, वियडं वा तत्तनिव्वुड ।
तिल-पिट्ठं पूइ-पिन्नागं, आमगं परिवज्जए ॥२४॥

कविट्ठं माउलिंगं च, मूलगं मूलगत्तियं ।
आमं अ-सत्थ-परिणयं, मणसा वि न पत्थए ॥२५॥

तहेव फल-मंथूणि, वीयमंथूणि जाणिआ ।
विहेलगं पियालं च, आमगं परिवज्जए ॥२६॥

समुआणं चरे भिक्खू, कुलमुच्चावयं सया
नीयं कुलमइक्कम्म, ऊसढं नाभिधारए ॥२७॥

अदीणा वित्तिमेसेज्जा, न विसीएज्ज पंडिए ।
अमुच्छिओ भोयणम्मि; माय-ण्णे एसणा-रए ॥२८॥

"वहु' परघरे अत्थि, विविहं खाइमं-साइमं" ।
न तत्थ पंडिओ कुप्पे; इच्छा देज्ज परो न वा ॥२६॥

सयणासण-वत्थं वा, भत्तं पाणं च संजए।
अदिन्तस्स न कुप्पेज्जा, पच्चक्खे वि य दीसओ ॥३०॥

इत्थिअं पुरिसं वावि, डहरं वा महल्लगं ।
वंदमाणं न जाएज्जा, नो अ णं फरुसंवए ॥३१॥

जे न वंदे न से कुप्पे, वंदिओ न समुक्कसे ।
एवमन्ने समाणस्स, सामण्णमणुचिट्ठइ ॥३२॥

सिआ एगइओ लद्धुं, लोभेण विणिगूहइ ।
"मामेयं दाइयं संतं, दट्ठूणं सयमायए" ॥३३॥

अत्तट्ठा गुरुओ लुद्धो, वहुपावं पकुव्वइ ।
दुत्तो सओ अ से होइ, निव्वाणं च न गच्छइ ॥३४॥

सिआ एगइओ लध्धुं, विविहं पाण-भोअणं ।
भद्दगं भद्दगं भुच्चा, विवन्नं विरसमाहरे ॥३५॥

जाणंतु ता इमे समणा, "आययट्ठी अयं मुणी" ।
संतुट्ठो सेवए पंतं, लूह-वित्ती सु तोसओ ॥३६॥

पूयणट्ठा जसोकामी, माण सम्माण-कामए ।
वहुं पसवइ पावं, माया-सल्लं च कुव्वइ ॥३७॥

सुरं वा मेरगं वावि अन्नं वा मज्जगं रसं ।
ससक्खं न पिवे भिक्खू, जसं सारक्खमप्पणो ॥३८॥

पियए एगओ तेणो, "न मे कोइ विआणइ" ।
तस्स पस्सह दोसाइं, नियडिं च सुणेह मे ॥३९॥

वड्ढइ सुंडिया तस्स, माया-मोसं च भिक्खुणो ।
अयसो य अनिव्वाणं, सययं च असाहुया ॥४०॥

निच्चुविग्गो जहा तेणो, अत्तकम्मेहिं दुम्मइ ।
तारिसो मरणंतेऽवि, न आराहेइ संवरं ॥४१॥

आयरिए नाराहेइ, समणे यावि तारिसो ।
गिहत्थाऽवि णं गरिहन्ति, जेण जाणन्ति तारिसं ॥४२॥

एवं तु अगुणप्पेही, गुणाणं च विवज्जए (ओ) ।
तारिसो मरणंतेऽवि, ण आराहेइ संवरं ॥४३॥

तवं कुव्वइ मेहावि, पणीयं वज्जए रसं
मज्ज-प्पमाय-विरओ, तवस्सी अइउक्कसो ॥४४॥

तस्स पस्सह कल्लाणं, अणेग-साहु-पूइयं ।
विउलं अत्थ-संजुत्तं, कित्तइस्सं सुणेह मे ॥४५॥

एवं तु गुण-प्पेही, अगुणाणं च विवज्जए ।
तारिसो मरणंतेऽवि, आराहेइ संवरं ॥४६॥

आयरिए आराहेइ, समणे यावि तारिसो ।
गिहत्थाऽवि णं पूयंति, जेण जाणंति तारिसं ॥४७॥

तव-तेणे वय-तेणे, रूव-तेणे य जे नरे ।
आयार भाव-तेणे य, कुव्वई देव-किव्विसं ॥४८॥

लध्धूण वि देवत्तं, उववन्नो देव-किव्विसे ।
तत्थावि से न याणाइ, "किं मे किच्चा इमं फलं"? ॥४९॥

तत्तो वि से चइत्ताणं, लब्भई एलमूयगं ।
नरगं तिरिक्ख-जोणिं वा, बोहि जत्थ सु-दुल्लहा ॥५०॥

एयं च दोसं दट्ठूणं, नायपुत्तेण भासियं ।
अणुमायंऽपि मेहावी, माया-मोसं विवज्जए ॥५१॥

सिक्खिऊण भिक्खेसण-सोहिं, संजयाण बुद्धाण सगासे।
तत्थ भिक्खू सुप्पणिहिन्दिए, तिव्व-लज्ज-गुणवं विहरिज्जासि ॥५२॥

॥ त्ति बेमि ॥ इति पिण्डेसणाए बीओ उद्देसो ॥२॥

॥ इति पिण्डेसणाए पंचममज्झयणं समत्तं ॥५॥

॥ अह छट्ठं धम्मत्थ-कामज्झयणं ॥६॥

नाण-दंसण-संपन्नं, संजमे य तवे रयं।
गणिमागम-संपन्नं, उज्जाणम्मि समोसढं ॥१॥

रायाणो रायमच्चा य, माहणा अदुव खत्तिया।
पुच्छन्ति निहुयअप्पणो, कहं भे आयारगोयरो ॥२॥

तेसिं सो निहुओ दंतो, सव्वभूयसुहावहो।
सिक्खाए सुसमाउत्तो, आयक्खइ वियक्खणो ॥३॥

हन्दि धम्मत्थ-कामाणं, निग्गंथाणं सुणेह मे।
आयारगोयरं भीमं, सयलं दुरहिट्ठियं ॥४॥

नन्नत्थ एरिसं वुत्तं, जं लोए परम दुच्चरं।
विउल-ट्ठाणभाइस्स, न भूयं न भविस्सई ॥५॥

स खुड्डग-वियत्ताणं, वाहियाणं, वाहियाणं च जे गुणा।
अक्खंडफुडिया कायव्वा, तं सुणेह जहा तहा ॥६॥

दस अट्ठ य ठाणाइं, जाइं बालोऽवरज्झइ।
तत्थ अन्नयरे ठाणे, निग्गंथत्ताओ भस्सई ॥७॥

वय-छक्कं काय-छक्कं, अकप्पो गिहि-भायणं।
पलियंकनिसेज्जा य, सिणाणं सोह-वज्जणं ॥८॥

तत्थिमं पढमं ठाणं, महावीरेण देसियं ।
अहिंसा निउणा दिठ्ठा, सव्वभूएसु संजमो ॥६॥

जावन्ति लोए पाणा, तसा अदुव थावरा ।
ते जाणमजाणं वा, न हणे णो विघायए ॥१०॥

सव्वे जीवाऽवि इच्छन्ति, जीविउं न मरिज्जिउं ।
तम्हा पाणि-वहं घोरं, निग्गन्था वज्जयन्ति णं ॥११॥

अप्पणट्ठा परट्ठावा, कोहा वा जइ वा भया ।
हिंसगं न मुसं बूया, नोवि अन्नं वयावए ॥१२॥

मुसा वाओ य लोगम्मि, सव्वसाहूहिं गरिहिओ ।
अविस्सासो य भूआणं, तम्हा मोसं विवज्जए ॥१३॥

चित्तमन्तमचित्तं वा, अप्पं वा जइ वा बहूं ।
दन्तसोहणमित्तं पि, उग्गहंसि अजाइया ॥१४॥

तं अप्पणा न गिण्हन्ति, नोवि गिण्हावए परं ।
अन्नं वा गिण्हमाणं पि, नाणुजाणन्ति संजया ॥१५॥

अंबंभचरियं घोरं, पमायं दुरहिट्ठियं ।
नायरन्ति मुणी लोए, भेयाययण-वज्जिणो ॥१६॥

मूलमेयमहम्मस्स, महादोससमुस्सयं ।
तम्हा मेहुणसंसग्गं, निग्गन्था वज्जयन्ति णं ॥१७॥

बिडमुब्भेइमं लोणं, तिल्लं सप्पि च फाणिअं !
न ते सन्निहिमिच्छन्ति, नायपुत्त-वयो-रया ॥१८॥

लोहस्सेस अणुफासे, मन्ने अन्नयरामवि ।
जे सिया सन्निहिं कामे, गिही पव्वइए न से ॥१६॥

जंऽपि वत्थं च पायं वा, कम्बलं पायपुंछणं ।
तंऽपि संजम-लज्जट्ठा, धारन्ति परिहरन्ति य ॥२०॥

न सो परिग्गहो वुत्तो, नायपुत्तेण ताइणा ।
"मुच्छा परिग्गहो वुत्तो," इइ वुत्तं महेसिणा ॥२१॥

सव्वत्थुवहिणा बुद्धा, संरक्खण-परिग्गहे ।
अवि अप्पणोऽवि देहम्मि, नायरंति ममाइयं ॥२२॥

अहो निच्चं तवो-कम्मं, सव्वबुद्धेहिं वन्नियं ।
जा य लज्जा-समा वित्ती, एग-भत्तं च भोअणं ॥२३॥

संति मे सुहुमा पाणा, तसा अदुव थावरा ।
जाइं राओ अपासंतो, कहमेसणियं चरे ॥२४॥

उदउल्लं बीअसंसत्तं, पाणा निवडिआ महिं ।
दिया ताइं विवज्जेज्जा, राओ तत्थ कहं चरे ॥२५॥

एअं च दोसं दट्ठूणं, नायपुत्तेण भासियं ।
सव्वाहारं न भुंजंति, निग्गन्था राइभोयणं ॥२६॥

पुढविकायं न हिंसन्ति' मणसा वयसा कायसा ।
तिविहेण करण जोएण, संजया सु-समाहिया ॥२७॥

पुढविकायं विहिंसंतो, हिंसई उ तयस्सिए ।
तसे य विविहे पाणे, चक्खुसे य अचक्खुसे ॥२८॥

तम्हा एयं विआणित्ता, दोसं दुग्गइवड्ढणं ।
पुढविकायं समारंभं, जावज्जीवाए वज्जए ॥२९॥

आउकायं न हिंसन्ति, मणसा वयसा कायसा ।
तिविहेण करण-जोएण, संजया सु-समाहिया ॥३०॥

आउकायं विहिंसंतो, हिंसई उ तयस्सिए ।
तसे य विविहे पाणे, चक्खुसे य अचक्खुसे ॥३१॥

तम्हा एअं वियाणित्ता, दोसं दुग्गइवड्ढणं ।
आउकायसमारंभं, जावज्जीवाए वज्जए ॥३२॥

जायतेयं न इच्छंति, पावगं जलइत्तए ।
तिक्खमन्नयरं सत्थं, सव्वओवि दुरासयं ॥३३॥

पाईणं पडिणं वावि, उड्ढं अणुदिसामवि ।
अहे दाहिणओ वावि, दहे उत्तरओ वि य ॥३४॥

भूयाणमेस माघाओ, हव्ववाहो न संसओ ।
तं पईव-पयावट्ठा, संजयो किंचि नारमे ॥३५॥

तम्हा एयं वियाणत्ता, दोसं दुग्गइ-वड्ढणं ।
तेउकाय समारंभं, जावज्जीवाए वज्जए ॥३६॥

अणिलस्स समारंभं, बुद्धा मन्नन्ति तारिसं ।
सावज्ज-बहुलं चेयं, नेयं ताईहिं सेवियं ॥३७॥

तालियंटेण पत्तेण, साहा-विहुअणेण वा ।
न ते वीइउमिच्छंति, वीआवेऊण वा परं ॥३८॥

जंऽपि वत्थं च पायं वा, कंबलं पायपुंछणं ।
न ते वायमुईरन्ति, जयं परिहरंति य ॥३९॥

तम्हा एअं वियाणित्ता, दोसं दुग्गइवड्ढणं ।
वाउकायसमारंभं, जावज्जीवाए वज्जए ॥४०॥

वणस्सइकायं न हिंसन्ति, मणसा वयसा कायसा ।
तिविहेण करण-जोएण, संजया सु-समाहिया ॥४१॥

वणस्सइकायं विहिंसंतो, हिंसई उ तयस्सिए ।
तसे य विविहे पाणे, चक्खुसे य अचक्खुसे ॥४२॥

तम्हा एयं वियाणित्ता, दोसं दुग्गइ-वड्ढणं ।
वणस्सइकायं-समारंभं, जावज्जीवाए वज्जए ॥४३॥

तसकायं न हिंसन्ति, मणसा वयसा कायसा ।
तिविहेण करण-जोएण, संजया सु-समाहिया ॥४४॥

तसकायं विहिंसंतो, हिंसई उ तयस्सिए ।
तसे य विविहे पाणे, चक्खुसे य अचक्खुसे ॥४५॥

तम्हा एयं विआणित्ता, दोसं दुग्गइ-बड्ढणं ।
तसकाय-समारंभं, जावज्जीवाए वज्जए ॥४६॥

जाइं चत्तारि भुज्जाइं, इसिणा हार-माइणि ।
ताइं तु विवज्जंतो, संजमं अणुपालए ॥४७॥

पिंडं सिज्जं च वत्थं च, चउत्थं पायमेव य ।
अकप्पिअं न इच्छेज्जा, पडिगाहेज्ज कप्पियं ॥४८॥

जे नियागं ममायंति, कीयमुद्देसियाहडं ।
वहं ते समणुजाणन्ति, इइ वुत्तं महेसिणा ॥४९॥

तम्हा अशण-पाणाइं, कीयमुद्देसियाहडं ।
वज्जयंति ठिअप्पाणो, निग्गंथा धम्म-जीविणो ॥५०॥

कंसेसु कंस-पाएसु, कुंड-मोएसु वा पुणो ।
भुंजंतो असणपाणाइं, आयारा परिभस्सइ ॥५१॥

सीओदग-समारंभे, मत्त-धोअण-छड्डणे ।
जाइं छंनंति भूआइं, दिट्ठो तत्थ असञ्जमो ॥५२॥

पच्छाकम्मं पुरेकम्मं, सिआ तत्थ न कप्पइ ।
एअमट्ठं न भुञ्जन्ति, निग्गंथा गिहि-भायणे ॥५३॥

आसंदि-पलिअंकेसु, मंच-मासालएसु वा ।
अणायरिअमज्जाणं, आसइत्तु सइत्तु वा ॥५४॥

नासंदी-पलियंकेसु, न निसेज्जा न पीढए ।
निग्गंथाऽपडिलेहाए, बुद्ध-वुत्तमहिट्ठगा ॥५५॥

गंभीर-विजया एए, पाणा दुप्पडिलेहगा ।
आसंदी पलियंको य, एयमट्ठं विवज्जिया ॥५६॥

गोयरग्ग-पविट्ठस, निसेज्जा जस्स कप्पइ ।
इमेरिसमणायारं, आवज्जइ अबोहियं ॥५७॥

विवत्ती बंभचेरस्स, पाणाणं च वहे वहो ।
वणीमग-पडिग्घाओ, पडिकोहो अगारिणं ॥५८॥

अगुत्ती बंभचेरस्स, इत्थीओ वावि संकणं ।
कुसील-वड्ढणं ठाणं, दूरओ परिवज्जए ॥५९॥

तिण्हमन्नयरागस्स, निसेज्चा जस्स कप्पइ ।
जराए अभिभूअस्स, वाहिअस्स तवस्सिणो ॥६०॥

वाहिओ वा अरोगी वा, सिणाणं जो उ पत्थए ।
वुक्कंतो होइ आयारो, जढो हवइ संजमो ॥६१॥

संति मे सुहुगा पाणा, घसासु भिलगासु य ।
जे य भिक्खु सिणायंतो, वियडेणुप्पिलावए ॥६२॥

तम्हा ते न सिणायन्ति, सीएण उसिणेण वा ।
जावज्जीवं वयं घोरं, असिणाणमहिट्ठगा ॥६३॥

सिणाणं अदुवा कक्कं, लुद्धं पउमगाणि य ।
गायस्सुव्वट्टणट्ठाए, नायरन्ति कयाइ वि ॥६४॥

नगिणस्स वावि मुंडस्स, दीह-रोम-नहंसिणो ।
मेहुणाओ उवसंतस्स, किं विभूसाए कारियं ॥६५॥

विभूसावत्तियं भिक्खू, कम्मं वंधइ चिक्कणं ।
संसार-सायरे घोरे, जेणं पडइ दुरुत्तरे ॥६६॥

विभूसावत्तियं चेअं, बुद्धा मन्नन्ति तारिसं ।
सावज्जं बहुलं चेअं, नेयं ताईहिं सेवियं ॥६७॥

खवंति अप्पाणममोह-दंसिणा, तवे रया संजम अज्जवेगुणे ।
धुणंति पावाइं पुरे-कडाइं, नवाइं पावाइं न ते करन्ति ॥६८॥

सओवसंता अममा अकिंचणा, स-विज्जविज्जाणुगया जसंसिणो ।
उउ-प्पसन्ने विमले व चन्दिमा, सिद्धिं विमाणाइं उवेंति ताइणो ॥६८॥

॥ त्ति बेमि ॥ छट्ठं धम्मत्थकामज्झयणं समत्तं ॥६॥

॥ अह सुवक्कसुद्धी णाम-सत्तमं-अज्झयणं ॥७॥

चउण्हं खलु भासाणं, परिसंखाय पन्नवं ।
दुण्हं तु विणयं सिक्खे, दो न भासेज्ज सव्वसो ॥१॥

जा अ सच्चा अवत्तव्वा, सच्चामोसा य जा मुसा ।
जा अ बुद्धेहिं नाइन्ना, न तं भासेज्ज पन्नवं ॥२॥

असच्चमोसं सच्चं च, अणवज्जमकक्कसं ।
समुप्पेहमसंदिद्धं, गिरं भासेज्ज पन्नवं ॥३॥

एयं च अट्ठमन्नं वा, जं तु नामेइ सासयं ।
स भासं सच्चमोसं च (पि) तंऽपि धीरो विवज्जए ॥४॥

वितहंपि तहामुत्तिं, जं गिरं भासए नरो ।
तम्हा सो पुट्ठो पावेणं, किं पुणं जो मुसं वए ॥५॥

तम्हा गच्छामो वक्खामो, अमुगं वा णे भविस्सइ ।
अहं वा णं करिस्सामि, एसो वा णं करिस्सइ ॥६॥

एवमाई उ जा भासा, एस-कालम्मि संकिया ।
संपयाईअमट्ठे वा, तंऽपि धीरो विवज्जए ॥७॥

अईअम्मि य कालम्मि, पच्चुप्पण्णमणागए ।
जमट्ठं तु न जाणेज्जा, "एवमेयं" ति नो वए ॥८॥

अईअम्मि य कालम्मि, पच्चुप्पण्ण-मणागए ।
जत्थ संका भवे तं तु, "एवमेयं" ति नो वए ॥९॥

अईअम्मि य कालम्मि, पच्चुप्पण्ण-माणगए ।
निस्संकियं भवे जं तु "एवमेयं" ति निद्दिसे ॥१०॥

तहेव फरुसा भासा, गुरु भूओवघाइणी ।
सच्चा वि सा न वत्तव्वा, जओ पावस्स अगमो ॥११॥

तहेव काणं 'काणे' 'त्ति,' पंडगं 'पंडगे' त्ति वा ।
वाहिअं वावि रोगित्ति, तेणं चोरे त्ति नो वए ॥१२॥

एएणन्नेण अट्ठेणं, परो जेणुवहम्मइ ।
आयार-भाव-दोसन्नू, न तं भासेज्ज पण्णवं ॥१३॥

तहेव 'होले' 'गोलि' त्ति, साणे वा 'वसुले' त्ति य ।
दमए दुहए वाऽवि, न तं भासेज्ज पण्णवं ॥१४॥

अज्जिए पज्जिए वावि, अम्मो माउस्सिअत्ति य ।
पिउस्सिए भायणिज्जत्ति, धूए णत्तुणिअत्ति य ॥१५।

हले हलेत्ति अन्ने ति, भट्टे सामिणि गोमिणि ।
होले गोले वसुलेत्ति, इत्थियं नेवमालवे ॥१६॥

णामधिज्जेण णं बूआ, इत्थी-पुत्तेण वा पुणो ।
जहारिहमभिगिज्झ, आलवेज्ज लवेज्ज वा ॥१७॥

अज्जए पज्जए वावि, बप्पो च्चुल्ल-पिउत्ति य ।
माउलो भाइणेज्जत्ति, पुत्ते णत्तुणिअत्ति य । ॥१८॥

हे हो ! हलेत्ति अन्नेत्ति, भट्टे सामि य गोमि य ।
होल गोल वसुलेत्ति, पुरिसं नेवमालवे ॥१९॥

नामधिज्जेण णं बूआ, पुरिसगुत्तेण वा पुणो ।
जहारिहमभिगिज्झ, आलवेज्ज लवेज्ज वा ॥२०॥

पंचिंदियाण पाणाणं, 'एस इत्थी अयं पुमं'।
जाव णं न विजाणेज्जा, ताव जाइत्ति आलवे ॥२१॥

तहेव मणुसं पसु ं, पक्खि वावि सरीसिवं।
'थूले पमेइले वज्झे, पाइमित्ति' य नो वए ॥२२॥

परिवुड्ढे त्ति णं बूया, बूया उवचिएत्ति य।
संजाए पीणिए वावि, महाकायत्ति आलवे ॥२३॥

तहेव गाओ दुज्झाओ, दम्मा गो रहगत्ति य।
वाहिमा रह जोगेत्ति, नेवं भासेज्ज पण्णवं ॥२४॥

जुवं गवित्ति णं बूया, धेणु ं रसदयत्ति य।
रहस्से महल्लए वाऽवि, वए संवहणित्ति य। ॥२५॥

तहेव गंतुमुज्जाणं, पव्वयाणि वणाणि य।
रुक्खा महल्ल पेहाए, नेवं भासेज्ज पण्णवं ॥२६॥

अलं पासाय-खंभाणं, तोरणाणि गिहाणि य।
फलिहग्गल-नावाणं, अलं उदग-दोणिणं ॥२७॥

पीढए चंगवेरे य, नंगले मइयं सिया।
जंतलट्ठी व नाभि वा, गंडिया व अलं सिया ॥२८॥

आसणं सयणं जाणं, हुज्जा वा किंचुवस्सए।
भूओवघाइणिं भासं, नेवं भासेज्ज पण्णवं ॥२९॥

तहेव गंतुमुज्जाणं, पव्वयाणि वणाणि य।
रुक्खा महल्ल पेहाए, एवं भसेज्ज पण्णवं ॥३०॥

जाइमंता इमे रुक्खा, दीह-वट्टा महालया।
पवाय-साला वडिमा, वए दरिसणित्ति य। ॥३१॥

तहा फलाइं पक्काइं, पाय-खज्जाइं नो वए।
वेलोइयाइं टालाइं, वेहिमाइत्ति नो वए ॥३२॥

असंथडा इमे अंबा, बहुनिव्वड्डिमा फला ।
वएज्जए बहुसंभूया, भूयरुवत्ति वा पुणो ॥३३॥

तहेवोसहीओ पक्काओ, नीलियाओ छवी इ य ।
लाइमा भज्जिमाउत्ति, पिहु-खज्जत्ति नो वए ॥३४॥

रूढा बहुसंभूया, थिरा ओसढावि य ।
गब्भियाओ पसूयाओ, संसाराउत्ति आलवे ॥३५॥

तहेव संखडिं नच्चा, किच्चं कज्जंत्ति नो वए ।
तेणगं वावि वज्झित्ति, सु तित्थित्ति य आवगा ॥३६॥

संखडिं संखडिं बूया, पाणयट्ठत्ति तेणगं ।
बहुं-समाणि तित्थाणि, आवगाणं वियागरे ॥३७॥

तहा नईओ पुण्णाओ, काय-त्तिज्जत्ति नो वए ।
नावाहिं तारिमाउत्ति, पाणि-पेज्जत्ति नो वए ॥३८॥

बहु-बाहडा अगाहा, बहु-सलिलुप्पिलोदगा ।
बहु-वित्थडोदगा यावि, एवं भासेज्ज पण्णवं ॥३९॥

तहेव सावज्जं जोगं, परस्सट्ठाए निट्ठियं ।
कीरमाणंति वा नच्चा, सावज्जं नालवे मुणी ॥४०॥

सुकडित्ति सुपक्कित्ति, सुच्छिन्ने सुहडे मडे ।
सुनिट्ठिए सुलट्ठित्ति, सावज्जं वज्जए मुणी ॥४१॥

पयत्त-पक्कित्ति व पक्कमालवे, पयत्त-छिन्नत्ति व छिन्नमालवे ।
पयत्त लट्ठित्तिव कम्म-हेउयं, पहार-गाढित्ति व गाढमालवे ॥४२॥

सव्वुक्कसं परग्घं वा, अउलं नत्थि एरिसं ।
अविक्कियमवत्तव्वं, अचियत्तं चेव नो वए ॥४३॥

'सव्वमेअं वइस्सामि, सव्वमेअंति' नो वए ।
अणुवीइ सव्वं सव्वत्थ, एवं भासेज्ज पण्णवं ॥४४॥

सु-क्कीअं वा सु-विक्कीअं, अकिज्जं किज्जमेव वा ।
'इमं गिण्ह इमं मुंच, पणिअं' नो वियागरे ॥४५॥

अप्पग्घे वा महग्घे वा, कए वा विक्कए वि वा ।
पणियट्ठे समुप्पन्ने, अणवज्जं वियागरे ॥४६॥

तहेवासंजयं धीरो, 'आस एहि करेहि वा ।
सयं चिट्ठ वयाहित्ति,' नेवं भासेज्ज पण्णवं ॥४७॥

वहवे इमे असाहू, लोए वुच्चंति साहुणो ।
न लवे असाहुं साहुत्ति, साहुँ साहुत्ति आलवे ॥४८॥

नाण दंसण-संपन्नं, संजमे य तवे रयं ।
एवं गुण-समाउतं, संजयं साहुमालवे ॥४६॥

देवाणं मणुयाणं च, तिरियाणं च वुग्गहे ।
अमुगाणं जओ होउ, मा वा होउत्ति नो वए ॥५०॥

वाओ वुट्ठं व सीउण्हं, खेमं धायं सिवंति वा ।
कया णु हुज्ज एआणि, मा वा होउत्ति नो वए ॥५१॥

तहेव मेहं व नहं माणवं, न देव देवत्ति गिरं वएज्जा ।
समुच्छिए उन्नए वा पओए, वएज्जा वा वुट्ठे वलाहएत्ति ॥५२॥

अंतलिक्खत्ति णं वूया, गुज्झाणु चरियत्ति य ।
रिद्धिमंतं नरं दिस्स, रिद्धिमंतं ति आलवे ॥५३॥

तहेव सावज्जणुमोयणी गिरा, ओहारिणी जा य परोववाइणी ।
से कोह लोह भयहास माणवो; न हासमाणोवि गिरं वएज्जा ॥५४॥

सुवक्क-सुद्धि समुपेहिया मुणी, गिरं च दुट्ठं परिवज्जए सया ।
मियं अदुट्ठं अणुवीइ भासए, सयाण मज्झे लहई पसंसण ॥५५॥

भासाइ दोसे य गुणे य जाणिया तीसे अ दुट्ठे परिवज्जए सया ।
छसु संजए सामाणिए सया जए, वएज्ज वुद्धे हियमाणुलोमियं ॥५६॥

परिक्खभासी सु-समाहिइंदिए, चउक्कसायावगए अणिस्सिए।
स निद्धूणे धुत्त मलं पुरे-कडं, आराहए लोगमिणं तहा परं ॥५७॥

॥ त्ति बेमि ॥ इति सुवक्कसुद्धीनामं सत्तमं-अज्झयणं समत्तं ॥७॥

॥ अह आयारपणिहि-अट्ठ ममज्झयणं ॥८॥

आयार-पणिहिं लद्धुं, जहा कायव्व भिक्खुणो।
तं भे उदाहरिस्सामि, अणुपुव्विं सुणेह मे ॥१॥

पुढवि दग-अगणि-मारुय, तण रुक्खस्स-बीयगा।
तसा य पाणा जीवत्ति, इइ वुत्तं महेसिणा ॥२॥

तेसिं अच्छण-जोएण, निच्चं होयव्वयं सिया।
मणसा कायवक्केण, एवं हवइ संजए ॥३॥

पुढविं भित्तिं सिलं लेलुं, नेव भिंदे न संलिहे।
तिविहेण करण जोएण, संजए सु-समाहिए ॥४॥

सुद्ध-पुढवीं न निसीए, ससरक्खम्मि य आसणे।
पमज्जित्तु निसीएज्जा, जाइत्ता जस्स उग्गहं ॥५॥

सीओदगं न सेवेज्जा, सिला-वुट्ठं हिमाणि य।
उसिणोदगं तत्तफासुयं, पडिगाहेज्ज संजए ॥६॥

उदउल्लं अप्पणोकायं, नेव पुंछे न संलिहे।
समुप्पेह तहाभूयं, नो णं संघट्टए मुणी ॥७॥

इंगालं अगणिं अच्चिं, अलायं वा सजोइयं।
न उंजेज्जा न घट्टेज्जा, नो णं निव्वावए मुणी ॥८॥

तालियंटेण पत्तेण, साहाए विहुयणेण वा।
न वीएज्ज अप्पणो कायं, बाहिरं वावि पुग्गलं ॥९॥

ा-रुक्खं न छिंदेज्जा, फलं मूलं च कस्सई ।
आमगं विविहं बीयं मणासावि ण पत्थए ॥१०॥

्णेसु न चिट्ठेज्जा, बीएसु हरिएसु वा ।
उदगम्मि तहा निच्चं, उत्तिंग-पणगेसु वा ॥११॥

े पाणे न हिंसेज्जा, वाया अदुव कम्मुणा ।
उवरओ सव्वभूएसु, पासेज्ज, विविहं जगं ॥१२॥

ठ्ठ सुहुमाइ पेहाए, जाइं जाणित्तु संजए ।
दयाहिगारी भूएसु, आस चिट्ठ सएहि वा ॥१३॥

यराइं अट्ठसुहुमाइं, जाइं पुच्छेज्ज संजए ।
इमाइं ताइं मेहावी, आइक्खेज्ज विअक्खणो ॥१४॥

ाणेहं पुप्फ-सुहुमं च, पाणुत्तिंगं तहेव य ।
पणगं बीअ हरिअं च, अंडं सुहुमं च अट्ठमं ॥१५॥

वमेयाणि जाणित्ता, सव्वभावेण संजए ।
अप्पमत्तो जए निच्चं, सव्विंदिय समाहिए ॥१६॥

वं च पडिलेहेज्जा, जोगसा पायकंवलं ।
सिज्जमुच्चारभूमिं च, संथारं अदुवासणं ॥१७॥

च्चारं पासवणं, खेलं सिंघाणजल्लियं ।
फासुयं पडिलेहित्ता, परिट्ठावेज्ज संजए ॥१८॥

विसित्तु परागारं, पाणट्ठा भोयणस्स वा ।
जयं चिट्ठे मियं भासे, न य रूवेसु मणं करे ॥१९॥

हुं सुणेइ कण्णेहिं, बहुं अच्छीहिं पिच्छइ ।
न य दिट्ठं सुयं सव्वं, भिक्खू अक्खाउमरिहइ ॥२०॥

ुयं वा जइ वा दिट्ठं, न लविज्जो वधाइयं ।
न य केणं उवाएणं, गिहि-जोगं समायरे ॥२१॥

निट्ठाणं रस-निज्जूढं, भद्दग पावगंति वा ।
पुट्ठो वावि अपुट्ठो वा, लाभालाभं न निद्दिसे ॥२२॥

न य भोयणम्मि गिद्धो, चरे उंछं अयंपिरो ।
अफासुयं न भुञ्जेज्जा, कीयमुद्देसियाहडं ॥२३॥

सन्निहिं च न कुव्वेज्जा, अणु-मायंपि संजए ।
मुहा-जीवी असंबद्धे, हवेज्ज जग-निस्सिए ॥२४॥

लूहवित्ति सु-संतुट्ठे, अप्पिच्छे सुहरे सिया ।
आसुरत्तं न गच्छेज्जा, सुच्चा णं जिणसासणं ॥२५॥

कण्ण-सुक्खेहिं सद्देहिं पेमं नाभिनिवेसए ।
दारुणं कक्कसं फासं, काएण अहियासए ॥२६॥

खुहं पिवासं दुस्सिज्जं, सीउण्हं अरई भयं ।
अहियासे अव्वहिओ, देहदुक्खं महाफलं ॥२७॥

अत्थंगयम्मि आइच्चे, पुरत्था य अणुग्गए ।
आहारमाइयं सव्वं, मणसावि ण पत्थए ॥२८॥

अतिंतिणे अचवले, अप्पभासी मिआसणे ।
हविज्ज उयरे दंते, थोवं लध्धुं न खिंसए ॥२९॥

न बाहिरं परिभवे, अत्ताणं न समुक्कसे ।
सुय-लाभे न मज्जेज्जा, जच्चा तवस्सि बुद्धिए ॥३०॥

से जाणमजाणं वा, कट्टु आहम्मियं पयं ।
संवरे खिप्पमप्पाणं, बीयं तं न समायरे ॥३१॥

अणायारं परक्कमं, नेव गूहे न निण्हवे ।
सूई सया वियड-भावे, असंसत्ते जिइन्दिए ॥३२॥

अमोहं वयणं कुज्जा, आयरियस्स महप्पणो ।
तं परिगिज्झ वायाए, कम्मुणा उववायए ॥३३॥

अधुवं जीविअं नच्चा, सिद्धिमग्गं वियाणिया ।
विणियट्टेज्ज भोगेसु, आउं परिमियमप्पणो ॥३४॥

बलं थामं च पेहाए, सद्धामारुग्गमप्पणो ।
खेत्तं कालं च विन्नाय, तहप्पाणं नि जुंजए । ॥३५॥

जरा जाव न पीडेइ, वाहि जाव न वड्ढइ ।
जाविन्दिआ न हायन्ति, ताव धम्मं समायरे ॥३६॥

कोहं माणं च मायं च, लोभं च पाववड्ढणं ।
वमे चत्तारि दोसे उ, इच्छतो हियमप्पणो ॥३७।

कोहो पाइं पणासेइ, माणो विणय-नासणो ।
माया मित्ताणि नासेइ, लोभो सव्व-विणासणो ॥३८॥

उवसमेण हणे कोहं, माणं मद्दवया जिणे ।
मायमज्जव-भावेण, लोभं संतोसओ जिणे ॥३९॥

कोहो य माणो य अणिग्गहीआ, माया य लोभो य पवड्ढमाणा ।
चत्तारि एए कसिणा कसाया, सिंचंतिमूलाइं पुणब्भवस्स॥४०॥

रायणिएसु विणयं पउंजे, धुव सीलयं सययं न हावएज्जा ।
कुम्मुव्व अल्लीणपलीणगुत्तो, परक्कमेज्जा तवसंजमम्मि ॥४१॥

निद्दं च न वहु मन्नेज्जा, सप्पहासं विवज्जए ।
मिहो-कहाहिं न रमे, सज्झयम्मि, रओ सया ॥४२॥

जोगं च समण-धम्मम्मि, जुंजे अणलसो धुवं ।
जुत्तो य समण-धम्मम्मि, अट्ठं लहइ अणुत्तरं ॥४३॥

इहलोग-परत्त-हियं, जेणं गच्छइ सुग्गइं ।
वहुसुयं पज्जुवासेज्जा, पुच्छिज्जत्थविणिच्छयं ॥४४॥

हत्थं पायं च कायं च, पणिहाय जिइंदिए ।
अल्लीण-गुत्तो निसिए, सगासे गुरुणो मुणी ॥४५॥

न पक्खओ न पुरओ, नेव किच्चाण पिट्ठओ ।
न य ऊरुं समासेज्जा, चिट्ठेज्जा गुरुणंतिए ॥४६॥

अपुच्छिओ न भासेज्जा, भासमाणस्स अंतरा ।
पिट्ठि-मंसं न खाएज्जा, माया मोसं विवज्जए ॥४७॥

अप्पत्तियं जेण सिया, आसु कुप्पेज्ज वा परो ।
सव्वसो तं न भासेज्जा; भासं अहिय गामिणिं ॥४८॥

दिट्ठं मियं असंदिद्धं, पडिपुन्नं विअं जियं ।
अयंपि रमणुव्विग्गं; भासं निसिरे अत्तवं ॥४९॥

आयारपन्नत्ति धरं, दिट्ठिवायमहिज्जगं ।
वायविक्खलियं नच्चा, न तं उवहसे मुणी ॥५०॥

नक्खत्तं सुमिणं जोगं, निमित्तं मंतभेसजं ।
गिहिणो तं न आइक्खे, भूयाहिगरणं पयं ॥५१॥

अन्नट्ठं पगडं लयणं, भएज्ज सयणासणं ।
उच्चार भूमि-संपन्नं, इत्थी-पसु-विवज्जियं ॥५२॥

विवित्ता य भवे सेज्जा, नारीणं न लवे कहं ।
गिहि-संथवं न कुज्जा, कुज्जा साहूहिं संथवं ॥५३॥

जहा कुक्कुड-पोयस्स, निच्चं कुललओ भयं ।
एवं खु बंभयारिस्स, इत्थी-विग्गहओ भयं ॥५४॥

चित्त-भित्तिं न निज्झाए, नारिं वा सु-अलंकियं ।
भक्खरंपि व दट्ठूणं, दिट्ठिं पडिसमाहरे ॥५५॥

हत्थ-पाय-पडिच्छिन्नं, कण्ण-नास-विगप्पियं ।
अवि वाससयं नारिं, बंभयारी विवज्जए ॥५६॥

वभूसा इत्थि-संसग्गो, पणीयं रस भोयणं ।
नरस्सत्त-गवेसिस्स, विसं तालउडं जहा ॥५७॥

अंग-पच्चंग-संठाणं, चारुल्लविय पेहियं ।
इत्थीणं तं न निज्झाए, कामराग-विवड्ढणं ॥५८॥
विसएसु मणुण्णेसु, पेमं नाभिनिवेसए ।
अणिच्चं तेसिं विण्णाय, परिणामं पोग्गलाण य ॥५९॥

पोग्गलाणं परिणामं, तेसिं नच्चा जहा तहा ।
विणीय-तिण्हो विहरे, सीईभूएण अप्पणा ॥६०॥

जाइ सद्धाइ निक्खंतो, परियाय-ट्ठाणमुत्तमं ।
तमेव अणुपालेज्जा, गुणे आयरिय-संमए ॥६१॥

तवं चिमं संजम-जोगयं च, सज्झाय-जोगं च सया अहिट्ठए ।
सूरे व सेणाइ समत्त-माउहे, अलमप्पणो होइ अलं परेसिं ॥६२॥

सज्झाय-सुज्झाण-रयस्स ताइणो, अपाव-भावस्स तवे रयस्स ।
विसुज्झइ जं सि मलं पुरे-कडं, समीरियं रुप्पमलं व जोइणा ॥६३॥

से तारिसे दुक्ख-सहे जिइन्दिए, सुएण जुत्ते अममे अकिंचणे ।
विरायई कम्म-घणम्मि अवगए, कसिणब्भपुडावगमे व चंदिम ॥६४॥

॥त्ति बेमि॥ इति आयारपणिही णामं अट्ठममज्झयणं समत्तं ॥८॥

॥ अह विणयसमाही णामं नवममज्झयणं ॥९॥

थंभा व कोहा व मय-प्पमाया, गुरुस्सगासे विणयं न सिक्खे ।
सो चेव उ तस्स अभूइ-भावो, फलं व कीयस्स वहाय होइ ॥१॥
जे यावि मंदि त्ति गुरुं विइत्ता, डहरे इमे अप्प-सुए त्ति नच्चा ।
हीलंति मिच्छं पडिवज्जमाणा, करंति आसायणं ते गुरुणं ॥२॥

पगईए मंदा-वि भवंति एगे, डहरा वि य जे सुअ बुद्धोववेआ।
आयारमंता गुणसुट्ठिअप्पा, जे हीलिया सिहिरिव भास कुज्जा ॥३॥
जे आवि नावं डहरं ति नच्चा, आसायए से अहियाय होइ।
एवायरियंऽपि हु हीलयंतो, नियच्छइ जाइ-पहं खु मंदो ॥४॥
आसीविसो वावि परं सु-रुट्ठो, किं जीव-नासाउ परं न कुज्जा।
आयरिय-पाया पुण अप्पसन्ना, अबोहि आसायण नत्थि मुक्खो ॥५॥
जो पावगं जलियमवक्कमेज्जा, आसीविसं वावि हु कोवएज्जा।
जो वा विसं खायइ जीवियट्ठि, एसावमासायणया गुरुणं ॥६॥
सिया हु से पावय नो डहेज्जा, आसीविसो वा कुविओ न भक्खे।
सिया विसं हालहलं न मारे, न यावि मुक्खा गुरु-हीलणाए ॥७॥
जो पव्वयं सिरसा भितुमिच्छे, सुत्तं व सीहं पडिवोहएज्जा।
जो वा दए सत्ति-अग्गे पहारं, एसोवमासायणया गुरुणं ॥८॥
सिया हु सीसेण गिरिं-पि भिंदे, सिया हु सीहो कुविओ न भक्खे।
सिया न भिंदेज्ज व सत्ति-अग्गं, न यावि मुक्खो गुरु-हीलणाए ॥९
आयरियपाया पुण अप्पसन्ना, अबोहि-आसायण नत्थि मुक्खो।
तम्हा अणावाह-सुहाभिकंखी, गुरु-प्पसायाभिमुहो रमेज्जा ॥१०॥
जहाहि अग्गी जलणं नमंसे, नाणाहुई-मंत-पयाभिसित्तं।
एवायरियं उवचिट्ठएज्जा, अणंत-नाणोवगओ-वि संतो ॥११॥
जस्संतिए धम्म-पयाइ सिक्खे, तस्संतिए वेणइयं पउंजे।
सक्कारए सिरसा पंजलीओ, काय-ग्गिरा भो मणसा य निच्चं ॥१२॥
लज्जा दया संजमबंभचेरं, कल्लाण-भागिस्स विसोहि-ठाणं।
जे मे गुरु सययमणुसासयंति, तेहिं गुरु सययं पूययामि ॥१३॥
जहा निसंते तवणच्चिमाली, पभासई केवलं भारहं-तु।
एवायरिओ सुय-सील-बुद्धिए, विरायई सुर-मज्झे व इंदो ॥१४॥

जहा-ससी कोमुइ-जोग-जुत्तो, नवखत्त-तारा-गण परिवुडप्पा।
खे सोहई विमले अब्भ-मुक्के, एवं गणी सोहइ भिक्खुमज्झे ॥१५॥

महागरा आयरिया महेसी, समाहि-जोगे सुय-सील-वुद्धिए।
संपाविउ-कामे अणुत्तराइं, आराहए तोसइ धम्म-कामी ॥१६॥

सुच्चा ण मेहावी सुभासियाइं, सुस्सूसए आयरियमप्पमत्तो।
आराहइत्ताण गुणे अणेगे, से पावई सिद्धिमणुत्तरं ॥त्तिबेमि॥१७॥

॥ इति विणयसमाहिज्झयणे पढमो उद्देसो समत्तो ॥१॥

मूलाउ खंधप्पभवो दुमस्स, खंधाउ पच्छा समुविंति साहा।
साह-प्पसाहा विरुहंति पत्ता तओ सि पुप्फं च फलं रसो य ॥१॥

एवं धम्मस्स विणओ, मूलं परमो से मुक्खो।
जेणे कित्ति सुयं सिग्घं, नीसेसं चाभिगच्छई ॥२॥

जे य चंडे मिए थद्धे, दुव्वाई नियडी सढे।
बुज्झइ से अविणीयप्पा, कट्ठं सोय-गयं जहा ॥३॥

विणयम्मि जो उवाएणं, चोइओ कुप्पई नरो।
दिव्वं सो सिरिमिज्जंति, दंडेण पडिसेहए ॥४॥

तहेव अविणीयप्पा, उववज्झा हया गया।
दीसंति दुहमेहंता, आभिओगमुवट्ठिया ॥५॥

तहेव सुविणीयप्पा; उववज्झा हया गया।
दीसंति सुहमेहंता, इड्ढिं पत्ता महायसा ॥६॥

तहेव अविणीयप्पा; लोगंसि नरनारिओ।
दीसंति दुहमेहंता, छाया ते विगलिंदिआ ॥७॥

दंडं-सत्थ-परिज्जुन्ना, असब्भवयणेहि य ।
कलुणा विवन्न-छंदा, सुप्पिवासाए परिग्गया ॥८॥

तहेव सुविणीयप्पा, लोगंसि नर-नारिओ ।
दीसंति सुहमेहंता, इड्ढिं पत्ता महायसा ॥६॥

तहेव अविणियप्पा, देवा जक्खा य गुज्झगा ।
दीसंति दुहमेहंता, आभिओगमुवट्ठिया ॥१०॥

तहेव सुविणीयप्पा, देवा जक्खा य गुज्झगा ।
दीसंति सुहमेहंता, इड्ढिं पत्ता महायसा ॥११॥

जे आयरियउवज्झायाणं, सुस्सूसा-वयणं करा ।
तेसिं सिक्खा पवड्ढंति, जल-सित्ता इव पायवा ॥१२॥

अप्पणट्ठा परट्ठा वा, सिप्पा णेउणियाणिय ।
गिहीणो उवभोगट्ठा, इहलोगस्स कारणा ॥१३॥

जेण बंधं वहं घोरं, परियावं च दारुणं ।
सिक्खमाणा नियच्छंति, जुत्ता ते ललिइंदिया ॥१४॥

तेवि तं गुरुं पूयंति, तस्स सिप्पस्स कारणा ।
सक्कारंति नमंसंति, तुट्ठा निद्देस-वत्तिणो ॥१५॥

किं पुणं जे सुयग्गाही, अणंत-हिय-कामए
आयरिया जं वए भिक्खू, तम्हा तं नाइवत्तए ॥१६॥

नीअं सिज्जं गइं ठाणं, नीयं च आसणाणि य ।
नीयं च पाए वंदेज्जा, नीयं कुज्जा य अंजलिं ॥१७॥

संघट्टइत्ता काएणं, तहा उवहिणा-भवि ।
'खमेह अवराहं', मे' वएज्ज 'न पुणुत्ति' य ॥१८॥

दुग्गओ वा पओएणं, चोइओ वहई रहं ।
एवं दुबुद्धि, किच्चाणं, वुत्तो-वुत्तो पकुव्वइ । ॥१६॥

आलवंते लवंते वा, न निसिज्जाए पडिस्सुणे ।
मत्तूणं आसणं धीरो, सुस्सूसाए पडिस्सुणे । ॥२०॥

कालं छंदोवयारं च, पडिलेहित्ताण, हेउहिं ।
तेण-तेण उवाएण, तं तं संपडिवायए ॥२१॥

विवत्ती अविणीयस्स, संपत्ती विणियस्स य ।
जस्सेयं दुहओ नायं, सिक्खं से अभिगच्छइ ॥२२॥

जे यावि चंडे मइ-इड्डिगारवे, पिसुणे नरे साहसहीणपेसणे ।
अदिट्ठ-धम्मे विणए अकोविए, असंविभागी न हु तस्स मुक्खो ॥

निद्देस-वित्ती पुण जे गुरुणं, सुयत्थ-धम्मा विणयम्मि कोविया ।
तरित्तु ते ओघमिणं दुरुत्तरं, खवित्तु कम्मं गइमुत्तमं गय ॥२४॥

॥त्तिबेमि॥ इति विणयसमाहिणामज्झयणे बीओ उद्देसो समत्तो ॥

— —

आयरियअग्गिमिवाहिअग्गी, सुस्सूसमाणो पडिजागरेज्जा ।
आलोइयं इंगियमेव नच्चा, जो छंदमाराहयई स पुज्जो ॥१॥

आयार-मट्ठा विणयं पउंजे, सुस्सूसमाणो परिगिज्झ वक्कं ।
जहोवइट्ठं अभिकंखमाणो, गुरुं तु नासायई स पुज्जो ॥२॥

रायणिएसु विणयं पउंजे, डहरावि य जे परियायजिट्ठा ।
नीयत्तणे वट्टइ सच्च-वाई, ओवायवं वक्क-करे स पुज्जो ॥३॥

अन्नाय-उञ्छं चरई विसुद्धं, जवणट्ठया समुयाणं च निच्चं ।
अलध्दुयं नो परिदेवएज्जा, लद्धं न विकत्थयई स पुज्जो ॥४॥

संथार-सिज्जासण-भत्तपाणे, अप्पिच्छया अइलाभे वि संते ।
जो एवमप्पाणभितोसएज्जा, संतोस--पाहन्न-रए स पुज्जो ॥५॥

सक्का सहेउं आसाइ कंटया, अओमया उच्छहया नरेणं।
अणासए जो उ सहेज्ज कंटए, वईमए कन्न-सरे स पुज्जो ॥६॥

मुहुत्तदुक्खा उ हवंति कंटया, अओमया तेवि तणो सुउद्धरा।
वाया-दुरुत्ताणि दुरुद्धराणि, वेराणुबंधीणि महब्भयाणि ॥७॥

समावयंता वयणाभिघाया, कन्नं-गया दुम्मणियं जणंति।
धम्मुत्ति किच्चा परमग्ग-सूरे, जिइन्दिए जो सहई ज पुज्जो ॥८॥

अवण्ण-वायं च परम्मुहस्स, पच्चक्खओ पडिणीयं च भासं।
ओहारिणिं अप्पियकारिणिं च, भासं न भासेज्ज सयास पुज्जो॥९॥

अलोलुए अक्कुहए अभाई, अपिसुणे यावि अदीण-वित्ती।
नो भावए नोवि य भाविअप्पा, अकोउहल्ले य सया स पुज्जो॥१०॥

गुणेहि साहू अगुणेहिऽसाहू, गिण्हाहि साहू गुण मुचंऽसाहू।
वियाणिआ अप्पगमप्पएणं, जो रागदोसेहिं समो स पुज्जो ॥११॥

तहेव डहरं च महल्लगं वा, इत्थी पुमं पव्वइयं गिहिं वा।
नो हीलए नोविय खिंसएज्जा, थंभं च कोहं च चए स पुज्जो॥१२॥

जे माणिया सययं माणयंति, जत्तेण कन्नं व निवेसयंति।
ते माणए माणरिहे तवस्सी, जिइदिए सच्चरए स पुज्जो ॥१३॥

तेसिं गुरुणं गुणसायराणं, सुच्चाण मेहावी सुभासियाइं।
चरे मुणी पंचरए तिगुत्तो, चउक्कसायावगए, स पुज्जो ॥१४॥

गुरुमिह सययं पडियरिय मुणी, जिण मय-निउणे अभिगम कुसले।
धुणिय रय-मलं पुरे-कडं, भासुरमउलं गइं (गय) ॥१५॥

॥ त्ति बेमि ॥ इति विणयसमाहोए तइओ उद्देसो समत्तो ॥

———

सुयं मे आउसं। तेणं भगवया एवमक्खायं। इह खलु थेरेहिं भगवंतेहिं चत्तारि विणय-समाहिट्ठाणा पन्नत्ता। कयरे खलु ते थेरेहिं भगवंतेहिं चत्तारि विणयसमाहिट्ठाणा पन्नत्ता ?। इमे खलु ते थेरेहिं भगवंतेहिं चत्तारि विणयसमाहिट्ठाणा पन्नत्ता।

तं जहा-विणय समाहि-सुयसमाही, तव-समाही आयार-समाही।

विणए सुए य तवे; आयारे निच्च पंडिया।
अभिरामयंति अप्पाणं; "जे भवंति जिइंदिआ" ॥१॥

चउव्विहा खलु विणय-समाही भवइ। तं जहा-अणुसासिज्जंतो सुस्सूसइ। सम्मं सम्पडिवज्जइ। वेयमाराहइ। न य भवइ अत्त-संपग्गहिए। चउत्थं पयं भवइ। भवइ य इत्थ सिलोगो॥

"पेहेइ हियाणुसासणं; सुस्सूसइ तं च पुणो अहिट्ठिए।
न य माण-मएण मज्जइ; विणय-समाहिआययट्ठिए" ॥२॥

चउव्विहा खलु सुअ-समाही भवइ। तं जहा-सुअं मे भविस्सइ-त्ति अज्झाइअव्वं भवइ। एगग्गचित्तो भविस्सामित्ति अज्झाइअव्वं भवइ। अप्पाणं ठावइस्सामित्ति अज्झाइयव्वं भवइ। ठिओ परं ठावइस्समित्ति अज्झाइयव्वं भवइ। चउत्थं पयं भवइ। भवइ अ इत्थ सिलोगो॥

"णाणमेगग्ग-चित्तो अ; ठिओ अ ठावइ परं।
सुआणि अ अहिज्जित्ता; रओ सुअसमाहिए" ॥३॥

चउव्विहा खलु तव-समाही भवइ। तं जहा-नो इहलोगट्ठयाए तवमहिट्ठेज्जा; नो परलोगट्ठआए तवमहिट्ठेज्जा; नो कित्ति-वन्न-सद्दु-सिलोगट्ठाआए तवमहिट्ठेज्जा; नन्नत्थ निज्जरट्ठयाए तवमहिट्ठेज्जा। चउत्थं पयं भवइ। भवइ अ इत्थ सिलोगो॥

"विविह-गुण-तवो रए, निच्च भवइ निरासए निज्जरट्ठिए।
तवसा धुणइ पुराण-पावगं, जुत्तो सया तव-समाहीए" ॥४॥

चउव्विहा खलु आयारसमाही भवइ । तं जहा नो इह-लोगट्ठयाए आयारमहिट्ठेज्जा, नो परलोगट्ठयाए आयारमहिट्ठेज्जा, नो किति-वन्न सद्द-सिलोगट्ठयाए आयारमहिट्ठेज्जा, नन्नत्थ अरिहंतेहिं हेऊहिं आयारमहिट्ठेज्जा। चउत्थं पयं भवइ। भवइ अ इत्थ सिलोगो।

जिणवयण-रए अतिंतिणे, पडिपुन्नाययमाययाट्ठिए।
आयारसमाहि-संवुडे, भवइ अ दंते भावसंधए ॥५॥

अभिगम चउरो समाहिओ, सुविसुद्धो सु-समाहियप्पओ।
विउलहियं-सुहावहं पुणो, कुव्वइ य सो पयखेममप्पणो ॥६॥

जाइ-मरणाओ मुच्चइ, इत्थत्थं च चयइ सव्वसो।
सिद्धे वा हवइ सासए, देवे वा अप्परए महिड्ढिए ॥त्ति बेमि ॥७॥

इति विणयसमाही नाम चउत्थो उद्देसो॥नवम मज्झयणं समत्तं॥९॥

॥ अह सभिक्खू नामं दसममज्झयणं ॥१०॥

निक्खम्म माणाइ य बुद्धवयणे, निच्चं चित्तसमाहिओ हवेज्जा।
इत्थीण वसं न यावि गच्छे, वंतं नो पडिआयइ जे स भिक्खू ॥१॥

पुढविं न खणे न खणावए, सीओदगं न पिए न पियावए।
अगणि सत्थं जहा सुनिसियं, तं न जले न जलावए जे स भिक्खू॥

अनिलेण न वीए न वीयावए हरियाणि न छिंदे न छिंदावए।
वीआणि सयाचिवज्जयन्तो, सच्चित्तं नाहारए जे स भिक्खू ॥३॥

वहणं तस थावराणं होइ, पुढवि तण–कट्ठ-निस्सिआणं।
तम्हा उद्देसिअं न भुंजे, नोवि पए न पयावए जे स भिक्खू ॥४॥

रोइय नायपुत्तवयणे, अप्प समे मन्नेज्ज छप्पि काए।
पंच य फासे महव्वयाइं, पंचासव संवरे जे स भिक्खू ॥५॥

चत्तारि वमे सया कसाए, धुव जोगी हवेज्ज बुद्धवयणे।
अहणे निज्जाय रूव रयए, गिहि जोगं परिवज्जए जे स भिक्खू॥६॥

सम्मदिट्ठी सया अमूढे, 'अत्थि हु नाणे तवे संजमे य'।
तवसा धुणइ पुराणपावगं, मण-वय-काय-सुसंवुडे जे स भिक्खू॥७॥

तहेव असणं पाणगं वा, विविहं खाइम–साइमं लभित्ता।
'होही अट्ठो सुए परे वा,' तं न निहे न निहावए जे स भिक्खू॥८॥

तहेव असणं पाणगं वा, विविहं खाइम-साइमं लभित्ता।
छंदिअ साहम्मियाण भूंजे, भोच्चा सज्झाय-रए जे स भिक्खू ॥९॥

न य वुग्गहियं कहं कहिज्जा, न य कुप्पे निहुइन्दिए पसन्ते।
संजम-धुव-जोग-जुत्ते, उवसन्ते, अवहेडए जे स भिक्खू ॥१०॥

जो सहइ हु गाम-कंटए, अक्कोस-पहार तज्जणाओ य।
भय-भेरव-सद्द-सप्प-हासे, सम-सुह-दुक्ख-सहे य जे स भिक्खू॥११॥

पडिमं पडिवज्जिया मसाणे, नो भीयए भय-भेरवाइं दिस्स।
विविह-गुण-तवो–रए य निच्चं, न सरीरं चाभिकंखई जे स भिक्खू॥

असइं वोसिट्ठ–सत्त-देहे, अकुट्ठे व हए व लूसिए वा।
पुढवि-समे मुणी हविज्जा; अनिआणे अकोउहल्ले जे स भिक्खू॥

अभिभूय काएण परीसहाइं, समुद्धरे जाइ-पहाउ अप्पयं।
विइत्तु जाई-मरणं महब्भयं, तवे-रए सामणिए जे स भिक्खू ॥१४॥

हत्थ-संजए पाय-संजए, वाय–संजए संजए इन्दियस्स।
अज्झप्प-रए सुसमाहियप्पा, सुत्तत्थं च वियाणइ जे स भिक्खू॥१५॥

उवहिम्मि अमुच्छिए आगद्धे, अन्नाय-उंछं पुल-निप्पुलाए ।
कय-विक्कय-सन्निहिओ विरए, संव्व-संगावगए य जे स भिक्खू॥१६॥

अलोलो भिक्खू न रसेसु गिद्धे, उंछं चरे जीवीअ-नाभिकंखी ।
इड्ढिं च सक्कारण पूयणं च, चए ठियप्पा अणिहे जे स भिक्खू॥१७॥

न परं वइज्जासि 'अयं कुसीले,' जेणं च कुप्पिज्ज न तं वइज्जा ।
जाणिय पत्तेयं पुन्न-पाव, अत्ताणं न समुक्कसे जे स भिक्खू ॥१८॥

न जाइ-मत्ते न य रूव मत्ते, न लाभ-मत्ते न सुएण मत्ते ।
मयाणि सव्वाणि विवज्जइत्ता, धम्म-ज्झाण-रए जे स भिक्खू॥१९॥

पवेअए अज्ज-पयं महा-मुणी, धम्मे ठिओ ठावयई परंपि ।
निक्खम्म वज्जेज्ज कुसील-लिंगं, न यावि हासं कुहअे जे स भिक्खू॥

तं देह-वासं असुइं असासयं; सया चए निच्च-हिय ट्ठियप्पा ।
छिंदित्तु जाइ-मरणस्स बंधणं, उवेइ भिक्खू अपुणागमं गइं ॥२१॥

॥ त्ति बेमि ॥ इति सभिक्खू नामं दसममज्झयणं समत्तं ॥१०॥

॥ अह रइवक्का पढमा चूलीआ ॥१॥

इह खलु भो पव्वइएणं उप्पण्ण दुक्खेणं संजम अरइ समावन्न चित्तेणं ओहाणुप्पेहिणा अणोहाइएणं चेव हयरस्सिगयंकुस-पोयपडागाभूआइं इमाइं अट्ठारस ठाणाइं सम्मं संपडिलेहिअव्वाइं भवंति । तं जहा-हं भो ! दुस्समाइ दुप्पजीवी[1] लहुसगा इत्तरिआ गिहीणं कामभोगा[2] भुज्जो य सायबहुला मणुस्सा[3] इमे अ मे दुक्खे न चिरकालोवट्ठाइ भविस्सइ[4] ओम-जण-पुरक्कारे[5] वंतस्स य पडिआयणं[6] अहरगइ-वासोवसम्पया[7] दुल्लहे खलु भो ! गिहीणं धम्मे गिहि-वासमज्झे वसन्ताणं[8] आयंके से वहाय होइ[9] संकप्पे से

वहाय होइ[10] सोवक्के से गिहवासे, निरुवक्के से परिआए[11] वंधे गिहवासे, मोक्खे परिआए[12] सावज्जे गिहवासे, अणवज्जे परिआए[13] बहु साहा रणा गिहिणं काम-भोगा[14] पत्तेअं पुन्न-भावं[15] अणिच्चे खलु भो ! मणुआण जीविए कुसग्ग-जल-बिन्दु-चंचले[16] बहु च खलु भो ! पावं कम्मं पगडं[17] पावाणं च खलु भो ! कडाणं कम्माणं पुव्वि दुच्चिन्नाणं दुप्पडिकंताणं वेइत्ता मुक्खो नत्थि अवेइत्ता तवसा वा झोसइत्ता[18] अट्ठरसमं पयं भवइ, भवइ अ इत्थ सिलोगो—

जया य चयई धम्मं, अणज्जो भोग-कारणा ।
से तत्थ मुच्छिए बाले, आयइं नावबुज्झई ॥१॥

जया ओहविओ होइ, इंदो वा पडिओ छमं ।
सव्व-धम्म-परिब्भट्ठो, स पच्छा परितप्पई ॥२॥

जया अ वंदिमो होइ, पच्छा होइ अवन्दिमो ।
देवया व चुआ ठाणा, स पच्छा परितप्पई ॥३॥

जया अ पूइमो होइ, पच्छा होइ अपूइमो ।
राया व रज्ज-पब्भट्ठो, स पच्छा परितप्पई ॥४॥

जया अ माणिमो होइ, पच्छा होइ अमाणिमो ।
सिट्ठिव्व कब्बडे छूढो, स पच्छा परितप्पई ॥५॥

जया अ थेरओ होइ, समइक्कंत-जुव्वणो ।
मच्छुव्व गलं गलित्ता, स पच्छा परितप्पई ॥६॥

[जया अ कुकुडुंबस्स, कुतत्तीहिं विहम्मई ।
हत्थी व बन्धणे बद्धो, स पच्छा परितप्पई] ॥७॥

पुत्त दार-परिकिन्नो, मोह-संताण संतओ ।
पंकोसन्नो जहा नागो, स पच्छा परितप्पई ॥८॥

"अज्ज आहं गणी हुंतो, भाविअप्पा बहुस्सुओ।
जइ हं रमंतो परिआए, सामन्ने जिण देसिए" ॥९॥

देवलोग-समाणा अ, परिआओ महेसिणं।
रयाणं अरयाणं च, महानरय-सारिसो ॥१०॥

अमरोवमं जाणिअ सुक्खमुत्तमं, रयाणं परिआए तहारयाणं।
निरओवमं जाणिअ दुक्खमुत्तडं, रमिज्ज तम्मा परिआय पंमिए॥११

धम्माउ भट्ठं सिरिओववेयं, जन्नग्गि विज्झायमिवप्प तेअं।
हीलन्ति णं दुव्विहिअं कुसीला, दाढुड्ढिअं घोरविसं व नागं ॥१२॥

इहेव धम्मो अयसो अकित्ति, दुन्नामज्जिं च पिहुज्जणम्मि।
चुअस्स धम्माउ अहम्म-सेविणो, संभिन्न वित्तस्स य हिट्ठओ गई१३

भुंजित्तु भोगाइं पसज्झ चेअसा, तहाविहं कट्टु असंजमं बहुं।
गइं च गच्छे अणाहिज्जिअं दुहं, बोही असेनो सुलहा पुणो पुणो १४

"इमस्स ता नेरइअस्स जंतुणो, दुहोवणीअस्स किलेस-वत्तिणो।
पलिओवमं झिज्जइ सागरोवमं, किमंग पुण मज्झ इमं मणो-दुहं १५

न मे चिरं दुक्खमिणं भविस्सइ, असासया भोग-पिवास जंतुणो।
न चे सरीरेण इमेणऽविस्सइ, भविस्सई जीविअ-पज्जवेण मे" १६

जस्सेवमप्पा उ हविज्ज निच्छओ, चइज्ज देहं न हु धम्म-सासणं।
तं तारिसं नो पइलिंति इंदिआ, उविंति वाया व सुदंसणं गिरिं १७

इच्चेव संपस्सिअ बुद्धिमं नरो, आयं उवायं विविहं विआणिआ।
काएणवाया अदु माणसेणं, तिगुत्ति गुत्तो जिण-वयणमहिट्ठिज्जसि१८

॥ त्ति बेमि ॥ इअ रइवक्का पढमा चूला समत्ता ॥१॥

॥ अह विवित्तचरिया बीआ चूलिया ॥

चूलिअं तु पवक्खामि, सुअं केवलि-भासिअं।
जं सुणि-तु सु पुण्णाणं, धम्मे उप्पज्जए मई ॥१॥

अणुसोअ-पट्ठिए बहुजणम्मि, परसोअ-लद्ध-लक्खेणं।
पडिसोअमेव आप्पा, दायव्वो होउ कामेणं ॥२॥

अणुसोअ-सुहो लोओ, पडिसोओ आसवो सुविहिआणं।
अणुसोओ संसारो, पडिसोओ तस्स उतारो ॥३॥

तम्हा आयार-परक्कमेण, संवर-समाहि-बहुलेणं।
चरिआ गुणा अ नियमा अ, हुन्तिसाहूण दट्ठव्वा ॥४॥

अणिएअ वासो समुआण चरिआ, अन्नाय-उछं पयरिक्कया अ।
अप्पोवही कलह-विवज्जणा अ, विहार-चरिआ इसिणं पसत्था॥५॥

आईन्नओ माणविवज्जणा अ, ओसन्न दिट्ठहड-भत्त-पाणे।
संसट्ठ-कप्पेण चरिज्ज भिक्खू, तज्जाय-संसट्ठ जई जइज्जा ॥६॥

अ-मज्ज-मंसासि अमच्छरीआ, अभिक्खणं निव्विगइं गया अ।
अभिक्खणं काउस्सग्ग-कारी, सज्झाय-जोगे पयओ हविज्जा ॥७॥

न पडिन्नविज्जा सयणासणाइं, सिज्जं निसिज्जं तह भत्त-पाणं।
गामे कुले वा नगरे व देसे, ममत्त-भावं न कहिंऽपि कुज्जा ॥८॥

गिहिणो वेआवडिअं न कुज्जा, अभिवायणं वंदणपूअणं वा।
असंकिलिट्ठेहिं समं वसिज्जा, मुणी चरित्तस्स जओ न हाणि ॥९॥

न या लभेज्जा निउणं सहायं, गुणाहिअं वा गुणओ समं वा।
इक्कोऽवि पावाइं वियज्जयंतो, विहरिज्ज कामेसु असज्जमाणो ॥१०॥

संवच्छरं वावि परं पमाणं, बीअं च वासं न तहिं वसिज्जा।
सुत्तस्स-मग्गेण चरिज्ज भिक्खू, सुत्तस्स अत्थो जह आणवेइ॥११॥

जो पुव्वरत्तावररत्त-काले, संपिक्खए अप्पगमप्पएणं ।
"किं मे कडं ? किं च मे किच्चसेसं?, किं सक्कणिज्जं न समायरामि॥
किं मे परो पासइ किंच अप्पा, किं वाहं खलिअं न विवज्जयामि"॥
इच्चेव सम्मं अणुपासमाणो अणागयं नो पडिबंध कुज्जा ॥१३॥

जत्थेव पासे कइ दुप्पउत्तं, काएण वाया अदु माणसेण ।
तत्थेव धीरो पडिसाहरिज्जा, आइन्नओ खिप्पमिव क्खलीणं ॥१४॥

जस्सेरिसा जोग जिइंदिअस्स, घिईमओ सप्पुरिसस्स निच्चं ।
तमाहु लोए "पडिवुद्ध-जीवी" सो जीअइ संजम-जीविएणं ॥१५॥

अप्पा खलु सययं रक्खिअव्वो, सव्विंदिएहिं सुसमाहिएहिं ।
अरक्खिओ जाइ-पहं उवेइ, सुरक्खिओ सव्व-दूहाण मुच्चइ ॥१६॥

॥ त्ति वेमि ॥ इअ विवित्तचरिआ बीआ चूला समत्ता ॥२॥

॥ इअ दसवेआलिअं सुत्तं समत्तं ॥

---

* णमो सिद्धाणं *

श्री उत्तराध्ययन सूत्रम् ।

।। वीणयसुयं पढमं अज्झयणं ।।

संजोगा विप्पमुक्कस्स, अण-गारस्सभिक्खुणो ।
विणयं पाउकरिस्सामि, आणुपुव्विं सुणेह मे ।।१।।

आणानिद्देसकरे, गुरुण-मुववायकारए ।
इंगियागारसंपन्ने, सेविणीएत्ति वुच्चई ।।२।।

आणाऽनिद्देसकरे, गुरूण मणु-ववाय-कारए ।
पडिणीए असंबुद्धे, अविणीएत्ति वुच्चई ।।३।।

जहा सुणी पूइकण्णी, निक्कसिज्जइ सव्वसो ।
एवं दुस्सील-पडिणीए, मुहरी निक्कसिज्जइ ।।४।।

कण कुण्डगं चइत्ताणं, विट्ठं भुंजइ सूयरे ।
एवं सीलं चइत्ताणं, दुस्साले रमई मिए ।।५।।

सुणिया भावं साणस्स, सूयरस्स नरस्स य ।
विणए ठवेज्ज अप्पाण-मिच्छन्तो हियमप्पणो ।।६।।

तम्हा विणयमेसिज्जा, सीलं पडिलभज्जओ ।
बुद्ध-पुत्त-नियोगट्ठी, न निक्कसिज्जइ कण्हुंई ।।७।।

निसन्ते सियाऽमुहरी, बुद्धाणं अन्तिए सया ।
अट्ठजुत्ताणि सिक्खिज्जा; निरट्ठाणि उ वज्जए ।।८।।

अणुसासिओ न कुप्पेज्जा, खंति सेविज्ज पण्डिए ।
खुड्डेहिं सह संसग्गिं, हासं कीडं च वज्जए ।।९।।

मा य चण्डालियं कासी, बहुयं मा य आलवे ।
कालेण य अहिज्जित्ता, तओ झाइज्ज एगगो ।।१०।।

आहच्च चण्डालियं कट्टु, न निण्हविज्ज कयाइवि ।
कडं कडेत्ति भासेज्जा, अकडं नो कडेत्ति य ॥११॥

मा गलियस्सेव कसं, वयण-मिच्छे पुणो-पुणो ।
कसं व दट्ठुमाइण्णे. पावगं परिवज्जए ॥१२॥

अणासवा थूल-वया कुसीला, मिउंपि चण्डं पकरिन्ति सीसा ।
चित्ताणुया लहु दक्खोववेया, पसायए ते हु दुरासयंऽपि ॥१३॥

नापुट्ठो वागरे किंचि, पुट्ठो वा नालियं वए ।
कोहं असच्चं कुवेज्जा, धारेज्जा पियमप्पियं ॥१४॥

अप्पा चेव दमेयव्वो, अप्पा हु खलु दुद्दमो ।
अप्पा दन्तो सुही होइ, अस्सिं लोए परत्थ य ॥१५॥

वरं मे अप्पा दन्तो, संजमेण तवेण य ।
माहं परेहि दम्मंतो, बंधणेहिं वहेहि य ॥१६॥

पडिणीयं च बुद्धाणं, वाया अदुव कम्मुणा ।
आवी वा जइ वा रहस्से, नेव कुज्जा कयाइवि ॥१७॥

न पक्खओ न पुरओ, नेव किच्चाण पिट्ठओ ।
न जुंजे ऊरुणा ऊरुं, सयणे नो पडिस्सुणे ॥१८॥

नेव पल्हत्थियं कुज्जा, पक्खपिण्डं च संजए ।
पाए पसारिए वावि, न चिट्ठे गुरुणन्तिए ॥१९॥

आयरिएहिं वाहित्तो, तुसिणीओ न कयाइवि ।
पसायपेही नियोगट्ठी, उवचिट्ठे गुरुं सया ॥२०॥

आलवन्ते लवन्ते वा, न निसीएज्ज कयाइवि ।
चइऊणमासणं धीरो, जओ जुत्तं पडिस्सुणे ॥२१॥

आसणगओ न पुच्छेज्जा, नेव सेज्जागओ कयाइवि ।
आगम्मुकडुओ सन्तो, पुच्छिज्जा पंजलीउडो ॥२२॥

एवं विणय जुत्तस्स, सुत्तं अत्थं च तदुभयं।
पुच्छमाणस्स सीसस्स; वागरिज्ज जहा सुयं ॥२३॥

मुसं परिहरे भिक्खू, न य ओहारिणिं वए।
भासा-दोसं परिहरे, मायं च वज्जए सया ॥२४॥

न लवेज्ज पुट्ठो सावज्जं, न निरट्ठं न मम्मयं।
अप्पणट्ठा परट्ठा वा, उभयस्सऽन्तरेण वा ॥२५॥

समरेसु अगारेसु, सन्धीसु य महापहे।
एगो एगत्थिए सद्धिं, नेव चिट्ठे न संलवे ॥२६॥

जं मे बुद्धाणुसासन्ति, सीएण फरुसेण वा।
मम लाभोत्ति पेहाए, पयओ तं पडिस्सुणे ॥२७॥

अण-सासण-मोवायं दुक्कडस्स य चोयणं।
हियं तं मण्णइ पण्णा, वेसं होइ असाहुणो ॥२८॥

हियं विगय-भया बुद्धा, फरुसंपि अणुसासणं।
वेसं तं होइ मूढाणं, खन्तिसोहिकरं पयं ॥२९॥

आसणे उवचिट्ठेज्जा; अणुच्चे अकुए थिरे।
अप्पुट्ठाई निरुट्ठाई, निसीएज्जऽप्पकुक्कुए ॥३०॥

कालेण निक्खमे भिक्खू; कालेण य पडिक्कमे।
अकालं च विवज्जित्ता, काले कालं समायरे ॥३१॥

परिवाडीए न चिट्ठेज्जा; भिक्खू दत्तेसणं चरे।
पडि-रूवेण एसित्ता, मियं कालेण भक्खए ॥३२॥

नाइ-दूरमणासन्ने; नाऽन्ने सिं चक्खुफासओ।
एगो चिट्ठेज्ज भत्तट्ठा; लंघित्ता तं नऽइक्कमे ॥३३॥

नाइउच्चे व नीए वा; नासन्ने नाइ दूरओ।
फासुयं परकडं पिण्डं, पडिगाहेज्ज संजए ॥३४॥

अप्पपाणेऽप्पबीयम्मि; पडिच्छन्नम्मि संवुडे।
समयं संजए भुंजे, जयं अपरिसाडियं ॥३५॥

सु-कडित्ति सु-पक्कित्ति, सु-च्छिन्ने सु-हडे मडे।
सु-णिट्ठिए सु-लट्ठित्ति, सावज्जं वज्जए मुणी ॥३६॥

रमए पण्डिए सासं, हयं भद्दं व वाहए।
बालं सम्मइ सासंतो, गलियस्सं व वाहए ॥३७॥

खड्डुया मे चवेडा मे, अक्कोसा य वहा य मे।
कल्लाण-मणु-सासन्तो, पाव-दिट्ठित्ति मन्नई ॥३८॥

पुत्तो मे भाय नाइत्ति; साहू कल्लाण मन्नई।
पाव-दिट्ठि उ अप्पाणं, सासं दासित्ति मन्नई ॥३९॥

न कोवए आयरियं; अप्पाणंपि न कोवए।
बुद्धोवघाई न सिया; न सिया तोत्तगवेसए ॥४०॥

आयरियं कुवियं नच्चा, पत्तिएण पसायए।
विज्झवेज्ज पंजलीउडो, वएज्ज न पुणोत्ति य ॥४१॥

धम्मज्जियं च ववहारं, बुद्धेहायरियं सया।
तमायरन्तो ववहारं, गरहं नाभिगच्छई ॥४२॥

मणोगयं वक्कगयं, जाणित्तायरियस्स उ।
तं परिगिज्झ वायाए, कम्मुणा उववायए ॥४३॥

वित्ते अचोइए निच्चं, खिप्पं हवई सुचोइए।
जहोवइट्ठं सुकयं, किच्चाइं कुव्वई सया ॥४४॥

नच्चा नमइ मेहावी, लोए कित्ती से जायए।
हवई किच्चाणं सरणं, भूयाणं जगई जहा ॥४५॥

पुज्जा जस्स पसीयन्ति, संबुद्धा पुव्वसंथुया।
पसन्ना लाभ-इस्संति, विउलं अट्ठियं सुयं ॥४६॥

स पुज्जसत्थे सु-विणीयसंसए, मणोरुई चिट्ठइ कम्म-संपया ।
तवो-समायारि-समाहि-संवुडे, महज्जुइ पंच वयाइं पालिया ॥४७॥
स देव-गंधव्व-मणुस्सपूइए, चइत्तु देहं मल-पंक-पुव्वयं ।
सिद्धे वा हवइ सासए, देवे वा अप्परए महिड्ढिए ॥त्तिबेमि ॥४८॥

॥ इति विणयसुयं नाम पढमं अज्झयणं समत्तं ॥१॥

॥ अह दुइयं परीसहज्यणं ॥२॥

सुयं मे आउसं--तेणं भगवया एवमक्खायं । इह खलु वावीसं परीसहा समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया जे भिक्खू सोच्चा नच्चा जिच्चा अभिभूय भिक्खायरियाए परिव्वयन्तो पुट्ठो नो विहन्नेज्जा । कयरे खलु ते वावीसं परीसहा समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया जे भिक्खू सोच्चा नच्चा जिच्चा अभिभूय भिक्खायरियाए परिव्वयंतो पुट्ठो नो विहन्नेज्जा ! इमे खलु ते वावीसं परीसहा समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया, जे भिक्खू सोच्चा नच्चा जिच्चा अभिभूय भिक्खायरियाए परिव्वयंतो पुट्ठो नो विहन्नेज्जा; तं जहा--दिगिंच्छा-परिसहे[1] पिवासा-परिसहे[2] सीय-परीसहे[3] उसिण-परीसहे[4] दंस-मसय-परीसहे अचेल-परीसहे[6] अरइ-परीसहे[7] इत्थी-परीसहे[8] चरिया-परिसहे[9] निसीहिया-परीसहे[10] सेज्जा-परीसहे[11] अक्कोस-परीसहे[12] वह परीसहे[13] जायणा-परीसहे[14] अलाभ-परीसहे[15] रोग-परीसहे[16] तणफास-परीसहे[17] जल्ल-परीसहे [1] सक्कार-पुरक्कार-परीसहे[19] पन्ना-परीसहे[20] अन्नाण-परीसहे[21] दंसण-परीसहे[22] ॥

परीसहाणं पविभत्ती, कासवेणं पवेइया ।
तं भे उदाहरिस्सामि, आणु-पुव्विं सुणेह मे ॥१॥

(१) दिगिंछा-परिगए देहे, तवस्सी भिक्खू थामवं ।
न छिंदे न छिंदावए, न पए न पयावए ॥२॥

काली-पव्वंग-संकासे, किसे धमणि-संतए ।
मायन्ने असण-पाणस्स, अदीण-मणसो चरे ॥३॥

(२) तओ पुट्ठो पिवासाए, दो गुंच्छी लज्जसंजए ।
सीओदगं न सेविज्जा, वियडस्सेसणं चरे ॥४॥

छिन्नावाएसु पंथेसु, आउरे सु-पिवासिए ।
परिसुक्कमुहाऽदीणे, तं तितिक्खे परीसहं ॥५॥

(३) चरंतं विरयं लूह, सीयं फुसइ एगया ।
नाइवेलं मुणी गच्छे, सोच्चाणं जिण-सासणं ॥६॥

न मे निवारणं अत्थि, छवित्ताणं न विज्जई ।
अहं तु अग्गिं सेवामि, इइ भिक्खू न चिंतए ॥७॥

(४) उसिणं परियावेणं, परिदाहेण : तज्जिए ।
घिंसु वा परियावेणं, सायं नो परिदेवए ॥८॥

उण्हाहितत्तो मेहावि, सिणाणं नोऽवि पत्थए ।
गायं नो परिसिंचेज्जा, न वीएज्जा य अप्पयं ॥९॥

(५) पुट्ठो य दंस-मसएहिं, समरे व महामुणी ।
नागो संगामसीसे वा, सूरो अभिहणे परं ॥१०॥
न संतसे ल वारेज्जा, मणंऽपि न पओसए ।
उवेहे न हणे पाणे, भुंजंते मंस-सोणियं ॥११॥

(६) परिजुण्णेहिं वत्थेहिं, होक्खामित्ति अचेलए ।
अदुवा सचेले होक्खामि, इइ भिक्खू न चिंतए ॥१२॥

एगयाऽचेलए होइ, सचेले आवि एगया।
एयं धम्महियं नच्चा, नाणी नो परिदेवए ॥१३॥

(७) गामाणुगामं रीयंतं, अणगारं अकिंचणं।
अरई अणु-प्पवे-सेज्जा; तं तितिक्खे परीसहं ॥१४॥

अरइं पिट्ठओ किच्चा, विरए आय-रक्खिए।
धम्मा-रामे निरा-रम्भे, उवसन्ते मुणी चरे ॥१५॥

(८) सङ्गो एस मणूसाणं, जाओ लोगम्मि इत्थिओ।
जस्स एया परिन्नाया; सुकडं तस्स सामण्णं ॥१६॥

एयमादाय मेहावी; पङ्कभूया उ इत्थिओ।
नो ताहिं विणिहन्नेज्जा; चरेज्जऽत्तगवेसए ॥१७॥

(९) एग एव चरे लाढे; अभिभूय परीसहे।
गामे वा नगरे वावि, निगमे वा रायहाणिए ॥१८॥

असमाणो चरे भिक्खू; नेव कुज्जा परिग्गहं।
असंसत्ते गिहत्थेहिं; अणिएओ परिव्वए ॥१९॥

(१०) सुसाणे सुन्नगारे वा, रुक्खमूले व एगओ।
अकुक्कुओ निसीएज्जा; न य वित्तासए परं ॥२०॥

तत्थ से चिट्ठमाणस्स, उव-सग्गा-भिधारए।
संकाभिओ न गच्छेज्जा, उट्ठित्ता अन्नमासणं ॥२१॥

(११) उच्चावयाहिं सेज्जाहिं; तवस्सी भिक्खू थामवं।
नाइवेलं विहन्नेज्जा, पावदिट्ठि विहन्नई ॥२२॥

पइरिक्कुवस्सयं लद्धुं, कल्लाण-मदुव पावगं।
किमेगराइं करिस्सई, एवं तत्थऽहियासए ॥२३॥

(१२) अक्कोसेज्जा परे भिक्खुं; न तेसिं पडिसंजले।
सरिसो होइ बालाणं, तम्हा भिक्खू न संजले ॥२४॥

सोच्चाणं फरुसा भासा; दारुणा गाम-कण्टगा ।
तुसिणीओ उवेहेज्जा, न ताओ मणसीकरे ॥२५॥

(१३) हओ न संजले भिक्खू, मणंऽपि न पओसए ।
तितिक्खं परमं नच्चा, भिक्खू धम्मं समायरे ॥२६॥

समणं संजयं दंत, हणेज्जा कोइ कत्थई !
नत्थि जीवस्स नासुत्ति एवं पेहेज्ज संजए ॥२७॥

(१४) दुक्करं खलु भो निच्चं, अणगारस्स भिक्खुणो ।
सव्वं से जाइयं होइ; नत्थि किंचि अजाइयं ॥२८॥

गोयरग्ग-पविट्ठस्स; पाणी नो सुप्पसारए ।
सेओ अगारवासुत्ति; इइ भिक्खू न चिंतए ॥२९॥

(१५) परेसु घासमेसेज्जा; भोयणे परिणिट्ठिए ।
लद्धे पिण्डे अलद्धे वा; नाणुतप्पेज्ज पंडिए ॥३०॥

अज्जेवाहं न लब्भामि, अविलाभो सुए सिया ।
जो एवं पडिसंचिक्खे; अलाभो तं न तज्जए ॥३१॥

(१६) नच्चा उप्पइयं दुक्खं; वेयणाए दुहट्ठिए ।
अदीणो थावए पन्नं; पुट्ठो तत्थऽहियासए ॥३२॥

तेगिच्छं नाभिनंदेज्जा; संचिक्खऽत्तगवेसए ।
एवं खु तस्स सामण्णं; जं न कुज्जा न कारवे ॥३३॥

(१७) अचेलगस्स लूहस्स; संजयस्स तवस्सिणो ।
तणेसु सयमाणस्स, हुज्जा गायविराहणा ॥३४॥

आयवस्स निवाएण अउला हवइ वेयणा ।
एवं नच्चा न सेवंति, तंतुजं तणतज्जिया ॥३५॥

(१८) किलिन्नगाए मेहावी, पंकेण व रएण वा ।
घिंसु वा परियावेण, सायं नो परिदेवए ॥३६॥

वेएज्ज निज्जरापेही, आरियं धम्मऽणुत्तरं।
जाव सरीरभेउत्ति, जल्लं काएण धारए ॥३७॥

(१९) अभिवायण-मब्भुट्ठाणं, सामी कुज्जा निमंतणं।
जे ताइं पडिसेवन्ति, न तेसिं पीहए मुणी ॥३८॥
अणु-क्कसाई अप्पिच्छे, अन्नाएसी अलोलुए।
रसेसु माणुगिज्झेज्जा, नाणुतप्पेज्ज पन्नव ॥३९॥

(२०) से नूणं मए पुव्वं, कम्माऽणाणफला कडा।
जेणाहं नाभिजाणामि, पुट्ठो केणइ कण्हुई ॥४०॥
अह पच्छा उइज्जन्ति, कम्माऽणाणफला कडा।
एवमस्सासि अप्पाणं नच्चा कम्मविवागयं ॥४१॥

(२१) निरट्ठगम्मि विरओ, मेहुणाओ सु-संवुडो।
जो सक्खं नाभिजाणामि धम्मं कल्लाण-पावगं ॥४२॥
तवो-वहाणमादाय, पडिमं पडिवज्जओ।
एवंपि विहरओ मे, छउमं न नियट्टई ॥४३॥

(२२) नत्थि नूणं परेलोए, इड्ढी वावी तवस्सिणो।
अदुवा वंचिओ-मित्ति, इइ भिक्खू न चिंतए ॥४४॥
अभू जिणा-अत्थि जिणा, अदुवावि भविस्सई।
मुसं ते एवमाहंसु, इइ भिक्खू न चिंतए ॥४५॥
एए परीसहा सव्वे, कासवेण पवेइया।
जे भिक्खू न विहम्मेज्जा, पुट्ठो कणइ कण्हुइ ॥त्तिबेमि॥४६॥

॥ इति दुइअं परीसहज्झयणं समत्तं ॥ २ ॥

॥ अह तइयं चाउरंगिज्जं अज्झयणं ॥३॥

चत्तारि परमंगाणि, दुल्लहाणीह जन्तुणो।
माणुसत्तं सुई सद्धा, संजमम्मि य वीरियं ॥१॥

समावन्ना णं संसारे नाणागोत्तासु जाइन्तु ।
कम्मा नाणाविहा कट्टु पुढो विस्संभया पया ॥२॥

एगया देवलोएसु, नरएसु वि एगया ।
एगया आसुरं कायं, आहाकम्मेहि गच्छई ॥३॥

एगया खत्तिओ होई, तओ चण्डालवुक्कसो ।
तओ कीड-पयंगो य, तओ कुन्थु-पिपीलिया ॥४॥

एवमावट्ट-जोणीसु, पाणिणो कम्म-किव्विसा ।
न निविज्जन्ति संसारे; सव्वट्ठेसु व खत्तिया ॥५॥

कम्म-संगेहिं सम्मूढा' दुक्खिया वहु-वेयणा ।
अमाणुसासु जोणीसु, विणिहम्मन्ति पाणिणो ॥६॥

कम्माणं तु पाहाणाए, आणुपुव्वी कयाइ उ ।
जीवा सोहिमणुप्पत्ता, आवयंति मणुस्सयं ॥७॥

माणुस्सं विग्गहं लद्धुं, सुई धम्मस्स दुल्लहा ।
जं सोच्चा पडिवज्जन्ति, तवं खंतिमहिंसयं ॥८॥

आहच्च सवणं लद्धुं, सद्धा परमदुल्लहा ।
सोच्चा नेआउय मग्गं; वहवे परिभस्सई ॥९॥

सुइं च लद्धुं सद्धं च, वीरयं पुण दुल्लहं ।
बहवे रोयमाणावि, नो य णं पडिवज्जए ॥१०॥

माणुसत्तम्मि आयाओ, जो धम्मं सोच्च सद्दहे ।
तवस्सी वीरियं लद्धुं, संवुडे निद्धुणे रयं ॥११॥

सोही उज्जुय भूयस्स, धम्मो सुद्धस्स चिट्ठई ।
निव्वाणं परमं जाइ, घयसित्ति व्व पावए ॥१२॥

विगिंच कम्मुणो होउं, जसं संचिणु खंतिए ।
पाढवं सरीरं हिच्चा, उड्ढं पक्कमई । ॥१३॥

विसालिसेहिं सिलेहिं, जक्खा उत्तरउत्तरा।
महासुक्का व दिप्पंता, मन्नंता अपुणच्चवं ॥१४॥

अप्पिया देवकामाणं, कामरूव-विउव्विणो।
उड्ढं सप्पेसु चिट्ठन्ति, पुव्वा वाससया बहू ॥१५॥

तत्थ ठिच्चा जहा-ठाणं, जक्खा आउक्खए चुया।
उवेन्ति माणुसं जोणिं, से दसंगेऽभिजायई ॥१६॥

खत्तं वत्थुं हिरण्णं च, पसवो दास-पोरुसं।
चत्तारि काम-खन्धाणि, तत्थ से उववज्जई ॥१७॥

मित्तवं नायवं होई, उच्चगोए य वण्णवं।
अप्पायंके महा-पन्ने, अभिजाए जसोवले ॥१८॥

भोच्चा माणुस्सए भोए, अप्पडि-रूवे अहाउयं।
पुव्वि विसुद्ध-सद्धम्मे केवलं बोहि बुज्झिया ॥१९॥

चउरंगं दुल्लहं नच्चा, संजमं पडिवज्जिया।
तवसा धुयकम्मंसे, सिद्धे हवइ सासए ॥ त्ति वेमि ॥२०॥

॥ इति चाउरंगिज्जं णाम तइअं अज्झयणं समत्तं ॥३॥

॥अह चउत्थ असंखयं अज्झयणं ॥४॥

असंखयं जीविय मा पमायए, जरोवणीयस्स हु नत्थि ताणं।
एवं वियाणाहि जणे पमत्ते, किण्णु-विहिंसा अजया गहिंति ॥१॥

जे पावकम्मेहि धणं मणूसा, समाययन्ती अमइं गहाय।
पहाय ते पास पयट्टिए नरे, वेराणुबद्धा नरयं उवेंति ॥२॥

तेणे जहा संधिमुहे गहीए, सकम्मुणा किच्चइ पावकारी।
एवं पया पेच्च इहं च लोए, कडाण कम्माण न मुक्ख अत्थि ॥३॥

संसार-मावन्न परस्स अट्ठा, साहारणं जं च करेइ कम्मं ।
कम्मस्स ते तस्स उ वेयकाले, न बंधवा बंधवयं उवेंति ॥४॥

वित्तेण ताणं न लभे पमत्तो, इमम्मि लोए अदुवा परत्था ।
दीवप्पणट्ठेव अणन्त-मोहे, नेयाउयं दुट्ठमदट्ठूमेव ॥५॥

सुत्तेसु यावी पडि-बुद्ध-जीवी, न वीससे पण्डिए आसुपन्ने ।
घोरा मुहुत्ता अवलं सरीरं, भारंडपक्खी व चरेऽप्पमत्तो ॥६॥

चरे पयाइं परिसंकमाणो, जं किंचि पासं इह मण्णमाणो ।
लाभंतरे जीविय वूहइत्ता, पच्छा परिन्नाय मलाव-धंसी ॥७॥

छन्दंनिरोहेण उवेइ मोक्खं, आसे जहा सिक्खियवम्मधारी ।
पुव्वाइं वासाइं चरे प्पमत्तो, तम्हा मुणी खिप्पमुवेइ मोक्खं ॥८॥
स पुव्वमेवं न लभेज्ज पच्छा, एसोऽवमा सासयवाइयाणं ।
विसीयई सिढिले आउयम्मि, कालोवणीए सरीरस्स भेए ॥९॥
खिप्पं न सक्के इ विवेगमेउं, तम्हा समुट्ठाय पहाय कामे ।
समिच्च लोयं समया-महेसी, आयाण-रक्खी चरेऽप्पमत्तो ॥१०॥
मुहुं मुहुं मोह-गुणे जयन्तं, अणेग-रूवा समणं चरन्तं ।
फासा फुसन्ति असमंजसं च, न तेसि भिक्खू मणसा पउस्से ॥११॥
मन्दा य फासा बहुलोहणिज्जा, तहप्पगारेसु मणं न कुज्जा ।
रक्खिज्ज कोहं विणएज्ज माणं, मायं न सेवेज्ज पहेज्ज लोहं ॥१२॥
जेऽसंक्खया तुच्छ परप्प-वाई, ते पिज्ज दोसाणुगया परज्झा-(ब्भा)
एए अहम्मेत्ति दुगुंछमाणो, कंखे गुणे जाव सरीरभेउ ॥१३॥

॥त्ति बेमि॥ इति असंखयं चउत्थं अज्झयणं समत्तं ॥४॥

॥ अह अकाममरणिज्जं पञ्चमं अज्झयणं ॥

अण्णवंसि महोहंसि, एगे तिण्णे दुरुत्तरे ।
तत्थ एगे महा-पन्ने; इमं पणहमुदाहरे ॥१॥

सन्ति मे य दुवे ठाणा, अक्खाया मरणन्तिया ।
अकाम-मरणं चेव, सकाम-मरणं तहा ॥२॥

बालाणं अकामं तु, मरणं असइं भवे ।
पण्डियाणं सकामं तु, उक्कोसेण सइं भवे ॥३॥

तत्थिमं पढमं ठाणं, महावीरेण देसियं ।
कामगिद्धे जहा बाले, भिसं कूराइं कुव्वई ॥४॥

जे गिद्धे काम-भोगेसु; एगे कूडाय गच्छई ।
न मे दिट्ठे परे लोए, चक्खूदिट्ठा इमा रई ॥५॥

हत्थागया इमे कामा, कालिया जे आणागया ।
को जाणइ परे लोए, अत्थि वा नत्थि वा पुणो ॥६॥

जणेण सद्धिं होक्खामि इइ बाले पगब्भई ।
काम-भोगाणुराएणं, केसं संपडिवज्जई ॥७॥

तओ से दण्डं समारभई, तसेसु थावरेसु य ।
अट्ठाए य अणट्ठाए, भूयगामं विहिंसई ॥८॥

हिंसे बाले मुसा-वाई, माइल्ले पिसुणे सढे ।
भुंजमाणे सुरं मंसं, सेयमेयंति मन्नई ॥९॥

कायसा वयसा मत्ते, वित्ते गिद्धे य इत्थिसु ।
दुहओ मलं संचिणइ, सिसुणागु व्व मट्टियं ॥१०॥

तओ पुट्ठो आयंकेणं, गिलाणो परि-तप्पई ।
पभीओ पर--लोगस्स, कम्माणुप्पेहि अप्पणो ॥११॥

सुया मे नरए ठाणा, असीलाणं च जा गई ।
बालाणं कुर--कम्माणं, पगाढा जत्थ वेयणा ॥१२॥

तत्थोऽववाइयं ठाणं, जहा मेयमणुस्सुयं ।
आहकम्मेहिं गच्छन्तो, सो पच्छा परितप्पई ॥१३॥

जहा सागडिओ जाणं, समं हिच्चा महापहं ।
विसमं मग्ग--मोइण्णो, अक्खे भग्गम्मि सोयई ॥१४॥

एवं धम्मं विउक्कम्म, अहम्मं पडिवज्जिया ।
बाले मच्चुमुहं पत्ते, अक्खे भग्गे व सोयई ॥१५॥

तओ से मरणन्तम्मि, बाले संतसई भया ।
अकाम--मरणं मरई, धुत्ते व कालिणाजिए ॥१६॥

एयं अकाम--मरणं, बालाणं तु पवेइयं ।
एत्तो सकाम--मरण, पण्डियाणं सुणेह मे ॥१७॥

मरणंऽपि स--पुण्णाणं जहा मेयमणुस्सुयं ।
विप्पसण्णमणाघायं, संजयाण वुसीमओ ॥१८॥

न इमं सव्वेसु भिक्खूसु, न इमं सव्वेसुऽगारिसु ।
नाणा-सीला-अगारत्था, विसमसीला य भिक्खुणो ॥१९॥

सन्ति एगेहिं भिक्खूहिं, गारत्था संजमुत्तरा ।
गारत्थेहि य सव्वेहिं, साहवो संजमुत्तरा ॥२०॥

चीराजिणं नगिणिणं, जडी संघाडिमुण्डिणं ।
एयाणिवी न तायन्ति, दुस्सीलं परियागयं ॥२१॥

पिंडोलएव्व दुस्सीले, नरगाओ न मुच्चइ ।
भिक्खाए वा गहित्थे वा, सुव्वए गम्मई दिवं ॥२२॥

अगारि सामाइयंगाणि, सड्ढी काएण फासए ।
पोसहं दुहओ पक्खं, एगरायं न हावए ॥२३॥

एवं सिक्खा-समावन्ने, गिहि-वासे वि सुव्वए ।
मुच्चई छविपव्वाओ, गच्छे जक्खसलोगयं ॥२४॥

अह जे संवुडे भिक्खू, दोण्हं अन्नयरे सिया ।
सव्व-दुक्ख-पहीणे वा, देवे वावि महिड्ढिए ॥२५॥

उत्तराइं विमोहाइं, जुईमन्ताऽणुपुव्वसा ।
समाइण्णाइं जक्खेहिं, आवासाइं जसंसिणो ॥२६॥

दीहाउया इड्ढिमन्ता, समिद्धा कामरूविणो ।
अहुणोववन्नसंकासा, भुज्जो अच्चिमालिप्पभा ॥२७॥

ताणि ठाणाणि गच्छन्ति, सिक्खित्ता संजमं तवं ।
भिक्खाए वा गहित्थे वा, जे सन्ति परिनिव्वुडा ॥२८॥

तेसिं सोच्चा सपुज्जाणं, संजयाण वुसीमओ ।
न सन्तसन्ति मरणन्ते, सीलवन्ता बहुस्सुया ॥२९॥

तुलिया विसेसमादाय, दया-धम्मस्स खन्तिए ।
विप्पसीएज्ज मेहावी, तहाभूएण अप्पणा ॥३०॥

तओ काले अभिप्पेए, सड्ढी तालिसमन्तिए ।
विणएज्ज लोमहरिसं, भेयं देहस्स कंखए ॥३१॥

अहकालम्मि संपत्ते, आघायाय समुस्सयं ।
सकाम-मरणं मरई, तिण्हमन्नगरं मुणी ॥ त्ति बेमि ॥३२॥

॥ इति अकाममरणिज्जं पंचमं अज्झयणं समत्तं ॥५॥

॥अह खुड्डागनियंठिज्जं छट्ठं अज्झयणं ॥६॥

जावन्तिऽविज्जापुरिसा, सव्वे ते दुक्खसंभवा ।
लुप्पन्ति बहुसो मूढा, संसारम्मि अणन्तए ॥१॥

समिक्ख पण्डिए तम्हा, पासजाई पहे बहू ।
अप्पणा सच्चमेसेज्जा, मेत्तिं भूएसु कप्पए ॥२॥

माया पियाण्हुसा भाया, भज्जा पुत्ता य ओरसा ।
नालं ते मम ताणाए, लुप्पंतस्स सकम्मुणा ॥३॥

एयमट्ठं सपेहाए, पासे समियदंसणे ।
छिन्दे गेद्धिं सिणेहं च, न कंखे पुव्वसंथवं ॥४॥

गवासं मणि-कुण्डलं, पसवो दास-पोरुसं ।
सव्व-मेय चइत्ताणं, काम-रूवी भविस्ससि ॥५॥

(थावरं जंगमं चेव, धणं धन्नं उवक्खरं ।
पच्चमाणस्स कम्मेहिं नालं दुक्खाओ मोयणे) ॥६॥

अज्झत्थं अव्वओ सव्वं दिस्स पाणे पियायए ।
न हणे पाणिणो पाणे भयवेराओ उवरए ॥७॥

आयाणं नरयं दिस्स नायएज्ज तणामवि ।
दोगुच्छी अप्पणो पाए दिन्नं भुंजेज्ज भोयणं ॥८॥

इहमेगे उ मन्नन्ति अप्पच्चक्खाय पावगं ।
सायरियं विदित्ताणं सव्व-दुक्खाण मुच्चई ॥९॥

भणंता अकरेन्ता य बन्ध-मोक्ख-पइण्णिणो ।
वाया-विरिय-मेत्तेण, समा-सासेन्ति अप्पयं ॥१०॥

न चित्ता तायए भासा, कुओ विज्जाणुसासणं ।
विसन्ना पाव-कम्मेहि बाला पंडियमाणिणा ॥११॥

जे केइ सरीरे सत्ता, वण्णे रूवे य सव्वसो ।
मणसा काय-वक्केणं, सव्वे ते दुक्ख संभवा ॥१२॥

आवन्ना दीहमद्धाणं संसारम्मि अणन्तए ।
तम्हा सव्व-दिसं पस्सं, अप्पमत्तो परिव्वए । ॥१३॥

बहिया उड्ढमादाय, नावकंखे कयाइवि ।
पुव्व-कम्म-क्खय-ट्ठाए; इमं देहं समुद्धरे ॥१४॥

विविच्च कम्मुणो हेउं; कालकंखी परिव्वए ।
मायं पिंडस्स पाणस्स; कडं लद्धूण भक्खए ॥१५॥

सन्निहिं च न कुव्वेज्जा लेव-मायाए संजए ।
पक्खीपत्तं समादाय, निरवेक्खो परिव्वए ॥१६॥

एसणा-समिओ लज्जू, गामे अणियओ चरे ।
अप्पमत्तो पमत्तेहिं, पिण्ड वायं गवेसए ॥१७॥

एवं से उदाहु अणुत्तर-नाणी, अणुत्तर-दंसी अणुत्तर नाण दंसण धरे
अरहा नायपुत्ते, भगवं वेसालिए वियाहिए ॥ त्ति बेमि ॥१८॥

॥ इति खुड्डागनियंठिज्जं छट्ठं अज्झयणं समत्तं ॥६॥

॥ अह एलयं सत्तमं अज्झयणं ॥७॥

जहाएसं समुद्दिस्स, कोइ पोसेज्ज एलयं ।
ओयणं जवसं देज्जा, पोसेज्जावि सयङ्गणे ॥१॥

तओ से पुट्ठे परिवूढे, जायमेए महोदरे ।
पीणिए विउले देहे, आएसं परिकंखए ॥२॥

जाव न एइ आएसे, ताव जीवइ से दुही ।
अह पत्तम्मि आएसे, सीसं छेत्तूण भुज्जई ॥३॥

जहा से खलु उरब्भे, आएसाए समीहिए ।
एवं बाले अहम्मिट्ठे, ईहई नरयाउयं ॥४॥

हिंसे बाले-मुसा वाई, अद्धाणंमि विलोवए ।
अन्न दत्तहरे तेणे, माई कं नु हरे सढे ॥५॥

इत्थी-विसय-गिद्धे य, महारंभ-परिग्गहे ।
भुंजमाणे सुरं मंसं, परिवूढे परंदमे ॥६॥

अय-कक्करभोइ य, तुंडिल्ले चिय-लोहिए ।
आउयं नरए कंखे, जहाएसं व एलए ॥७॥

आसणं सयणं जाणं, वित्तं कामाणि भुंजिया ।
दुस्सा-हडं धणं हिच्चा, बहु संचिणिया रयं ॥८॥

तओ कम्म-गुरू जंतू, पच्चुप्पन्न-परायणे ।
अय व्व आगयाएसे, मरणंतम्मि सोयई ॥९॥

तओ आउ-परिक्खीणे, चुया देह विहिंसगा ।
आसुरीयं दिसं बाला, गच्छन्ति अवसा तमं ॥१०॥

जहा कागिणिए हेउं, सहस्सं हारए नरो ।
अपत्थं अम्बगं भोच्चा, राया रज्जं तु हारए ॥११॥

एवं माणुस्सगा कामा, देवकामाण अन्तिए ।
सहस्स-गुणिया भुज्जो, आउं कामा य दिव्विया ॥१२॥

अणेग-वासानउया, जा सा पन्नवआ ठिई ।
जाणि जीयन्ति दुम्मेहा, ऊण-वास-सया-उए ॥१३॥

जहा य तिन्नि वाणिया, मूलं घेतूण निग्गया ।
एगोऽत्थ लहई लाभं, एगो मूलेण आगओ ॥१४॥

एगो मूलंपि हारित्ता, आगओ तत्थ वाणिओ ।
ववहारे उवमा एसा, एवं धम्मे वियाणह ॥१५॥

माणुसत्तं भवे मूलं, लाभो देवगई भवे ।
मूलच्छेएण जीवाणं, नरग-तिरिक्ख-त्तणं धुवं ॥१६॥

दुहओ गई बालस्स, आवई वहमूलिया ।
देवत्तं माणुसत्तं च, जं जिए लोलयासढे ॥१७॥

तओ जिए सइं होइ, दुविहिं दोग्गइं गए ।
दुल्लहा तस्स उम्मग्गा, अद्धाए सुचिरादवि ॥१८॥

एवं जियं सपेहाए, तुलिया बालं च पण्डियं ।
मूलियं ते पवेसन्ति, माणुसिं जोणिमेन्ति जे ॥१९॥

वेमायाहिं सिक्खाहिं, जे नरा गिहि सुव्वया ।
उवेन्ति माणुसं जोणिं. कम्मसच्चाहु पाणिणो ॥२०॥

जेसिं तु विउला सिक्खा तूलियं ते अइच्छिया ।
सीलवन्ता सविसेसा, अदीणा जन्ति देवयं ॥२१॥

एवमदीणवं भिक्खू, आगारिं च वियाणिया ।
कहएणु 'जिच्च मेलिक्खं जिच्चमाणे न संविदे ॥२२॥

जहा कुसग्गे उदगं समुद्देण समं मिणे ।
एवं माणुस्सगा कामा, देवकामाण अंतिए ॥२३॥

कुसग्गमेत्ता इमे कामा, सन्निरुद्धम्मि आउए ।
कस्स हेउं पुराकाउं जोगक्खेमं न संविदे ॥२४॥

इह कामणियट्टस्स, अत्तट्ठे अवरज्झई ।
सोच्चा नेयाउयं मग्गं, जं भुज्जो परिभस्सई ॥२५॥

इह कामणियट्टस्स, अत्तट्ठे नावरज्झइ ।
पूइदेहनिरोहेणं, भवे देवेत्ति मे सुयं ॥२६॥

इड्ढी जुई जसो वण्णो, आउं सुहमणुत्तरं ।
भुज्जो जत्थ मणुस्सेसु, तत्थ से उववज्जई ॥२७॥

वालस्स पस्स वालत्तं, अहम्मं पडिवज्जिया ।
चिच्चा धम्मं अहम्मिट्ठे, नरए उववज्जई ॥२८॥

धीरस्स पस्स धीरत्तं, सुच्च-धम्माणुवत्तिणो ।
चिच्चा अधम्मं धम्मिट्ठे, देवेसु उववज्जई ॥२९॥

तुलियाण वालभावं, अवालं चेव पंडिए ।
चइऊण वालभावं, अवालं सेवई मुणि ॥ त्ति बेमि ॥३०॥

॥ इति एलयं सत्तमं अज्झयणं समत्तं ॥७॥

———

॥ अह काविलीयं अट्ठमं अज्झयणं ॥८॥

अधुवे असासयम्मि, संसारम्मि दुक्खपउराए।
किं नाम होज्ज तं कम्मयं, जेणाहं दुग्गइं न गच्छेजा ? ॥१॥

विजहित्तु पुव्वसंजोयं, न सिणेहं कहिंचि कुव्वेज्जा।
असिणेह-सिणेह-करेहिं, दोसपओसेहि मुच्चए भिक्खू ॥२॥

तो नाण दंसण-समग्गो, हिय-निस्सेसाय सव्व जीवाणं।
तेसिं विमोक्खणट्ठाए, भासई मुणिवरो विगय-मोहो ॥३॥

सव्वं गंथं कलहं च, विप्पजहे तहाविहं भिक्खू।
सव्वेस्सु कामजाएसु, पासमाणो न लिप्पई ताई ॥४॥

भोगा-मिस-दोस-विसन्ने, हिय निस्सेसाय सबुद्धि वोच्चत्थे।
बाले य मन्दिए मूढे, बज्झई मच्छिया व खेलम्मि ॥५॥

दुप्परिच्चया इमे कामा, नो सुजहा अधीर-पुरिसेहिं।
अह सन्ति सुव्वया साहू, जे तरन्ति अतरं वणिया वा ॥६॥

समणामुएगे वयमाणो, पाणवहं मिया अयाणन्ता।
मन्दा निरयं गच्छन्ति, बाला पावियाहिं दिट्ठीहिं ॥७॥

न हु पाण वहं अणुजाणे, मुच्चेज्ज कयाइ सव्वदुक्खाणं।
एवं आयरिएहिं अक्खायं, जेहिं इमो साहु धम्मो पन्नत्तो ॥८॥

पाणे य नाइवाएज्जा, से समीइत्ति, वुच्चई ताई।
तओ से पावयं कम्मं, निज्जाइ उदगं व थलाओ ॥९॥

जग निस्सिएहिं भूएहिं, तस नामेहिं थावरेहिं च।
नो तेसिं समारंभे दंडं, मणसा वयसा कायसा चेव ॥१०॥

सुद्धेसणाओ नच्चाणं, तत्थ ठवेज्ज भिक्खू अप्पाणं।
जायाए घासमेसेज्जा, रस-गिद्धे न सिया भिक्खाए ॥११॥

पन्ताणि चेव सेवेज्ज, सीयपिंडं पुराण-कुम्मासं।
अदु वुक्कसं पुलागं वा, जवणट्ठाए निसेवए मंथुं ॥१२॥

जे लक्खणं च सुविण च अङ्गविज्जं च जे पउंजंति।
न हु ते समणा वुच्चंति, एवं आयरिएहिं अक्खायं ॥१३॥

इहजीवियं अणियमेत्ता पभट्ठा समाहिजोएहिं।
ते काम-भोग-रस-गिद्धा, उववज्जन्ति आसुरे काए ॥१४॥

तत्तोऽवि य उव्वट्टित्ता, संसारं बहु अणुपरियटन्ति।
बहु कम्मलेव लित्ताणं, बोही होइ सुदुल्लहा तेसिं ॥१५॥

कासिणंपि जो इमं लोयं, पडिपुण्णं दलेज्ज इक्कस्स।
तेणावि से न संतुस्से, इइ दुप्पूरए इमे आया ॥१६॥

जहा लाहो तहा लोहो, लाहा लोहो पवड्ढई।
दोमासकयं कज्जं, कोडीएवि न निट्ठियं ॥१७॥

नो रक्खसीसु गिज्झेज्जा, गंडवच्छासुऽणेगचित्तासु।
जाओ पुरिसं पलोभित्ता खेल्लन्ति जहा व दासेहिं ॥१८॥

नारीसु नोव गिज्झेज्जा इत्थी विप्पजहे अणागारे।
धम्मं च पेसलं नच्चा, तत्थ ठवेज्ज भिक्खू अप्पाणं ॥१९॥

इइ एस धम्मे अक्खाए, कविलेणं च विसुद्धपन्नेणं।
तरिहिन्ति जे उ काहिन्ति तेहिं आराहिया दुवे लोग ॥२०॥

॥ त्ति बेमि ॥ इति काविलीयं अट्ठमं अज्झयणं ॥८॥

॥ अह णवमं नमिपवज्जा-णामज्झयणं ॥९॥

चइऊण देवलोगाओ, उववन्नो माणुसम्मि लोगम्मि।
उवसन्त-मोहणिज्जो, सरई पोराणियं जाइं ॥१॥

जाइं सरित्तु भयवं, सयंसंबुद्धो अणुत्तरे धम्मे ।
पुत्तं ठवेत्तु रज्जे, अभि-णिक्खमई नमी राया ॥२॥

सो देवलोगसरिसे अन्तेउर-वर-गओ वरे भोए ।
भुंजित्तु नमी राया बुद्धो भोगे परिच्चयई ॥३॥

मिहिलं स-पुर जण वयं, बलमोरोहं च परियणं सव्वं ।
चिच्चा अभिनिक्खन्तो, एगन्त-महिड्ढिओ भयवं ॥४॥

कोला हलग-संभूयं, आसी मिहिलाए पव्वयन्तम्मि ।
तइया रायरिसिम्मि नमिम्मि अभिणिक्खमन्तम्मि ॥५॥

अब्भुट्ठियं रायरिसिं, पवज्जा-ठाण मुत्तमं ।
सक्को माहण-रूवेण, इमं वयणमब्बवी ॥६॥

किण्णु भो ! अज्ज महिलाए, कोला-हलग-संकुला ।
सुव्वन्ति दारुणा सद्दा, पासाएसु गिहेसु य ॥७॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ नमी रायरिसी, देविन्दं इणमब्बवी ॥८॥

मिहिलाए चेइए वच्छे, सीयच्छाए मणोरमे ।
पत्त-पुप्फ-फलो-वेए, बहूणं बहु-गुणे सया ॥९॥

वाएण हीरमाणम्मि, चेइयम्मि मणोरमे ।
दुहिया असरणा अत्ता, एए कन्दन्ति भो खगा ॥१०॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं, देविन्दो इणमब्बवी ॥११॥

एस अग्गी य वाऊ य, एयं डज्झइ मन्दिरं ।
भयवं अन्तेउरं तेणं, कीस णं नावपेक्खह ॥१२॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ नमी रायरिसी, देविन्दं इणमब्बवी ॥१३॥

सुहं वसामो जीवामो, जेसिं मो नत्थि किंचणं ।
मिहिलाए डज्झमाणीए, न मे डज्झइ किंचणं ॥१४॥

चत्त-पुत्त-कलत्तस्स, निव्वावारस्स भिक्खुणो ।
पियं न विज्जई किंचि, अप्पियंपि न विज्जई ॥१५॥

बहुं खु मुणिणो भद्दं, अणगारस्स भिक्खुणो ।
सव्वओ विप्पमुक्कस्स, एगन्तमणुरसओ ॥१६॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं, देविन्दं इणमव्ववी ॥१७॥

पागारं कारइत्ताणं, गोपुरट्टालगाणि य ।
उस्सूलगसयग्घीओ, तओ गच्छसि खत्तिया ॥१८।

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ नमी रायरिसी, देविन्दं इणमव्ववी ॥१९॥

सद्धं नगरं किच्चा, तव-संवर-मग्गलं ।
खन्ति निउण पागारं, तिगुत्तं दुप्पधंसयं ॥२०॥

धणुं परक्कमं किच्चा, जीवं च इरियं सया ।
धिइं च केयणं किच्चा, सच्चेण पलिमन्थए ॥२१॥

तव-नारायजुत्तेण, भित्तूण कम्म-कंचुयं ।
मुणी विगय-संगामो, भवाओ परिमुच्चए ॥२२॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं, देविन्दो इणमव्ववी ॥२३॥

पासाए कारइत्ताणं, वद्ध-माण-गिहाणिय ।
वालग्ग-पोइयाओ य, तओ गच्छसि खत्तिया ॥२४॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ नमी रायरिसी, देविन्दं इणमव्ववी ॥२५॥

संसयं खलु सो कुणई, जो मग्गे कुणई घरं ।
जत्थेव गन्तुमिच्छेज्जा, तत्थ कुवेज्ज सासव ॥२६॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ !
तओ नमिं रायरिसिं, देविन्दो इणमब्बवी ॥२७॥

आमोसे लोमहारे य, गंठिभेए य तक्करे ।
नगरस्स खेमं काऊणं, तओ गच्छसि खत्तिया ॥२८॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ !
तओ नमी रायरिसी, देविन्दं इणमब्बवी ॥२६॥

असइं तु मणुस्सेहिं, मिच्छा दंडो पजुञ्जई !
अकारिणोऽत्थ वज्झन्ति, मुच्चइ कारओ जणो ॥३०॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं, देविन्दो इणमब्बवी ॥३१॥

जे केइ पत्थिवा तुज्झं, नानमन्ति नराहिवा !
वसे ते ठावइत्ताणं, तओ गच्छसि खत्तिया ॥६२॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ नमी रायरिसी, देविन्दं इणमब्बवी ॥३३॥

जो सहस्सं सहस्साणं, संगमे दुज्जए जिणे ।
एगं जिणेज्ज अप्पाणं, एस से परमो जओ ॥३४॥

अप्पाण-मेव जुज्झाहि, किं ते जुज्झेण बज्झओ ।
अप्पणा मेव-मप्पाणं, जइत्ता सुहमेहए ॥३५॥

पंचिन्दियाणि कोहं, माणं मायं तहेव लोहं च ।
दुज्जयं चेव अप्पाणं, सव्वं अप्पं जिए जियं ॥३६॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं, देविन्दो इणमब्बवी ॥३७॥

जइत्ता विउले जन्ने, भोइत्ता समण-माहणे ।
दच्चा भोच्चा य जिट्ठा य, तओ गच्छसि खत्तिया ॥३८॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमब्बवी ॥३९॥

जो सहस्सं सहस्साणं, मासे मासे गवं दए ।
तस्सवि संजमो सेओ, अदिन्तस्सऽवि किंचण ॥४०॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं, देविन्दो इणमब्बवी ॥४१॥

घोरासमं चइत्ताणं, अन्नं पत्थेसि आसमं ।
इहेव पोसहरओ, भवाहि मणुयाहिवा ॥४२॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ नमी रायरिसिं, देविन्दं इणमब्बवी ॥४३॥

मासे मासे तु जो बाला कुसग्गेण तु भुंजए ।
न सो सु-यक्खाय-धम्मस्स, कलं अग्घइ सोलसिं ॥४४॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं देविन्दो इणमब्बवी ॥४५॥

हिरण्णं सुवण्णं मणिमुत्तं, कंसं दूसं च वाहणं ।
कोसं वड्ढावइत्ताणं, तओ गच्छसि खत्तिया ॥४६॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ नमी रायरिसी, देविन्दं इणमब्बवी ॥४७॥

सुवण्ण-रुप्पस्स उ पव्वया भवे, सिया हु केलाससमा असंखया ।
नरस्स लुद्धस्स न तेहिं किंचि, इच्छा हु आगाससमा अणन्तिया ॥

पुढवी साली जवा चेव-हिरण्णं पसुभिस्सह ।
पडिपुण्णं नालमेगस्स, इइ विज्जा तवं चरे ॥४९॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं, देविन्दो इणमब्बवी ॥५०॥

अच्छेरग-मब्भुदए, भोए चयसि पत्थिवा ।
असन्ते कामे पत्थेसि, संकप्पेण विहन्नसि ॥५१॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ नमी रायरिसी, देविन्दं इणमब्बवी ॥५२॥

सल्लं कामा विसं कामा, कामा आसीविसोवमा ।
कामे भोए पत्थेमाणा, अकामा जन्ति दोग्गइं ॥५३॥

अहे वयन्ति कोहेणं, माणेणं अहमा गई ।
माया गई-पडिग्घाओ, लोभीओ दुहओ भय ॥५४॥

अवउज्झिऊण माहण-रूवं, विउव्विऊण इन्दत्तं ।
वन्दइ अभित्थुणन्तो, इमाहिं महुराहिं वग्गूहिं ॥५५॥

अहो ते निज्जिओ कोहो, अहो माणो पराजिओ ।
अहो ते निरक्किया माया, अहो लोभो वसीकओ ॥५६॥

अहो ते अज्जवं साहु, अहो ते साहु मद्दवं ।
अहो ते उत्तमा खन्ती, अहो ते मुत्ति उत्तमा ॥५७॥

इहं सि उत्तमो भन्ते, पच्छा होहिसि उत्तमो ।
लोगुत्त-मुत्तमं ठाणं, सिद्धिं गच्छसि नीरओ ॥५८॥

एवं अभित्थुणन्तो, रायरिसिं उत्तमाए सद्धाए ।
पयाहिणं करेन्तो, पुणो पुणो वन्दई सक्को ॥५९॥

तो वन्दिऊण पाए चक्कंकुस-लक्खणे मुणिवरस्स ।
आगासेणुप्पइओ, ललिय चवल-कुंडल-तिरीडी ॥६०॥

नमी नमेइ अप्पाणं, सक्खं सक्केण चोइओ ।
चइऊण गेहं च वेदेही. सामण्णे पज्जुवट्ठिओ ॥६१॥

एवं करेन्ति संबुद्धा, पंडिया पवियक्खणा ।
विणियट्टन्ति भोगेसु, जहा से नमी रायरिसी त्ति वेमि॥६२॥

॥ इति नमिपव्वज्जानाम नवमं अज्झयणं समत्तं ॥६।

॥ अह दुमपत्तय दसमं अज्झयणं ॥१०॥

दुम-पत्तए-पंडुयए जहा, निवडइ राइ-गणाण अच्चए ।
एवं मणुयाण जीवियं, समयं गोयम ! मा पमायए ॥१॥

कुसग्गे जह ओस-बिन्दुए, थोवं चिट्ठइ लम्बमाणए ।
एवं मणुयाण जीवियं समयं गोयम ! मा पमायए ॥२॥

इइ इत्तरियम्मि आउए, जीवियए बंहु-पच्चवायए ।
विहुणाहि रयं पुरे कडं, समयं गोयम ! मा पमायए ॥३॥

दुल्लहे खलु माणुसे भवे, चिरकालेणवि सव्वपाणिणं ।
गाढा य विवाग कम्मुणो, समयं गोयम ! मा पमायए ॥४॥

पुढवि काय-मइगओ, उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
कालं संखाईयं, समयं गोयम ! मा पमायए ॥५॥

आउ-काय-मइगओ, उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
कालं संखाईयं, समयं गोयम ! मा पमायए ॥६॥

तेउ-काय-मइगओ, उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
कालं संखाईयं, समयं गोयम ! मा पमायए ॥७॥

वाउ-काय-मइगओ, उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
कालं संखाईयं, समयं गोयम ! मा पमायए ॥८।

वणस्सई-काय-मइगओ, उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
काल-मणन्त-दुरन्तयं, समयं गोयम ! मा पमायए ॥९॥

बेइन्दिय-काय-मइगओ, उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
काल संखिज्ज-सन्नियं, समयं गोयम ! मा पमायए ॥१०॥

तेइन्दिय-काय-मइगओ, उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
कालं संखिज्ज-सन्नियं, समयं गोयम ! मा पमायए ॥११॥

चउरिन्दिय-काय-मइगओ. उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
कालं संखिज्ज-सन्नियं. समयं गोयम ! मा पमायए ॥१२॥

पंचिन्दिय-काय-मइगओ, उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
सतट्ठ-भव गहणे, समयं गोयम ! मा पमायए ॥१३॥

देवे नेरइए-अइगओ, उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
इक्केक्क-भव-गहणे, समयं गोयम ! मा पमायए ॥१४॥

एवं भव-संसारे. संसरइ सुहा-सुहेहिं कम्मेहिं ।
जीवो पमाय बहुलो, समयं गोयम ! मा पमायए ॥१५॥

लद्धूणऽवि माणुसत्तणं, आरिअत्तं पुणरवि दुल्लहं ।
बहवे दसुया मिलक्खुया, समयं गोयम ! मा पमायए ॥१६॥

लद्धूणऽवि आरियत्तणं, अहीणपंचेन्दियया हु दुल्लहा ।
विगलिन्दयया हु दीसई समयं गोयम ! मा पमायए ॥१७॥

अहीणपंचेन्दियत्तं पि से लहे, उत्तम-धम्म-सुई हु दुल्लहा ।
कुतित्थि-निसेवए जणे, समयं गोयम ! मा पमायए ॥१८॥

लद्धूणऽवि उत्तमं सुइं. सद्दहणा पुणरवि दुल्लहा ।
मिच्छत्त-निसेवए जणे, समयं गोयम ! मा पमायए ॥१०॥

धम्मंऽपि हु सद्दहन्तया, दुल्लहया काएण फासया ।
इह काम-गुणेहि मुच्छिया, समयं गोयम ! मा पमायए ॥२०॥

परिजूरइ ते सरीरयं, जेसा पण्डुरया हवन्ति ते ।
से सोय-बले य हायई, समयं गोयम ! मा पमायए ॥२१॥

परिजूरइ ते सरीरयं, केसा पण्डुरया हवन्ति ते ।
से चक्खू-वले य हायई, समयं गोयम ! मा पमायए ॥२२॥

परिजूरइ ते सरीरयं, केसा पण्डुरया हवन्ति ते ।
से घाण-वले य हायई, समयं गोयम ! मा पमायए ॥२३॥

परिजूरइ ते सरीरयं, केसा पण्डुरया हवन्ति ते ।
से जिब्भ-बले य हायई, समय गोयम ! मा पमायए ॥२४॥

परिजूरइ ते सरीरयं, केसा पण्डुरया हवन्ति ते ।
से फ़ास-बले य हायई, समयं गोयम ! मा पमायए ॥२५॥

परिजूरइ ते सरीरयं, केसा पण्डुरया हवन्ति ते ।
से सव्व-वले य हायई, समयं गोयम ! मा पमायए ॥२६॥

अरई गण्डं विसूइया; आयंका विविहा फुसन्ति ते ।
विहडइ विद्धंसइ ते सरीरयं, समयं गोयम ! मा पमायए ॥२७॥

वोच्छिन्द सिणेह-मप्पणो, कुमुयं सारइयं व पाणियं ।
से सव्व सिणेह-वज्जिए, समयं गोयम ! मा पमायए ॥२८॥

चिच्चाण घणं च भारियं, पव्वइओ हि सि अणगारियं ।
मा वन्तं पुणोवि आविए, समयं गोयम ! मा पमायए ॥२९॥

अवउज्झिय मित्त-बन्धवं, विउलं चेव धणोह संचयं ।
मा तं विइयं गवेसए, समयं गोयम ! मा पमायए ॥३०॥

न हु जिणे अज्ज दिस्सई, बहुमए दिस्सइ मग्गदेसिए ।
संपइ नेयाउए पहे, समयं गोयम ! मा पमायए ॥३१॥

अवसोहिय कण्टगापहं, ओइण्णोसि पहं महालयं ।
गच्छसि मग्गं विसोहिया, समयं गोयम ! मा पमायए ॥३२॥

अबले जह भारवहए, मा मग्गे विसमे वगाहिया ।
पच्छा पच्छाणुवतावए, समयं गोयम ! मा यमायए ॥३३॥

तिण्णो हु सि अण्णवं महं, किं पुण चिट्ठसि तीरमागओ ।
अभितुर पारं गमित्तए, समयं गोयम ! मा पमायए ॥३४॥

अकलेवर-सेणिं उस्सिया, सिद्धिं गोयम ! लोयं गच्छसि ।
खेमं च सिवं अणुत्तरं, समयं गोयम ! मा पमायए ॥३५॥

बुद्धे परि-निव्वुडे चरे, गामगए नगरे व संजए ।
सन्ती-मग्गं च बूहए, समयं गोयम ! मा पमायए ॥३६॥

बुद्धस्स निसम्म भासियं, सु-कहिय मट्ट-पओव-सोहियं ।
रागं दोसं च छिन्दिया, सिद्धिगइं गए गोयमे ॥ त्ति बेमि ॥३७॥

॥ इति दुमपत्तयं दसमं अज्झयणं समत्तं ।१०॥

॥ अह बहुस्सुयपुज्जं एगारसं अज्झयणं ॥११॥

संजोगा विप्पमुक्कस्स, अणगारस्स भिक्खुणो ।
आयारं पाउ-करिस्सामि, आणुपुव्वि सुणेह मे ॥१॥

जे यावि होइ निविज्जे, थद्धे लुद्धे अणिग्गहे ।
अभिक्खणं उल्लवई, अविणीए अबहुस्सुए ॥२॥

अह पंचहिं ठाणेहिं, जेहिं सिक्खा न लब्भई ।
थम्भा कोहा पमाएणं, रोगेणालस्सएण य ॥३॥

अह अट्ठहिं ठाणेहिं, सिक्खासीलित्ति वुच्चई ।
अहस्सिरे सया दन्ते, न य मम्ममुदाहरे ॥४॥

नासीले न विसीले, न सिया अइलोलुए ।
अकोहणे सच्चरए, सिक्खासीलित्ति वुच्चई ॥५॥

अह चोदसहिं ठाणेहिं, वट्टमाणे उ संजए ।
अविणीए वुच्चई सो उ, निव्वाणं च न गच्छइ ॥६॥

अभिक्खणं कोही हवइ, पवन्धं च पकुव्वई ।
मेत्तिज्जमाणो वमइ, सुयं लद्धु' न मज्जई ॥७॥

अवि पाव-परिक्खेवी, अवि मित्तेसु कुप्पई ।
सुप्पियस्सावि मित्तस्स, रहे भासइ पावयं ॥८॥

पइण्णवाई दुहिले, थद्धे लुद्धे अणिग्गहे ।
असंविभागी अवियत्ते, अविणीएत्ति वुच्चई ॥६॥

अह पन्नरसहिं ठाणेहिं सुविणीएत्ति वुच्चई ।
नीयावत्ती अचवले, असाई अकुऊहले ॥१०॥

अप्पं च अहिक्खिवई, पवन्धं च न कुव्वई ।
मेत्तिज्जमाणो भयई, सुयं लद्धु' न मज्जई ॥११॥

न य पाव-परिक्खेवी, नयमित्तेसु कुप्पई ।
अप्पियस्सावि मित्तस्स, रहे कल्लाण भासई ॥१२॥

कलह-डमर-वज्जिए, वुद्धे अभिजाइए ।
हिरिमं पडिसंलीणे, सुविणीएत्ति वुच्चई ॥१३॥

वसे गुरुकुले निच्चं, जोगवं उवहाणवं ।
पियंकरे पियवाई, से सिक्खं लद्धु' मरिहई ॥१४॥

जहा संखम्मि पयं, निहियं दुहओ वि विरायइ ।
एवं वहुस्सुए भिक्खू, धम्मो कित्ती तहा सुयं ॥१५॥

जहा से कम्बोयाणं आइण्णे कन्थए सिया ।
आसे जवेण पवरे, एवं हवइ वहुस्सुए ॥१६॥

जहा इण्णसमारूढे, सूरे दढपरक्कमे ।
उभओ नन्दिघोसेणं, एवं हवइ वहुस्सुए ॥१७॥

जहा करेणुपरिकिण्णे, कुञ्जरे सट्ठिहायणे ।
वलवन्ते अप्पडिहए, एवं हवइ वहुस्सुए ॥१८॥

जहा से तिक्खसिंगे, जायखन्धे विरायई।
वसहे जूहाहिवई, एवं हवइ बहुस्सुए ॥१९॥

जहा से तिक्खदाढे, उदग्गे दुप्पहंसए।
सीहे मियांण पवरे, एवं हवइ बहुस्सुए ॥२०॥

जहा से वासुदेवे, संख-चक्क-गया-धरे।
अप्पडिहयबले जाहे एवं हवइ बहुस्सुए ॥२१॥

जहा से चाउरन्ते, चक्क-वट्टी-महिड्ढिए।
चोद्दसरयणाहिवई, एवं हवइ बहुस्सुए ॥२२॥

जहा से सहस्सक्खे, वज्जपाणी पुरन्दरे।
सक्के देवाहिवई, एवं हवइ बहुस्सुए ॥२३॥

जहा से तिमिर-विद्धंसे, उत्तिचट्ठन्ते दिवायरे।
जलन्ते इव तेएण, एवं हवइ बहुस्सुए ॥२४॥

जहा से उडुवई चन्दे, नक्खत्त-परिवारिए।
पडिपुण्णे पुण्णमासीए, एवं हवइ बहुस्सुए ॥२५॥

जहा से समाइयाणं, कोट्ठागारे सुरक्खिए।
नाणा-धन्न-पडिपुण्णे, एवं हवइ बहुस्सुए ॥२६॥

जहा सा दुमाण पवरा, जम्बू नाम सुदंसणा।
अणाढियस्स देवस्स, एवं हवइ बहुस्सुए ॥२७॥

जहा सा नईण पवरा, सलिला सागरंगमा।
सीया नीलवन्तपवहा, एवं हवइ बहुस्सुए ॥२८॥

जहा से नगाण पवरे, सुमहं मन्दरो गिरी।
नाणोसहि-पज्जलिए, एवं हवइ बहुस्सुए ॥२९॥

जहा से सयंभूरमणे, उदही अक्खओदए।
नाणा-रयण-पडिपुण्णे, एवं हवइ बहुस्सुए ॥३०॥

समुद्द-गम्भीर-समा दुरासया, अचक्किया केणइ दुप्पहंसया ।
सुयस्स पुण्णाविउलस्स ताइणो,खवित्तु कम्मं गइमुत्तमं गया ॥३१॥
तम्हा सुयमहिट्ठिजा उत्तमट्ठगवेसए ।
जेणप्पाणं परं चेव, सिद्धिं संपाउणेज्जासि ॥ त्ति बेमि ॥३२॥

॥ इति बहु स्सुय पुज्जं एगारसं अज्झयणं समत्तं ॥११॥

॥ अह हरीएसिज्जं बारहं अज्झयणं ॥१२॥

सोवाग-कुल-संभूओ, गुणुत्तरधरो मुणी ।
हरिएसबलो नाम, आसि भिक्खू जिइन्दिओ ॥१॥
इरि-एसण-भासाए, उच्चार-समिईसु य ।
जओ आयाण निक्खेवे, संजओ सु-समाहिओ ॥२॥
मण-गुत्तो वय-गुत्तो, काय गुत्तो जिइन्दिओ ।
भिक्खट्ठा बम्भइज्जम्मि, जन्नवाडे उवट्ठिओ ॥३॥
तं पासिऊणं एज्जन्तं, तवेण परिसोसियं ।
पन्तोवहिउवगरणं, उवहसन्ति अणारिया ॥४॥
जाइमयपडिथद्धा, हिंसगा अजिइन्दिया ।
अवम्भचारिणो बाला, इमं वयणमब्बवी ॥५॥
कयरे आगच्छइ दित्त रूवे, काले विकराले फोक्कनासे ।
ओमचेलए पंसुपिसायभूए, संकरदूसं परिहरिय: कण्ठे ॥६॥
कयरे तुमं इय अदंसणिज्जे, काए व आसा इहमागओसि ।
ओमचेलया पंसुपिसायभूया, गच्छक्खलाहि किमिहं ठिओसि ॥७॥
जक्खो तहिं तिन्दुय-रुक्ख-वासी, अणुकम्पओ तस्स महामुणिस्स ।
पच्छायइत्ता नियगं सरीरं इमाइं वयणाइमुदाहरित्था ॥८॥

समणो अहं संजओ वम्भयारी, विरओ धणपयणपरिग्गहाओ ।
परप्पवित्तस्स उ भिक्खकाले, अन्नस्स अट्ठा इहमागओमि ॥९॥

वियरिज्जइ खज्जइ भुज्जई, अन्नं पभूयं भवयाणमेयं ।
जाणाहि मे जायणजीविणुत्ति, सेसावसेसं लभऊ तवस्सी ॥१०॥

उवक्खडं भोयणमाहणाणं, अत्तट्ठियं सिद्धमिहेगपक्खं ।
न ऊ वयं एरिसमन्नपाणं, दाहामु तुज्झं किमिहं ठिओसि ॥११॥

थलेसु बीयाइं ववन्ति कासगा, तहेव निन्नेसु य आससाए ।
एयाए सद्धाए दलाह मज्झं, आराहए पुण्णमिणं खु खित्तं ॥१२॥

खेत्ताणि अम्हं विइयाणि लोए, जहिं पकिण्णा विरुहन्ति पुण्णा ।
जे माहणा जाइविज्जोववेया, ताइं तु खेत्ताइं सुपेसलाउं ॥१३॥

कोहो य माणो य वहो य जेसिं, म अदत्तं च परिग्गहंच ।
ते माहणा जाइविज्जाविहूणा, ताइं तु खेत्ताइं सुपावयाइं ॥१४॥

तुब्भेत्थ भो भारधरा गिराणं, अट्ठं न जाणेह अहिज्ज वेए ।
उच्चवयाइं मुणिणो चरन्ति, ताइं तु खेत्ताइं सुपेसलाइं ॥१५॥

अज्झावायाणं पडिकूलभासी, पभाससे किं तु सगासि अम्हं ।
अवि एयं विणस्सउ अन्नपाणं, न य णं दाहामु तुमं नियण्ठा ॥१६॥

समिईहि मज्झं सुसमाहियस्स, गुत्तीहि गुत्तस्स जिइन्दियस्स ।
जइ मे न दाहित्थ अहेसणिज्जं, किमज्ज जन्नाण लहित्थ लाहं ॥१७॥

के इत्थ खत्ता उवजोइया वा, अज्झावया वा सह खण्डिएहिं ।
एयं खु दण्डेण फलेण हन्ता, कण्ठम्मि घेत्तूण खलेज्ज जो णं ॥१८॥

अज्झावयाणं वयणं सुणेत्ता, उद्धाइया तत्थ बहू कुमारा ।
दण्डेहिं वित्तेहिं कसेहिं चेव, समागया तं इसि तालयन्ति ॥१९॥

रन्नो तहिं कोसलियस्स धूया, भद्दत्ति नामेण अणिन्दियंगी ।
तं पासिया संजय हम्ममाणं, कुद्धे कुमारे परिनिव्ववेइ ॥२०॥

देवाभिओगेण निओइएणं, दिन्नासु रन्ना मणसा न झाया ।
नरिन्ददेविन्दभिवन्दिएणं, जेणासि वंता इसिणा स एसो ॥२१॥

एसो हु तो उग्गतवो महप्पा, जितिन्दिओ संजओ बम्भयारी ।
जो मे तया नेच्छइ दिज्जमाणिं, पिउणा सयं कोसलिएण रन्ना ॥२२॥

महाजसो एस महाणुभागो, घोरव्वओ घोरपरक्कमो य ।
मा एयं हीलेह अहीलणिज्जं, मा सव्वे तेएण भे निद्दहेज्जा ॥२३॥

एयाइं तीसे वयणाइं सोच्चा, पत्तीइ भद्दाइ सुभासियाइं ।
इसिस्स वेयावडियट्ठयाए, जक्खा कुमारे विणिवारयन्ति ॥२४॥
ते घोररूवा ठिय अन्तलिक्खेऽसुरा तहिं तं जण तालयन्ति ।

ते भिन्नदेहे रुहिरे वमन्ते, पासित्त भद्दा इणमाहु भुज्जो ॥२५॥

गिरिं नहेहिं खणह, अयं दन्तेहिं खायह ।
जायतेय पाएहि हणह, जे भिक्खुं अवमन्नह ॥२६॥

आसीविसो उग्गतवो महेसी, घोरव्वओ घोरपरक्कमो य ।
अगणिं व पक्खन्द पयंगसेणा, जे भिक्खुयं भत्तकाले वहेह ॥२७॥

सीसेण एयं सरणं उवेह, समागया सव्वजणेण तुब्भे ।
जइ इच्छह जीवियं वा धणं वा, लोगंपि एसो कुविओ डहेज्जा ॥२८॥

अवहेडिय पिट्ठिसउत्तमंगे, पसारिया बाहु अकम्मचिट्ठे ।
निब्भेरियच्छे रुहिरं वमन्ते, उड्ढंमुहे निग्गयजीहनेत्ते ॥२९॥

ते पासिया खण्डिय कट्ठभूए, विमणो विसण्णो अह माहणो सो ।
इसिं पसाएइ सभारियाओ, हीलं च निन्दं च खमाह भन्ते ! ॥३०॥

बालेहि मूढेहि अयाणएहिं, जं हीलिया तस्स खमाह भन्ते ! ।
महप्पसाया इसिणो हवन्ति, न हु मुणी कोवपरा हवन्ति ॥३१॥

पुव्विं च इण्हिं च अणागयं च, मणप्पदोसो न मे अत्थि कोइ ।
जक्खा हु वेयावडियं करेन्ति, तम्हा हु एए निहया कुमारा ॥३२॥

अत्थं च धम्मं च वियाणमाणा, तुब्भं नवि कुप्पह भूइपन्ना ।
तुब्भं तु पाए सरणं उवेमो, समागया सव्वजणेण अम्महे ॥३३॥

अच्चेमु ते महाभाग, न ते किंचि न अच्चिमो ।
भुञ्जाहि सालिमं कूरं, नाणा वंजण-संजुयं ॥३४॥

इमं च मे अत्थि पभूयमन्नं, तं भुञ्जसू अम्ह अणुग्गहट्ठा ।
बाढंति पडिच्छइ भत्त-पाणं, मासस्स ऊ पारणए महप्पा ॥३५॥

तहियं गन्धो- दय पुप्फवासं, दिव्वा तहिं वसुहारा य वुट्ठा ।
पहयाओ दुन्दुहीओ सुरेहिं, आगासे अहो दाण च घुट्ठं ॥३६॥

सक्खं खु दीसइ तवो-विसेसो, न दीसई जाइ-विसेस कोइ ।
सोवागपुत्तं हरिएससाहुं, जस्सेरिसा इड्ढि महाणुभागा ॥३७॥

किं माहणा जोइससारभन्ता, उदएण सोहिं वहिया विमग्गहा ।
जं मग्गहा बाहिरियं विसोहिं, न तं सुइट्ठं कुसला वयन्ति ॥३८॥

कुसं च जूवं तण-कट्ठ-मग्गिं, सायं च पायं उदगं फुसन्ता ।
पाणाइ भूयाइ विहेडयन्ता, भुज्जोऽवि मन्दा पकरेह पावं ॥३९॥

कहं चरे भिक्खु वयं जयामो, पावाइं कम्माइं पुणोल्लयामो ।
अक्खाहि णे संजय जक्ख पूइया, कहं सुजट्ठं कुसला वयन्ति ॥४०॥

छज्जीवकाए असमारभन्ता, मोसं अदत्तं च असेवमाणा ।
परिग्गहं इत्थिओ माण-मायं, एयं परिन्नाय चरन्ति दन्ता ॥४१॥

सुसंवुड्डा पंचहिं संवरेहिं, इह जीवियं अणवकंखमाणा ।
वोसट्ठकाया सुइचत्तदेहा, महाजयं जयइ जन्नसिट्ठं ॥४२॥

के ते जोई के व ते जोइठाणे, का ते सुया किं व ते कारिसंगं ।
एहा य ते कयरा सन्ति भिक्खू, कयरेण होमेण हुणासि जोइं ॥४३॥

तवो जोई जीवो जोइठाणं, जोगा सुया सरीरं कारिसगं ।
कम्मेहा संजमजोगसन्ती, होमं हुणामि इसिणपसत्थं ॥४४॥

के ते हरए के य ते सन्ति तित्थे, कहिं सिणाओ व रयं जहासि ।
आइक्ख णे संजय जक्ख पूइया, इच्छामो नाउं भवओ सगासे ॥४५॥

धम्मे हरए बम्भे सन्ति तित्थे, अणाविले अत्तपसन्नलेसे ।
जहिं सिणाओ विमलो विसुद्धो, सुसीइभूओ पजहासि दोसं ॥४६॥

एयं सिणाणं कुसलेहि दिट्ठं, महासिणाणं इसिणं पसत्थं ।
जहिं सिणाया विमला विसुद्धा, महारिसी उत्तमं ठाणं पत्ते ॥४७॥

॥ त्ति बेमि॥ इति हरिएसिज्जं बारहं अज्झयणं समत्तं ॥१२॥

॥ अह चित्तसम्भूइज्जं तेरहमं अज्झयणं ॥१३॥

जाईपराजिओ खलु, कासि नियाणं तु हत्थिणपुरम्मि ।
चुलणीए बम्भदत्तो, उववन्नो पउमगुम्माओ ॥१॥

कम्पिल्ले सम्भूओ, चित्तो पुण जाओ पुरिमतालम्मि ।
सेट्ठिकुलम्मि विसाले, धम्मं सोऊण पव्वइओ ॥२॥

कम्पिल्लम्मि य नगरे, समागया दोवि चित्तसम्भूया ।
सुह-दुक्ख फलविवागं, कहेन्ति ते एक्कमेक्कस्स ॥३॥

चक्कवट्टी महिड्ढीओ, बम्भदत्तो महायसो ।
भायरं बहुमाणेणं, इमं वयणमब्बवी ॥४॥

आसीमो भायरा दोवि, अन्नमन्नवसाणुगा ।
अन्नमन्नमणूरत्ता, अन्नमन्नहिएसिणो ॥५॥

दासा दसण्णे आसी, मिया कालिंजरे नगे ।
हंसा मयंगतीरे, सोवागा कासिभूमिए ॥६॥

देवा य देवलोगम्मि, आसि अम्हे महिड्ढिया ।
इमा णो छट्ठिया जाई, अन्नमन्नेण जा विणा ॥७॥

कम्मा नियाणपगडा तुमे राय ! विचिन्तिया ।
तेसिं फलविवागेण, विप्पओगमुवागया ॥८॥

सच्चसोयप्पगडा, कम्मा मए पुरा कडा ।
ते अज्ज परिभुञ्जामो, किं नु चित्तेवि से तहा ॥९॥

सव्वं सुचिण्ण सफलं नाराणं, कडाण कम्माण न मोक्ख अत्थि ।
अत्थेहिं कामेहि य उत्तमेहिं, आया ममं पुण्णफलोववेए ॥१०॥

जाणाहि संभूय महाणुभागं, महिड्ढियं पुण्णफलोववेयं ।
चित्तंऽपि जाणाहि तहेव रायं, इड्ढीजुई तस्सवि य प्पभूया ॥११॥

महत्थरूवा वयणप्पभूया, गाहाणुगीया नरसंघमज्झे ।
जं भिक्खुणो सीलगुणोववेया, इह जयत्ते समणोमि जाओ ॥१२॥

उच्चोयए महु कक्के य बम्भे, पवेइया आवसहा य रम्मा ।
इमं गिहं चित्तधणप्पभूयं, पसाहि पंचालगुणोववेयं ॥१३॥

नट्टेहिं गीएहिं य वाइएहिं, नारीजणाहिं परिवारयन्तो ।
भुञ्जाहि भोगाइ इमाइ भिक्खू, मम रोयई पव्वज्जा हु दुक्खं ॥१४॥

तं पुव्वनेहेण कयाणुरागं, नराहिवं कामगुणेसु गिद्धं ।
धम्मस्सिओ तस्स हियाणुपेही, चित्तो इमं वयणमुदाहरित्था ॥१५॥

सव्वं विलवियं गीयं, सव्वं नट्टं विडम्बियं ।
सव्वे आभरणा भारा, सव्वे कामा दुहावहा ॥१६॥

वालाभिरामेसु दुहावहेसु, न तं सुहं कामगुणेसु रायं ।
विरत्तकामाण तवोधणाणं, जं भिक्खुण सीलगुणे रयाणं ॥१७॥

नरिंद जाई अहमा नराणं, सोवागजाई दुहओ नयाणं ।
जहिं वयं सव्वजणस्स वेस्सा, वसीअ सोवाग-निवेसणेसु ॥१८॥

तीसे य जाईइ उ पावियाए, वुच्छामु सोवाग-निवेसणेसु ।
सव्वस्स लोगस्स दुगंछणिज्जा, इहं तु कम्माइं पुरे कडाइं ॥१९॥

सो दाणिसिं राय ! महाणुभागो, महिड्ढिओ पुण्णफलोववेओ ।
चइत्तु भोगाइं असासयाइं, आदाणहेउं अभिणिक्खमाहि ॥२०॥

इह जीविए राय असासयम्मि, धणियं तु पुण्णाइं अकुव्वमाणो ।
से सोयई मच्चुमुहोवणीए, धम्मं अकाउण परंमि लोए ॥२१॥

जहेह सीहो व मियं गहाय, मच्चू नरं नेइ हु अन्तकाले ।
न तस्स माया व पिया व भाया, कालम्मि तम्मंसहरा भवन्ति॥२२॥

न तस्स दुक्खं-विभयन्ति नाइओ, न मित्तवग्गा न सुया न बंधवा ।
एक्को सयं पच्चणुहोइ दुक्खं, कत्तारमेव अणुजाइ कम्मं ॥२३॥

च्चिा दुपयं च चउप्पयं च, खेत्तं गिहं धण-धन्नं च सव्वं ।
सकम्मबीओ अवसो पयाइ, परं भवं सुन्दर पावगं वा ॥२४॥

तं एक्कगं तुच्छसरीरगं से, चिईगयं दहिय उ पावगेणं ।
भज्जा य पुत्तावि य नायओ वा, दायारमन्नं अणुसंकमन्ति ॥२५॥

उवणिज्जई जीविय-मप्पमायं, वण्णं जरा हरइ नरस्स रायं ।
पंचालराया वयणं सुणाहि, मा कासि कम्माइं महालयाइं ॥२६॥

अहंऽपि जाणामि जहेह साहू, जं मे तुमं साहसि वक्कमेयं ।
भोगा इमे संगकरा हवंति जे, दुज्जया अज्जो अम्हारिसेहिं ॥२७॥

हत्थिणपुरम्मि चित्ता, दट्ठूणं नरवइं महिड्ढीयं ।
कामभोगेसु गिद्धेणं, नियाणमसुहं कडं ॥२८॥

तस्स मे अपडिकन्तस्स, इमं एयारिसं फलं ।
जाणमाणोऽवि जं धम्मं, कामभोगेसु मुच्छिओ ॥२९॥

नागो जहा पंकजलावसन्तो, दट्ठुं थलं नाभिसमेइ तीरं ।
एवं वयं कामगुणेसु गिद्धा, न भिक्खुणो मग्गमणुव्वयामो ॥३०॥

अच्चेइ कालो तरन्ति राइओ, न यावि भोगा पुरिसाण निच्चा ।
उविच्च भोगा पुरिसंचयन्ति, दुमं जहा खीणफलं व पक्खी ॥३१॥

जइ तं सि भोगे चइउं असत्तो, अज्जाइं कम्माइं करेहि रायं ।
धम्मे ठिओ सव्वपयाणुकम्पी, तो होहिसि देवो इओ विउव्वी ॥३२॥

न तुज्झ भोगे चइऊण बुद्धी, गिद्धोसि आरम्भपरिग्गहेसु ।
मोहं कओ एत्तिउ विप्पलावो, गच्छामि रायं आमन्तिओसि ॥३३॥

पंचालरायावि य बम्भदत्तो, साहुस्स तस्स वयणं अकाउं ।
अणुत्तरे भुञ्जिय काम-भोगे, अणुत्तरे सो नरए पविट्ठो ॥३४॥

चित्तो वि कामेहि विरत्तकामो, उदग्गचारित्त तवो-महेसी ।
अणुत्तरं संजमं पालइत्ता, अणुत्तरं सिद्धिगइं गओ ॥ त्ति बेमी ॥३५॥

॥ इत्ति चित्तसंभूइज्जं तेरहमं अज्झयणं समत्तं ॥१३॥

॥ अह उसुयारिज्जं चोदहमं अज्झयणं ॥१४॥

देवा भवित्ताण पुरे भवम्मि, केई चुया एगविमाणवासी ।
पुरे पुराणे उसुयारनामे, खाए समिद्धे सुरलोगरम्मे ॥१॥

स-कम्म-सेसेण पुराकएणं, कुलेसु दग्गेसु य ते पसूया ।
निव्विण्णसंसारभया जहाय, जिणिंद-मग्गं सरणं पवन्ना ॥२॥

पुमत्तमागम्म कुमार दो वी, पुरोहिओ तस्स जसा य पत्ती ।
विसालकित्ती य तहेसुयारो, रायत्थ देवी कमलावई य ॥३॥

जाईजरामच्चुभयाभिभूया, बहिंविहाराभिनिविट्ठचित्ता ।
संसारचक्कस्स विमोक्खणट्ठा, दठ्ठूण ते कामगुणे विरत्ता ॥४॥

पियपुत्तगा दोन्निवि माहणस्स, सकम्मसीलस्स पुरोहियस्स ।
सरित्तु पोराणिय तत्थ जाइं, तहा सुचिण्णं तव संजमं च ॥५॥

ते काम-भोगेसु असज्जमाणा, माणुस्सएसु जे यावि दिव्वा ।
मोक्खाभिकंखी अभिजायसड्ढा, तातं उवागम्म इमं उदाहु ॥६॥

असासयं दट्ठु इमं विहारं, वहुअन्तरायं न य दीहमाउं ।
तम्हा गिहंसि न रइं लभामो, आमन्तयामो चरिस्सामु मोणं ॥७॥

अह तायगो तत्थ मुणीण तेसिं; तवस्स वाघायकरं वयासी ।
इमं वयं वेयविओ वयन्ति, जहा न होई असुयाण लोगो ॥८॥

अहिज्ज वेए परिविस्स विप्पे, पुत्ते परिट्ठप्प गिहंसि जाया ।
भोच्चाण भोए सह इत्थियाहिं, आरण्णगा होइ मुणी पसत्था ॥९॥

सोयग्गिणा आयगुणिन्धणेणं, मोहाणिला पज्जलणाहिएणं ।
संतत्तभावं परितप्पमाणं, लालप्पमाणं बहुहा बहुं च ॥१०॥

पुरोहियं तं कमसोऽणुणन्तं, निमंतयन्तं च सुए धणेणं ।
जहक्कम कामगुणेहि चेव, कुमारगा ते पसमिक्ख वक्कं ॥११॥

वेया अहीया न भवन्ति ताणं, भुत्ता दिया निन्ति तमं तमेणं।
जाया य पुत्ता न हवन्ति ताणं, को णाम ते अणुमन्नेज्ज एयं ॥१२॥

खणमित्तसुक्खा बहुकालदुक्खा, पगामदुक्खा अणिगामसुक्खा ।
संसारमोक्खस्स विपक्खभूया, खाणी अणत्थाण उ कामभोगा ॥१३॥

परिव्वयन्ते अणियत्तकामे, अहो य राओ परितप्पमाणे ।
अन्नप्पमत्ते धणमेसमाणे, पप्पोति मच्चुं पुरिसे जरं च ॥१४॥

इमं च मे अत्थि इमं च नत्थि, इमं च मे किच्चमिमं अकिच्चं ।
तं एवमेवं लालप्पमाणं, हरा हरंतित्ति कहं पमाओ ? ॥१५॥

धणं पभूयं सह इत्थियाहिं, सयणा तहा कामगुणा पगामा ।
तवं कए तप्पइ जस्स लोगो, तं सव्व-साहीणमिहेव तुब्भं ॥१६॥

धणेण किं धम्मधुराहिगारे, सयणेण वा कामगुणेहिं चेव ।
समणा भविस्सामु गुणोहधारी, बहिंविहारा अभिगम्म भिक्खं॥१७॥

जहा य अग्गी अरणी असन्तो, खीरे घयं तेल्लमहा तिलेसु ।
एमेव जाया सरीरंसि सत्ता, संमुच्छई नासइ नावचिट्ठे ॥१८॥

नोइन्दियग्गेज्झ अमुत्तभावा, अमुत्तभावा वि य होइ निच्चो ।
अज्झत्थहेउं निययस्स बन्धो, संसारहेउं च वयन्ति बन्धं ॥१९॥

जहा वयं धम्मं अजाणमाणा, पावं पुरा कम्ममकासि मोहा ।
ओरुब्भमाणा परिरक्खियन्ता, तं नेव भुज्जोवि समायरामो ॥२०॥

अब्भाहयम्मि लोगम्मि, सव्वओ परिवारिए ।
अमोहाहिं पडन्तीहिं, गिहंसि न रइं लभे ॥२१॥

केण अब्भाहओ लोगो, केण वा परिवारिओ ।
का वा अमोहा वुत्ता, जाया चिन्तावरो हुमे ॥२२॥

मच्चुणाऽब्भाहओ लोगो, जराए परिवारिओ ।
अमोहा रयणी वुत्ता, एवं ताय विजाणह ॥२३॥

जा जा वज्जइ रयणी, न सा पडिनियत्तई ।
अहम्मं कुणमाणस्स, अफला जन्ति राइयो ॥२४॥

जा जा वच्चइ रयणी, न सा पडिनियत्तई ।
धम्मं च कुणमाणस्स, सफला जन्ति राइयो ॥२५॥

एगओ संवसित्ताणं, दुहओ सम्मत्त-संजुया ।
पच्छा जाया गमिस्सामो, भिक्खमाणा कुले कुले ॥२६॥

जस्सत्थि मच्चुणा सक्खं, जस्स वऽत्थि पलायणं ।
जो जाणे न मरिस्सामि, सो हु कंखे सुए सिया ॥२७॥

अज्जेव धम्मं पडिवज्जयामो, जहिं पवन्ना न पुणब्भवामो ।
अणागयं नेव य अत्थि किंचि, सद्धाखमं णे विणइत्तु रागं ॥२८॥

पहीणपुत्तस्स हु नत्थि वासो, वासिट्ठि ! भिक्खायरियाइ कालो ।
साहाहि रुक्खो लहई समाहिं, छिन्नाहि साहाहि तमेवखाणुं ॥२९॥

पंखाविहूणो व्व जहेह पक्खी, भिच्चविहूणो व्व रणे नरिन्दो ।
विवन्नसारो वणिओ व्व पोए, पहीणपुत्तो मि तहा अहंपि ॥३०॥

सुसंभिया कामगुणा इमे ते, संपिण्डिया अग्गरसप्पभूया ।
भुंजामु ता कामगुणे पगामं, पच्छा गमिस्सामु पहाणमग्गं ॥३१॥

भुत्ता रसा भोइ ! जहाइ णे वओ, न जीवियट्ठा पजहामि भोए ।
लाभं अलाभं च सुहं च दुक्खं, संचिक्खमाणो चरिस्सामि मोणं ॥३२॥

मा हु तुमं सोयरियाण सम्भरे, जुण्णो व हंसो पडिसोत्तगामी ।
भुंजाहि भोगाइं मए समाणं, दुक्खं खु भिक्खायरियाविहारो ॥३३॥

जहा य भोई तणुवं भुयंगो, निम्मोयणिं हिच्च पलेइ मुत्तो ।
एमेए जाया पयहन्ति भोए, ते हं कहं नाणुगमिस्समेक्को ॥३४॥

छिन्दित्तु जालं अवलं व रोहिया, मच्छा जहा कामगुणे पहाय ।
धोरेयसीला तवसा उदारा, धीरा हु भिक्खाचरियं चरन्ति ॥३५॥

नहेव कुञ्चा समइक्कम्मता, तयाणि जालाणि दलित्तु हंसा ।
पलेन्ति पुत्ता य पई य मज्झ, ते हं कहं नाणुगमिस्समेक्का ॥३६॥

पुरोहियं तं ससुयं सदारं, सोच्चाऽभिनिक्खम्म पहाय भोए ।
कुटुम्बसारं विउलुत्तमं च रायं अभिक्खं समुवाय देवी ॥३७॥

वंतासी पुरिसो रायं, न सो होइ पसंसिओ ।
माहणेण परिच्चत्त, धणं आदाउमिच्छसि ॥३८॥

सव्वं जगं जइ तुहं, सव्वं वावि धणं भवे ।
सव्वंऽपि ते अपज्जत्तं, नेव ताणाय तं तव ॥३९॥

मा रिहिसि रायं जया तया वा, मणोरमे कामगुणे पहाय ।
एक्को हु धम्मो नरदेव ताणं, न विज्जई अन्नमिहेह किंचि ॥४०॥

नाहं रमे पक्खिणि पंजरे वा, संताणछिन्ना चरिस्सामि मोणं ।
अकिंचणा उज्जुकडा निरामिसा, परिग्गहारम्भनियत्तदोसा ॥४१॥

दवग्गिणा जहा रण्णे, डज्झमाणेसु जन्तुसु ।
अन्ने सत्ता पमोयन्ति, रागद्दोसवसं गया ॥४२॥

एवमेव वयं मूढा, कामभोगेसु मुच्छिया ।
उज्झमाणं न बुज्झामो, रागद्दोसग्गिणा जगं ॥४३॥

भोगे भोच्चा वमित्ता य, लहुभूयविहारिणो ।
आमोयमाणा गच्छन्ति, दिया कामकमा इव ॥४४॥

इमे य बद्धा फन्दन्ति, मम हत्थज्जमागया ।
वयं च सत्ता कामेसु, भविस्सामो जहा इमे ॥४५॥

सामिसं कुललं दिस्स, बज्झमाणं निरामिसं ।
आमिसं सव्वमुज्झित्ता, विहरिस्सामो निरामिसा ॥४६॥

गिद्धोवमे उ नच्चाणं, कामे संसारवड्ढणे ।
उरगो सुवण्णपासे व्व, संकमाणो तणुं चरे ॥४७॥

नागो व्व बंधणं छित्ता, अप्पणो वसहिं वए ।
एयं पत्थं महारायं, उसुयारित्ति मे सुयं ॥४८॥

चइत्ता विउलं रज्जं, कामभोगे य दुच्चए ।
निव्विसया निरामिसा, निन्नेहा निप्परिग्गहा ॥४९॥

सम्मं धम्मं वियाणित्ता, चिच्चा कामगुणे वरे ।
तवं पगिज्झहक्खायं, घोरं घोरपरक्कमा ॥५०॥

एवं ते कमसो बुद्धा, सव्वे धम्मपरायणा ।
जम्ममच्चुभउव्विग्गा, दुक्खस्सन्तगवेसिणो ॥५१॥

सासणे विगयमोहाणं, पुव्विं भावणभाविया ।
अचिरेणेव कालेण, दुक्खस्सन्तमुवागया ॥५२॥

राया सह देवीए, माहणो य पुरोहिओ ।
माहणी दारगा चेव, सव्वे ते परिनिव्वुडे ॥ त्ति बेमि ॥५३॥

॥ इति उसुयारिज्जं णाम चोदहमं अज्झयणं समत्तं ॥१४॥

॥ अह सभिक्खू पंचदहं अज्झयणं ॥१५॥

माणं चरिस्सामि समिच्च धम्मं, सहिए उज्जुकडे नियाणछिन्ने।
संथवं जहिज्ज अकामकामे, अन्नायएसी परिव्वए स भिक्खू ॥१॥

राओवरयं चरेज्ज लाढे, विरए वेयवियायरक्खिये।
पन्ने अभिभूय सव्वदंसी, जे कम्हिवि न मुच्छिए स भिक्खू ॥२॥

अक्कोसवहं विइत्तु धीरे, मुणी चरे लाढे निच्चमायगुत्ते।
अव्वग्गमणे असंपहिट्ठे, जे कसिणं अहियासए स भिक्खू ॥३॥

पन्तं सयणासणं भइत्ता, सीउण्हं विविहं च दंस मसगं।
अव्वग्गमणे असंपहिट्ठे, ये कसिणं अहियासए स भिक्खू ॥४॥

नो सक्कइमिच्छई न पूयं, नोऽवि य वन्दणगं कुओ पसंसं।
से संजए सुव्वए सया तवस्सी, सहिए आयगवेसए स भिक्खू ॥५॥

जेण पुण जहाइ जीवियं, मोहं वा कसिणं नियच्छई।
नरनारि पजहे सया तवस्सी, न य कोऊहलं उवेइ स भिक्खू ॥६॥

छिन्नं सरं भोममन्तलिक्खं, सुमिणं लक्खण-दण्ड-वत्थु-विज्जं।
अंगवियारं सरस्स विजय, जे विज्जाहिं न जीवइ स भिक्खू ॥७॥

मन्तं मूलं विविहं वेज्जचिन्तं, वमण-विरेयण-धुमणेत्त-सिणाणं।
आउरे सरणं तिगिच्छियं च, तं परिन्नाय परिव्वए स भिक्खू ॥८॥

खत्तियगणउग्गरायपुत्ता, माहणभोइय विविहा य सिप्पिणो।
ना तेसिं वयइ सिलोगपूयं, तं परिन्नाय परिव्वए स भिक्खू ॥९॥

गिहिणो जे पव्वइएण दिट्ठा, अप्पवइएण व संथुया हविज्जा।
तेसिं इहलोइय-फलट्ठयाए, जो संथवं न करेइ स भिक्खू ॥१०॥

सयणा-सण-पाण-भोयणं, विविहं खाइम-साइमं परेसिं।
अदए पडिसेहिए नियण्ठे, जे तत्थ न पउस्सई स भिक्खू ॥११॥

जं किंचि आहार-पाणगं विविह, खाइम-साइमं परेसिं लद्धु।
जो तं तिविहेण नाणुकम्पे, मण-वय-काय-सुसंबुडे स भिक्खू ॥१२॥

आयामगं चेव जवोदणं च, सोयं सोवीरजवोदगं च।
न हीलए पिण्डं नीरसं तु, पन्तकुलाइं परिव्वए स भिक्खू ॥१३॥

सद्दा विविहा भवन्ति लोए, दिव्वा माणुस्सगा तिरिच्छा।
भीमा भय-भेरवा उराला, जो सोच्चा न विहिज्जई स भिक्खू ॥१४॥

वादं विविहं समच्चि लोए, सहिए खेयाणुगए य कोवियप्पा।
मन्ने अभिभूय सव्वदंसी, उवसन्ते अविहेडए स भिक्खू ॥१५॥

असिप्पजीवी अगिहे अमित्ते, जिइन्दिए सव्वओ विप्पमुक्के।
अणुक्कसाई लहुअप्पभक्खी, चिच्चा गिहं एगचरे स भिक्खू ॥१६॥

॥ त्ति बेमि ॥ इति सभिक्खुयं पंचदहं अज्जयणं समत्तं ॥१५॥

। अह बम्भचेरसमाहिठाणा णाम अज्भयणं ।१६

सुयं मे आउसं—तेणं भगवया एवमक्खायं। इह खलु थेरेहिं भगवन्तेहिं दस बम्भचेर-समाहिठाणा पन्नत्ता, जे भिक्खू सोच्चा निसम्म संजमबहुले संवरबहुले समाहिबहुले गुत्त गुत्तिन्दिए गुत्तबम्भयारी सया अप्पमत्त विहरेज्जा। कयरे खलु ते थेरेहिं भगवन्तेहिं दस बम्भचेरसमाहिठाणा पन्नत्ता, जे भिक्खू सोच्चा निसम्म संजमबहुले संवरबहुले समाहिबहुले गुत्ते गुत्तिन्दिए गुत्तबम्भयारी सया अप्पमत्ते विहरेज्जा॥ इमे खलु ते थेरेहिं भगवन्तेहिं दस बम्भचेरसमाहिठाणा पन्नत्ता, जे भिक्खू सोच्चा निसम्म संजमबहुले संवरबहुले समाहिबहुले गुत्ते गुत्तिन्दिए गुत्तबम्भयारी सया अप्पमत्ते विहरेज्जा॥ तं जहा विवित्ताइं सयणासणाइं सेवित्ता हवइ से निग्गन्थे। नो इत्थी-

पसु-पण्डग संसत्ताइं सयणासणाइं सेवित्ता हवइ से निग्गन्थे। तं कहमिति चे। आयरियाह। निग्गन्थस्स खलु इत्थि-पसु-पण्डग-संसत्ताइं सयणासणाइं सेवमाणस्स-बम्भयारिस्स बम्भ-चेरे संका वा कंखा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा। तम्हा खलु नो इत्थिपसुपण्डग-संसत्ताइं सयणासणाइं सेवित्ता हवइ से णिग्गन्थे ॥१॥

नो निग्गन्थे इत्थीणं कहं कहित्ता हवइ से निग्गन्थे। तं कहमिति चे। आयरियाह। निग्गन्थस्स खलु इत्थीणं कहं कहेमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा कंखा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा, केवलि-पन्नत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा। तम्हा खलु नो निग्गन्थे इत्थीणं कहं कहेज्जा ॥२॥

नो निग्गन्थे इत्थीणं सद्धिं सन्नीसेज्जागए विहरित्ता हवइ से निग्गन्थे। तं कहमिति चे। आयरियाह। निग्गन्थस्स खलु इत्थीहिं सद्धिं सन्निसेज्जागयस्स-बम्भयारिस्स] बम्भचेरे संका वा कंखा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा-केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा। तम्हा खलु नो निग्गन्थे इत्थीहिं सद्धिं सन्निसेज्जागए विहरेज्जा ॥३॥

नो निग्गन्थे इत्थीणं इन्दियाइं मणोहराइं मणोरमाइं आलोइत्ता निज्झाइत्ता हवइ से निग्गन्थे। तं कहमिति चे। आयरियाह। निग्गन्थस्स खलु इत्थीणं इन्दियाइं मणोहराइं मणोरमाइं आलोएमाणस्स निज्झायमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे

संका वा कंखा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेदं वा लभेज्जा, उम्माय वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा-केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा। तम्हा खलु नो निग्गन्थे इत्थीणं इन्दियाइं मणोहराइं मणोरमाइं आलोएज्जा निज्झाएज्झा ॥४॥

नो निग्गन्थे इत्थीणं कुड्डन्तरंसि वा भित्तान्तरंसि वा कूइयसद्दं वा रुइयसद्दं वा गीयसद्दं वा हसियसद्दं वा थणियसद्दं वा कन्दियसद्दं वा विलिवियसद्दं वा सुणेत्ता हवइ से निग्गन्थे। तं कहमिति चे। आयरियाह। निग्गन्थस्स खलु इत्थीणं कुड्डन्तरंसि वा दूसन्तरंसि वा भित्तंतरंसि वा कूइयसद्दं वा रुइयसद्दं वा गीयसद्दं वा हसियसद्दं वा थणियसद्दं वा कन्दियसद्दं वा विलवियसद्दं वा सुणेमाणस्स-बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा कंखा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा-केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा, तम्हा खलु नो निग्गन्थे इत्थीणं कुड्डन्तरंसि वा दूसन्तरंसि वा भित्तन्तरंसि वा कूइयसद्दं वा रुइयसद्दं वा गीयसद्दं वा हसियसद्दं वा थणियसद्दं वा कन्दियसद्दं वा विलवियसद्दं वा सुणेमाणे विहरेज्जा ॥५॥

नो निग्गन्थे इत्थीणं पुव्वरयं पुवकीलियं अणुसरित्ता हवइ से निग्गन्थे। तं कहमिति चे। आयरियाह। निग्गन्थस्स खलु पुव्वरयं पुव्वकीलियं अणुसरमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा कंखा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा

रोगायकं हवेज्जा-केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा । तम्हा खलु नो निग्गन्थे पुव्वरयं पुव्वकीलियं अणुसरेज्जा ॥६॥

नो निग्गन्थे पणीयं आहारं आहरित्ता हवइ से निग्गन्थे । तं कहमिति चे । आयरियाह । निग्गन्थस्स खलु पणीयं आहार आहारेमाणस्स बम्भियारिस्स बम्भचेरे संका वा कंखा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा; भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा, केवलि-पन्नत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा । तम्हा खलु नो निग्गन्थे पणीयं आहारं आहारेज्जा ॥७॥

नो निग्गन्थे अइमायाए पाण-भोयणं आहारेत्ता हवइ से निग्गन्थे । तं कहमिति चे । आयरियाह । निग्गन्थस्स खलु अइमायाए पाणं भोयणं आहारेमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका व कंखा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेदं वा लभेज्जा, उम्माय वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा-केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा । तम्हा खलु नो निग्गंथे अइमायाए पाणभोयणं आहारेज्जा ॥८॥

ना निग्गंथे विभूसाणुवादी हवइ से निग्गंथे । तं कह-मिति चे । आयरियाह । विभूसावत्तिए विभूसियसरीरे इत्थिजणस्स अभिलसणिज्जे हवइ । तओ णं तस्स इत्थिजणेणं अभिलसिज्जमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा कंखा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा-केवलि-पन्नताओ धम्माओ भंसेज्जा । तम्हा खलु नो निग्गन्थे विभू-साणुवादी हविज्जा ॥९॥

नो निग्गन्थे सद्द-रूव-रस-गन्ध-फासाणुवादी हवइ से निग्गन्थे। तं कहमिति चे। आयरियाह। निग्गन्थस्स खलु सद्द-रूव-रस-गन्ध-फासाणुवादिस्सबम्भ यारिस्स बम्भचेरे संका वा कंखा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायंक हवेज्जा-केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा। तम्हा खलु नो निग्गन्थे-सद्द-रूव-रस-गन्ध-फासाणुवादी भवेज्जा से निग्गन्थे। दसमे बम्भचेर समाहि-ठाणे हवइ ॥१०॥

हवन्ति इत्थ सिलोगा। तं जहा-

विवित्त-मणा-इण्णं, रहियं इत्थि जणेण य।
बम्भचेरस्स रक्खट्ठा, आलयं तु निसेवए ॥१॥

मण-पल्हाय जणणी, काम-राग-विवड्ढणी।
बम्भचेररओ भिक्खू, थी-कहं तु विवज्जए ॥२॥

समं च संथवं थीहिं, संकहं च अभिक्खणं।
बम्भचेररओ भिक्खू, निच्चसो परिवज्जए ॥३॥

अंग-पच्चंग-संट्ठाणं, चारुल्लविय-पेहियं।
बम्भचेररओ थीणं, चक्खुगिज्झं विवज्जए ॥४॥

कूइयं रुइयं, गीयं, हसियं, थणिय-कन्दियं।
बम्भचेररओ थीणं, सोयगिज्झं विवज्जए ॥५॥

हासं किडं रइं दप्पं, सहसाऽवित्तासियाणि य।
बम्भचेररओ थीणं, नाणुचिन्ते कयाइ-वि ॥६॥

पणीयं भत्त-पाणं तु, खिप्पं मय-विवड्ढणं।
बम्भचेररओ भिक्खू, निच्चसो परिवज्जए ॥७॥

धम्म-लद्धं मियं काले, जत्तत्थं पणिहाणवं।
नाइ-मत्तं तु भुंजेज्जा, बम्भचेररओ सया ॥८॥

विभूसं परिवज्जेज्जा, सरीर-परिमण्डणं ।
बम्भचेररओ भिक्खू, सिंगारत्थं न धारए ॥९॥

सद्देरूवे य गन्धे य, रसे फासे तहेव य ।
पंचविहे कामगुणे, निच्चसो परिवज्जए ॥१०॥

आलओ थी-जणा-इण्णो, थी-कहा य मणोरमा ।
सथवो चेर नारीणं, तास इन्दिय-दरिसणं ॥११॥

कूइयं रुइयं गीयं, हास-भुत्ता-सियाणि य ।
पणीयं भत्त-पाणं च, अइ-मायं पाण-भोयणं ॥१२॥

गत्तभूसण-मिट्ठं च, काम-भोगा य दुज्जया ।
नरस्सत्त-गवेसिस्स, विसं तालउडं जहा ॥१३॥

दुज्जए काम भागे य, निच्चसो परिवज्जए ।
संका-ठाणाणि सव्वाणि, वज्जेज्जा पणिहाणवं ॥१४॥

धम्मारामे चरे भिक्खू, धिइमं धम्मसारही ।
धम्मारामे-रते-दन्ते, बम्भचेर-समाहिए ॥१५॥

देव-दाणव-गन्धव्वा, जक्ख-रक्खस-किन्नरा ।
बम्भयारिं नमंसन्ति, दुक्करं जे करन्ति ते ॥१६॥

एस धम्मे धुवे निच्चे, सासए जिण-देसिए ।
सिद्धा सिज्झन्ति चाणेण, सिज्झिस्सन्ति तहावरे ॥त्ति बेमि ॥१७॥

॥ इति बम्भचेरसमाहिठाणा समत्ता ॥१६॥

॥ अह पावसमणिज्जं सत्तदहं अज्झयणं ॥१७॥

जे केइ उ पव्वइए नियण्ठे, धम्मं सुणित्ता विणओववन्ने ।
सुदुल्लहं लहिउं बोहिलाभं, विहरेज्ज पच्छा य जहासुहं तु ॥१॥

सेज्जा दढा पाउरणम्मि अत्थि, उप्पजई भोत्तुं तहेव पाउं ।
जाणामि जं वट्टइ आउसुत्ति, किं नाम काहामि सुएण भन्ते ॥२॥

जे केइ पव्वइए, निद्दासीले पगामसो।
भोच्चा पेच्चा सुहं सुवइ, पाव-समणे त्ति वुच्चइ ॥३॥
आयरिय-उवज्झाएहिं, सुयं विणयं च गाहिए।
ते चेव खिंसई बाले, पाव-समणेत्ति वुच्चई ॥४॥
आयायि-उवज्झायाणं, सम्मं न पडितप्पइ।
अप्पडिपूयए थद्धे, पाव-समणेत्ति वुच्चई ॥५॥
सम्मद्दमाणि पाणाणि, बीयाणि हरियाणि य।
असंजए संजयमन्नमाणो, पाव-समणेत्ति वुच्चई ॥६॥
संथारं फलगं पीढं, निसेज्जं पायकम्बलं।
अप्पमज्जियमारुहइ, पाव-समणेत्ति वुच्चई ॥७॥
दव-दवस्स चरई, पमत्ते य अभिक्खणं।
उल्लंघणे य चण्डे य, पाव-समणेत्ति वुच्चई ॥८॥
पडिलेहेइ पमत्ते, अवउज्झइ पायकम्बलं।
पडिलेहा अणाउत्ते, पाव-समणेत्ति वुच्चई ॥९॥
पडिलेहेइ पमत्ते, से किंचि हु निसामिया।
गुरुपारिभावए निच्चं, पाव-समणेत्ति वुच्चई ॥१०॥
बहुमाई पमुहरे, थद्धे लुद्धे अणिग्गहे।
असंविभागी अवियत्ते, पाव-समणेत्ति वुच्चई ॥११॥
विवादं च उदीरेइ, अहम्मे अत्त पन्नहा।
वुग्गहे कलहे रत्ते, पाव-समणेत्ति वुच्चई ॥१२॥
अथिरासणे कुकुइए, जत्थ तत्थ निसीयई।
आसणम्मि अणाउत्ते, पाव-समणेत्ति वुच्चई ॥१३॥
ससरक्खपाए सुवई, सेज्जं न पडिलेहइ।
संथारए अणाउत्ते, पाव-समणेत्ति वुच्चई ॥१४॥
दुद्ध-दही-विगईओ, आहारेई अभिक्खणं।
अरए य तवो-कम्मे, पाव-सणणेत्ति वुच्चई ॥१५॥

अत्थन्तम्मि य सूरम्मि, आहारेई अभिक्खणं ।
चोइओ पडिचोएइ, पाव समणेत्ति वुच्चई ॥१६॥

आयरिय-परिच्चाई, परपासण्डसेवए ।
गाणंगणिए दुब्भूए, पाव-समणेत्ति वुच्चई ॥१७॥

सयं गेहं परिच्चज्ज, परगेहंसी वावरे ।
निमित्तेण य ववहरइ, पाव-समणेत्ति वुच्चई ॥१८॥

सन्नाइ-पिण्डं जेमेइ, नेच्छइ सामुदाणियं ।
गिहि निसेज्जं च वाहेइ, पाव-समणेत्ति वुच्चई ॥१९॥

एयारिसे पंच-कुसील संवुडे, रूवंधरे मुणिपवराण हेट्ठिमे ।
अयंसि लोए विसमेव गरहिए, न से इहं नेव परत्थ लोए ॥२०॥

जे वज्जए एए सया उ दोसे, से सुव्वए होइ मुणीण मज्झे ।
अयंसि लोए अमयं व पूइए,आराहए लोगमिणं णज्झयणं तहा परं ॥२१

॥ त्ति बेमि ॥ इति पावसम णिज्जं सत्तदहं अज्झयणं समत्तं ॥१७॥

॥ अह संजइज्जं अट्ठारहमं अज्झयणं ॥१८॥

कम्पिल्ले नयरे राया, ऊदिण्ण-बलवाहणे ।
नामेणं संजए नामं, मिगव्वं उवणिग्गए ॥१॥

हयाणीए गयाणीए, रहाणीए तहेव य ।
पायत्ताणीए महया, सव्वओ परिवारिए ॥२॥

मिए छुहित्ता हयगओ, कम्पिल्लुज्जाण केसरे ।
भीए सन्ते मिए तत्थ, वहेइ रसमुच्छिए ॥३॥

अह केसरम्मि उज्जाणे, अणगारे तवोधणे ।
सज्झाय-ज्झाण-संजुत्ते, धम्म-ज्झाणं झियायइ ॥४॥

अप्फोव मण्डवम्मि, झायइ क्खवियासवे ।
तस्सागए मिगे पासं, वहेइ से नराहिवे ॥५॥

अह आसगओ राया, खिप्पमागम्म सो तहिं ।
हए मिए उ पसित्ता, अणगारं तत्थ पासई ॥६॥

अह राया तत्थ संभन्तो, अणगारो मणाहओ ।
मए उ मन्दु-पुण्णेणं, रस-गिद्धेण घित्तुणा ॥७॥

आसं विसज्जइत्ताणं, अणगारस्स सो निवो ।
विणएण वन्दए पाए, भगवं एत्थ मे खमे ॥८॥

अह मोणेण सो भगवं, अणगारे झाणमस्सिए ।
रायाणं न पडिमन्तेइ, तओ राया भयद्दुओ ॥९॥

संजओ अहमम्मीति, भगवं वाहराहि मे ।
कुद्धे तेएण अणगारे, डहेज्ज नरकोडिओ ॥१०॥

अभओ पत्थिवा ? तुब्भं, अभयदाया भवाहि य ।
अणिच्चे जीवलोगम्मि, किं हिंसाए पसज्जसी ? ॥११॥

जया सव्वं परिच्चज्ज, गन्तव्वमवसस्स ते ।
अणिच्चे जीवलोगम्मि, किं रज्जम्मि पसज्जसी ॥१२॥

जीवयं चेव रुवं च विज्जु-संपाय-चंचलं ।
जत्थ तं मुज्झसी रायं, पेच्चत्थं नावबुज्झसे ॥१३॥

दाराणि य सुया चेव, मित्ता य तह बन्धवा ।
जीवन्त-मणुजीवन्ति, मयं नाणुव्वयन्ति य ॥१४॥

नीहरन्ति मयं पुत्ता, पितरं परम-दुक्खिया ।
पितरोवि तहा पुत्ते, बन्धू रायं तवं चरे ॥१५॥

तओ तेण-ज्जिए दव्वे, दारे य परि-रक्खिए ।
कीलन्तिऽन्ने नरा रायं, हट्ठ-तुट्ठ-मलंकिया ॥१६॥

तेणावि जं कयं कम्मं, सुहं वा जइ वा दुहं ।
कम्मुणा तेण संजुत्तो, गच्छई उ परं भवं ॥१७॥

सोऊण तस्स सो धम्मं, अणगारस्स अन्तिए ।
महया संवेग-निव्वेदं, समावन्नो नराहिवो ॥१८॥

'संजओ' चइउ रज्जं, निक्खन्तो जिण-सासणे ।
'गद्दभालिस्स' भगवओ, अणगारस्स अन्तिए ॥१९॥

चिच्चा रट्ठं पव्वइए, खत्तिए परिभासइ ।
जहा ते दीसई रूवं, पसन्नं ते तहा मणो ॥२०॥

किंनामे किंगोत्ते, कस्सट्ठाए व माहणे ।
कहं पडियरसी बुद्धे, कहं विणीएत्ति वुच्चसी ॥२१॥

संजओ नाम नामेणं, तहा गोत्तेण गोयमो ।
'गद्दभाली' ममायरिया, विज्जा-चरण-पारगा ॥२२॥

किरियं अकिरियं विणयं, अन्नाणं च महामुणी ।
एएहिं चउहिं ठाणेहिं, मेयन्ने किं पभासई ॥२३॥

इइ पाउकरे बुद्धे, नायए परि-णिव्वुए ।
विज्जा-चरण-सपन्ने, सच्चे सच्च-परक्कमे ॥२४॥

पडन्ति नरए घोरे, जे नरा पाव कारिणो ।
दिव्वं च गइं गच्छन्ति, चरित्ता धम्ममारियं ॥२५॥

माया-वुइयमेयं तु, मुसा-भासा निरत्थिया ।
संजयमाणोऽवि अहं, वसामि इरियामि य ॥२६॥

सव्वेए विइया मज्झं, मिच्छा-दिट्ठी अणारिया ।
विज्जमाणे परे लोए, सम्मं जाणामि अप्पयं ॥२७॥

अहमासि महापाणे, जुइमं वरिस-सओवमे ।
जा सा पालि- महापाली, दिव्वा वरिस-सओवमा ॥२८॥

चुए बम्भलोगाओ, माणुसं भवमागए ।
अप्पणो य परेसिं च, आउं जाणे जहा तहा ॥२९॥

नाणारुइं च छन्दं च, परिवज्जज्ज संजए ।
अणट्ठा जे य सव्वत्था, इइ विज्जामणुसंचरे ॥३०॥

पडिक्कमामि पसिणाणं, परमंतेहिं वा पुणो ।
अहो उट्ठिए अहोरायं, इइ विज्जा तवं चरे ॥३१॥

जं च मे पुच्छसी काले, सम्मं सुद्धेण चेयसा ।
ताइं पाउकरे बुद्धे, तं नाणं जिणसासणे ॥३२॥

किरियं च रोयई धीरे, अकिरियं परिवज्जए ।
दिट्ठीए दिट्ठिसम्पन्ने, धम्मं चर सुदुच्चरं ॥३३॥

एयं पुण्णपयं सोच्चा, अत्थ-धम्मो-वसोहियं ।
'भरहोऽवि' भारहं वासं, चिच्चा कामाइ पव्वए ॥३४॥

'सगरोऽवि' सागरन्तं, भरहवासं नराहिवो ।
इस्सरियं केवल हिच्चा, दयाइ परि-निव्वुडे ॥३५॥

चइत्ता भारहं वासं, चक्कवट्टी महड्ढिओ ।
पव्वज्जमब्भुवगओ, मघवं नाम महाजसो ॥३६॥

'संणकुमारो' मणुस्सिन्दो, चक्कवट्टी महड्ढिओ ।
पुत्तं रज्जे ठवेऊणं, सोऽवि राया तवं चरे ॥३७॥

चइत्ता भारहं वासं, चक्कवट्टी महड्ढिओ ।
'सन्ती' सन्तिकरे लोए, पत्तो गइमणुत्तरं ॥३८॥

इक्खाग-राय-वसभो, 'कुन्थू' नाम नरीसरो ।
विक्खाय-कित्ती भगवं, पत्तो गइमणुत्तरं ॥३९॥

सागरन्तं चइत्ताणं, भरहं नर-वरीसरो ।
अरो य अरयं पत्तो, पत्तो गइमणुत्तरं ॥४०॥

चइत्ता भारहं वासं, चइत्ता बल-वाहणं ।
चइत्ता उत्तमे भोए, 'महापउमे' तवं चरे ॥४१॥

एगच्छत्तं पसाहित्ता, महिं माणनिसूरणो ।
'हरिसेणो' मणुस्सिन्दो, पत्तो गइमणुत्तरं ॥४२॥

अन्निओ रायसहस्सेहिं, सु परिच्चाई दमं चरे ।
'जयनामो' जिणक्खायं, पत्तो गइमणुत्तरं ॥४३॥

'दसण्णरज्जं' मुदियं, चइत्ताणं मुणी चरे ।
'दसण्णभद्दो' निक्खन्तो, सक्खं सक्केण चोइओ ॥४४॥

'नमी' नमेइ अप्पाणं, सक्खं सक्केण चोइओ ।
चइऊण गेहं वइदेही, सामण्णे पज्जुवट्ठिओ ॥४५॥

'करकण्डू' कलिंगेसु, पंचालेसु य दुम्मुहो ।
'नमी राया' विदेहेसु, 'गन्धारेसु' य नग्गई ॥४६॥

एए नरिन्द-वसभा, निक्खन्ता जिण-सासणे ।
पुत्ते रज्जे ठवेऊणं, सामण्णे पज्जुवट्ठिया ॥४७॥

सो वीर-राय-वसभो, चइत्ताण मुणी चरे ।
'उदायणो' पव्वइओ, पत्तो गइमणुत्तरं ॥४८॥

तहेव 'कासीराया' सेओ-सच्च-परक्कमे ।
काम-भोगे परिच्चज्ज, पहणे कम्म-महावणं ॥४९॥

तहेव 'विजओ' राया, अणट्ठाकित्ति पव्वए ।
रज्जं तु गुणसमिद्धं, पयहित्तु महाजसो ॥५०॥

तहेवुग्गं तवं किच्चा, अव्वक्खित्तेण चेयसा ।
'महब्बलो' रायरिसी, आदाय सिरसा सिरिं ॥५१॥

कहं धीरो अहेऊहिं, उम्मत्तो व महिं चरे ।
एए विसेसमादाय, सूरा दढपरक्कमा ॥५२॥

अच्चन्त-नियाण खमा, सच्चा मे भासिया वई ।
अतरिंसु तरन्तेगे, तरिस्सन्ति अणागया ॥५३॥

कहं धीरे अहेऊहिं, अत्ताणं परियावसे ।
सव्व-संग-विनिम्मुक्के, सिद्धे भवइ नीरए ॥ त्ति बेमि ॥५४॥

॥ इति संजइज्जं समत्तं ॥१८॥

॥ मियापुत्तीयं एगूणवीसइमं अज्झयणं ॥१९॥

सुग्गीवे नयरे रम्मे, काणणुज्जाणसोहिए ।
राया बलभद्दित्ति, मिया तस्सग्गमाहिसी ॥१॥

तेसिं पुत्ते बलसिरी, मियापुत्तात्ति विस्सुए ।
अम्मापिऊण दइए, जुवराया दमीसरे ॥२॥

नन्दणे सो उ पासाए, कीलए सह इत्थिहि ।
देवे दोगुन्दगे चेव, निच्चं मुइय माणसो ॥३॥

मणि-रयण कोट्टिमतले, पासाया लोयणट्ठिओ ।
आलोएइ नगरस्स, चउक्कत्तियचच्चरे ॥४॥

अह तत्थअइच्छन्तं, पासई समणसंजय ।
तव नियम-संजमधरं, सीलड्ढं गुणआगरं ॥५॥

तं देहई मियापुत्ते, दिट्ठोए अणिमिसाए उ
कहिं मन्नेरिसं रूवं, दिट्ठपुव्वं मए पुरा ॥६॥

साहुस्स दरिसणे तस्स, अज्झवसाणम्मि सोहणे ।
मोहं गयस्स सन्तस्स, जाईसरणं समुप्पन्नं ॥७॥

[देवलोग चओसंतो, माणुसंभवमागओ ।
सन्निनाणे समुप्पन्ने, जाई सरणं पुरायणं]

जाईसरणे समुप्पन्ने, मियापुत्ते महिड्ढिए ।
सरई पोराणियं जाइं, सामण्णं च पुरा कयं ॥८॥

विसएहि अरज्जन्तो, रज्जन्तो संजमम्मि य ।
अम्मा-पियरमुवागम्म, इमं वयणमब्ववी ॥९॥

सुयाणि मे पंचमहव्वयाणि, नरएसु दुक्खं च तिरिक्खजोणिसु ।
निव्विण्णकामोमि महण्णवाओ, अणुजाणह पव्वइस्सामि अम्मो॥१०॥

अम्म ताय मए भोगा, भुत्ता विसफलोवमा ।
पच्छा कडुय-विवागा, अणुबन्धदुहावहा ॥११॥

इमं सरीरं अणिच्चं, असुइं असुईसंभवं ।
असासया-वासमिणं, दुक्ख केसाण भायणं ॥१२॥

असासए सरीरम्मि, रइं नोवलभामहं ।
पच्छा पुरा व चइयव्वे, फेणबुब्बुयसन्निभे ॥१३॥

माणुसत्ते असारम्मि, वाहीरोगाण ओलए ।
जरा-मरण-घत्थम्मि, खणंपि न रमामहं ॥१४॥

जम्मं दुक्खं जरा दुक्खं, रोगाणि मरणाणि य ।
अहो दुक्खो हु संसारो, जत्थ कीसन्ति जन्तवो ॥१५॥

खेत्तं वत्थु हिरण्णं च, पुत्तदारं च बन्धवा ।
चइत्ताणं इमं देहं, गन्तव्वमबसस्स मे ॥१६॥

जहा किम्पाग-फलाणं, परिणामो न सुन्दरो ।
एवं भुत्ताण भोगाणं, परिणामो न सुन्दरो ॥१७॥

अद्धाणं जो महंतं तु, अप्पाहेओ पवज्जई ।
गच्छन्तो सो दुही होइ, छुहातण्हाए पीडिओ ॥१८॥

एवं धम्मं अकाऊणं, जो गच्छइ परं भवं ।
गच्छन्तो सो दुही होइ, वाहीरोगेहिं पीडिओ ॥१९॥

अद्धाणं जो महंतं तु, सपाहेओ पवज्जई ।
गच्छन्तो सो सुही होइ, छुहा तण्हा विवज्जिओ ॥२०॥

एवं धम्मंऽपि काऊणं, जो गच्छइ परं भवं ।
गच्छन्तो सो सुही होइ, अप्पकम्मे अवेयणे ॥२१॥

जहा गेहे पलित्तम्मि, तस्स गेहस्स जो पहू ।
सारभण्डाणि नीणेइ, असारं अवउज्झइ ॥२२॥

एवं लोए पलित्तम्मि, जराए मरणेण य ।
अप्पाणं तारइस्सामि, तुब्भेहि अणुमन्निओ ॥२३॥

तं बिन्तम्मापियरो, सामण्णं पुत्त दुच्चरं ।
गुणाणं तु सहस्साइं, धारेयव्वाइं भिक्खुणो ॥२४॥

समया सव्वभूएसु, सत्तु मित्तेसु वा जगे ।
पाणाइ वाय विरई, जावज्जीवाए दुक्करं ॥२५॥

निच्चकालप्पमत्तेणं, मुसावाय-विवज्जणं ।
भासियव्वं हियं सच्चं, निच्चाउत्तेण दुक्करं ॥२६॥

दन्तसोहण माइस्स, अदत्तस्स विवज्जणं ।
अणवज्जेसणिजस्स, गिण्हणा अवि दुक्करं ॥२७॥

विरई अबम्भचेरस्स, कामभोगरसन्नुणा ।
उग्गं महव्वयं बम्भं, धारेयव्वं सुदुक्करं ॥२८॥

धण-धन्न-पेस-वग्गेसु, परिग्गह विवज्जणं ।
सव्वारम्भपरिच्चाओ, निम्ममत्तं सुदुक्करं ॥२९॥

चउव्विहेऽवि आहारे, राईभोयण-वज्जणा ।
सन्निहि संचओ चेव, वज्जेयव्वो सुदुक्करं ॥३०॥

छुहा तण्हा य सीउण्हं, दंस-मसग वेयणा ।
अक्कोसा दुक्खसेज्जा य, तण फासा जल्लमेव य ॥३१॥

तालणा तज्जणा चेव, वहवन्ध-परीसहा ।
दुक्खं भिक्खायरिया, जायणा य अलाभया ॥३२॥

कावोया जा इमा वित्ती, केसलोआ या दारुणा ।
दुंक्खं वम्भव्वयं घोरं, धारेउं य महप्पणो ॥३३॥

सुहोइओ तुमं पुत्ता, सुकुमालो सुमज्जिओ ।
न हु सी पभू तुमं पुत्ता, सामण्णमणुपलिया ॥३४॥

जावज्जीवमविस्सामो, गुणाणं तु महव्भरो ।
गुरुओ लोहभारु व्व, जो पुत्ता होइ दुव्वहो ॥३५॥

आगासे गंगसोउ व्व, पडिसोउ व्व दुत्तरो ।
वाहाहिं सागरो चेव, तरियव्वो गुणोदही ॥३६॥

वालुयाकवलो चेव, निरस्सा ए उ संजमे ।
असिधारा-गमणं चेव, दुक्करं चरिउं तवो ॥३७॥

अही वेगन्त-दिट्ठीए, चरित्ते पुत्त दुक्करे ।
जवा लोहमया चेव, चावेयव्वा सुदुक्करं ॥३८॥

जहा अग्गिसिहा दित्ता, पाउं होइ सुदुक्करा ।
तहा दुक्करं करेउं जे, तारुण्णे समणत्तणं ॥३९॥

जहा दुक्खं भरेउं जे, होइ वायस्स कोत्थलो ।
तहा दुक्खं करेउं जे, कीवेणं समणत्तणं ॥४०॥

जहा तुलाए तोलेउं, दुक्करो मन्दरो गिरी ।
तहा निहुयं नीसेकं, दुक्करं समणत्तणं ॥४१॥

जहा भूयाहिं तरिउं, दुक्करं रयणायरो ।
तहा अणुवसन्तेणं, दुक्करं दमसागरो ॥४१॥

भुंज माणु मोगे, पंचलक्खणए तुमं ।
भुत्तभोगी तओ जाया, पच्छा धम्मं चरिस्ससि ॥४३॥

सो वितऽम्मापियो, एवमेयं जहा फुडं ।
इह लोए निप्पिवासस्स नत्थि किंचिवि दुक्करं ॥४४॥

सारीरमाणसा चेव वेयणाओ अनन्तसो ।
मए सोढाओ भीमाओ, असइं दुक्खभयाणि य ॥४५॥

जरामरण-कान्तारे, चाउरन्ते भयागरे ।
मए सोढाणि भीमाणि, जम्माणि मरणाणि य ॥४६॥

जहा इहं अगणी उण्हो, एत्तोऽणन्तगुणो तहिं ।
नरएसु वेयणा उण्हा, अस्साया वेइया मए ॥४७॥

जहा इमं इहं सीयं, एत्तोऽणन्तगुणो तहिं ।
नरएसु वेयणा सीया, अस्साया वेइया मए ॥४८॥

कन्दन्तो कन्दुकुम्भीसु, उड्ढपाओ अहोसिरो ।
हुयासणे जलन्तम्मि, पक्कपुव्वो अणन्तसो ॥४९॥

महादवग्गिसंकासे, मरुम्मि वइरवालुए ।
कलम्बवालुयाए य, दड्ढपुव्वो अणन्तसो ॥५०॥

रसन्तो कन्दुकुम्भीसु, उड्ढ बद्धो अबन्धवो ।
करवत्त करकयाईहिं, छिन्नपुव्वो अणन्तसो ॥५१॥

अइ तिक्ख-कटंगा इण्णे, तुङ्गे सिम्बलिपायवे ।
खेवियं पासबद्धेणं, कड्ढोकड्ढाहिं दुक्करं ॥५२॥

महाजन्तेसु उच्छू वा, आरसन्तो सुभेरवं ।
पीडिओऽमि सकम्मेहिं, पावकम्मो अणन्तसो ॥५३॥

कूवन्तो कोलसुणएहिं, सामेहिं सबलेहि य ।
पाडिओ फालिओ छिन्नो, विप्फुरन्तो अणेगसो ॥५४॥

असीहि अयसिवण्णाहिं, भल्लेहिं पट्टिसेहि य ।
छिन्नो भिन्नो विभिन्नो य, ओइण्णो पाव कम्मुणा ॥५५॥

अवसो लोहरहे जुत्तो, जलन्ते समिलाजुए।
चोइओ तोत्तजुत्तेहिं, रोज्झो वा जह पाडिओ ॥५६॥

हुयासणे जलन्तम्मि, चियासु महिसो विव।
दड्ढो पक्को य अवसो, पावकम्मेहि पाविओ ॥५७॥

बला संडासतुण्डेहिं, लोहतुण्डेहिं पक्खिहिं।
विलुत्तो विलवन्तो हं, ढंकगिद्धेहिंऽणन्तसो ॥५८॥

तण्हाकिलन्तो धावन्तो, पत्तो वेयरिणिं नदिं।
जलं पाहिंति चिन्तन्तो, खुरधाराहिं विवाइओ ॥५९॥

उण्हाभितत्तो संपत्तो, असिपत्तं महावणं।
असिपत्तेहिं पडन्तेहिं, छिन्नपुव्वो अणेगसो ॥६०॥

मुग्गरेहिं मुसंढीहिं, सूलेहिं मुसलेहि य।
गया संभग्गत्तेहिं, पत्तं दुक्खं अणन्तसो ॥६१॥

खुरेहिं तिक्खधारेहिं, छुरियाहिं कप्पणीहि य।
कप्पिओ फालिओ छिन्नो, उक्कित्तो य अणेगसो ॥६२॥

पासेहिं कूडजालेहिं, मिओ वा अवसो अहं।
वाहिओ बद्धरुद्धो वा, बहू चेव विवाइओ ॥६३॥

गलेहिं मगरजालेहिं, मच्छो वा अवसो अहं।
उल्लिओ फालिओ गहिओ, मारिओ य अणन्तसो ॥६४॥

वीदंसएहिं जालेहिं, लेप्पाहिं सउणो विव।
गाहिअ लग्गो बद्धो य, मारिओ य अणन्तसो ॥६५॥

कुहाड-फरसु-माईहिं बड्ढईहिं दुमो विव।
कुट्टिओ फालिओ छिन्नो, तच्छिओ य अणन्तसो ॥६६॥

चवेड मुट्ठि माईहिं, कुमारेहिं अयं पिव।
ताडिओ कुट्टिओ भिन्नो, चुण्णिओ अणन्तसो ॥६७॥

त्ताइं तम्ब-लोहाइं, तउयाइं सीसयाणि य ।
पाइओ कलकलन्ताइं, आरसन्तो सुभेरवं ॥६८॥

तुहं पियाइं मंसाइं, खण्डाइं सोल्लगाणि य ।
खाइओमि स-मंसाइं, अग्गिवण्णाइऽणेगसो ॥६९॥

तुहं पिया सुरा सीहू, मेरओ य महूणि य ।
पाइओमि जलन्तीओ, वसाओ रुहिराणि य ॥७०॥

निच्चं भीएण तत्थेण, दुहिएण वहिएण य ।
परमा दुहसंबद्धा, वेयणा वेदिता मए ॥७१॥

तिव्वचण्डप्पगाढाओ, घोराओ अइदुस्सहा ।
महब्भयाओ भीमाओ, नरएसु वेदिता मए ॥७२॥

जारिसा माणुसे लोए, ताया दीसन्ति वेयणा ।
एत्तो अणन्तगुणिया, नरएसु दुक्खवेयणा ॥७३॥

सव्वभवेसु अस्साया, वेयणा वेदिता मए ।
निमेसन्तरमित्तंऽपि, जं साता नत्थि वेयणा ॥७४॥

तं बिन्तम्मापियरो, छन्देणं पुत्त पव्वया ।
नवरं पुण सामण्णे, दुक्खं निप्पडिकम्मया ॥७५॥

सो बेइ अम्मापियरो, एवमेयं जहा फुडं ।
पडिकम्मं को कुणई, अरण्णे मियपक्खिणं ॥७६॥

एगब्भूए अरण्णे व, जहा उ चरई मिगे ।
एवं धम्मं चरिस्सामि, संजमेण तवेण य ॥७७॥

जहा मिगस्स आयंको, महारण्णम्मि जायई ।
अच्चन्तं रुक्खमूलम्मि, को णं ताहे तिगिच्छिई ॥७८॥

को वा से ओसहं देइ, को वा से पुच्छई सुहं ।
को से भत्तं च पाणं वा, आहरित्त पणामए ॥७९॥

जया से सुही होइ, तया गच्छइ गोयरं ।
भत्तपाणस्स अट्ठाए, वल्लराणि सराणि य ॥८०॥

खाइत्ता पाणियं पाउं, वल्लरेहिं सरेहि य ।
मिगचारियं चरित्ताणं, गच्छई मिगचारियं ॥८१॥

एवं समुट्ठिओ भिक्खू , एवमेव अणेगए ।
मिगचारियं चरित्ताणं, उड्ढं पक्कमई दिस ॥८२॥

जहा मिए एग अणेगचारी, अणेगवासे धुवगोयरे य ।
एवं मुणीगोयरियं पविट्ठे, नो हीलये नोवि य खिंसएज्जा ॥८३॥

मिगचारियं चरिस्सामि, एवं पुत्ता जहासुहं ।
अम्मापिऊहिंऽणुन्नाओ, जहाइ उवहिं तहा ॥८४॥

मिगचारियं चरिस्सामि, सव्वदुक्खविमोक्खणिं ।
तुब्भेहिं अब्भणुन्नाओ, गच्छ पुत्त जहासुहं ॥८५॥

एवं सो अम्मापियरो, अणुमाणित्ताण बहुविहं ।
ममत्तं छिन्दई ताहे, महानागो व्व कंचुयं ॥८६॥

इड्ढी वित्तं च मित्ते य, पुत्तदारं च नायओ ।
रेणुयं व पडे लग्गं, निद्धुणिताण निग्गओ ॥८७॥

पंचमहव्वयजुत्तो, पंचहि समिओ तिगुत्तिगुत्तो य ।
सब्भिन्तर बाहिरओ, तवोकम्मंसि उज्जुओ ॥८८॥

निम्ममो निरहंकारो, निस्संगो चत्तगारवो ।
समो य सव्वभूएसु, तसेसु थावरेसु य ॥८९॥

लाभालाभे सुहे दुक्खे, जीविए मरणे तहा ।
समो निन्दापसंसासु, तहा माणावमाणओ ॥९॥

गारवेसु कसाएसु, दण्डसल्लभएसु य ।
नियत्तो हास-सोगाओ, अनियाणो अबन्धवो ॥९१॥

अणिस्सिओ इहं लोए, परलोए अणिस्सिओ ।
वासीचन्दणकप्पो य, असणे अणसणे तहा ॥९२॥

अपसत्थेहिं दारेहिं, सव्वओ पिहियासवे ।
अज्झप्प-ज्झाण-जोगेहिं, पसत्थ दमसोसणे ॥९३॥

एवं नाणेण चरणेण, दंसणेण तवेण य ।
भावणाहि य सुद्धाहिं, सम्मं भावेत्तु अप्पयं ॥९४॥

बहुयाणि उ वासाणि, सामण्ण-मणुपालिया ।
मासिएण उ भत्तेण, सिद्धिं पत्तो अणुत्तरं ॥९५॥

एवं करन्ति संबुद्धा, पण्डिया पविपक्खणा ।
विणिअट्टन्ति भोगेसु, मियापुत्ते जहारिसी ॥९६॥

महापभावस्स महाजसस्स, मियाइ पुत्तस्स निसम्म भासियं ।
तवप्पहाणं चरियं च उत्तमं, गइप्पहाणं च तिलोगविस्सुतं ॥९७॥

वियाणिया दुक्खविवद्धणं धणं, ममत्तबन्धं च महाभयावहं ।
सुहावहं धम्मधुरं अणुत्तरं, धारेज्ज निव्वाण-गुणावहं महं ॥९८॥

॥ त्ति बेमि ॥ इति मियापुत्तीयं अज्झयणं समत्तं ॥१९॥

॥ अह महानियण्ठिज्ज वीसइमं अज्झयणं ॥२०

सिद्धाणं नमो किच्चा, संजयाणं च भावओ ।
अत्थधम्मगइं तच्चं, अणुसट्ठिं सुणेह मे ॥१॥

पभूय-रयणो राया, 'सेणिओ' मगहाहिवो ।
विहारजत्तं निज्जाओ, 'मण्डिकुच्छिसि' चेइए ॥२॥

नाणादुमलयाइण्णं, नाणापक्खिनिसेवियं ।
नाणाकुसुमसंछन्नं, उज्जाण नन्दणोवमं ॥३॥

तत्थ सो पासई साहुं, संजयं सुसमाहियं ।
निसन्नं रुक्खमूलम्मि, सुकुमाल सुहोइयं ॥४॥

तस्स रूवं तु पासित्ता, राइणो तम्मि संजए ।
अच्चन्तपरमो आसी, अउलो रूवविम्हओ ॥५॥

अहो [वण्णो, अहो ! रूवं, अहो ! अज्जस्स सोमया ।
अहो ! खन्ती, अहो ! मुत्ती, अहो ! भोगे असंगया ॥६॥

तस्स पाए उ वन्दित्ता, काऊण य पयाहिणं ।
नाइदूरमणासन्ने, पंजली पडिपुच्छई ॥७॥

तरुणोसि अज्जो पव्वइओ, भोगकालम्मि संजया ।
उवट्ठिओऽसि सामण्णे, एयमट्ठं सुणेमि ता ॥८॥

अणाहोमि महाराय, नाहो मज्झ न विज्जई ।
अणुकम्पगं सुहिं वावि, कंचि नाभिसमेमहं ॥९॥

तओ सो पहसिओ राया, सेणिओ मगहाहिवो ।
एवं ते इड्ढिमन्तस्स, कहं नाहो न विज्जई ॥१०॥

होमि नाहो भयन्ताणं, भोगे भुंजाहि संजया ।
मित्तनाईपरिवुडो; माणुस्सं खु सुदुल्लहं ॥११॥

अप्पणाऽवि अणाहोऽसि, सेणिया मगहाहिवा ।
अप्पणा अणाहो सन्तो, कस्स नाहो भविस्ससि ॥१२॥

एवं वुत्तो नरिन्दो सो, सुसंभन्तो सुविम्हिओ ।
वयणं अस्सुयपुव्वं, साहुणा विम्हयन्निओ ॥१३॥

अस्सा हत्थी मणुस्सा मे; पुरं अन्तेउरं च मे ।
भुंजामि माणुसे भोगे, आणा इस्सरियं च मे ॥१४॥

एरीसे सम्पयग्गम्मि, सव्वकामसमप्पिए ।
कहं अणाहो भवई, मा हु भन्ते मुसं वए ॥१५॥

न तुमं जाणे अणाहस्स, अत्थं पोत्थं च पत्थिवा ।
जहा अणाहो भवई, सणाहो वा नराहिवा ॥१६॥

सुणेह मे महाराय, अवक्खित्तेण चेयसा ।
जहा अणाहो भवई, जहा मेयं पवत्तियं ॥१७॥

कोसम्बी नाम नयरी, पुराण-पुरभेयणी ।
तत्थ आसी पिया मज्झ, पभूयधणसंचओ ॥१८॥

पढमे वए महाराय, अउला मे अच्छिवेयणा ।
अहोत्था विउलो दाहो, सव्वगत्तेसु पत्थिवा ॥१९॥

सत्थं जहा परमतिक्खं, सरीरविवरन्तरे ।
आवीलिज्ज अरी कुद्धो, एवं मे अच्छिवेयणा ॥२०॥

तियं मे अन्तरिच्छं च, उत्तमंगं च पीडई ।
इन्दासणिसमा घोरा, वेयणा परमदारुणा ॥२१॥

उवट्ठिया मे आयरिया, विज्जामन्ततिगिच्छगा ।
अबीया सत्थकुसला, मन्तमूलविसारया ॥२२॥

ते मे तिगिच्छं कुव्वन्ति, चाउप्पायं जहाहियं ।
न य दुक्खा विमोयन्ति, एसा मज्झ अणाहया ॥२३॥

पिया मे सव्वसारंपि, दिज्जाहि मम कारणा ।
न य दुक्खा विमोयन्ति, एसा मज्झ अणाहया ॥२४॥

मायाऽवि मे महाराज, पुत्तसोगदुहट्टिया ।
न य दुक्खा विमोयन्ति, एसा मज्झ अणाहया ॥२५॥

भायरो मे महाराय, सगा जेट्ठकणिट्ठगा ।
न य दुक्खा विमोयन्ति, एसा मज्झ अणाहया ॥२६॥

भइणीओ मे महाराय, सगा जेट्ठकणिट्ठगा ।
न य दुक्खा विमोयन्ति, एसा मज्झ अणाहया ॥२७॥

भारिया मे महाराय, अणुरत्ता अणुव्वया ।
अंसुपुण्णेहिं नयणेहिं, उरं मे परिसिंचई ॥२८॥

अन्नं पाणं च ण्हाणं च, गन्ध-मल्ल-विलेवणं ।
मए नायमनायं वा, सा बाला नेव भुंजई ॥२९॥

खणंऽपि मे महाराय, पासाओ मे न फिट्टई ।
न य दुक्खा विमोएइ, एसा मज्झ अणाहया ॥३०॥

तओ हं एवमाहंसु, दुक्खमा हु पुणो पुणो ।
वेयणा अणुभविउं जे, संसारम्मि अणन्तए ॥३१॥

सयं च जइ मुच्चेज्जा, वेयणा विउला इओ ।
खन्तो दन्तो निरारम्भो, पव्वए अणगारियं ॥३२॥

एवं च चिन्तइत्ताणं, पसुत्तोमि नराहिवा ।
परीयत्तन्तीए राईए, वेयणा मे खयं गया ॥३३॥

तओ कल्ले पभायम्मि, आपुच्छित्ताण बन्धवे ।
खन्तो दन्तो निरारम्भो, पव्वइओऽणगारियं ॥३४॥

तो हं नाहो जाओ, अप्पणो य परस्स य ।
सव्वेसिं चेव भूयाणं, तसाण थावराण य ॥३५॥

अप्पा नई वेयरणी, अप्पा मे कूडसामली ।
अप्पा कामदुहा धेणू, अप्पा मे नन्दणं वणं ॥३६॥

अप्पा कत्ता विकत्ता य, दुहाण य सुहाण य ।
अप्पा मित्तममित्तं च, दुप्पट्ठिय सुपट्ठिओ ॥३७॥

इमा हु अन्नाऽपि अणाहया निवा, तमेगचित्तो निहुओ सुणेहि ।
नियण्ठधम्मं लहियाण-वी जहा, सीयन्ति एगे बहुकायरा नरा ॥३८॥

जो पव्वइत्ताण महव्वयाइं, सम्मं च नो फासयई पमाया ।
अनिग्गहप्पा य रसेसु गिद्धे, न मूलओ छिन्नइ बन्धणं से ॥३९॥

आउत्तया जस्स व अत्थि काइ, इरियाए भासाए तहेसणाए ।
आयाण निक्खेव-दुगुंछणाए, न वीरजायं अणुजाइ मग्गं ॥४०॥

चिरंऽपि से मुण्डरुई भवित्ता, अथिरव्वए तव नियमेहिं भट्ठे ।
चिरंऽपि अप्पाण किलेसइत्ता, न पारए होइ हु संपराए ॥४१॥

पोल्ले व मुट्ठी जह से असारे, अयन्तिए कूड-कहावणे वा ।
राढामणी वेरुलियप्पगासे, अहमग्घए होइ हु जाणएसु ॥४२॥

कुसीललिंगं इह धारइत्ता, इसिज्झयं जीविय बूहइत्ता ।
असंजए संजयलप्पमाणे, विणिग्घाय मागच्छइ से चिरंपि ॥४३॥

विसं तु पियं जह कालकूडं, हणाइ सत्थं जह कुग्गहीयं ।
एसोऽवि धम्मो विसओववन्नो, हणाइ वेयाल इवाविवन्नो ॥४४॥

जे लक्खणं सुविण पउंजमाणे, निमित्तकोऊहल-संपगाढे ।
कुहेड-विज्जा-सवदारजीवी, न गच्छई सरणं तम्मि काले ॥४५॥

तमंतमेणेव उ से असीले, सया दुही विपरियामुवेइ ।
संघावई नरग-तिरिक्खजोणिं, मोणं विराहेतु असाहुरूवे ॥४६॥

उद्देसियं कीवगडं नियागं, न मुञ्चई किंच अणेसणिज्जं ।
अग्गी विवा सव्वभक्खी भवित्ता, इत्तो चुए गच्छइ कट्टु पावं ॥४७॥

न तं अरी कण्ठ छेत्ता करेइ, जं से करे अप्पणिया दुरप्पया ।
से नाहइ मच्चुमुहं तु पत्ते, पच्छाणुतावेण दया-विहूणो ॥४८॥

निरट्ठिया नग्गरुई उ तस्स, जे उत्तमट्ठं विवज्जासमेइ ।
इमेऽविसे नत्थि परेऽवि लोए, दुहओऽविसं झिज्जइ तत्थ लोए ॥४९॥

एमेव हा छन्दकुसीलरूवे, मग्गं विराहित्तु जिणुत्तमाणं ।
कुररी विवा भोग रसाणुगिद्धा, निरट्ठसोया परियावमेइ ॥५०॥

सोच्चाण मेहावि सुभासियं इमं, अणुसासण नाणगुणोववेयं ।
मग्ग कुसीलाण जहाय सव्वं, महानियंठाण वए पहेण ॥५१॥

चरित्तमायार-गुणन्निए तओ, अणुत्तरं संजम पालियाण ।
निरासवे संखवियाण कम्मं, उवेइ ठाणं विउलुत्तमं धुवं ॥५२॥

एव्वुग्गदन्तेऽवि महातवोधणे, महामुणी महापइन्ने महायसे ।
महानियण्ठिज्जमिणं महासुयं, से कहेइ महयावित्थरेणं ॥५३॥

तुट्ठो य सेणिओ राया, इणमुदाहु कयंजली ।
अणाहत्तं जहाभूयं, सुट्ठु मे उवदंसियं ॥५४॥

तुज्भं सुलद्धं खु मणुस्सजम्मं, लाभा सुलद्धा य तुमे महेसी ।
तुब्भे सणाहा य सबन्धवा य, जं भे ठिया मग्गे जिणुत्तमाणं ॥५५॥

तं सि नाहो अणाहाणं, सव्वभूयाण संजया ।
खामेमि ते महाभाग, इच्छामि अणुसासिउं ॥५६॥

पुच्छिऊण मए तुब्भं, झाणविग्घाओ जो कओ ।
निमन्तिया य भोगेहिं, तं सव्वं मरिसेहि मे ॥५७॥

एवं थुणित्ताण स रायसीहो, अणगारसीहं परमाइ भत्तीए ।
सओरोहो सपरियणो सबन्धवो, धम्माणुरत्तो विमलेण चेयसा ॥५८॥

ऊस-सिय-रोम कूवो, काऊण य पयाहिणं ।
अभिवन्दिऊण सिरसा, अइयाओ नराहिवो ॥५९॥

इयरोऽवि गुणसमिद्धो, तिगुत्तिगुत्तो तिदण्डविरओ य ।
विहग इव विप्पमुक्को; विहरइ वसुहं विगयमोहो ॥ त्ति बेमि ॥६०॥

॥ महानियण्ठिज्जं वीसइमं अज्झयणं समत्तं ॥

अह समुद्दपालियं एगवीसइमं अज्झयणं ॥२१॥

चम्पाए पालिए नाम, सावए आसि वाणिए ।
महावीरस्स भगवओ, सीसेसो उ महप्पणो ॥१॥

निग्गन्थे पावयणे, सावए सेऽवि कोविए ।
पोएण ववहरन्ते, पिहुंडं नगरमागए ॥२॥

पिहुंडे ववहरन्तस्स, वाणिओ देइ धूयरं ।
तं संसत्तं पइगिज्झ, सदेसमह पत्थिओ ॥३॥

अह पालियस्स घरिणी, समुद्दम्मि पसवई ।
जह वालए तहिं जाए, समुद्दपालित्ति नामए ॥४॥

खेमेण आगए चम्पं, सावए वाणिए घरं ।
संवड्ढई तस्स घरे, दारए से सुहोइए ॥५॥

बावत्तरी कलाओ य, सिक्खई नीइकोविए ।
जोव्वणेण य संपन्ने; सुरूवे पियदंसणे ॥६॥

तस्स रूववइं भज्जं, पिया आणेइ रूविणिं ।
पासाए कीलए रम्मे; देवो दोगुन्दओ जहा ॥७॥

अह अन्नया कयाई, पासायालोयणे ठिओ ।
वज्झमण्डणसोभागं, वज्झं पासइ वज्झगं ॥८॥

तं पासिऊण संवेगं; समुद्दपालो इणमब्बवो ।
अहोऽसुभाण कम्माणं, निज्जाणं पावगं इमं ॥९॥

संबुद्धो सो तहिं भगवं; परम-संवेग मागओ ।
आपुच्छम्मापियरो, पव्वइए अणगारियं ॥१०॥

जहितु सग्गन्थ महाकिलेसं, महन्तमोहं कसिणं भयावहं ।
परियायधम्मं चऽभिरोयएज्जा, वयाणि सीलाणि परीसहे य ॥११॥

अहिंससच्चं च अतेणगं उ, तत्तो य बंभं अपरिग्गहं च ।
पडिवज्जिया पंच महव्वयाणि, चरिज्ज धम्मं जिणदेसिहं विदू ॥१२॥

सव्वेहिं भूएहिं दयाणुकम्पी, खन्तिक्खमे संजपबम्भयारी ।
सावज्जजोगं परिवज्जयन्तो, चरिज्ज भिक्खूसू समाहिइंदिए ॥१३॥

कालेण कालं विहरेज्ज रट्ठे; बलावलं जाणिय अप्पणो य ।
सीहो व सद्देण न सन्तसेज्जा, वयजोग सुच्चा न असब्भमाहु ॥१४॥

उवेहमाणो उ परिव्वएज्जा, पियमप्पियं सव्व तितिक्खएज्जा ।
न सव्व सव्वत्थऽभिरोयएज्जा, न यावि पूयं गरहं च संजए ॥१५॥

अणेगच्छन्दामिह माणवेहिं, जे भावओ संपगरेइ भिक्खू ।
भय-भेरवा तत्थ उइन्ति भीमा, दिव्वा माणुस्सा अदुवा तिरिच्छा ।

परीसहा दुव्विसहा अणेगे, सीयन्ति जत्था बहु कायरा नरा ।
से तत्थ पत्ते न वहिज्ज भिक्खू, संगामसीसे इव नागराया ॥१७॥

सीओसिणा दंस-मसा य फासा; आयंका विविहा फुसन्ति देहं ।
अकुक्कुओ तत्थऽहियासएज्जा, रयाइ खेवेज्ज पुरे कयाइं ॥१८॥

पहाय रागं च तहेव दोसं, मोहं च भिक्खू सततं वियक्खणो ।
मेरु व्व वाएण अकम्पमाणो, परीसहे आयगुत्ते सहेज्जा ॥१९॥

अणुन्नए नावणए महेसी, न यावि पूयं गरहं च संजए ।
स उज्जुभावं पडिवज्ज संजए; निव्वाण-मग्गं विरए उवेइ ॥२०॥

अरइ-रइ-सहे पहीण-संथवे, विरए आय हिए पहाणवं ।
परमट्ठ-पएहिं चिट्ठई, छिन्नसोए अममे अकिंचणे ॥२१॥

विवित्त-लयणाइ भएज्ज ताई, निरोवलेवाइ असंथडाइं ।
इसीहिं चिण्णाइं महा यसेहिं, काएण फासेज्ज परीसहाइं ॥२२॥

सन्नाण नाणोवगए महेसि, अणुत्तरं चरिउं धम्मसंचयं ।
अणुत्तरे नाणधरे जसंसी; ओभासई सूरिए वन्तलिक्खे ॥२३॥

दुविहं खवेऊण. व पुण्ण-पावं; निरंगणे सव्वओ विप्पमुक्के ।
तरित्ता समुद्दं व महा-भवोघं; 'समुद्दपाले' अपुणागमं गए ॥२४॥

॥ त्ति बेमि ॥ इति समुद्दपालीयं एगवीसइमं अज्झयणं समत्तं ॥२१॥

॥ अह रहनेमिज्जं बावीसइमं अज्झयणं ॥ २२ ॥

'सोरियपुरम्मि' नयरे, आसि राया महिड्ढिए ।
वसुदेवोत्ति नामेणं, राय-लक्खण-संजुए ॥१॥

तस्स भज्जा दुवे आसी, रोहिणी देवई तहा ।
तासि दोण्हं दुवे पुत्ता, इट्ठा राम-केसवा ॥२॥

सोरियपुरम्पि नयरे, आसि राया महिड्ढिए ।
'समुद्दविजए नामं, राय-लक्खण-संजुए ॥३॥

तस्स भज्जा 'सिवा' नाम, तीसे पुत्तो महायसो ।
भगवं 'अरिट्ठनेमि' त्ति, लोगनाहे दमीसरे ॥४॥

सोऽरिट्ठनेमिनामो उ, लक्खणस्सरसंजुओ ।
अट्ठसहस्सलक्खणधरो, गोयमो कालगच्छवी ॥५॥

वज्जरिसहसंघयणो, समचउरंसो झसोयरो ।
तस्स रायमईकन्नं, भज्जं जायइ केसवो ॥६॥

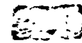
अह सा रायवरकन्ना, सुसीला चारुपेहणी ।
सव्वलक्खणसंपन्ना; विज्जु-सोयामणि प्पभा ॥७॥

अहाह जणओ तीसे, वासुदेवं महिड्ढियं ।
इहागच्छउ कुमारो, जासे कन्नं ददामि हं ॥८॥

सव्वोसहीहिं ण्हविओ, कय-कोउय-मंगलो ।
दिव्वजुयल परिहिओ, आभरणेहिं विभूसिओ ॥९॥

मत्तं च गन्धहत्थिं, वासुदेवस्स जेट्ठगं ।
आरूढो सोहए अहियं, सिरे चूडामणी जहा ॥१०॥

अह ऊसिएण छत्तेण, चामराहि य सोहिए ।
दसारचक्केण य सो, सव्वओ परिवारिओ ॥११॥



चउरंगिणीए सेणाए, रइयाए जहक्कमं।
तुरियाण सन्निनाएण, दिव्वेण गगणं फुसे ॥१२॥

एयारिसाए इड्ढिए, जुत्तीए उत्तमाइ य।
नियगाओ भवणाओ, निज्जाओ वण्हिपुंगवो ॥१३॥

अह सो तत्थ निज्जन्तो, दिस्स पाणे भय-द्दुए।
वाडेहिं पंजरेहिं च, सन्निरुद्धे सु दुक्खिए ॥१४॥

जीवियन्तं तु सम्पत्ते, मंसट्ठा भक्खियव्वए।
पासित्ता से महापन्ने, सारहिं इणमब्बवी ॥१५॥

कस्स अट्ठाइमे पाणा, एए सव्वे सुहेसिणो।
वाडेहिं पंजरेहिं च, सन्निरुद्धा य अच्छहिं ॥१६॥

अह सारही तओ भणई, एए भद्दा उ पाणिणो।
तुज्झ विवाह–कज्जम्मि, भोयावेउं बहुं जणं ॥१७॥

सोऊण तस्स वयणं बहुपाणिविणासणं।
चिन्तेइ से महापन्नो, साणुक्कोसे जिए हिउ ॥१८॥

जइ मज्झ कारणा एए, हम्मन्ति सुबहू जिया।
न मे एयं तु निस्सेसं, परलोगे भविस्सई ॥१९॥

सो कुण्डलाण जुयलं, सुत्तगं च महायसो।
आभरणाणि य सव्वाणि, सारहिस्स पणामए ॥२०॥

मणपरिणामो य कओ, देवा य जहोइयं समोइण्णा।
सव्वड्ढीइ सपरिसा, निक्खमणं तस्स काउं जे ॥२१॥

देव माणुस्स परिवुडो; सीवियारयणं तओ समारूढो।
निक्खमिय बारगाओ, रेवययंम्मि ट्ठिओ भगवं ॥२२॥

उज्जाणं संपत्तो, ओइण्णो उतमाउ सीयाओ।
साहस्सीइ परिवुडो, अह निक्खमई उ चित्ताहिं ॥२३॥

अह से सुगन्धगन्धीए, तुरियं मउकुंचिए ।
सयमेव लुंचई केसे, पंचमुट्ठीहिं समाहिओ ॥२४॥

वासुदेवो य णं भणइ, लुत्तकेसं जिइन्दियं ।
इच्छिअ मणोरहं तुरियं, पावसु त दमीसरा ॥२५॥

नाणेणं दंसणेणं च, चरित्तेण तहेव य ।
खन्तीए मुत्तीए, वड्ढमाणो भवाहि य ॥२६॥

एवं ते राम-केसवा, दसारा य बहू जणा ।
अरिट्ठनेमिं वन्दित्ता, अभिगया बारग पुरिं ॥२७॥

सोऊण रायकन्ना, पव्वज्जं सा जिणस्स उ ।
नीहासा य निराणन्दा, सोगेण उ समुत्थिया ॥२८॥

राईमई विचिन्तेइ, धिरत्थु मम जीवियं ।
जा हं तेण परिच्चत्ता, सेयं पव्वइउं मम ॥२९॥

अह सा भमरसन्निभे, कुच्च फणग पसाहिए ।
सयमेव लुंचई केसे, धिइमन्ता ववस्सिया ॥३०॥

वासुदेवो य णं भणइ, लुत्तकेसं जिइन्दियं ।
संसारसागरं घोरं, तर कन्ने लहुं लहुं ॥३१॥

सा पव्वइया सन्ति, पव्वावेसी तहिं बहुं ।
सयणं परियणं चेव, सीलवन्ता बहुस्सुया ॥३२॥

गिरिं रेवतयं जन्ती, वासेणुल्ला उ अन्तरा ।
वासन्ते अन्धयारम्मि, अन्तो लयणस्स ठिया ॥३३॥

चीवराइं विसारन्ति, जहा जायत्ति पासिया ।
रहनेमी भग्गचित्तो, पच्छा दिट्ठो य तीइऽवि ॥३४॥

भीया य सा तहिं दट्ठुं, एगन्ते संजयं तयं ।
बाहाहिं काउ संगोप्फं, वेवमाणी निसीयई ॥३५॥

अह सीऽवि रायपुत्तो, समुद्दविजयंगओ ।
भीयं पवेवियं दट्ठुं, इमं वक्कं उदाहरे ॥३६॥

रहनेमी अहं भद्दे, सुरूवे चारुभासिणी ।
मम भयाहि सुयणु, न ते पाला भविस्सई ॥३७॥

एहि ता भुंजिमो भोए, माणुस्स खु सुदुलहं ।
भुत्त-भोगी तओ पच्छा, जिणमग्गं चरिस्समो ॥३८॥

दठ्ठूण रहनेमिं तं, भग्गुज्जोयपराजियं ।
राईमई असम्भन्ता, अप्पाणं संवरे तहिं ॥३९॥

अह सा रायवरकन्ना, सुठ्ठिया नियमव्वए ।
जाई कुलं च सीलं च, रक्खमाणी तयं वए ॥४०॥

जइ सि रूवेण वेसमणो, ललिएण नलकुव्वरो ।
तहाऽवि ते न इच्छामि, जइसि सक्खं पुरंदरो ॥४१॥

पखंदे जलियं जोई, धूमकेउं दुरासयं ।
नेच्छन्ति वंतयं भो तुं, कुले जाया अगन्धणे ॥४२॥

धिरत्थु तेऽजसोकामी, जो तं जीवियकारणा ।
वन्तं इच्छसि आवेउं, सेयं ते मरणं भवे ॥४३॥

अहं च भोगरायस्स, तं च सि अन्धगवण्हिणो ।
मा कुले गन्धणा होमो; संजमं निहुओ चर ॥४४॥

जइ तं काहिसि भावं, जा जा दिच्छसि नारिओ ।
वायाविद्धो व्व हढो, अठ्ठिअप्पा भविस्ससि ॥४५॥

गोवालो भण्डवालो वा; जहा तद्दव्वणिस्सरो ।
एवं अणिस्सरो तंऽपि, सामण्णस्स भविस्ससि ॥४६॥

कोहं माणं निगिण्हित्ता, मायं लोभं च सव्वसो ।
इंदियाइं वसे काउं, अप्पाणं उवसंहरे ॥४७॥

तीसे सो वयणं सोच्चा, संजयाए सुभासियं ।
अंकुसेण जहा नागो, धम्मे संपडिवाइओ ॥४८॥

मणगुत्तो वयगुत्तो, कायगुत्तो जिइन्दिओ ।
सामण्णं निचलं फासे, जावज्जीवं दढव्वओ ॥४९॥

उग्गं तवं चरित्ताणं; जाया दोण्णिऽवि केवली ।
सव्वं कम्मं खवित्ताणं, सिद्धिं पत्ता अणुत्तरं ॥५०॥

एवं करेन्ति संबुद्धा, पण्डिया पवियक्खणा ।
विणियट्टन्ति भोगेसु; जहा सो पुरिसोत्तमो ॥ त्ति बेमि ॥५१॥

॥ इति रहनेमिज्जं बावीसइमं अज्झयणं समत्तं ॥२२॥

॥ अह केसिगोयमिज्जं तेवीसइमं अज्झयणं ॥२३

जिणे पासित्ति नामेण, अरहा लोगपूइओ ।
संबुद्धप्पा य सव्वन्नू, धम्मतित्थयरे जिणे ॥१॥

तस्स लोगपईवस्स, आसि सीसे महायसे ।
केसी कुमारसमणे, विज्जाचरण-पारगे ॥२॥

ओहिनाणसुए बुद्धे, सीससंघसमाउले ।
गामाणुगामं रीयन्ते, सावत्थिं पुरमागए ॥३॥

तिन्दुयं नाम उज्जाणं, तम्मी नगरमण्डले ।
फासुए सिज्जसंथारे, तत्थ वासमुवागए ॥४॥

अह तेणेव कालेणं, धम्मतित्थयरे जिणे ।
भगवं वद्धमाणित्ति; सव्वलोगम्मि विस्सुए ॥५॥

तस्स लोगपदीवस्स, आसि सीसे महासये ।
भगवं गोयमे नामं; विज्जाचरणपारए ॥६॥

बारसंगविऊ बुद्धे; सीससंघसमाउले ।
गामाणुगामं रीयन्ते; सेऽवि सावत्थिमागए ॥७॥

कोट्ठगं नाम उज्जाणं; तम्मी नगरमण्डले ।
फासुए सिज्जसंथारे; तत्थ वासमुवागए ॥८॥

केसी कुमारसमणे, गोयमे य महायसे ।
उभओऽवि तत्थ विहरिंसु, अल्लीणा सुसमाहिया ॥९॥

उभओ सीससंघाणं, संजयाणं तवस्सिणं ।
तत्थ चिन्ता समुप्पन्ना, गुणवंताण ताइणं ॥१०॥

केरिसो वा इमो धम्मो; इमो धम्मो वा केरिसो ।
आयारधम्मपणिही, इमो वा सा व केरिसो ॥११॥

चाउज्जामो य जो धम्मो, जो इमो पंचसिक्खिजो ।
देसिओ वद्धमाणेण, पासेण य महामुणी ॥१२॥

अचेलओ य जो धम्मो, जो इमो सन्तरुत्तरो ।
एगकज्जपवन्नाणं, विसेसे किं नु कारणं ॥१३॥

अह ते तत्थ सीसाणं, विन्नाय पवितक्कियं ।
समागमे कयमई, उभओ केसी गोयमा ॥१४॥

गोयमे पडिरूवन्नू, सीससंघसमाउले ।
जेट्ठं कुलमवेक्खन्तो, तिन्दुयं वणमागओ ॥१५॥

केसी-कुमारसमणे, गोयमं दिस्समागयं ।
पडिरूवं पडिवत्तिं, सम्मं स पडिवज्जई ॥१६॥

पलालं फासुयं तत्थ, पंचमं कुसतणाणि य ।
गोयमस्स निसेज्जाए, खिप्पं संपणामए ॥१७॥

केसी कुमारसमणे, गोयमे य महायसे ।
उभओ निसण्णा सोहन्ति, चन्द-सूर-समप्पभा ॥१८॥

समागया वहू तत्थ, पासंडो कोउगा मिया ।
गिहत्थाणं अणेगाओ; साहस्सीओ समागया ॥१९॥

देव-दाणव-गन्धवा; जक्ख-रक्खस- किन्नरा ।
अदिस्साणं च भूयाणं; आसी तत्थ समागमो ॥२०॥

पुच्छामि ते महाभाग; केसी गोयममब्बवी ।
तओ केसिं बुचन्तं तु; गोयमो इणमब्बवी ॥२१॥

पुच्छ भन्ते जहिच्छं ते; केसिं गोयममब्बवी ।
तओ केसी अणुन्नाए ! गोयमं इणमब्बवी ॥२२॥

चाउज्जामो य जो धम्मो; जो इमो पंचसिक्खओ ।
देसिओ वद्धमाणेण; पासेण य महामुणी ॥२३॥

एग-कज्ज-पवन्नाणं; विसेसे किं नु कारणं ।
धम्मे दुविहे मेहावी; कहं विप्पच्चओ न ते ॥२४॥

तओ केसिं बुचन्तं तु गोयमो इणमब्बवी ।
पन्ना समिक्खिए; धम्मततं तंत्तविणिच्छियं ॥२५॥

पुरिमा उज्जुजडा उ; वंकजडा य पच्छिमा ।
मज्झिमा उज्जुपन्ना उ; तेण धम्मे दुहा कए ॥२६॥

परिमाणं दुव्विसोज्झो उ; चरिमाणं दुरणुपालओ ।
कप्पो मज्झिमगाणं तु; सुविसोज्झो सुपालओ ॥२७॥

साहु गोयम ! पन्ना ते; छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नोऽवि संसओ मज्झं; तं मे कहसु गोयमा ॥२८॥

अचेलयो य जो धम्मो; जो इमो सन्तरुत्तरो ।
देसिओ वद्धमाणेण; पासेण य महामुणी ॥२९॥

एग-कज्ज-पवन्नाणं; विसेसे किं नु कारणं ।
लिंगे दुविहे मेहावी; कहं विप्पच्चओ न ते ॥३०॥

केसिमेवं बुवन्तं तु; गोयमो इणमब्बवी ।
विन्नाणेण समागम्म; धम्मसाहणमिच्छियं ॥३१॥

पच्चयत्थं च लोगस्स; नाणाविहविगप्पणं ।
जत्तत्थं गहणत्थं च; लोगे लिंगपओयणं ॥३२॥

अह भवे पइन्ना उ, मोक्ख-सब्भूय-साहणा ।
नाणं च दंसणं चेव, चरित्तं चेव निच्छए ॥३३॥

साहु ! गोयम पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नोऽवि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ॥३४॥

अणेगाणं सहस्साणं, मज्झे चिट्ठसि गोयमा ।
ते य ते अहिगच्छन्ति, कहं ते निज्जिया तुमे ॥३५॥

एगे जिए जिया पंच, पंचजिए जिया दस ।
दसहा उ जिणित्ताणं, सव्वसत्तू जिणामहं ॥३६॥

सत्तू य इइ के वुत्ते, केसी गोयममब्बवी ।
तओ केसिं वुवन्तं तु, गोयमो इणमब्बवी ॥३७॥

एगप्पा अजिए सत्तू, कसाया इन्दियाणि य ।
ते जिणित्तु जहानायं, विरहामि अहं मुणी ॥३८॥

साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नोऽवि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ॥३९॥

दीसन्ति वहवे लोए, पासवद्धा सरीरिणो ।
मुक्कपासो लहुब्भूओ, कहं तं विहरसी मुणी ॥४०॥

ते पासे सव्वसो छित्ता, निहन्तूण उवायओ ।
मुक्कपासो लहुब्भूओ, विहरामि अहं मुणी ॥४१॥

पासा य इइ के वुत्ता, केसी गोयममब्बवी ।
केसीमेवं वुवन्तं तु, गोयमो इणमब्बवी ॥४२॥

राग-दोसा-दओ तिव्वा, नेहपासा भयंकरा ।
ते छिन्दित्ता जहानायं, विहरामि जहक्कमं ॥४३॥

साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नोऽवि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ॥४४॥

अन्तोहिअयसंभूया, लया चिट्ठइ गोयमा ।
फलेइ विसभक्खीणि, सा उ उद्धरिया कहं ॥४५॥

तं लयं सव्वसो छित्ता, उद्धरित्ता समूलियं ।
विहरामि जहानायं, मुक्कोमि विसभक्खणं ॥४६॥

लया य इइ का वुत्ता, केसी गोयममब्बवी ।
केसिमेवं बुवन्तं तु, गोयमो इणमब्बवी ॥४७॥

भवतण्हा लया वुत्ता, भीमा भीमफलोदया ।
तमुद्धरित्ता जहानायं, विहरामि महामुणी ॥४८॥

साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
अनोऽवि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ॥४९॥

संपज्जलिया घोरा, अग्गी चिट्ठइ गोयमा ।
जे डहन्ति सरीरत्थे, कहं विज्झाविया तुमे ॥५०॥

महामेहप्पसूयाओ, गिज्झ वारि जलुत्तमं ।
सिंचामि सययं देहं, सित्ता नो व डहन्ति मे ॥५१॥

अग्गी य इइ के वुत्ता, केसी गोयममब्बवी ।
केसिमेवं बुवन्तं तु, गोयमो इणमब्बवी ॥५२॥

कसाया अग्गिणो वुत्ता, सुयसीलतवो जलं ।
सुयधाराभिहया सन्ता, भिन्ना हुं न डहन्ति मे ॥५३॥

साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नोऽवि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ॥५४॥

अयं साहसिओ भीमो, दुट्ठस्सो परिधावई ।
जंसि गोयम आरूढो, कहं तेण न हीरसि ॥५५॥

पधावन्तं निगिण्हामि, सुयरस्सीसमाहियं ।
न मे गच्छइ उम्मग्गं, मग्गं च पडिवज्जई ॥५६॥

आसे य इइ के वुत्ते, केसी गोयममब्बवी ।
केसिमेवं बुवन्तं तु, गोयमो इणमब्बवी ।।५७।।

मणो साहसिओ भीमो, दुट्ठस्सो परिधावई ।
तं सम्मं तु निगिण्हामि, धम्मसिक्खाइ कन्थगं ।।५८।।

साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नोऽवि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ।।५९।।

कुप्पहा बहवो लोए, जेहिं नासन्ति जन्तुणो ।
अद्धाणे कहं वट्टन्तो, तं न नाससि गोयमा ।।६०।।

जे य मग्गेण गच्छंति, जेय उम्मग्गपट्ठिया ।
ते सव्वे वेइया मज्झं, तं न नस्सामहं मुणी ।।६१।।

मग्गे य इइ के वुत्ते, केसी गोयममब्बवी ।
केसिमेवं बुवन्तं तु, गोयमो इणमब्बवी ।।६२।।

कुप्पवयणपासण्डी, सव्वे उम्मग्गपट्ठिया ।
सम्मग्गं तु जिणक्खायं, एस मग्गे हि उत्तमे ।।६३।।

साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नोऽवि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ।।६४।।

महाउदगवेगेण, वुज्झमाणाण पाणिणं ।
सरणं गई पइट्ठा य, दीवं कं मन्नसी मुणी ।।६५।।

अत्थि एगो महादीवो, वारिमज्झे महालओ ।
महाउदगवेगस्स, गई तत्थ न विज्जई ।।६६।।

दीवे य इइ के वुत्ते, केसी गोयममब्बवी ।
केसिमेवं बुवन्तं तु, गोयमो इणमब्बवी ।।६७।।

जरामरणवेगेणं, वुज्झमाणाण पाणिणं ।
धम्मो दीवो पइट्ठा य, गई सरणमुत्तमं ।।६८।।

साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नाऽवि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ॥६९॥

अण्णवंसि महोहंसि, नावा विपरिधावई ।
जंसि गोयममारूढो, कहं पारं गमिस्ससि ॥७०॥

जा उ अस्साविणी नावा, न सा पारस्स गामिणी ।
जा निरस्साविणी नावा, सा उ पारस्स गामिणी ॥७१॥

नावा य इइ का वुत्ता, केसी गोयममब्बवी ।
केसिमेव बुवन्तं तु, गोयमो इणमब्बवी ॥७२॥

सरीरमाहु नाव त्ति, जीवो वुच्चइ नाविओ ।
संसारो अण्णवो वुत्तो, जं तरंति महेसिणो ॥७३॥

साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नोऽवि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ॥७४॥

अन्धयारे तमे घोरे, चिट्ठन्ति पाणिणो बहू ।
को करिस्सइ उज्जोयं, सव्वलोयम्मि पाणिणं ॥७५॥

उग्गओ विमलो भाणू, सव्वलोयपभंकरो ।
सो करिस्सइ उज्जोयं, सव्वलोयम्मि पाणिणं ॥७६॥

भानु य इइ के वुत्ते, केसी गोयममब्बवी ।
केसिमेवं बुवन्तं तु, गोयमो इणमब्बवी ॥७७॥

उग्गओ खीणसंसारो, सव्वन्नू जिणभक्खरो ।
सो करिस्सइ उज्जोयं, सव्वलोयम्मि पाणिणं ॥७८॥

साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नोऽवि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ॥७९॥

सारीरमाणसे दुक्खे, बज्झमाणाण पाणिणं ।
खेमं सिवमणाबाहं, ठाणं किं मन्नसी मुणी ॥८०॥

अत्थि एगं धुवं ठाणं, लोगग्गम्मि दुरारुहं ।
जत्थ नत्थि जरा मच्चू, वाहिणो वेयणा तहा ॥८१॥

ठाणे य इइ के वुत्ते, केसी गोयममब्ववी ।
केसिमेवं बुवन्तं तु, गोयमो इणमब्बवी ॥८२॥

निव्वाणं-ति अबाहं-ति, सिद्धी लोगग्गमेव य ।
खेमं सिवं अणाबाहं, जं चरंति महेसिणो ॥८३॥

तं ठाणं सासयं वासं, लोयग्गम्मि दुरारुहं ।
जं संपत्ता न सोयन्ति, भवोहन्तकरा मुणी ॥८४॥

साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
नमो ते संसयातीत, सव्वसुत्तमहोयही ॥८५॥

एवं तु संसए छिन्ने, केसी घोरपरक्कमे ।
अभिवन्दित्ता सिरसा, गोयमं तु महायसं ॥८६॥

पंचमहव्वयधम्मं, पडिवज्जइ भावओ ।
पुरिमस्स पच्छिमम्मि, मग्गे तत्थ सुहावहे ॥८७॥

केसी-गोयमओ निच्चं, तम्मि आसि समागमे ।
सुयसीलसमुक्करसो, महत्थत्थविणिच्छओ ॥८८॥

तोसिया परिसा सव्वा, सम्मग्गं समुवट्ठिया ।
संथुया ते पसीयन्तु, भयवं केसीगोयमे ॥ त्ति बेमि ॥८९॥

॥ इति केसिगोयमिज्जं तेवीसइमं अज्झयणं समत्तं ॥२३॥

॥ अह समिइओ चउवीसइमं-अज्झयणं ॥२४॥

अट्ठ पवयणमायाओ, समिई गुत्ती तहेव य ।
पंचेव य समिइओ, तओ गुत्तीउ आहिआ ॥१॥

इरिया-भासे-सणा-दाणे, उच्चारे समिई इय ।
मण-गुत्ती वय-गुत्ती, काय-गुत्ती य अट्ठमा ॥२॥

एयाओ अट्ठ समिइओ, समासेण वियाहिया ।
दुवालसंगं जिणक्खायं, मायं जत्थ उ पवयणं ॥३॥

आलम्बणेण कालेण, मग्गेण जयणाइ य ।
चउकारणपरिसुद्धं, संजए इरियं रिए ॥४॥

तत्थ आलम्बणं नाणं, दंसणं चरणं तहा ।
काले य दिवसे वुत्ते, मग्गेउप्प हवज्जिए ॥५॥

दव्वओ खेत्तओ चेव, कालओ भावओ तहा ।
जयणा चउव्विहा वुत्ता, तं मे कित्तयओ सुण ॥२॥

दव्वओ चक्खुसा पेहे, जुगमित्तं च खेत्तओ ।
कालओ जाव रीइज्जा, उवउत्ते य भावओ ॥७॥

इन्दियत्थे विवज्जित्ता, सज्झायं चेव पञ्चहा ।
तम्मुत्ती तप्पुरक्कारे, उवउत्ते रियं रिए ॥८॥

कोहे माणे य मायाए, लोभे य उवउत्तया ।
हासे भए मोहरिए, विकहासु तहेव य ॥९॥

एयाइं अट्ठ ठाणाइं, परिवज्जित्तु संजए ।
असावज्जं मियं काले, भासं भासिज्ज पन्नवं ॥१०॥

गवेसणाए गहणे य, परिभागेसणा य जा ।
आहारोवहिसेज्जाए, एए तिन्नि विसोहए ॥११॥

उग्गमुप्पायणं पढमे, बीए सोहेज्ज एसणं ।
परिभोयम्मि चउक्कं, विसोहेज्ज जयं जई ॥१२॥

ओहोवहोवग्गहियं भण्डगं दुविहं मुणी ।
गिण्हन्तो निक्खिवन्तो वा, पउंजेज्ज इमं विहिं ॥१३॥

चक्खुसा पडिलेहित्ता, पमज्जेज्ज जयं जई ।
आइए निक्खिवेज्जा वा, दुहवो-वि समिए सया ॥१४॥

उच्चारं पासवणं, खेलं सिंघाणजल्लियं ।
आहारं उवहिं देहं, अन्नं वावि तहाविहं ॥१५॥

अणावायमसंलोए, अणावाए चेव होइ संलोए ।
आवायमसंलोए, आवाए चेव संलोए ॥१६॥

अणावायमसंलोए, परस्स णुवघाइए ।
समे अज्झुसिरे यावि, अचिरकालकयम्मि य ॥१७॥

विच्छिण्णे दूरमोगाढे, नासन्ने विलवज्जिए ।
तस-पाण-बीय-रहिए, उच्चाराईणि वोसिरे ॥१८॥

एयाओ पञ्च समिइओ, समासेण वियाहिया ।
एत्तो य तओ गुत्तीओ, वोच्छामि अणुपुव्वसो ॥१९॥

सच्चा तहेव मोसा य, सच्चामोसा तहेव य ।
चउत्थी असच्चमोसा य, मणगुत्तिओ चउव्विहा ॥२०॥

सं-रम्भ-समारम्भे, आरम्भे य तहेव य ।
मणं पवत्तमाणं तु, नियत्तेज्ज जयं जई ॥२१॥

सच्चा तहेव मोसा य, सच्चमोसा तहेव य ।
चउत्थी असच्चमोसा य, वइगुत्ती चउव्विहा ॥२२॥

सं-रम्भ-समारम्भे, आरम्भे य तहेव य ।
वयं पवत्तमाणं तु, नियतेज्ज जयं जई ॥२३॥

ठाणे निसीयणे चेव, तहेव य तुयट्टणे ।
उल्लंघण-पल्लंघणे, इन्दियाण य जुंजणे ॥२४॥

सं-रम्भ-समारम्भे, आरम्भे य तहेव य ।
कायं पवत्तमाणं तु, नियत्तेज्ज जयं जई ॥२५॥

एयाओ पंच समिइओ, चरणस्स य पवत्तणे ।
गुत्ती नियत्तणे वुत्ता, असुभत्थेसु सव्वसो ॥२६॥

एसा पवयणमाया, जे सम्मं आयरे मुणी ।
सो खिप्पं सव्वसंसारा, विप्पमुच्चइ पण्डिए ॥ त्ति बेमि ॥२७॥

॥ इति समिईओ चउवीसइमं अज्झयणं समत्तं ॥२४॥

॥ अह जन्नइज्जं पंचवीसइमं अज्झयणं ॥२५॥

माहणकुलसंभूओ, आसि विप्पो महायसो ।
जायाई जम-जन्नम्मि, 'जयघोसि'त्ति नामओ ॥१॥

इन्दियग्गामनिग्गाही, मग्गगामी महामुणी ।
गामाणुगामं रीयंते, पत्तो वाणारसिं पुरिं ॥२॥

वाणारसीए बहिया, उज्जाणम्मि मणोरमे ।
फासुए सेज्जासंथारे, तत्थ वासमुवागए ॥३॥

अह तेणेव कालेणं, पुरीए तत्थ माहणे ।
विजयघोसित्ति नामेण, जन्नं जयइ वेयवी ॥४॥

अह से तत्थ अणगारे, मासक्खमणपारणे ।
विजयघोसस्स जन्नम्मि, भिक्खमट्ठा उवट्ठिए ॥५॥

समुवट्ठियं तहिं सन्तं, जायगो पडिसेहए ।
न हु दाहामि ते भिक्खं, भिक्खू जायाहि अन्नओ ॥६॥

जे य वेयविऊ विप्पा, जनट्ठा य जिइंदिया ।
जोइसंगविऊ जे य, जे य धम्माण पारगा ॥७॥

जे समत्था समुद्धत्तुं, परमप्पाणमेव य ।
तेसिं अन्नमिणं देयं, भो भिक्खू सव्वकामियं ॥८॥

सो तत्थ एवं पडिसिद्धो, जायगेण महामुणी ।
नवि रुट्ठो नवि तुठ्ठो उत्तमट्ठगवेसओ ॥९॥

नन्नट्ठं पाणहेउं वा, नवि निव्वाहणाय वा ।
तेसिं विमोक्खणठ्ठाए, इमं वयणमब्बवी ॥१०॥

नवि जाणासि वेयमुहं, नवि जन्नाण जं मुहं ।
नक्खत्ताण मुहं जं च, जं च धम्माण वा मुहं ॥११॥

जे समत्था समुद्धत्तुं, परमप्पाणमेव य ।
न ते तुमं वियाणासि, अह जाणासि तो भण ॥१२॥

तस्स क्खेवपमोक्खं तु, अचयन्तो तहिं दिओ ।
सपरिसोपंजली होउं, पुच्छई तं महामुणिं ॥१३॥

वेयाणं च मुहं बूहि, बूहि जन्नाण जं मुहं ।
नक्खत्ताण मुहं बूहि, बूहि धम्माण वा मुहं ॥१४॥

जे समत्था समुद्धत्तुं, परमप्पाणमेव य ।
एयं मे संसयं सव्वं, साहू कहसु पुच्छिओ ॥१५॥

अग्गिहुत्तमुहा वेया, जन्नट्ठी वेयसा मुहं ।
नक्खत्ताण मुहं चन्दो, धम्माणं कासवो मुहं ॥१६॥

जहा चन्दं गहाईया, चिट्ठन्ती पंजलीउडा ।
वन्दमाणा नमंसन्ता, उत्तमं मणहारिणो ॥१७॥

अजाणगा जन्नवाई, विज्जा-माहण-संपया ।
मूढा सज्झाय-तवसा, भासच्छन्ना इवग्गिणो ॥१८॥

जो लोए बम्भणो वुत्तो, अग्गीव महिओं जहा ।
सया कुसलसंदिट्ठं, तं वयं बूम माहणं ॥१९॥

जो न सज्जइ आगन्तुं, पव्वयन्तो न सोयइ ।
रमइ अज्जवयणम्मि, तं वयं बूम माहणं ॥२०॥

जायरूवं जहामिट्ठं, निद्धन्तमलपावगं ।
राग-दोस-भयाईयं, तं वयं बूम माहणं ॥२१॥

तवस्सियं किसं दन्तं, अवचिय मंससोणियं ।
सुव्वयं पत्तनिव्वाणं, तं वयं बूम माहणं ॥२२॥

तसपाणे वियाणेत्ता, संगहेण य थावरे ।
जो न हिंसइ तिविहेण, तं वयं बूम माहणं ॥२३॥

कोहा वा जइ वा हासा, लोहा वा जइ वा भया ।
मुसं न वयई जो उ, तं वयं बूम माहणं ॥२४॥

चित्तमन्तमचित्तं वा, अप्पं वा जइ वा बहुं ।
न गिण्हइ अदत्तं जे, तं वयं बूम माहणं ॥२५॥

दिव्वमाणुसतेरिच्छं, जो न सेवइ मेहुणं ।
मणसा कायवक्केणं, तं वयं बूम माहणं ॥२६॥

जहा पोमं जले जायं, नोवलिप्पइ वारिणा ।
एवं अलित्तं कामेहिं, तं वयं बूम माहणं ॥२७॥

अलोलुयं मुहाजीविं, अणगारं अकिंचणं ।
असंसत्तं गिहत्थेसु, तं वयं बूम माहणं ॥२८॥

जहित्ता पुव्वसंजोगं, नाइसंगे य बन्धवे ।
जो न सज्जइ भोगेसु, तं वयं बूम माहणं ॥२९॥

पसुबन्धा सव्ववेया [य], जट्ठं च पावकम्मुणा ।
न तं तायन्ति दुस्सीलं; कम्माणि बलवन्ति हि ॥३०॥

नवि मुण्डिएण समणो, न ओंकारेण बम्भणो ।
न मुणी रण्णवासेणं; कुसचीरेण तावसो ॥३१॥

समयाए समणो होइ, बम्भचेरेण बम्भणो ।
नाणेण य मुणी होइ, तवेण होइ तावसो ॥३२॥

कम्मुणा वम्भणो होइ, कम्मुणा होइ खत्तिओ ।
वइसो कम्मुणा होइ, सुद्दो हवइ कम्मुणा ॥३३॥

एए पाउकरे बुद्धे, जेहिं होइ सिणायओ ।
सव्वकम्मविणिम्मुक्कं, तं वयं वम माहणं ॥३४॥

एवं गुणसमाउत्ता, जे भवन्ति दिउत्तमा ।
ते समत्था समुद्धत्तुं, परमप्पाणमेव य ॥३५॥

एवं तु संसए छिन्ने, विजयघोसे माहणे ।
समुदाय तयं तं तु, जयघोसं महामुणि ॥३६॥

तुट्ठे य विजयघोसे, इणमुदाहु कयंजली ।
माहणत्तं जहाभूयं, सुठ्ठु मे उवदंसियं ॥३७॥

तुब्भे जइया जन्नाणं, तुब्भे वेयविऊ विऊ ।
जोइ संगवऊ तुब्भे, तुब्भे धम्पाण पारगा ॥३८॥

तुब्भे समत्था समुद्धत्तुं, परमप्पाणमेव य ।
तमणुग्गहं करेहऽम्ह, भिक्खेणं भिक्खु उत्तमा ॥३८॥

न कज्जं मज्झ भिक्खेण, खिप्पं निक्खमसू दिया ।
मा भमिहिसि भयावट्टे, घोरे संसारसागरे ॥४०॥

उवलेवो होइ भोगेसु, अभोगी नोवलिप्पई ।
भोगी भमइ संसारे, अभोगी विप्पमुच्चई ॥४१॥

उल्लो सुक्खो य दो छूढा, गोलया मट्टियामया ।
दो वि आवडिया कुड्डे, जो उल्लो सोऽत्थ लग्गई ॥४२॥

एवं लग्गन्ति दुम्मेहा, जे नरा कामलालसा ।
विरत्ता उ न लग्गन्ति, जहा सुक्के उ गोलए ॥४३॥

एवं से विजयघोसे, जयघोसस्स अन्तिए ।
अणगारस्स निक्खरतो, धम्मं सोच्चा अणुत्तरं ॥४४॥

खवित्ता पुव्वकम्माइं, संजमेण तवेण य।
जयघोसविजयघोसा, सिद्धिं पत्ता अणुत्तरं॥ त्ति बेमि॥४५॥

॥ इति जन्नइज्जं पञ्चवीसइमं अज्झयणं समत्तं॥२५॥

॥ अह सामायारी छव्वीसइमं अज्झयणं॥२६॥

सामायारिं पवक्खामि, सव्वदुक्खविमोक्खणिं।
जं चरित्ताण निग्गन्था, तिणा संसारसागरं ॥१॥

पढमा आवस्सिया नाम, बिइया य निसीहिया।
आपुच्छणा य तइया, चउत्थी पडिपुच्छणा ॥२॥

पंचमी छन्दणा नाम, इच्छाकारो य छट्ठओ।
सत्तमो मिच्छाकारो उ, तहक्कारो य अट्ठमो ॥३॥

अब्भुट्ठाणं च नवमं, दसमी उवसम्पदा।
एसा दसङ्गा साहूणं, सामायारी पवेइया ॥४॥

गमणे आवस्सियं कुज्जा, ठाणे कुज्जा निसीहियं।
आपुच्छणा सयंकरणे, परकरणे पडिपुच्छणं ॥५॥

छन्दणा दव्वजाएणं, इच्छाकारो य सारणे।
मिच्छाकारो य निन्दाए, तहक्कारो पडिस्सुए ॥६॥

अब्भुट्ठाणं गुरुपूया, अच्छणे उवसंपदा।
एवं दु-पंच-संजुत्ता, सामायारी पवेइया ॥७॥

पुव्विल्लम्मि चउब्भाए, आइच्चम्मि समुट्ठिए।
भण्डयं पडिलेहित्ता, वन्दित्ता य तओ गुरुं ॥८॥

पुच्छिज्ज पंजलिउडो, किं कायव्वं मए इह।
इच्छं निओइउं भन्ते, वेयावच्चे व सज्झाए ॥९॥

वेयावच्चे निउत्तेण, कायव्वं अगिलायओ ।
सज्झाए वा निउत्तेण, सव्वदुक्खविमोक्खणे ॥१०॥

दिवसस्स चउरो भागे, भिक्खू कुज्जा वियक्खणो ।
तओ उत्तरगुणे कुज्जा, दिणभागेसु चउसु-वि ॥११॥

पढमं पोरिसि सज्झायं, बीयं झाणं झियायई ।
तइयाए भिक्खायरियं; पुणो चउत्थीइ सज्झायं ॥१२॥

आसाढे मासे दुपया; पोसे मासे चउप्पया ।
चित्तासोएसु मासेसु; तिप्पया हवइ पोरिसी ॥१३॥

अङ्गुलं सत्तरत्तेणं, पक्खेणं च दुरंगुलं ।
वड्ढए हायए वावि; मासेणं चउरङ्गुलं ॥१४॥

आसाढबहुले पक्खे, भद्दवए कत्तिए य पोसे य ।
फग्गुण-वइसाहेसु य, बोद्धव्वा ओमरत्ताओ ॥१५॥

जेट्ठामूले आसाढ-सावणे, छहिं अङ्गुलेहिं पडिलेहा ।
अट्ठहिं बीयतयम्मि, तइए दस अट्ठहिं चउत्थे ॥१६॥

रत्तिंऽपि चउरो भागे, भिक्खू कुज्जा वियक्खणो ।
तओ उत्तरगुणे कुज्जा, राइभाएसु चउसु-वि ॥१७॥

पढमं पोरिसि सज्झायं, बीयं झायं झियायई ।
तइयाए निद्दमोक्खं तु, चउत्थी भुज्जो-वि सज्झायं ॥१८॥

जे नेइ जया रत्तिं, नक्खत्तं तम्मि नहचउब्भाए ।
सम्पत्ते विरमेज्जा सज्झायं पओसकालम्मि ॥१९॥

तम्मेव य नक्खत्ते, गयणचउब्भागसावसेसम्मि ।
वेरत्तियं-पि कालं, पडिलेहित्ता मुणी कुज्जा ॥२०॥

पुव्विल्लम्मि चउब्भाए, पडिलेहित्ताण भण्डयं ।
गुरुं वन्दित्तु सज्झायं, कुज्जा दुक्खविमोक्खणं ॥२१॥

पोरिसिए चउब्भाए, वन्दित्ताण तओ गुरुं ।
अपडिक्कमित्ता कालस्स; भायणं पडिलेहए ॥२२॥

मुहपत्तिं पडिलेहित्ता, पडिलेहिज्ज गोच्छगं ।
गोच्छगलइयंगुलिओ, वत्थाइं पडिलेहए ॥२३॥

उड्ढं थिरं अतुरियं, पुव्वं ता वत्थमेव पडिलेहे ।
तो बिइयं पप्फोडे, तइयं च पुणो पमज्जिज्ज ॥२४॥

अणच्चावियं अवलियं, अणाणुबंधिममोसलिं चेव ।
छप्पुरिमा नव खोडा, पाणीपाणिविसोहणं ॥२५॥

आरभडा सम्मद्दा, बज्जेयव्वा य मोसली तइया ।
पप्फोडणा चउत्थी, विक्खित्ता वेइया छट्ठी ॥२६॥

पसिढिल पलम्बलोला, एगामोसा अणेगरूवधुणा ।
कुणइ पमाणे पमायं, संकिय गणणोवगं कुज्जा ॥२७॥

अणूणा इरत्ति पडिलेहा, अविवच्चासा तहेव य ।
पढमं पयं पसत्थं, सेसाणि उ अप्पसत्थाइं ॥२८॥

पडिलेहणं कुणन्तो, मिहा कहं कुणइ जणवय कहं वा ।
देइ व पच्चक्खाणं, वाएई सयं पडिच्छइ वा ॥२९॥

पुढवी आउक्काए. तेऊ वाऊ वणस्सइ तसाणं ।
पडिलेहणा पमत्ता, छण्हं पि विराहओ होइ ॥३०॥

पुढवी आउक्काए, तेऊ वाऊ वणस्सइ तसाणं ।
पडिलेहणाआउत्तो, छण्हं संरक्खओ होइ ॥३१॥

तइयाए पोरिसीए, भत्तं पाणं गवेसए ।
छण्हं अन्नयराए, कारणम्मि समुट्ठिए ॥३२॥

वेयण[1] वेयावच्चे[2], इरियट्ठाए[3] य संजमट्ठाए[4] ।
तह पाणवत्तियाए[5], छट्ठं पुण धम्मचिन्ताए[6] ॥३३॥

निग्गन्थो धिइमन्तो, निग्गन्थी वि न करेज्ज छहिं चेव ।
ठाणेहिं उ इमेहिं, अणइक्कमणाइ से होइ ॥३४॥

आयंके उवसग्गे, तितिक्खया वम्भचेरगुत्तीसु ।
पाणिदया तवहेउं, सरीरं वोच्छेयणट्ठाए ॥३५॥

अवसेसं भण्डगं गिज्झ, चक्खुसा पडिलेहए ।
परमद्धजोयणाओ, विहारं विहरए मुणी ॥३६॥

चउत्थीए पोरिसीए, निक्खवित्ताण भायणं ।
सज्झायं च तओ कुज्जा, सव्वभावविभावणं ॥३७॥

पोरिसीए चउब्भाए, वन्दित्ताण तओ गुरुं ।
पडिक्कमित्ता कालस्स, सेज्जं तु पडिलेहए ॥३८॥

पासवणु चारभूमिं च, पडिलेहिज्ज जयं जई ।
काउस्सग्गं तओ कुज्जा, सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥३९॥

देवसियं च अईयारं, चिन्तिज्जा अणुपुव्वसो ।
नाणम्मि दंसणे चेव, चरित्तम्मि तहेव य ॥४०॥

पारियकाउस्सग्गो, वन्दित्ताण तओ गुरुं ।
देवसियं तु अईयारं, आलोएज्ज जहक्कमं ॥४१॥

पडिक्कमित्तु निस्सल्लो, वन्दित्ताण तओ गुरुं ।
काउस्सग्ग तओ कुज्जा, सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥४२॥

पारिय काउस्सग्गो, वन्दित्ताण तओ गुरुं ।
थुइ मंगलं च काऊण, कालं तु संपडिलेहए ॥४३॥

पढमं पोरिसि सज्झायं, विइयं झाणं झियायई ।
तइयाए निद्दमोक्खं तु, सज्झायं तु चउत्थिए ॥४४॥

पोरिसीए चउत्थीए, कालं तु पडिलेहिया ।
सज्झायं तु तओ कुज्जा, अबोहेन्तो असंजए ॥४५॥

पारिसीए चउब्भाए, वन्दिऊण तओ गुरुं ।
पडिक्कमित्तु कालस्स, कालं तु पडिलेहए ॥४६॥

आगए कायवोस्सग्गे, सव्व-दुक्ख-विमोक्खणं ।
काउस्सग्गं तओ कुज्जा, सव्व-दुक्ख-विमोक्खणं ॥४७॥

राइयं च अइयारं, चिन्तिज्ज अणुपुव्वसो ।
नाणंमि दंसणंमि य, चरित्तंमि तवंमि य ॥४८॥

पारिय-काउस्सग्गो, वन्दित्ताण तओ गुरुं ।
राइयं तु अइयारं, आलोएज्ज जहक्कमं ॥४९॥

पडिक्कमित्तु निस्सल्लो, वन्दित्ताण तओ गुरुं ।
काउस्सग्गं तओ कुज्जा, सव्व-दुक्ख-विमोक्खणं ॥५०॥

किं तवं पडिवज्जामि, एवं तत्थ विचिन्तए ।
काउस्सग्गं तु पारित्ता, वन्दई य तओ गुरुं ॥५१॥

पारिय-काउस्सग्गो, वन्दित्ताण तओ गुरुं ।
तवं तु पडिवज्जेज्जा(-त्ता), कुज्जा सिद्धाण संथवं ॥५२॥

एसा सामायारी, समासेण वियाहिया ।
जं चरित्ता बहू जीवा, तिण्णा संसार-सागरं ॥त्ति बेमि ॥५३॥

॥ इति सामायारी छव्वीसइमं अज्झयणं समत्तं ॥२६॥

॥अह खलुंकिज्जं सत्तवीसइमं अज्झयणं ॥२७॥

थेरे गणहरे गग्गे, मुणी आसी विसारए ।
आइण्णे गणिभावम्मि, समाहिं पडिसंधए ॥१॥

वहणे वहमाणस्स; कन्तारं अइवत्तई ।
जोगे वहमाणस्स, संसारो अइवत्तई ॥२॥

खलुंके जो उ जोएइ, विहम्माणो किलिस्सई ।
असमाहिं च वेएइ, तोत्तओ से य भज्जई ॥३॥

एगं डसइ पुच्छम्मि, एगं विन्धइऽभिक्खणं ।
एगो भंजइ समिलं, एगो उप्पहपट्ठिओ ॥४॥

एगो पडइ पासेणं, निवेसइ निवज्जई ।
उक्कुदइ उप्फिडइ; सढे बालगवी वए ॥५॥

माइ मुद्धेण पडइ, कुद्धे गच्छे पडिप्पहं ।
मय लक्खेण चिट्ठई, वेगेण य पहावई ॥६॥

छिन्नाले छिन्दई सेल्लिं, दुद्दन्तो भंजए जुगं ।
सेवि य सुस्सुयाइत्ता, उज्जहित्ता पलायए ॥७॥

खलुंका जारिसाजोज्जा, दुस्सीसा-वि हु तारिसा ।
जोइया धम्मजाणम्मि, भज्जन्ती धिइदुब्बला ॥८॥

इड्ढीगारविए एगे, एगेऽत्थ रसगारवे ।
सायागारविए एगे, एगे सुचिर कोहणे ॥९॥

भिक्खालसिए एगे, एगे ओमाणभीरुए ।
थद्धे एगे अणुसासम्मी, हेऊहिं कारणेहि य ॥१०॥

सोऽवि अन्तरभासिल्लो, दोसमेव पकुव्वई ।
आयरियाणं तु वयणं, पडिकूलेइऽभिक्खणं ॥११॥

न सा ममं वियाणाइ, नऽवि सा मज्झ दाहिई ।
निग्गया होहिई मन्ने, साहू अन्नोत्थ वच्चउ ॥१२॥

पेसिया पलिउंचन्ति, ते परियन्ति समन्तओ ।
रायवेट्ठिं च मन्नन्ता, करेन्ति भिउडिं मुहे ॥१३॥

वाइया संगहिया चेव, भत्तपाणेण पोसिया ।
जायपक्खा जहा हंसा, पक्कमन्ति दिसो दिसिं ॥१४॥

अह सारहा विचिन्तेइ, खलुङ्केहिं समागओ ।
किं मज्झ दुट्ठसीसेहिं, अप्पा मे अवसीयई ॥१५॥

जारिसा मम सीसा उ, तारिसा गलिगद्दहा ।
गलिगद्दहे जहित्ताणं, दढं पगिण्हई तवं ॥१६॥

मिउमद्दवसंपन्नो, गम्भीरो सुसमाहिओ ।
विहरइ महिं महप्पा, सीलभूएण अप्पणा ॥ त्ति बेमि ॥१७॥

॥ इति खलुंकिज्जं सत्तवीसइमं अज्झयणं–समत्तं ॥२७॥

॥अह मोक्खमग्गई अट्ठावीसइमं अज्झयणं॥२८॥

मोक्ख-मग्ग-गइं तच्चं, सुणेह जिणभासियं ।
चउकारणसंजुत्तं, नाण-दंसण-लक्खणं ॥१॥

नाणं च दंसणं चेव, चरित्तं च तवो तहा ।
एसं मग्गुत्ती पन्नत्तो, जिणेहिं वरदंसिहि ॥२॥

नाणं च दंसणं चेव, चरित्तं च तवो तहा ।
एयं मग्गमणुप्पत्ता, जीवा गच्छन्ति सोग्गइं ॥३॥

तत्थ पंचविहं नाणं, सुयं आभिनिबोहियं ।
ओहिनाणं तु तइयं, मणनाणं च केवलं ॥४॥

एयं पंचविहं नाणं, दव्वाण य गुणाण य ।
पज्जवाणं च सव्वेसिं, नाणं नाणीहि दंसियं ॥५॥

गुणाणमासओ दव्वं, एगदव्वस्सिया गुणा ।
लक्खणं पज्जवाणं तु, उभओ अस्सिया भवे ॥६॥

धम्मो अहम्मो आगासं, कालो पुग्गल-जन्तवो ।
एस लोगो-त्ति पन्नत्तो, जिणेहिं वरदंसिहिं ॥७॥

धम्मो अहम्मो आगासं, दव्वं इक्किक्कमाहियं । ॥८॥
अणन्ताणि य दव्वाणि, कालो पुग्गलजन्तवो

गइलक्खणो उ धम्मो, अहम्मो ठाणलक्खणो । ॥९॥
भायणं सव्व-दव्वाणं, नहं ओगाहलक्खणं

वत्तणा-लक्खणो कालो, जीवो उव-ओग-लक्खणो । ॥१०॥
नाणेणं च दंसणेणं च, सुहेण य दुहेण य

नाणं च दंसणं चेव, चरित्तं च तवो तहा । ॥११॥
वीरियं उवओगो य, एयं जीवस्स लक्खणं

सद्दन्धयार-उज्जोओ, पभा छाया तवो इ-वा । ॥१२॥
वण्ण-रस-गन्ध-फासा, पुग्गलाणं तु लक्खणं

एगत्तं च पुहत्तं च, संखा संठाणमेव य । ॥१३॥
संजोगा य विभागा य, पज्जवाणं तु लक्खणं

जीवाजीवा य बन्धो य, पुण्णं पावाऽसवो तहा । ॥१४॥
संवरो निज्जरा मोक्खो, सन्तेए तहिया नव

तहियाणं तु भावाणं, सब्भावे उवएसणं । ॥१५॥
भावेणं सद्दहन्तस्स, सम्मत्तं तं वियाहियं

निसग्गुवएसरुई, आणारुई सुत्त-बीयरुइमेव । ॥१६॥
अभिगम-वित्थाररुई, किरिया संखेव धम्मरुई

भूयत्थेणाहिगया, जीवाजीवा य पुण्ण-पावं च । ॥१७॥
सह सम्मइयाऽसव-संवरो य, रोएइ उ निस्सग्गो

जो जिणदिट्ठे भावे, चउव्विहे सद्दहाइ सयमेव । ॥१८॥
एमेव नन्नह-त्ति य, स निसग्गरुइत्ति नायव्वो

एए चेव उ भावे, उवइट्ठे जो परेण सद्दहई । ॥१९॥
छउमत्थेण जिणेण व, उवएसरुइ-त्ति नायव्वो

रागो दोसो मोहो, अन्नाणं जस्स अवगयं होइ।
आणाए रोयंतो, सा खलु आणारुई नामं ॥२०॥

जो सुत्तमहिज्जन्ता, सुएण ओगाहई उ सम्मत्तं।
अगेण बहिरेण व, सो सुत्तरुइ-त्ति नायव्वो ॥२१॥

एगेण अणेगाइं, पयाइं जो पसरई उ सम्मत्तं!
उदए व्व तेल्लबिन्दू, सो बीयरुई-त्ति नायव्वो ॥२२॥

सो होइ अभिगमरुई, सुयनाणं जेण अत्थओ दिट्ठं।
एक्कारस अंगाइं, पइण्णगं दिट्ठिवाओ य ॥२३॥

दव्वाण सव्वभावा, सव्वपमाणेहिं जस्स उवलद्धा।
सव्वाहिं नयविहीहिं, वित्थाररुइ-त्ति नायव्वो ॥२४॥

दंसण–नाण-चरित्ते, तव-विणए सच्च-समिइ-गुत्तीसु।
जो किरियाभावरुई, सो खलु किरियारुई नाम ॥२५॥

अणभिग्गहियकुदिट्ठी, संखेवरुइ-त्ति होइ नायव्वो।
अविसारओ पवयणे, अणभिग्गहिओ य सेसेसु ॥२६॥

जो अत्थिकाय-धम्मं, सुय-धम्मं खलु चरित्त धम्मं च।
सद्दहइ जिणाभिहियं, सो धम्मरुइ-त्ति नायव्वो ॥२७॥

परमत्थसंथवो वा; सुदिट्ठपरमत्थसेवणं वावि।
वावन्नकुदंसणवज्जणा, य सम्मत्तसद्दहणा ॥२८॥

नत्थि चरित्तं सम्मत्तविहूणं, दंसणे उ भइयव्वं।
सम्मत्तचरित्ताइं; जुगवं पुव्वं व सम्मत्तं ॥२९॥

नादंसणिस्स नाणं नाणेण विणा न हुन्ति चरणगुणा।
अगुणिस्स नत्थि मोक्खो, नत्थि अमोक्खस्स निव्वाणं ॥३०॥

निस्संकिय-निक्कंखिय-निव्वितिगिच्छा अमूढदिट्ठी य।
उववूह-थिरीकरणे, वच्छल्ल-पभावणे अट्ठ ॥३१॥

सामाइयत्थ पढमं, छेदोवट्ठावणं भवे वीयं।
परिहारविसुद्धीयं, सुहुमं तह संपरायं च ॥३२॥

अकसायमहक्खायं, छउमत्थस्स जिणस्स वा।
एयं चयरित्तकरं, चारित्तं होइ आहियं ॥३३॥

तवो य दुविहो वुत्ती, बाहिरब्भन्तरो तहा।
बाहिरो छव्विहो वुत्तो, एवमब्भन्तरो तवो ॥३४॥

नाणेण जाणई भावे, दंसणेण य सद्दहे।
चरित्तेण निगिण्हाइ, तवेण परिसुज्झई ॥३५॥

खवेत्ता पुव्वकम्माइं, संजमेण तवेण य।
सव्वदुक्खपहीणट्ठा, पक्कमन्ति महेसिणो ॥ त्ति वेमि ॥३६॥

॥ इत्ति मोक्खमग्गगई समत्ता ॥२८॥

अह सम्मत्तपरक्कमं एगूणतीसइमं अज्झयणं॥२९

सुयं मे आउसं-तेण भगवया एवमक्खायं। इह खलु सम्मत्तपरक्कमे नाम अज्झयणे समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइए, जं सम्मं सद्दहित्ता पत्तिइत्ता रोयइत्ता फासित्ता पालइत्ता तीरित्ता कित्तइत्ता सोहइत्ता आराहित्ता आणाए अणुपालइत्ता बहवे जीवा सिज्झन्ति बुज्झन्ति मुच्चन्ति परिनिव्वायन्ति सव्वदुक्खाणमन्तं करेन्ति। तस्स णं अयमट्ठे एवम्महिज्जइ; तं जहा—

संवेगे[१] निव्वेए[२] धम्मसद्धा[३] गुरु-साहम्मिय-सुस्सूसणया[४] आलोयणया[५] निन्दणया[६] गरिहणया[७] सामाइए[८] चउव्वीसत्थवे[९] वन्दणे[१०] पडिक्कमणे[११] काउस्सग्गे[१२] पच्चक्खाणे[१३] थवथूइमंगले[१४] कालपडिलेहणया[१५] पायच्छित्तकरणे[१६] खमावणेया[१७] सज्झाए[१८]

वायणया[19] पडिपुच्छणया[20] पडियट्टणया[21] अणुप्पेहा[22] धम्मकहा[23] सुयस्स आराहणया[24] एगग्गमणसंनिवेसणया[25] संजमे[26] तवे[27] वोदाणे[28] सुहसाए[29] अप्पडिबद्धया[30] विवित्तसयणासणसेवणया[31] विणियट्टणया[32] संभोगपच्चक्खाणे[33] उवहिपच्चक्खाणे[34] आहारपच्चक्खाणे[35] कसायपच्चक्खाणे[36] जोगपच्चक्खाणे[37] सरीरपच्चक्खाणे[38] सहायपच्चक्खाणे[39] भत्तपच्चक्खाणे[40] सब्भावपच्चक्खाणे[41] पडिरूवणया[42] वेयावच्चे[43] सव्वगुणसंपण्णया[44] वीयरागया[45] खन्ती[46] मुत्ती[47] मद्दवे[48] अज्जवे[49] भावसच्चे[50] करणसच्चे[51] जोगसच्चे[52] मणगुत्तया[53] वयगुत्तया[54] कायगुत्तया[55] मणसमाधारणया[56] वयसमाधारणया[57] कायसमाधारणया[58] नाणसंपन्नया[59] दंसणसंपन्नया[60] चरित्तसंपन्नया[61] सोइन्दियनिग्गहे[62] चक्खिन्दियनिग्गहे[63] घाणिन्दियनिग्गहे[64] जिब्भिन्दियनिग्गहे[65] फासिन्दियनिग्गहे[66] कोहविजए[67] माणविजए[68] मायाविजए[69] लोहविजए[70] पेज्जदोसमिच्छादंसणविजए[71] सेलेसी[72] अकम्मया[73] ।

(१) 'संवेगेणं' भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? । संवेगेणं अणुत्तरं धम्मसद्धं जणयइ । अणुत्तराए धम्मसद्धाए संवेगं हव्वमागच्छइ । अणन्ताणुबन्धि-कोह-माण-माया-लोभे खवेइ । नवं च कम्मं न बन्धइ । तप्पच्चइयं च णं मिच्छत्तविसोहिं काऊण दंसणाराहए भवइ । दंसणविसोहीए य णं विसुद्धाए अत्थेगइए तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झई विसोहीए य णं विसुद्धाए तच्चं पुणो भवग्गहणं नाइक्कमइ ॥

(२) 'निव्वेदेणं' भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? । निव्वेदेणं दिव्वमाणुस-तेरिच्छिएसु कामभोगेसु निव्वेयं हव्वमागच्छइ ।

सव्वविसएसु विरज्जइ। सव्वविसएसु विरज्जमाणे आरम्भ-परिग्गहं परिच्चायं करेइ। आरम्भपरिग्गहं परिच्चायं करेमाणे संसारमग्गं वोच्छिन्दइ, सिद्धिमग्गं पडिवन्ने य हवइ ॥

(३) 'धम्मसद्धाए' णं भन्ते! जीवे किं जणयइ?। धम्म-सद्धाए णं सायासोक्खेसु रज्जमाणे विरज्जइ। आगारधम्मं च णं चयइ। अणगारिए णं जीवे सारीरमाणसाणं दुक्खाणं छेयण-भेयण संजोगाईणं वोच्छेयं करेइ, अव्वाबाहं च सुहं निव्वत्तेइ ॥

(४) 'गुरु-साहम्मिय-सुस्सूसणाए' णं भन्ते! जीवे किं जण-यइ?। गुरु-साहम्मिय-सुस्सूसणाए णं विणयपडिवत्तिं जणयइ। विणयपडिवन्ने य णं जीवे अणुच्चासायणसीले नेरइय तिरि-क्खजोणिय-मणुस्सदेवदुग्गईओ निरुम्भइ। वण्ण-संजलणभ-त्तिबहुमाणयाए-मणुस्सदेवसुग्गईओ निबन्धई, सिद्धिं सोग्गइं च विसोहेइ। पसत्थाइं च णं विणयमूलाइं सव्वकज्जाइं साहेइ। अन्ने य बहवे जीवे विणिइत्ता भवइ ॥

(५) आलोयणाए णं भन्ते!। जीवे किं जणयइ?। आ० माया-नियाण-मिच्छादंसण-सल्लाणं, मोक्खमग्गविग्घाणं, अणत-संसारबन्धणाणं, उद्धरणं करेइ। अज्जुभावं च जणयइ। उज्जु-भावपडिवन्ने य णं जीवे अमाई इत्थीवेयनपुंसगवेयं च न बन्धइ। पुव्वबद्धं च णं निज्जरेइ ॥

(६) निन्दणयाए णं भन्ते! जीवे किं जणयइ?। नि० पच्छाणुतावं जणयइ। पच्छाणुतावेणं विरज्जमाणे करणगुण-सेढिं पडिवज्जइ। करणगुणसेढीपडिवन्ने य णं अणगारे मोह-णिज्जं कम्मं उग्घाएइ ॥

(७) गरहणयाए णं भन्ते! जीवे किं जणयइ?। गरहणयाए

अपुरक्कारं जणयइ। अपुरक्कारगए णं जीवे अप्पसत्थेहिंतो जोगेहिंतो नियत्तेइ, पसत्थे य पडिवज्जइ। पसत्थजोगपडिवन्ने य ण अणगारे अणन्तघाइ पज्जवे खवेइ ॥

(८) समाइएणं भन्ते! जीवे किं जणयइ?। समाइएणं सावज्जजोगविरइं जणयइ ॥

(९) चउव्वीसत्थएणं भन्ते! जीवे किं जणयइ?। चउव्वीसत्थएणं दंसणविसोहिं जणयइ ॥

(१०) वन्दणएणं भन्ते! जीवे किं जणयइ?। वन्दणएणं नीयागोयं कम्मं खवेइ। उच्चागोयं कम्मं निबन्धइ। सोहग्गं च ण अपडिहयं आणाफलं निव्वत्तेइ। दाहिणभावं चणं जणयइ ॥

(११) पडिक्कमणे णं भन्ते! जीवे किं जणयइ?। प० वएछिद्दाणि पिहेइ। पिहियवयछिद्दे पुण जीवे निरुद्धासवे असबलचरित्ते अट्ठसु पवयणमायासु उवउत्ते अपुहत्ते सुप्पणिहिए विहरइ ॥

(१२) काउस्सग्गेण भन्ते! जीवे किं जणयइ?। काउस्सग्गेणं तीयपडुप्पन्नं पायच्छित्तं विसोहेइ। विसुद्धपायच्छित्ते य जीवे निव्वुयहियए ओहरियभरु व्व भारवहे पसत्थज्झाणोवगए सुहं सुहेणं विहरइ ॥

(१३) पच्चक्खाणेणं भन्ते! जीवे किं जणयइ। प० आसवदाररुइं निरुम्भइ। पच्चक्खाणेणं इच्छानिरोहं जणयइ इच्छानिरोहं गए य णं जीवे सव्वदव्वेसु विणीयतण्हे सीइभूए विहरई ॥

(१४) थव-थुइमंगले णं भन्ते! जीवे किं जणयइ?। थ० नाणदंसणचरित्तबोहिलाभं जणयइ। नाणदंसणचरित्तबोहिलाभसंपन्ने य णं जीवे अन्तकिरियं कप्पविमाणाववत्तिगं आराहणं आराहेइ ॥

(१५) कालपडिलेहणयाएणं भन्ते ! जीवे किं जाणइ ?। का० नाणावरणिज्जं कम्मं खवेइ ॥

(१६) पायच्छित्तकरणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?। पा० पावकम्मविसोहिं जणयइ। निरइयारे यावि भवइ। सम्मं च णं पायच्छित्तं पडिवज्जमाणे मग्गं च मग्गफलं च विसोहेइ, आयारं च आयारफलं च आराहेइ ॥

(१७) खमावणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?। ख० पल्हायणभावंजणयइ। पल्हायणभावमुवगए य सव्व-पाण-भूय-जीव-सत्तेसु मित्तीभावमुप्पाएइ मित्तीभावमुवगए यावि जीवे भावविसोहिं काऊण निब्भए भवइ ॥

(१८) सज्झाएणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?। स० नाणा-वरणिज्जं कम्मं खवेइ ॥

(१९) वायणाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?। वा० निज्जरं जणयइ। सुयस्स अणासायणाए वट्टए। सुयस्स अणा-सायणाए वट्टमाणे तित्थधम्मं अवलम्बइ। तित्थधम्मं अवल-म्बमाणे महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ ॥

(२०) पडिपुच्छणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?। प० सुत्तत्थ तदुभयाइं विसोहेइ। कंखामोहणिज्जं कम्मं वोच्छिन्दइ ॥

(२१) परियट्टणाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?। प० वंजणाइं जणयइ, वंजणलद्धिं च उप्पाएइ ॥

(२२) अणुप्पेहाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?। अ० आउय वज्जाओ सत्तकम्मप्पगडीओ धणियबन्धणबद्धाओ सिढिलबन्धण-बद्धाओ पकरेइ। दीहकालट्ठिइयाओ हस्सकालट्ठिइयाओ पकरेइ। तिव्वाणुभावाओ मन्दाणुभावाओ पकरेइ। [बहुपएसग्गाओ अप्पपएसग्गाओ पकरेइ।] आउयं च णं कम्मं सिया बन्धइ, सिया नो बन्धइ। असायावेयणिज्जं च णं कम्मं नो भुज्जो भुज्जो उवचिणाइ। अणाइयं च णं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरन्तं संसारकन्तारं खिप्पमेव वीइवयइ।

(२३) धम्मकहाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? । ध० निज्जरं जणयइ । धम्मकहाए णं पवयणं पभावेइ । पवयणपभावेणं जीवे आगमेसस्स भद्दताए कम्मं निबन्धइ ॥

(२४) सुयस्स आराहणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? । सु० अन्नाणं खवेइ न य संकिलिस्सइ ॥

(२५) एगग्गमणसंनिवेसणथाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? । ए० चित्तनिरोहं करेइ ॥

(२६) संजमेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? । सं० अणण्हयत्तं जणयइ ॥

(२७) तवेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? । तवेणं वोदाणं जणयइ ॥

(२८) वोदाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? । वो० अकिरियं जणयइ । अकिरियाए भवित्ता तओ पच्छा सिज्झइ, बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वायइ सव्वदुक्खाणमन्तं करेइ ॥

(२९) सुहसाएणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? । सु० अणुस्सुयत्तं जणयइ । अणुस्सुयाइ णं जीवे अणुकम्पए अणुब्भडे विगयसागे चरित्तमोहणिज्जं कम्मं खवेइ ॥

(३०) अप्पडिवद्धयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? । अ० निस्संगत्तं जणयइ । निस्संगत्तेण जीवे एगग्गचित्ते दिया य राओ य असज्जमाणे अप्पडिबद्धे यावि विहरइ ॥

(३१) विवित्त सयणा-सणयाए णं भन्ते ! जीवे कि जणयइ ? । वि० चरित्तगुत्तिं जणयइ । चरित्तगुत्ते य णं जीवे विवित्ताहारे दढचरित्ते एगन्तरए मोक्खभावपडिवन्ने अट्ठविहकम्मगंट्ठिं निज्जरेइ ॥

(३२) विनियट्टयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?। वि
पावकम्माणं अकरणयाए अब्भुट्ठेइ। पुव्वबद्धाण य निज्जरणया
तं नियत्तेइ। तओ पच्छा चाउरन्तं संसारकन्तारं वीइवयइ॥

(३३) संभोगपच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?
सं० आलम्बणाइं खवेइ। निरालम्बणस्स य आयट्ठिया योग
भवन्ति। सएणं लाभेणं संतुस्सइ, परलाभनो आसादेइ, पर
लाभं नो सक्केइ, नो पीहेइ, नो पत्थेइ; नो अभिलसइ। परला
अणस्सायमाणे अतक्केमाणे अपीहमाणे अपत्थेमाणे अणभिल
समाणे दुच्चं सुहसेज्जं उवसंपज्जित्ता णं न विहरइ॥

(३४) उवहि-पच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?
अपलिमन्थं जणयइ। निरुवहिए णं जीवे निक्कंखी उवहिम
न्तरेण य न संकिलिस्सइ॥

(३५) आहार-पच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?
आ० जीवियासंसप्पओगं वोछिन्दइ। जीवियासंसप्पओ
वोच्छिन्दित्ता जीवे आहारमन्तरेणं न संकिलिस्सइ॥

(३६) कसायपच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?
क० वीयरागभावं जणयइ। वीयरागभावपडिवन्ने वि य णं जी
समसुहदुक्खे भवइ॥

(३७) जोग-पच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?। जो
अजोगत्तं जणयइ। अजोगी णं जीवे नवं कम्मं न बन्धइ
पुव्ववद्धं निज्जरेइ।

(३८) सरीर-पच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?
स० सिद्धाइसयगुणकित्तणं निव्वत्तेइ। सिद्धाइसयगुणसंपन्ने
णं जीवे लोगग्गमुवगए परमसुही भवइ।

(३९) सहाय-पच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?। स० एगीभावं जणयइ। एगीभावभूए-वि य णं जीवे एगत्तं भावेमाणे अप्पसद्दे अप्पझंझे अप्पकलहे अप्पकसाए अप्पतुमंतुमे संजम-बहुले संवरबहुले समाहिबहुले समाहिए यावि भवइ ॥

(४०) भत्तपच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?। भ० अणेगाइं भवसयाइं निरुम्भइ ॥

(४१) सब्भाव-पच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?। स० अनियट्टिं जणयइ। अनियट्टिपडिवन्ने य अणगारे चत्तारि केवलिकम्मं से खवेइ; तं जहा-वेयणिज्जं आउयं नामं गोयं। तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वायइ सव्वदुक्खाणमन्तंकरेइ ॥

(४२) पडिरूवयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?। प० लाघवियं जणयइ। लघुभूएणं जीवे अप्पमत्ते पागडलिंगे पसत्थलिंगे विसुद्धसम्मत्ते सत्तसमिइसमत्ते सव्वपाणभूयजीवसत्तेसु वीससणिज्जरूवे अपडिलेहे जिइन्दिए विउल-तव-समिइ-समन्नागए यावि भवइ ॥

(४३) वेयावच्चेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?। वे० तित्थयरनामगोत्तं कम्मं निबन्धइ ॥

(४४) सव्वगुणसंपन्नयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?। स० अपुणरावत्तिं जणयइ। अपुणरावत्तिं पत्तए य णं जीवे सारीरमाणसाणं दुक्खाणं नो भोगी भवइ ॥

(४५) वीयरागयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?। वी० नेहाणुबन्धणाणि तण्हाणुबन्धणाणि य वोच्छिन्दइ, मणुन्नामणुन्नेसु-सद्द-फरिस-रूव-रस-गन्धेसु चेव विरज्जइ ॥

(४६) खन्तीए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?। ख० परीसहे जिणइ ॥

(४७) मुत्तीए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? । मु० अकिंचणं जणयइ। अकिंचणे य जीवे अत्थलोलाणं पुरिसाणं अपत्थणिज्जो भवइ ॥

(४८) अज्जवयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? अ० काउज्जुययं भावुज्जुययं भासुज्जुययं अविसंवायणं जणयइ । अविसंवायणसंपन्नयाए णं जीवे धम्मस्स आराहए भवइ ॥

(४९) मद्दवयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? । म० अणुस्सियत्तं जणयइ । अणुस्सियत्तेण जीवे–मिउमद्दवसंपन्ने अट्ठ मय-ट्ठाणाइं निट्ठावेइ ॥

(५०) भावसच्चेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ । भा० भावविसोहिं जणयइ । भावविसोहिए वट्टमाणे जीवे अरहन्तपन्नत्तस्स धम्मस्स आराहणयाए अब्भुट्ठेइ। अरहन्तपन्नत्तस्स धम्मस्स आराहणयाए अब्भुट्ठित्ता परलोगधम्मस्स आराहए भवइ ॥

(५१) करणसच्चेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? । क० करणसत्ति जणयइ । करणसच्चे वट्टमाणे जीवे जहावाई तहा कारी यावि भवइ ॥

(५२) जोगसच्चेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? । जो० जोगं विसोहेइ ॥

(५३) मणगुत्तयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? । म० जीवे एगग्गं जणयइ । एगग्गचित्ते णं जीवे मणगुत्ते संजमाराहए भवइ ॥

(५४) वयगुत्तयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? । व० निव्वियारं जणयइ । निव्वियारे णं जीवे वइगुत्ते अज्झप्पजोगसाहणजुत्ते यावि विहरइ ॥

(५५) कायगुत्तयाए णं भन्ते । जीवे किं जणयइ ? । का० संवरं जणयइ । संवरेणं कायगुत्ते पुणो पावासवनिरोहं करेइ ॥

(५६) मणसमाहारणाए णं भन्ते! जीवे किं जणयइ ?। म० एगग्गं जणयइ। एगग्गं जणइत्ता नाणपज्जवे जणयइ। नाणपज्जवे जणइत्ता सम्मत्तं विसोहेइ मिच्छत्तं च निज्जरेइ ॥

(५७) वयसमाहारणयाए भन्ते! जीवे किं जणयइ ?। व० वयसमाहारणदंसणपज्जवे विसोहेइ। वयसमाहारणदंसण-पज्जवे विसोहित्ता सुलहबोहियत्तं, निव्वत्तेइ, दुल्लहबोहियत्तं निज्जरेइ।

(५८) कायसमाहारणयाए णं भन्ते! जीवे किं जणयइ ?। का० चरित्तपज्जवे विसोहेइ। चरित्तापज्जवे विसोहित्ता अह-क्खायचरित्तं विसोहेइ। अहक्खायचरित्तं विसोहेत्ता चत्तारि केवलिकम्मंसे खवेइ। तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वायइ सव्वदुक्खाणमन्तं करेइ ॥

(५९) नाणसंपन्नयाए णं भन्ते! जीवे किं जणयइ ?। ना० जीवे सव्वभावाहिगमं जणयइ। नाणसंपन्ने णं जीवे चाउरन्ते संसारकन्तारे न विणस्सइ। जहा सूइ ससुत्ता न विणस्सइ तहा जीवे ससुत्ते संसारे न विणस्सइ। नाण विणय-तव चरित्त-जोगे संपाउणइ स-समय-परसमय-विसारए य असं-घायणिज्जे भवइ ॥

(६०) दंसणसंपन्नयाए णं भन्ते! जीवे किं जणयइ ?। दं० भवमिच्छत्तछेयणं करेइ, परं न विज्झायइ। परं अवि-ज्झाएमाणे अणुत्तरेणं नाणदंसणेणं अप्पाणं संजोएमाणे सम्मं भावेमाणे विहरइ ॥

(६१) चरित्तसंपन्नयाए णं भन्ते! जीवे किं जणयइ ?। च० सेलेसीभावं जणयइ। सेलेसिं पडिवन्नेय अणगारे चत्तारि केवलिकम्मं से खवइ। तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वायइ सव्वदुक्खाणमन्तं करेइ ॥

(६२) सोइन्दियनिग्गहेणं भन्ते! जीवे किं जणयइ ?।

सो० मणुन्नामणुन्नेसु सद्देसु रागदोसनिग्गहं जणयइ। तप्पच्च-इयं कम्मं बन्धइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ।

(६३) चक्खुन्दियनिग्गहेणं भन्ते! जीवे किं जणयइ?। च० मणुन्नामणुन्नेसु रूवेसु रागदोसनिग्गहं जणयइ, तप्पच्चइयं कम्मं न बन्धइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ॥

(६४) घाणिन्दिय निग्गेहणं भन्ते! जीवे किं जणयइ?। घा० मणुन्नामणुन्नेसु गन्धेसु रागदोसनिग्गहं जणयइ, तप्पच्च-इयं कम्मं न बन्धइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ॥

(६५) जिब्भिन्दियनिग्गहेणं भन्ते! जीवे किं जणयइ?। जि० मणुन्नामणुन्नेसु रसेसु रागदोसनिग्गहं जणयइ, तप्पच्च-इयं कम्मं न बन्धइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ॥

(६६) फासिन्दियनिग्गहेणं भन्ते! जीवे किं जणयइ?। फा० मणुन्नामणुन्नेसु फासेसु रागदोसनिग्गहं जणयइ, तप्पच्च-इयं कम्मं न बन्धइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ॥

(६७) कोह विजएणं भन्ते! जीवे किं जणवइ?। को० खन्ति जणवइ ओहवेयणिज्जं कम्मं न बन्धइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ॥

(६८) माणविजएणं भन्ते! जीवे किं जणयइ?। मा० मद्दवं जणयइ, माणवेयणिज्जं कम्मं न बन्धइ; पुव्वबद्धं च निज्जरेइ॥

(६९) मायाविजएणं भन्ते! जीवे किं जणवइ?। मा० अज्जवं जणयइ। मायावेयणिज्जं कम्मं न बन्धइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ॥

(७०) लोभविजएणं भन्ते! जीवे किं जणवइ?। लो० संतोसं जणयइ, लोभवेयणिज्जं कम्मं न बन्धइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ॥

(७१) पिज्जदोमिच्छादंसणविजएणं भन्ते! जीवे किं जण-यइ?। पि० नाण-दंसण-चरित्ता-राहणयाए अब्भुट्ठेइ। अट्ठविहस्स

कम्मस्स कम्मगण्ठिविमोयणयाए तप्पसयाए जहाणुपुव्वीए अट्ठवीसइविहं मोहणिज्जं कम्मं उग्घाइए, पञ्चविहं नाणावरणिज्जं नवविहं दंसणावरणिज्जं, पञ्चविहं अन्तराइयं, एए तिन्निऽवि कम्मंसे जुगवं खवेइ। तओ पच्छा अणुत्तरं कसिणं–पडिपुण्णं निरावरणं वितिमिरं विसुद्धं लोगालोगप्पभावं केवलवरनाण-दंसणं समुप्पादेइ। जाव सजोगी भवइ, ताव ईरियावहियं कम्मं निबन्धइ सुहफरिसं दुसमयठिइयं। तं पढमसमए बद्धं बिइयसमए वेइयं, तइयसमए निज्जिण्णं, तं बद्धं पुट्ठं उदीरियं वेइयं निज्जिण्णं सेयाले य अकम्मं यावि भवइ ॥

(७२) अह आउयं पावइत्ता अन्तोमुहुत्तद्धावसेसाए जोग–निरोहं करेमाणे सुहुमकिरियं अप्पडिवाइ सुक्कज्झाणं झायमाणे तप्पढमयाए मणजोगं निरुम्भइ, मणजोगं निरुम्भइत्ता, वइजोगं निरुम्भइ, वइजोगं निरुम्भइत्ता कायजोगं निरुम्भइ, कायजोगं निरुम्भइत्ता आणपाणनिरोहं करेइ, आणपाणनिरोहं करेइत्ता ईसिपंचरहस्सक्खरुच्चारणद्धाए य णं अणगारे समुच्छिन्न-किरियं अनियट्टिसुक्कज्झाणं झियायमाणे वेयणिज्जं आउयं नामं गोत्तं च एए चत्तारि कम्मंसे जुगवं खवेइ।

(७३) तओ ओरालियतेयकम्माइं सव्वाहिं विप्पजहणाहिं विप्पजहित्ताउज्जुसेढिपत्तेअफुसमाणगई उड्ढं एगसमएणं अविग्गहेणं तत्थ गन्ता सागरोवउत्ते सिज्झइ बुज्झइ जाव अन्तं करेइ।

एस खलु सम्मत्तपरक्कमस्स अज्झयणस्स अट्ठे समणेणं भगवया महावीरेणं आघविए पन्नविए परूविए दंसिए उवदंसिए ॥७४

॥ त्ति बेमि ॥ इति सम्मत्तपरक्कमे समत्ते ॥२६॥

———

॥ अह तवमग्गं तीसइमं अज्झयणं ॥३०॥

जहा उ पावगं कम्मं, रागदोससमज्जियं ।
खवेइ तवसा भिक्खू, तमेगग्गमणो सुण ॥१॥

पाणिवह-मुसावाया, अदत्त-मेहुण-परिग्गहा विरओ ।
राईभोयण विरओ, जीवो भवइ अणासवो ॥२॥

पंचसमिओ तिगुत्तो; अकसाओ जिइन्दिओ ।
अगारवो य निस्सल्लो, जीवो होइ अणासवो ॥३॥

एएसिं तु विवच्चासे, रागदोससमज्जियं ।
खवेइ उ जहा भिक्खू, तमेगग्गमणो सुण ॥४॥

जहा महातलायस्स, सन्निरुद्धे जलागमे ।
उस्सिंचणाए तवणाए, कमेणं सोसणा भवे ॥५॥

एवं तु संजयस्सावि, पावकम्मनिरासवे ।
भवकोडीसंचियं कम्मं, तवसा निज्जरिज्जइ ॥६॥

सो तवो दुविहो वुत्तो, बाहिरब्भन्तरो तहा ।
बाहिरो छव्विहो वुत्तो, एवमब्भन्तरो तवो ॥७॥

अणसण-मुणोयरिया, भिक्खायरिया य रसपरिच्चाओ ।
कायकिलेसो संलीणया य वज्झो तवो होइ ॥८॥

इत्तरीय मरणकाला य, अणसणा दुविहा भवे ।
इत्तरिय सावकंखा, निरवकंखा उ बिइज्जिया ॥९॥

जो सो इत्तरियतवो, सो समासेण छव्विहो ।
सेढितवो पयरतवो, घणो य तह होइ वग्गो य ॥१०॥

तत्तो य वग्गवग्गो, पंचमो छट्ठओ पइण्णतवो ।
मणइच्छियचित्तत्थो, नायव्वो होइ इत्तरिओ ॥११॥

जा सा अणसणा मरणे, दुविहा सा वियाहिया ।
सवियारमवियारा, कायचिट्ठं पई भवे ॥१२॥

अहवा सपरिकम्मा, अपरिकम्मा य आहिया ।
नीहारिमनीहारी, आहारच्छेओ दोसु वि ॥१३॥

ओमोयरणं पंचहा, समासेण वियाहियं ।
दव्वओ खेत्तकालेणं, भावेणं पज्जवेहि य ॥१४॥

जो जस्स उ आहारो, तत्तो ओमं तु जो करे ।
जहन्नेणेगसित्थाई, एवं दव्वेण ऊ भवे ॥१५॥

गामे नगरे तह रायहाणि, निगमे य आगरे पवली ।
खेडे कब्बड-दोणमुह-पट्टण मडम्ब संबाहे ॥१६॥

आसमपए विहारे, सन्निवेसे समायघोसे य ।
थलिसेणखन्धारे, सत्थे संवट्टकोट्टे य ॥१७॥

वाडेसु व रत्थासु व, घरेसु वा एवमित्तियं खेत्तं ।
कप्पइ उ एवमाई, एवं खेत्तेण ऊ भवे ॥१८॥

पेडा य अद्धपेडा, गोमुत्ति पयंग वीहिया चेव ।
सम्बुक्कावट्टाय गन्तु, पच्चागया छट्ठा ॥१९॥

दिवसस्स पोरुसीणं, चउण्हंपि उ जत्तिओ भवे कालो ।
एवं चरमाणो खलु, कालोमाणं मुणयेव्वं ॥२०॥

अहवा तइयाए पोरिसीए, ऊणाइ घासमेसन्तो ।
चऊभागूणाए वा, एवं कालेण ऊ भवे ॥२१॥

इत्थी वा पुरिसो वा, अलंकिओ वा नलंकिओ वावि ।
अन्नयरवयत्थो वा, अन्नयरेणं व वत्थेणं ॥२२॥

अन्नेण विसेसणं, वण्णेणं भावमणुमुयन्ते उ ।
एवं चरमाणो खलु, भावोमाणं मुणेयव्वं ॥२३॥

दव्वे खेत्ते काले, भावम्मि य आदिया उ जे भावा।
एएहि ओमचरओ, पज्जवचरओ भवे भिक्खू ॥२४॥

अट्ठविहगोयरग्गं तु, तहा सत्तेव एसणा।
अभिग्गाहा य जे अन्ने, भिक्खायरियमाहिया ॥२५॥

खीरदहिसप्पिमाई, पणीयं पाणभोयणं।
परिवज्जणं रसाणं तु, भणियं रसविवज्जणं ॥२६॥

ठाणा वीरासणाईया, जीवस्स उ सुहावहा।
उग्गा जहा धरिज्जन्ति, कायकिलेसं तमाहियं ॥२७॥

एगन्तमणावाए, इत्थी-पसु-विवज्जए।
सयणासणसेवणया, विवित्तसयणासणं ॥२८॥

एसो बाहिरगतवो, समासेण वियाहिओ।
अब्भिन्तरं तवं एत्तो, वुच्छामि अणुपुव्वसो ॥२९॥

पायच्छित्तं विणओ वेयावच्चं तहेव सज्झाओ।
झाणं च विउस्सग्गो, एसो अब्भिन्तरो तवो ॥३०॥

आलोयणा रिहाईयं, पायच्छित्तं तु दसविहं।
जे भिक्खू वहई सम्भं, पायच्छित्तं तमाहियं ॥३१॥

अब्भुट्ठाणं अंजलिकरणं, तहेवासणदायणं।
गुरुभत्तिभावसुस्सूसा, विणओ एस वियाहिओ ॥३२॥

आयरियमाईए, वेयावच्चम्मि दसविहे।
आसेवणं जहाथामं, वेयावच्चं, तमाहियं ॥३३॥

वायणा पुच्छणा चेव, तहेव परियट्टणा।
अणुप्पेहा धम्मकहा, सज्झाओ पञ्चहा भवे ॥३४॥

अट्टरुद्दाणि वज्जित्ता, झाएज्जा सुसमाहिए।
धम्मसुक्काइं झाणाइं, झाणं तं तु बुहा वए ॥३५॥

सयणासणठाणे वा, जे उ भिक्खू न वावरे ।
कायस्स विउस्सग्गो, छट्ठो सो परिकित्तिओ ॥३६॥

एवं तवं तु दुविहं, जे सम्मं आयरे मुणी ।
सो खिप्पं सव्वसंसारा, विप्पमुच्चइ पण्डिओ ॥त्ति बेमि॥३७॥

॥ इति तवमग्गं तीसइमं अज्झयणं-समत्तं ॥३०॥

॥ अह चरमविही एगतीसइमं अज्झयणं ॥३१॥

चरणविहिं पवक्खामि, जीवस्स उ सुहावहं ।
जं चरित्ता बहू जीवा, तिण्णा संसारसागरं ॥ १ ॥

एगओ विरइं कुज्जा, एगओ य पवत्तणं ।
असंजमे नियत्तिं च, संजमे य पवत्तणं ॥ २ ॥

रागदोसे य दो पावे, पावकम्म-पवत्तणे ।
जे भिक्खू रुंभई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥ ३ ॥

दंडाणं गारवाणं च, सल्लाणं च तियं तियं ।
जे भिक्खू चयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥ ४ ॥

दिव्वे य जे उवसग्गे, तहा तेरिच्छमाणुसे ।
जे भिक्खू सहई निच्चं, से न अछइ मण्डले ॥ ५ ॥

विगहा-कसाय सन्नाणं, झाणाणं च दुयं तहा ।
जे भिक्खू वज्जई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥ ६ ॥

एसु इन्दियत्थेसु, समिईसु किरियासु य ।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मण्ले ॥ ७ ॥

लेसासु छसु काएसु, छक्के आहारकारणे ।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥ ८ ॥

पिण्डोग्गपडिमासु, भयट्ठाणेसु सत्तसु ।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥६॥

मदेसु बम्भगुत्तीसु, भिक्खु-धम्मम्मि दसविहे ।
जे भिक्खू जयई निच्च, से न अच्छइ मण्डले ॥१०॥

उवासगाणं पडिमासु; भिक्खूणं पडिमासु य ।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अण्छइ मण्डले ॥११॥

किरियासु भूयगामेसु, परमाहम्मिएसु य ।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥१२॥

गाहासोलसएहिं, तहा असंजमम्मि य ।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥१३॥

बम्भम्मि नायज्झयणेसु, ठाणेसु य समाहिए ।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥१४॥

एगवीसाए सबले, बावीसाए परीसहे ।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥१५॥

तेवीसाइ सूयगडे, रूवाहिएसु सुरेसु य ।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से ण अच्छइ मण्डले ॥१६॥

पणुवीसभावणासु, उद्देसेसु दसाइणं ।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥१७॥

अणगारगुणेहिं च, पगप्पम्मि तहेव य ।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥१८॥

पावसुयपसगेसु, मोहठाणेसु चेव य ।
जे भिक्खू जयई निच्चं; से न अच्छइ मण्डले ॥१६॥

सिद्धाइगुणजोगेसु, तेत्तीसासायणासु य ।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥२०॥

इय एएसु ठाणेसु, जे भिक्खू जयई सया ।
खिप्पं सो सव्वसंसारा, विप्पमुच्चइ पण्डिओ ॥ त्ति बेमि ॥३१॥

॥ इति चरणविही अज्झयणं समत्तं ॥३१॥

॥ अह पमायट्ठाणं बत्तीसइमं अज्झयणं ३२॥

अच्चन्तकालस्स समूलगस्स, सव्वस्स दुक्खस्स उ जो पमोक्खो ।
तं भासओ मे पडिपुण्णचित्ता, सुणेह एगन्तहियं हियत्थं ॥१॥

नाणस्स सव्वस्स पगासणाए, अन्नाणमोहस्स विवज्जणाए ।
रागस्स दोसस्स य संखएणं, एगन्तसोक्खं समुवेइ मोक्खं ॥२॥

तस्सेस मग्गो गुरुविद्धसेवा, विवज्जणा बालजणस्स दूरा ।
सज्झाय एगन्त-निसेवणा य, सु त्तत्थसचिन्तणया धिई य ॥३॥

आहारमिच्छे मियमेसणिज्जं, सहायमिच्छे निउणत्थबुद्धिं ।
निकेयमिच्छेज्ज विवेगजोग्गं, समाहिकामे समणे तवस्सी ॥४॥

न वा लभेज्जा निउणं सहायं, गुणाहियं वा गुणओ समं वा ।
एगोवि पवाइ विवज्जयन्तो, विहरेज्ज कामेसु असज्जमाणो ॥५॥

जहा य अण्डप्पभवा बलागा, अण्डं बलागप्पभवं जहा य ।
एमेव मोहाययणं खु तण्हा, मोहं च तण्हाययणं वयन्ति ॥६॥

रागो य दोसोऽवि य कम्मबीयं, कम्मं च मोहप्पभवं वयन्ति ।
कम्मं च जाइमरणस्स मूलं, दुक्खं च जाइमरणं वयन्ति ॥७॥

दुक्खं हयं जस्स न होइ मोहो, मोहो हओ जस्स न होइ तण्हा ।
तण्हा हया सस्स न होइ लोहो, लोहो हओ जस्स न किंचणाइं ॥८॥

रागं च दोसं च तहेव मोहं, उद्धत्तुकामेण समूलजालं ।
जे जे उवाया पडिवज्जियव्वा ते कित्तइस्सामि अहाणुपुव्वि ॥९॥

रसा पगामं न निसेवियव्वा, पायं रसा दित्तिकरा नराणं ।
दित्तं च कामा समभिवन्ति, दुमं जहा साउफलं व पक्खी ॥१०॥

जहा दवग्गी पउरिन्धणे वणे, समारुओ नोवसमं उवेइ ।
एविन्दिएग्गीऽवि पगामभोइणो, न वम्भयारिस्स हियाय कस्सई॥११॥

विवित्तसेज्जासणजन्तियाणं, ओमासणाणं दमिइन्दियाणं ।
न रागसत्तू धरिसेइ चित्तं, पराइओ वाहिरिवोसहेहिं ॥१२॥

जहा विरालावसहस्स मूले, न मूसगाणं वसही पसत्था ।
एमेव इत्थीनिलयस्स मज्झे, न वम्भयारिस्स खमो निवासो ॥१३॥

न रूव-लावण्ण-विलास-हासं, न जंपियं-पेहियं वा ।
इत्थीण चित्तंसि निवेसइत्ता, दट्ठुं ववस्से समणे तवस्सी ॥१४॥

अदंसणं चेव अपत्थणं च, अचिन्तणं चेव अकित्तणं च ।
इत्थीजणस्सारियझाणजुग्गं, हियं सआ वम्भचेरे रयाणं ॥१५॥

कामं तु देवीहिं विभूसियाहिं, न चाइया खोभइउं तिगुत्ता ।
तहाऽवि एगन्तहियं-ति नच्चा, विवित्तवासो मुणिणं पसत्थो ॥१६॥

ओक्खाभिकंखिस्स उ माणवस्स, संसारभीरुस्स ठियस्स धम्मे ।
नेयारिसं दुत्तरमत्थि लोए, जहित्थिओ वालमणोहराओ ॥१७॥

एए य संगे समइक्कमित्ता, सुहुत्तरा चेव भवन्ति सेसा ।
जहा महासागरमुत्तरित्ता, नई भवे अवि गङ्गासमाणा ॥१८॥

कामाणुगिद्धिप्पभवं खु दुक्खं, सव्वस्स लोगस्स सदेवगस्स ।
जं काइयं माणसियं च किंचि, तस्सन्तगं गच्छइ वीयरागो ॥१९॥

जहा य किम्पागफला मणोरमा, रसेण वण्णेण य भुज्जमाणा ।
ते खुड्डुए जीविय पच्चमाणा, एओवमा कामगुणा विवागे ॥२०॥

जे इन्दियाणं विसया मणुन्ना, न तेसु भावं निसिरे कयाइ ।
न यामणुन्नेसु मणंऽपि कुज्जा, समाहिकामे समणे तवस्सी ॥२१॥

चक्खुस्स रूवं गहणं वयन्ति, तं रागवेउं तु मणुन्नमाहु ।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु, समो य जो तेसु स वीयरागो ॥२२॥

रूवस्स चक्खुं गहणं वयन्ति, चक्खुस्स रूवं गहणं वयन्ति ।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु, दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥२३॥

रूवेसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं, अकालियं पावइ से विणासं ।
रागाउरे से जह वा पयंगे, आलोयलीले सुमुवेइ मच्चुं ॥२४॥

जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं, तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
दुद्दन्तदोसेण सएण जन्तू, न किञ्चि रूवं अवरज्झई से ॥२५॥

एगन्तरत्ते रुइरंसि रूवे, अतालिसे से कुणई पओसं ।
दुक्खस्स सम्पीलमुवेइ बाले, न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥२६॥

रूवाणुगासाणुगए य जीवे, चराचरे हिंसइ णेगरूवे ।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥२७॥

रूवाणुवाएण परिग्गहेण, उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
वए विओगे य कहं सुहं से, सम्भोगकाले य अतित्तलाभे ॥२८॥

रूवे अतित्ते य परिग्गहम्मि, सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स, लोभाविले आययइ अदत्तं ॥२६॥

तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो, रूवे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा, तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥३०॥

मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य, पयोगकाले य दुही दुरन्ते ।
एवं अदत्ताणि समाययन्तो, रूवे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥३१॥

रूवाणुरत्तस्स नरस्स एवं, कुत्तो सुहं होज्ज कयाइ किञ्चि ।
तत्थोवभोगेऽवि किलेसदुक्खं, निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥३२॥

एमेव रूवम्मि गओ पओसं, उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं, जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥३३॥

रसा पगामं न निसेवियव्वा, पायं रसा दित्तिकरा नराणं ।
दित्तं च कामा समभिवन्ति, दुमं जहा साउफलं व पक्खी ॥१०॥

जहा दवग्गी पउरिन्धणे वणे, समारुओ नोवसमं उवेइ ।
एविन्दिएग्गीऽवि पगामभोइणो, न बम्भयारिस्स हियाय कस्सई॥११॥

विवित्तसेज्जासणजन्तियाणं, ओमासणाणं दमिइन्दियाणं ।
न रागसत्तू धरिसेइ चित्तं, पराइओ वाहिरिवोसहेहिं ॥१२॥

जहा विरालावसहस्स मूले, न मूसगाणं वसही पसत्था ।
एमेव इत्थीनिलयस्स मज्झे, न बम्भयारिस्स खमो निवासो ॥१३॥

न रूव-लावण्ण-विलास-हासं, न जंपियं-पेहियं वा ।
इत्थीण चित्तंसि निवेसइत्ता, दट्ठूं ववस्से समणे तवस्सी ॥१४॥

अदंसणं चेव अपत्थणं च, अचिन्तणं चेव अकित्तणं च ।
इत्थीजणस्सारियझाणजुग्गं, हियं सआ बम्भचेरे रयाणं ॥१५॥

कामं तु देवीहिं विभूसियाहिं, न चाइया खोभइउं तिगुत्ता ।
तहाऽवि एगन्तहियं-ति नच्चा, विवित्तवासो मुणिणं पसत्थो ॥१६॥

ओक्खाभिकंखिस्स उ माणवस्स, संसारभीरुस्स ठियस्स धम्मे ।
नेयारिसं दुत्तरमत्थि लोए, जहित्थिओ बालमणोहराओ ॥१७॥

एए य संगे समइक्कमित्ता, सुदुत्तरा चेव भवन्ति सेसा ।
जहा महासागरमुत्तरित्ता, नई भवे अवि गङ्गासमाणा ॥१८॥

कामाणुगिद्धिप्पभवं खु दुक्खं, सव्वस्स लोगस्स सदेवगस्स ।
जं काइयं माणसियं च किंचि, तस्सन्तगं गच्छइ वीयरागो ॥१९॥

जहा य किम्पागफला मणोरमा, रसेण वण्णेण य भुज्जमाणा ।
ते खुड्डए जीविय पच्चमाणा, एओवमा कामगुणा विवागे ॥२०॥

जे इन्दियाणं विसया मणुन्ना, न तेसु भावं निसिरे कयाइ ।
न यामणुन्नेसु मणंऽपि कुज्जा, समाहिकामे समणे तवस्सी ॥२१॥

एमेव सद्दम्मि गओ पओसं, उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं, जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥४६॥

सद्दे विरत्तो मणुओ विसोगो, एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
न लिप्पए भवमज्झे-वि सन्तो, जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥४७॥

घाणस्स गन्धं गहणं वयन्ति, तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु ।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु; समो य जो तेसु स वीयरागो ॥४८॥

गन्धस्स घाणं गहणं वयन्ति, घाणस्स गन्धं गहणं वयन्ति ।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु; दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥४९॥

गन्धेसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं, अकालियं पावइ से विणासं ।
रागाउरे ओसहगन्धगिद्धे सप्पे बिलाओ विव निक्खमन्ते ॥५०॥

जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं, तंसि-क्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
दुद्दन्तदोसेण सएण जन्तू, न किंचि गन्धं अवरुज्झई से ॥५१॥

एगन्तरत्ते रुइरंसि गन्धे अतालिसे से कुणई पओसं ।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले, न लिप्पई तेण मुणी विरागी ॥५२॥

गन्धाणुगासाणुगए, य जीवे चराचरे हिंसइऽणेगरूवे ।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले, पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥५३॥

गन्धाणुवाएण परिग्गहेण, अप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
वए विओगे य कहं सुहं से, संभोगकाले य अतित्तलाभे ॥५४॥

गन्धे अतित्ते य परिग्गहम्मि, सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स, लोभाविले आययई अदत्तं ॥५५॥

तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो, गन्धे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा, तत्थावि दुक्खा न विमुच्चइ से ॥५६॥

मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य, पओगकाले य दुही दुरन्ते ।
एवं अदत्ताणि समाययन्तो, गन्धे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥५७॥

रूवे विरत्तो मणुओ विसोगी, एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
न लिप्पए भवमज्झेऽवि सन्तो, जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥३४॥

सोयस्स सद्दं गहणं वयन्ति तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु ।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु, समो य जो तेसु स वीयरागो ॥३५॥

सद्दस्स सोयं गहणं वयन्ति सोयस्स सद्दं गहणं वयन्ति ।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु, दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥३६॥

सद्देसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं, अकालियं पावइ से विणासं ।
रागाउरे हरिणमिगे व मुद्धे; सद्दे अतित्ते समुवेइ मच्चुं ॥३७॥

जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं, तंसी क्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
दुद्दन्तदोसेणे सएण जन्तू ; न किञ्चि सद्दं अवरुज्झई से ॥३८॥

एगन्तरत्ते रुइरसि सद्दे, अतालिसे से कुणई पओसं ।
दुक्खस्स सम्पीलमुवेइ बाले, न लिप्पई तेण मुणी विरागी ॥३९॥

सद्दाणुगासाणुगए य जीवे, चराचरे हिंसइऽणेगरूवे ।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले, पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥४०॥

सद्दाणुवाएण परिग्गहेण; अप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
वए विओगे य कहं सुहं से, संभोगकाले य अतित्त लाभे ॥४१॥

सद्दे अतित्ते य परिग्गहम्मि, सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स, लोभाविले आययई अदत्तं ॥४२॥

तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो, सद्दे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा, तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥४३॥

मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य, पओगकाले य दुही दुरन्ते ।
एवं अदत्ताणि समाययन्ती, सद्दे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥४४॥

सद्दाणुरत्तस्स नरस्स एवं, कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ।
तत्थोवभोगेऽवि किलेस दुक्खं, निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं॥४५॥

एमेव सद्दम्मि गओ पओसं, उवेइ दुक्खोहपरंपराओ।
पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं, जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥४६॥

सद्दे विरत्तो मणुओ विसोगो, एएण दुक्खोहपरंपरेण।
न लिप्पए भवमज्झे-वि सन्तो, जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥४७॥

घाणस्स गन्धं गहणं वयन्ति, तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु; समो य जो तेसु स वीयरागो ॥४८॥

गन्धस्स घाणं गहणं वयन्ति, घाणस्स गन्धं गहणं वयन्ति।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु; दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥४९॥

गन्धेसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं, अकालियं पावइ से विणासं।
रागाउरे ओसहगन्धगिद्धे सप्पे बिलाओ विव निक्खमन्ते ॥५०॥

जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं, तंसि-क्खणे से उ उवेइ दुक्खं।
दुद्दन्तदोसेण सएण जन्तू, न किंचि गन्धं अवरुज्झई से ॥५१॥

एगन्तरत्ते रुइरंसि गन्धे अतालिसे से कुणई पओसं।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले, न लिप्पई तेण मुणी विरागी ॥५२॥

गन्धाणुगासाणुगए, य जीवे चराचरे हिंसइऽणेगरूवे।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले, पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥५३॥

गन्धाणुवाएण परिग्गहेण, अप्पायणे रक्खणसन्निओगे।
वए विओगे य कहं सुहं से, संभोगकाले य अतित्तलाभे ॥५४॥

गन्धे अतित्ते य परिग्गहम्मि, सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स, लोभाविले आययई अदत्तं ॥५५॥

तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो, गन्धे अतित्तस्स परिग्गहे य।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा, तत्थावि दुक्खा न विमुच्चइ से ॥५६॥

मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य, पओगकाले य दुही दुरन्ते।
एवं अदत्ताणि समाययन्तो, गन्धे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥५७॥

गन्धाणुरत्तस्स नरस्स एवं, कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ।
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं, निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥५८॥

एमेव गन्धम्मि गओ पओसं, उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं, जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥५९॥

गन्धे विरत्तो मणुओ विसोगो, एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
न लिप्पई भवमज्झेवि सन्तो, जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥६०॥

जिब्भाए रसं गहणं वयन्ति, तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु ।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु, समो य जो तेसु स वीयरागो ॥६१॥

रसस्स जिम्भं गहणं वयंति जिब्भाए रसं गहणं वयन्ति ।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु, दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥६२॥

रसेसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं, अकालियं पावइ से विणासं ।
रागाउरे बडिसविभिन्नकाए, मच्छे जहा आमिसभोगगिद्धे ॥६३॥

जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं, तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
दुद्दन्तदोसेण सएण जन्तू, न किंचि रसं अवरुज्झई से ॥६४॥

एगन्तरत्ते रुइरंसि रसे, अतालिसे से कुणई पओसं ।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले, न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥६५॥

रसाणुगासाणुगए य जीवे, चराचरे हिंसइऽणेगरूवे ।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले, पीलेइ अत्तट्ठगुरु किलिट्ठे ॥६६॥

रसाणुवाएण परिग्गहेण, उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
वए विओगे य कहं सुहं से, संभोगकाले य अतित्तलाभे ॥६७॥

रसे अतित्ते य परिग्गहम्मि, सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स, लोभाविले आययइ अदत्तं ॥६८॥

तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो, रसे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा, तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥६९॥

भोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य, पओगकाले य दुही दुरन्ते ।
एवं अदत्ताणि समाययन्तो, रसे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥७०॥

रसाणुरत्तस्स नरस्स एवं, कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ।
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं, निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥७१॥

एमेव रसम्मि गओ पओसं, उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
पदुट्ठचित्ता य चिणाइ कम्मं, जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥७२॥

रसे विरत्तो मणुओ विसोगो, एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
न लिप्पई भवमज्झेवि सन्तो, जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥७३॥

कायस्स फासं गहणं वयन्ति, तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु ।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु, समो य जो तेसु स वीयरागो ॥७४॥

फासस्स कायं गहणं वयन्ति, कायस्स फासं गहणं वयंति ।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु, दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥७५॥

फासेसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं, अकालियं पावइ से विणासं ।
रागाउरे सीयजलावसन्ने, गाहग्गहीए महिसे विवन्ने ॥७६॥

जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं, तंसि-क्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
दुद्दन्तदोसेण सएण जन्तू, न किंचि फासं अवरुज्झई से ॥७७॥

एगन्तरत्ते रुइरंसि फासे, अतालिसे से कुणई पओसं ।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले, न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥७८॥

फासाणुगासाणुगए य जीवे, चराचरे हिंसइऽणेगरूवे ।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले, पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥७९॥

फासाणुवाएण परिग्गहेण, उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
वए विओगे य कहं सुहं से, संभोगकाले य अतित्तलाभे ॥८०॥

फासे अतित्ते य परिग्गहम्मि, सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स, लोभाविले आययई अदत्तं ॥८१॥

तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो, फासे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
मयामुस वड्ढइ लोभदोसा, तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥८२॥

मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य, पओगकाले य दुही दुरन्ते ।
एवं अदत्ताणि समाययन्तो, फासे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥८३॥

फासाणुरत्तस्स नरस्स एवं, कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ।
तत्थोवभोगेवि किलेसदुक्खं, निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥८४॥

एमेव फासम्मि गओ पओसं, उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं, जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥८५॥

फासे विरत्तो मणुओ विसोगो, एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
न लिप्पई भवमज्झे वि सन्तो, जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥८६॥

मणस्स भावं गहणं वयन्ति, तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु ।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु, समो य जो तेसु स वीयरागो ॥८७॥

भावस्स मणं गहणं वयन्ति, मणस्स भावं गहणं वयन्ति ।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु, दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥८८॥

भावेसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं, अकालियं पावइ से विणासं ।
रागाउरे कामगुणेसु गिद्धे, करेणुमग्गावहिए गजे वा ॥८९॥

जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं, तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
दुद्दन्तदोसेण सएण जन्तू, न किंचि भावं अवरुज्झई से ॥९०॥

एगन्तरत्तो रुइरंसि भावे, अतालिसे से कुणई पओसं ।
दुक्खस्स सपीलमुवेई वाले, न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥९१॥

भावाणुगासाणुगए य जीवे चराचरे हिंसइऽणेगरूवे ।
चित्तेहि ते परितावेइ वाले, पीलेइ अत्तट्ठगुरु किलिट्ठे ॥९२॥

भावाणुगाएण परिग्गहेण, उप्पायणे, रक्खणसन्निओगे ।
वए विओगे य कहं सुहं से, सभोगकाले य अतित्तलाभे ॥९३॥

भावे अतित्ते य परिग्गहम्मि, सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स, लोभाविले आययई अदत्तं ।९४॥

तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो, भावे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा, तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥९५॥

मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य, पओगकाले य दुही दुरन्ते ।
एवं अदत्ताणि समाययन्तो, भावे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥९६॥

भावाणुरत्तस्स नरस्स एवं; कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ।
तत्थोवभोगे वि किलेस दुक्खं, निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥९७॥

एमेव भावम्मि गओ पओस, उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं, जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥९८॥

भावे विरत्तो मणुओ विसोगो, एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
न लिप्पई भवमज्झेवि सन्तो, जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥९९॥

एविन्दियत्था य मणस्स अत्था, दुक्खस्स हेउं मणुयस्स रागिणो ।
ते चेव थोवंपि कयाइ दुक्खं, न वीयरागस्स करेन्ति किंचि ॥१००॥

न कामभोगा समयं उवेन्ति, न यावि भोगा विगइं उवेन्ति ।
जे तप्पओसी य परिग्गहो य, सो तेसु मोहा विगइं उवेइ ॥१०१॥

कोहं च माणं च तहेव मायं, लोहं दुगंच्छं अरइं रइं च ।
हासं भयं सोगपुमित्थिवेयं, नपुंसवेयं विविहे य भावे ॥१०२॥

आवज्जई एयमणेगरूवे, एवंविहे कामगुणेसु सत्तो ।
अन्ने य एयप्पभवे विसेसे, कारुण्णदीणे हिरिमे वइस्से ॥१०३॥

कप्पं न इच्छिज्ज सहायलिच्छू, पच्छाणुतावे न तवऽपभावं ।
एवं वियारे अमियप्पयारे, आवज्जई इन्दियचोरवस्से । ॥१०४॥

तओ से जायन्ति पओयणाइं निमज्जिउं मोहमहण्णवम्मि ।
सुहेसिणो दुक्खविणोयणट्ठा, तप्पच्चयं उज्जमए य रागी ॥१०५॥

विरज्जमाणस्स य इन्दियत्था, सद्दाइया तावइयप्पगारा ।
न तस्स सव्वे वि मणुन्नयं वा, निव्वतयन्ती अमणुन्नयं वा ॥१०६॥

एवं स संकप्पविकप्पणासु, संजायई समयमुवट्ठियस्स ।
अत्थे असंकप्पयओ तओ से, पहीयए कामगुणेसु तण्हा ॥१०७॥

स वीयरागो कयसव्वकिच्चो, खवेइ नाणावरणं खणेणं ।
तहेव जं दंसणमावरेइ, जं चन्तरायं पकरेइ कम्मं ॥१०८॥

सव्वं तओ जाणइ पासए य, अमोहणे होइ निरन्तराए ।
अणासवे झाणसमाहिजुत्ते, आउक्खए मोक्खमुवेइ सुद्धे ॥१०९॥

सो तस्स सव्वस्स दुहस्स मुक्को, जं बाहई समयं जन्तुमेयं ।
दीहामयं विप्पमुक्को पसत्थो, तो होइ अच्चन्तसुही कयत्थो ॥११०॥

अणाइकालप्पभवस्स एसो, सव्वस्स दुक्खस्स पमोक्खमग्गो ।
वियाहिओ जं समुविच्च सत्ता, कमेण अच्चन्तसुही भवन्ति ॥१११॥

॥ त्ति बेमि ॥ इति पमायट्ठाणं-अज्झयणं समत्तं ॥३२॥

॥अह कम्मप्पयडी तेत्तीसइमं अज्झयणं ॥३३॥

अट्ठ कम्माइं वोच्छामि, आणुपुव्विं जहाकमं ।
जेहिं बद्धो अयं जीवो, संसारे परिवट्टई ॥१॥

नाणस्सावरणिज्जं, दंसणावरणं तहा ।
वेयणिज्जं तहामोहं, आउकम्मं तहेव य ॥२॥

नामकम्मं च गोयं च, अन्तरायं तहेव य ।
एवमेयाइ कम्माइं, अट्ठेव उ समासओ ॥३॥

नाणावरणं पंचविहं, सुयं आभिणिबोहियं ।
ओहिनाणं च तइयं, मणनाणं च केवलं ॥४॥

निद्दा तहेव पयला, निद्दानिद्दा पयलपयला य ।
तत्तो य थीणगिद्धि उ, पंचमा होइ नायव्वा ॥५॥

चक्खुमचक्खू ओहिस्स, दंसणे केवले य आवरणे ।
एवं तु नवविगप्पं, नायव्वं दंसणावरणं ॥६॥

वेयणीयंपि य दुविहं, सायमसायं च आहियं ।
सायस्स उ बहू भेया, एमेव असायस्स वि ॥७॥

मोहणिज्जंपि दुविहं, दंसणे चरणे तहा ।
दंसणे तिविहं वुत्तं, चरणे दुविहं भवे ॥८॥

सम्मत्तं चेव मिच्छत्तं, सम्मामिच्छत्तमेव य ।
एयाओ तिन्नि पयडीओ, मोहणिज्जस्स दंसणे ॥९॥

चरित्तमोहणं कम्मं दुविहं तं वियाहियं ।
कसायमोहणिज्जं तु, नोकसायं तहेव य ॥१०॥

सोलसविहभेएणं, कम्मं तु कसायजं ।
सत्तविहं नवविहं वा, कम्मं च नोकसायजं ॥११॥

नेरइय-तिरिक्खाउं, मणुस्साउं तहेव य ।
देवाउयं चउत्थं तु, आउं कम्मं चउव्विहं ॥१२॥

नामं कम्मं तु दुविहं, सुहमसुहं च आहियं ।
सुभस्स उ बहू भेया, एमेव असुहस्स वि ॥१३॥

गोयं कम्मं दुविहं, उच्चं नीयं च आहियं ।
उच्चं अट्ठविहं होइ, एवं नीयं-पि आहियं ॥१४॥

दाणे लाभे य भोगे य, उवभोगे विरिए तहा ।
पंचविहमन्तरायं, समासेण वियाहियं ॥१५॥

एयाओ मूलपयडीओ, उत्तराओ य आहिया ।
पएसग्गं खेत्तकाले य, भावं च उत्तरं सुण ॥१६॥

तव्वेसिं चेव कम्माणं, पएसग्गमणन्तगं ।
गण्ठियसत्ताईयं, अन्तो सिद्धाण आहियं ॥१७॥

सव्वजीवाण कम्मं तु, संगहे छद्दिसागयं ।
सव्वेसु वि पएसेसु, सव्वं सव्वेण बद्धगं ॥१८॥

उदहीसरीस-नामाणं, तीसई कोडिकोडिओ ।
उक्कोसिया ठिई रोई, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥१९॥

आवरणिज्जाण दुण्हं पि, वेयणिज्जे तहेव य ।
अन्तराए य कम्मम्मि, ठिई एसा विपाहिया ॥२०॥

उदहीखरिस-नामाणं, सत्तरिं कोडिकोडिओ ।
मोहणिज्जस्स उक्कोसा, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥२१॥

तेत्तीससागरोवमा, उक्कोसेण वियाहिया ।
ठिई उ आउकम्मस्स, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥२२॥

उदहीसरिस-नामाणं, वीसई कोडिकोडिओ ।
नामगोत्ताणं उक्कोसा अट्ठ मुहुत्ता जहन्निया ॥२३॥

सिद्धाणभन्तभागो य, अणुभागा हवन्ति उ ।
सव्वेसु-वि पएसग्गं, सव्वजीवे अइच्छियं ॥२४॥

तम्हा एएसिं कम्माणं, अणुभागा वियाणिया ।
एएसिं संवरे चेव, खवणे य जए बुहो ॥ त्ति वेमि ॥२५॥

॥ इति कम्मप्पयडीणाम अज्झयणं समत्तं ॥३३॥

॥ अह चोत्तीसइमं लेसज्झयणं णाम ॥३४॥

लेसज्झयणं पवक्खामि, आणुपुव्विं जहक्कमं ।
छण्हं-पि कम्मलेसाणं, अणुभावे सुणेह मे ॥१॥

नामाइं वण्ण-रस-गन्ध-फास-परिणाम-लक्खणं ।
ठाणं ठिइं गइं चाउं, लेसाणं तु सुणेह मे ॥२॥

किण्हा, नीला य, काऊ य, तेऊ, पम्हा, तहेव य।
सुक्कलेसा य छट्ठा य नामाइं तु जहक्कमं ॥३॥

जीमूयनिद्धसंकासा, गवलरिट्ठगसन्निभा।
खंजांजणनयणनिभा किण्हलेसा उ वण्णओ ॥४॥

नीलासोगसंकासा, चासपिच्छसमप्पभा।
वेरुलियनिद्धसंकासा, नीललेसा उ वण्णओ ॥५॥

अयसीपुप्फसंकासा, कोइलच्छदसन्निभा।
पारेवयगीवनिभा, काऊलेसा उ वण्णओ ॥६॥

हिंगुलयधाउसंकासा, तरुणाइच्चसन्निभा।
सुयतुण्डपईवनिभा, तेऊलेसा उ वण्णओ ॥७॥

हरियालभेयसंकासा, हलिद्दाभेयसमप्पभा।
सणासणकुसुमनिभा, पम्हलेसा उ वण्णओ ॥८॥

संखककुन्दसङ्कासा, खीरपूरसमप्पभा।
रययहारसंकासा, सुक्कलेखा उ वण्णओ ॥९॥

जह कडुयतुम्बगरसो, निम्बरसो कडुयरोहिणिरसो वा।
एत्तोवि अणन्तगुणो, रसो य किण्हाए नायव्वो ॥१०॥

जह तिगडुयस्स य रसो, तिक्खो जह हत्थिपिप्पलीए वा।
एत्तोवि अणन्तगुणो, रसो उ नीलाए नायव्वो ॥११॥

जह तरुणअम्बगरसो, तुबरकविट्ठस्स वावि जारिसओ।
एत्तोवि अणन्तगुणो, रसो उ काऊए नायव्वो ॥१२॥

जह परिणयम्बगरसो, पक्ककविट्ठस्स वावि जारिसओ।
एत्तोवि अणन्तगुणो, रसो उ तेऊए नायव्वो ॥१२॥

वरवारुणीए व रसो, विविहाण व आसवाण जारिसओ।
महुमेरगस्स व रसो, पत्तो पम्हाए परएणं ॥१४॥

तव्वेसिं चेव कम्माणं, पएसग्गमणन्तगं ।
गण्ठियसत्ताईयं, अन्तो सिद्धाण आहियं ॥१७॥

सव्वजीवाण कम्मं तु, संगहे छद्दिसागयं ।
सव्वेसु वि पएसेसु, सव्वं सव्वेण बद्धगं ॥१८॥

उदहीसरीस-नामाणं, तीसई कोडिकोडिओ ।
उक्कोसिया ठिई रोई, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥१९॥

आवरणिज्जाण दुण्हं पि, वेयणिज्जे तहेव य ।
अन्तराए य कम्मम्मि, ठिई एसा विपाहिया ॥२०॥

उदहीखरिस-नामाणं, सत्तरिं कोडिकोडिओ ।
मोहणिज्जस्स उक्कोसा, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥२१॥

तेत्तीससागरोवमा, उक्कोसेण वियाहिया ।
ठिई उ आउकम्मस्स, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥२२॥

उदहीसरिस-नामाणं, वीसई कोडिकोडिओ ।
नामगोत्ताणं उक्कोसा अट्ठ मुहुत्ता जहन्निया ॥२३॥

सिद्धाणभन्तभागो य, अणुभागा हवन्ति उ ।
सव्वेसु-वि पएसग्गं, सव्वजीवे अइच्छियं ॥२४॥

तम्हा एएसिं कम्माणं, अणुभागा वियाणिया ।
एएसिं संवरे चेव, खवणे य जए बुहो ॥ त्ति बेमि ॥२५॥

॥ इति कम्मप्पयडीणाम अज्झयणं समत्तं ॥३३॥

॥ अह चोत्तीसइमं लेसज्झयणं णाम ॥३४॥

लेसज्झयणं पवक्खामि, आणुपुव्विं जहक्कमं ।
छण्हं-पि कम्मलेसाणं, अणुभावे सुणेह मे ॥१॥

नामाइं वण्ण-रस-गन्ध-फास-परिणाम-लक्खणं ।
ठाणं ठिइं गइं चाउं, लेसाणं तु सुणेह मे ॥२॥

किण्हा, नीला य, काऊ य, तेऊ, पम्हा, तहेव य ।
सुक्कलेसा य छट्ठा य नामाइं तु जहक्कमं ॥३॥

जीमूयनिद्धसंकासा, गवलरिट्ठगसन्निभा ।
खंजांजणनयणनिभा किण्हलेसा उ वण्णओ ॥४॥

नीलासोगसंकासा, चासपिच्छसमप्पभा ।
वेरुलियनिद्धसंकासा, नीललेसा उ वण्णओ ॥५॥

अयसीपुप्फसंकासा, कोइलच्छदसन्निभा ।
पारेवयगीवनिभा, काऊलेसा उ वण्णओ ॥६॥

हिंगुलयधाउसंकासा, तरुणाइच्चसन्निभा ।
सुयतुण्डपईवनिभा, तेऊलेसा उ वण्णओ ॥७॥

हरियालभेयसंकासा, हलिद्दाभेयसमप्पभा ।
सणासणकुसुमनिभा, पम्हलेसा उ वण्णओ ॥८॥

संखककुन्दसङ्कासा, खीरपूरसमप्पभा ।
रययहारसंकासा, सुक्कलेसा उ वण्णओ ॥९॥

जह कडुयतुम्बगरसो, निम्बरसो कडुयरोहिणिरसो वा ।
एत्तोवि अणन्तगुणो, रसो य किण्हाए नायव्वो ॥१०॥

जह तिगडुयस्स य रसो, तिक्खो जह हत्थिपिप्पलीए वा ।
एत्तोवि अणन्तगुणो, रसो उ नीलाए नायव्वो ॥११॥

जह तरुणअम्बगरसो, तुवरकविट्ठस्स वावि जारिसओ ।
एत्तोवि अणन्तगुणो, रसो उ काऊए नायव्वो ॥१२॥

जह परिणयम्बगरसो, पक्ककविट्ठस्स वावि जारिसओ ।
एत्तोवि अणन्तगुणो, रसो उ तेऊए नायव्वो ॥१२॥

वरवारुणीए व रसो, विविहाण व आसवाण जारिसओ ।
महुमेरगस्स व रसो, पत्तो पम्हाए परएणं ॥१४॥

खज्जूरमुद्दियरसो, खीररसो खण्डसक्कररसो वा ।
एत्तोवि अणन्तगुणो, रसो उ सुक्काए नायव्वो ॥१५॥

जह गोमडस्स गन्धो, सुणगमडस्स व जहा अहिमडस्स ।
एत्तोवि अणन्तगुणो, लेसाणं अप्पसत्थाणं ॥१६॥

जह सुरहिकुसुमगन्धो, गन्धवासाण पिस्समाणाणं ।
एत्तोवि अणन्तगुणो, पसत्थलेसाण तिण्हं पि ॥१७॥

जह करगयस्स फासो, गोजिब्भाए य सांगपत्ताणं ।
एत्तोवि अणन्तगुणो, लेसाणं अप्पसत्थाणं ॥१८॥

जह बूरस्स व फासो, नवणीयस्स व सिरीसकुसुमाणं ।
एत्तोवि अणन्तगुणो, पसत्थलेसाण तिण्हं- पि ॥१९॥

तिविहो व नवविहो वा; सत्तवीसइविहेक्कसीओ वा ।
दुसओ तेयालो वा, लेसाणं होइ परिणामो ॥२०॥

पंचासवप्पवत्तो, तीहिं अगुत्तो छसु अविरओ य ।
तिव्वारम्भपरिणओ, खुद्दो साहसिओ नरो ॥२१॥

निद्धन्धसपरिणामो, निस्संसो अजिइन्दिओ ।
एयजोगसमाउत्तो, 'किण्हलेसं' तु परिणमे ॥२२॥

इस्सा अमरिस अतवो, अविज्जमाया अहीरिया ।
गेही पओसे य सढे पमत्ते, रसलोलुए सायगवेसए ॥२३॥

आरम्भाओ अविरओ, खुद्दो साहस्सिओ नरो ।
एयजोगसमाउत्तो, 'नीललेसं' तु परिणमे ॥२४॥

वंके वंकसमायारे; नियडिले अणुज्जुए ।
पलिउंचगओवहिए, मिच्छादिट्ठी अणारिए ॥२५॥

उप्फालगदुट्ठवाई य, तेण यावि य मच्छरी ।
एयजोगसमाउत्तो, 'काऊलेसं' तु परिणमे ॥२६॥

नीयावित्ती अचवले, अमाई अकुऊहले ।
विणीयविणए दन्ते जोगवं उवहाणवं ॥२७॥

पियधम्मे दढधम्मेऽवज्जभिरू हिएसए ।
एयजोगसमाउत्तो, 'तेऊलेसं' तु परिणमे ॥२८॥

पयणुकोहमाणे य, मायालोभे य पयणए ।
पसन्तचित्ते दन्तप्पा; जोगवं उवहाणवं ॥२९॥

तहा पयणुवाई य, उवसन्ते जिइन्दिए ।
एयजोगसमाउत्तो, 'पम्हलेस' तु परिणमे ॥३०॥

अट्टरुद्दाणि वज्जित्ता, धम्मसुक्काणि झायए ।
पसन्तचित्ते दन्तप्पा, समिए गुत्ते य गुत्तिसु ॥३१॥

सरागे वीयरागे बा, उवसन्ते जिइन्दिए ।
एयजोगसमाउत्तो, 'सुक्कलेसं' तु परिणमे ॥३२॥

असंखिज्जाणोसप्पणीण, उस्सप्पिणीण जे समया ।
संखाईया लोगा; लेसाण हवन्ति ठाणाइं ॥३३॥

मुदुत्तद्धं तु जहन्ना, तेत्तीसा सागरा मुहुत्तहिया ।
उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा 'किण्हलेसाए' ॥३४॥

मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, दस उदही पलिय-मसंख भाग-मब्भिहिया ।
उक्कोसा होइ ठिई; नायव्वा 'नीललेसाए' ॥३५॥

मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, तिण्णुदही पलिय मसंख भाग मब्भहिया ।
उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा 'काउलेसाए' ॥३६॥

मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, दोण्णुदही पलिय मसंख भाग मब्भहिया ।
उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा 'तेउलेसाए' ॥३७॥

मुहुत्तद्धं तु जहन्ना; दस होन्ति य सागरा मुहुत्ताहिया ।
उक्कोसा होइ ठिई; नायव्वा 'पम्हलेसाए' ॥३८॥

मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, तेत्तीसं सागरा मुहुत्तहिया ।
उक्कोसा होइ ठिई, 'नायव्वा' सुक्कलेसाए' ॥३९॥

एसा खलु लेसाणं, ओहेण ठिई वण्णिया होइ ।
चउसु-वि गईसु एत्तो, लेसाण ठिइं तु वोच्छामि ॥४०॥

दस वाससहस्साइं, काउए ठिई जहन्निया होइ ।
तिण्णुदही पलीओवम, असंखभागं च उक्कोसा ॥४१॥

तिण्णुदही पलीओवम-असंखभागो जहन्नेण नीलठिई ।
दसउदही पलिओवम असंभागं च उक्कोसा ॥४२॥

दसउदही पलिओवम असंखभागं-जहन्निया होइ ।
तेत्तीससागराइं उक्कोसा, होइ किण्हाए लेसाए ॥४३॥

एसा नेरइयाणं, लेसाण ठिई उ वण्णिया होइ ।
तेण परं वोच्छामि, तिरियमणुस्साण देवाणं ॥४४॥

अन्तोमुहुत्तमद्धं, लेसाण ठिई जहिं जहिं जाउ ।
तिरियाण नराणं वा, वज्जित्ता केवलं लेसं ॥४५॥

मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, उक्कोसा होइ पुव्वकोडीओ ।
नवहि वरिसेहि ऊण., नायव्वा सुक्कलेसाए ॥४६॥

एसा तिरिगनराणं, लेसाण ठिई उ वण्णिया होइ ।
तेण परं वोच्छामि, लेसाण ठिई उ देवाणं ॥४७॥

दस वाससहस्साइं, किण्हाए ठिई जहन्निया होइ ।
पलियमसंखिज्जइमो, उक्कोसो होइ किण्हाए ॥४८॥

जा किण्हाए ठिई खलु, उक्कोसा सा उ समयमब्भहिया ।
जहन्नेणं नीलाए, पलियमसंखं च उक्कोसा ॥४९॥

जा नीलाए ठिई खलु, उक्कोसा सा उ समयमब्भहिया ।
जहन्नेणं काऊए, पलियमसंखं च उक्कोसा ॥५०॥

तेणं परं वोच्छामि, तेऊलेसा, जहा सुरगणाणं ।
भवणवइ–वाणमन्तर–जोइस वेमाणियाणं च ॥५१॥

पलिओवमं जहन्नं, उक्कोसा सागरा उ दुन्नहिआ ।
पलियमसंखेज्जेणं, होइ भागेण तेऊए ॥५२॥

दस वाससहस्साइं, तेऊए ठिई जहन्निआ होइ ।
दुन्नुदही पलिओवम-असंखभागं च उक्कोसा ॥५३॥

जा तेऊए ठिई खलु, उक्कोसा सा उ समयमब्भहिया ।
जहन्नेणं पम्हाए, दस मुहुत्ताहियाइ उक्कोसा ॥५४॥

जा पम्हाए ठिई खलु, उक्कोसा सा उ समयमब्भहिया ।
धहन्नेणं सुक्काए, तेत्तीस मुहुत्तमब्भहिया ॥५५॥

किण्हा, नीला, काऊ तिन्नि वि एयाओ अहम्मलेसाओ ।
एयाहि तिहिवि जीवो, दुग्गइं उववज्जई ॥५६॥

तेऊ, पम्हा, सुक्का, तिन्नि–वि एयाओ धम्मलेसाओ ।
एयाहि तिहि-वि जीवो, सुग्गइं उववज्जई ॥५७॥

लेसाहिं सव्वाहिं, पढमे समयम्मि परिणयाहिं तु ।
न हु कस्सइ उववाओ, परभवे अत्थि जीवस्स ॥५८॥

लेसाहिं सव्वाहिं, चरिमे समयम्पि परिणयहिं तु ।
न हु कस्सइ उववाओ, परभवे अत्थि जीवस्स ॥५९॥

अन्तमुहुत्तम्मि गए, अन्तमुहुत्तम्मि सेसए चेव ।
लेसाहिं परिणयाहिं, जीवा गच्छन्ति परलोयं ॥६०॥

तम्हा एयासि लेसाणं, आणुभावे वियाणिया ।
अप्पसत्थाओ वज्जित्ता, पसत्थाओऽहिट्ठिए मुणी ॥६१॥

॥ त्ति बेमि ॥ इति लेसज्झयणं समत्तं ॥३४॥

———

॥अह पंहतीसइमं अणगारज्झयणं ॥३५॥

सुणेह मे एगग्गमणा, मग्गं बुद्धेहि देसियं ।
जमायरन्तो भिक्खू, दुक्खाणन्तकरे भवे ॥१॥

गिहवासं परिच्चज्ज, पवज्जामस्सिए मुणी ।
इमे संगे वियाणिज्जा, जेहिं सज्जन्ति माणवा ॥२॥

तहेव हिंसं अलियं, चोज्जं अबम्भसेवणं ।
इच्छा-कामं च लोभं च, अञ्जओ परिवज्जए ॥३॥

मणोहरं चित्तघरं, मल्लधूवेण वासियं ।
सकवाडं पण्डुरुल्लोयं, मणसावि न पत्थए ॥४॥

इन्दियाणि उ भिक्खुस्स, तारिसम्मि उवस्सए ।
दुक्कराइं निवारेउं, कामरागविवड्ढणे ॥५॥

सुसाणे सुन्नगारे वा, रुक्खमूले व एगओ ।
पइरिक्के परकडे वा, वासं तत्थाभिरोयए ॥६॥

फासुयम्मि अणाबाहे, इत्थीहिं अणभिद्दुए ।
तत्थ संकप्पए वासं, भिक्खू परमसंजए ॥७॥

न सयं गिहाइं कुव्विज्जा, णेव अन्नेहिं कारए
गिहकम्मसमारम्भे, भूयाणं दिस्सए वहो ॥८॥

तसाणं थावराणं च, सुहुमाणं बादराण य ।
तम्हा गिहसमारम्भं, संजओ परिवज्जए ॥९॥

तहेव भत्तपाणेसु, पयणे पयावणेसु य ।
पाणभूयदयट्ठाए, न पए न पयावए ॥१०॥

जलधन्ननिस्सिया जीवा, पुढवीतणकट्ठनिस्सिया ।
हम्मन्ति भत्तपाणेसु, तम्हा भिक्खू न पयावए ॥११॥

विसप्पे सव्वओ धारे, बहुपाणिविणासणे ।
नत्थि जोइसमे सत्थे, तम्हा जोई न दीवए ॥१२॥

हिरण्णं जायरूवं च, मणसा-वि न पत्थए ।
समलेठ्ठुकंचणे भिक्खू, विरए कयविक्कए ॥१३॥

किणन्तो कइओ होइ; विक्किणन्तो य वाणिओ ।
कयविक्कयम्मि वट्टन्तो, भिक्खू-न भवइ तारिसो ॥१४॥

भिक्खियव्वं न केयव्वं, भिक्खुणा भिक्खवत्तिणा ।
कयविक्कओ महादोसा; भिक्खवत्ती सुहावहा ॥१५॥

समुयाणं उंछमेसिज्जा, जहासुत्तमणिन्दियं ।
लाभालाभम्मि संतुट्ठे, पिण्डवायं चरे मुणी ॥१६॥

अलोले न रस गिद्धे, जिब्भादन्ते अमुच्छिए ।
न रसट्ठाए भुंजिज्जा, जवणट्ठाए महामुणी ॥१७॥

अच्चणं रयणं चेव, वन्दणं पूयणं तहा ।
इड्ढीसक्कारसम्माणं, मणसा-वि न पत्थए ॥१८॥

सुक्कज्झाणं झियाएज्जा, अणियाणे अकिंचणे ।
वोसट्ठकाए विहरेज्जा, जाव कालस्स पज्जओ ॥१९॥

निज्जूहिऊण आहारं; कालधम्मे उवट्ठिए ।
जहिऊण माणुसं बोन्दिं, पहू दुक्खा विमुच्चई ॥२०॥

निम्ममे निरहंकारे, वीयरागो अणासवो ।
संपत्तो केवलं नाणं, सासयं परिणिव्वुए ॥२१॥

॥ त्ति बेमि ॥ इति अणगारज्झायणं समत्तं ॥३५॥

॥अह जीवाजीवविभत्ती-छत्तीसइमं अज्झयणं॥३६

जीवाजीवविभत्तिं, सुणेह मे एगमणा इओ ।
जं जाणिऊण भिक्खू, सम्मं जयइ संजमे ॥१॥

जीवा चेव अजीवा य, एस लोए वियाहिए।
अजीवदेसमागासे, अलोगे से वियाहिए ॥२॥

दव्वओ खेत्तओ चेव, कालओ भावसो तहा।
परूवणा तेसिं भवे, जीवाणमजीवाण य ॥३॥

रूविणो चेवऽरूवी य, अजीवा दुविहा भवे।
अरूवी दसहा वुत्ता, रूविणो य चउव्विहा ॥४॥

धम्मत्थिकाए तद्देसे, तप्पएसे य आहिए।
अहम्मे तस्स देसे य, तप्पएसे य आहिए ॥५॥

आगासे तस्स देसे य, तप्पएसे य आहिए।
अद्धासमए चेव, अरूवी दसहा भवे ॥६॥

धम्माधम्मे य दो चेव, लोगमित्ता वियाहिया।
लोगालोगे य आगासे, समए समयखेत्तिए ॥७॥

धम्माधम्मागासा, तिन्निवि एए अणाइया।
अपज्जवसिया चेव, सव्वद्धं तु वियाहिया ॥८॥

समएवि सन्तइं पप्प, एवमेव वियाहिए।
आएसं पप्प साईए, सपज्जवसिएवि य ॥९॥

खन्धा य खन्धदेसा य, तप्पएसा तहेव य।
परमाणुणो य बोधव्वा, रूविणो य चउव्विहा ॥१०॥

एगत्तेण पुहत्तेण, खन्धा य परमाणुय।
लोगेगदेसे लोए य, भइयव्वा ते उ खेत्तओ ॥११॥

सुहुमा सव्वलोगम्मि, लोगदेसे य बायरा।
इत्तो कालविभाग तु, तेसिं वुच्छं चउव्विहं ॥१२॥

संतइं पप्प णाईया, अपज्जवयसियावि य।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसिया-वि य ॥१३॥

असंखकालमुक्कोसं, एक्को समओ जहन्नयं ।
अजीवाण य रूवीणं, ठिई एसा वियाहिया ॥१४॥

अणन्तकालमुक्कोसं, एक्को समओ जहन्नयं ।
अजीवाण य रूवीणं, अन्तरेयं वियाहियं ॥१५॥

वण्णओ गन्धवो चेव, रसओ फासओ तहा ।
संठाणओ य विन्नेओ, परिणामो तेसिं पंचहा ॥१६॥

वण्णओ परिणया जे उ, पञ्चहा ते पकित्तिया ।
किण्हा नीला य लोहिया, हालिद्दा सुक्किला तहा ॥१७॥

गन्धओ परिणया जे उ, दुविहा ते वियाहिया ।
सुब्भिगन्धपरिणामा, दुब्भिगन्धा तहेव य ॥१८॥

रसओ परिणया जे उ, पञ्चहा ते पकित्तिया ।
तित्तकडुयकसाया, अम्बिला महुरा तहा ॥१९॥

फासओ परिणया जे उ, अट्ठहा ते पकित्तिया ।
कक्खडा मउआ चेव, गरुया लहुया तहा ॥२०॥

सीया उण्हा य निद्धा य, तहा लुक्खा य आहिया ।
इय फासपरिणया एए, पुग्गला समुदाहिया ॥२१॥

संठाणओ परिणया जे उ, पञ्चहा ते पकित्तिया ।
परिमण्डला य वट्टा य, तंसा चउरंसमायया ॥२२॥

वण्णओ जे भवे किण्हे, भइए से उ गन्धओ ।
रसओ फासओ चेव, भइए संठाणओवि य ॥२३॥

वण्णओ जे भवे नीले, भइए से उ गन्धओ ।
रसओ फासओ चेव, भइए संठाणओवि य ॥२४॥

वण्णओ लोहिए जे उ, भइए से उ गन्धओ ।
रसओ फासओ चेव, भइए संठाणओवि य ॥२५॥

वण्णओ पीयए जे उ, भइए से उ गन्धओ ।
रसओ फासओ चेव, भइए संठाणओवि य ॥२६॥

वण्णओ सुक्किले जे उ, भइए से उ गन्धओ ।
रसओ फासओ चेव, भइए संठाणओवि य ॥२७॥

गन्धओ जे भवे सुब्भी, भइए से उ वण्णओ ।
रसओ फासओ चेव, भइए संठाणओवि य ॥२८.।

गन्धओ जे भवे दुब्भी, भइए से उ वण्णओ ।
रसओ फासओ चेव, भइए संठाणओवि य ॥२६॥

रसओ तित्तए जे उ, भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ फासओ चेव, भइए संठाणओवि य ॥३०॥

रसओ कडुए जे उ, भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ फासओ चेव, भइए संठाणओवि य ॥३१॥

रसओ कसाए जे उ, भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ फासओ चेव, भइए संठाणओवि य ॥३२॥

रसओ अम्बिले जे उ, भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ फासओ चेव, भइए संठाणओवि य ॥३३॥

रसओ महुरए जे उ, भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ फासओ चेव, भइए संठाणओवि य ॥३४॥

फासओ कक्खडे जे उ, भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ रसओ चेव, भइए संठाणओवि य ॥३५॥

फासओ मउए जे उ, भइ५ से उ वण्णओ ।
गन्धओ रसओ चेव, भइए संठाणओवि य ॥३६॥

फासओ गुरुए जे उ, भइए से वण्णओ ।
गन्धचो रसओ चेव, भइए संठाणओवि य ॥३७॥

फासओ लहुए जे उ; भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ रसओ चेव, भइए संठाणओवि य ॥३८॥

फासओ सीयए जे उ, भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ रसओ चेव, भइए संठाणओवि य ॥३९॥

फासओ उण्हए जे उ, भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ रसओ चेव, भइए संठाणओवि य ॥४०॥

फासओ निद्धए जे उ, भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ रसओ चेव, भइए संठाणओवि य ॥४१॥

फासओ लुक्खए जे उ, भइए से उ वण्णओ य ।
गन्धओ रसओ चेव, भइए संठाणओवि य ॥४२॥

परिमंडलसंठाणे, भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ रसओ चेव, भइए से फासओवि य ॥४३॥

संठाणओ भवे वट्टे, भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ रसओ चेव, भइए से फासओवि य ॥४४॥

संठाणओ भवे तंसे, भवए से उ वण्णओ ।
गन्धओ रसओ चेव, भइए से फासओवि य ॥४५॥

संठाणओ जे चउरंसे, भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ रसओ चेव, भइए से फासओवि य ॥४६॥

जे आययसंठाणे; भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ रसओ चेव, भइए से फासओवि य ॥४७॥

एसा आजीवविभत्ती, समासेण वियाहिया ।
इत्तो जीवविभत्ती, वुच्छामि अणुपुव्वसो ॥४८॥

संसारत्था य सिद्धा य, दुविहा जीवा वियाहिया ।
सिद्धाणेगविहा वुत्ता; तं मे कित्तयओ सुण ॥४९॥

इत्थी पुरिससिद्धा य, तहेव य नपुंसगा ।
सलिंगे अन्नलिंगे य, गिहिलिंगे तहेव य ||५०||

उक्कोसोगाहणाए य, जहन्नमज्झिमाइ य ।
उड्ढं अहे य तिरियं च, समुद्दम्मि जलम्मि य ||५१||

दस य नपुंसएसु, वीसं इत्थियासु य ।
पुरिसेसु य अट्ठसयं, समएणेगेण सिज्झई । ||५२||

चत्तारि य गिहलिंगे, अन्नलिंगे दसेव य ।
सलिंगेण अट्ठसयं, समएणेगेण सिज्झई ||५३||

उक्कोसोगाहणाए य, सिज्झन्ते जुगवं दुवे ।
चत्तारि जहन्नाए, मज्झे अट्ठुत्तरं सयं ||५४||

चउरुड्ढलोए य दुवे समुद्दे, तओ जणे वीसमहे तहेव य ।
सयं च अट्ठुत्तरं तिरियलोए, समएणेगेण सिज्झई धुवं ||५५||

कहिं पडिहया सिद्धा, कहिं सिद्धा पइट्ठिया ।
कहिं बोन्दिं चइत्ताणं, कत्थ गन्तूण सिज्झई ||५६||

अलोए पडिहया सिद्धा, लोगग्गे य पइट्ठिया ।
इहं बोन्दिं चइत्ताणं, तत्थ गन्तूण सिज्झई ||५७||

बारसहिं जोयणेहिं; सव्वट्ठस्सुवरिं भवे ।
ईसिपब्भारनामा उ; पुढवी छत्तसंठिया ||५८||

पणयालसयसहस्सा; जोयणाणं तु आयया ।
तावइयं चेव वित्थिण्णा; तिगुणो साहिय परिरओ ||५९||

अट्ठजोयणबाहुला सा; मज्झम्मि वियाहिया ।
परिहायन्ती चरिमन्ते; मच्छियपत्ताउ तणुयरी ||६०||

अज्जुणसुवण्णगमई; सा पुढवी निम्मला सहावेण ।
उत्ताणगच्छत्तगसंठिया य; भणिया जिणवरेहिं ||६१||

संखंककुंदसंकासा; पण्डुरा निम्मला सुहा ।
सीयाए जोयणे तत्तो, लोयन्तो उ वियाहियो ॥६२॥

जोयणस्स उ जो तत्थ, कोसा उवरिमो भवे ।
तस्स कोसस्स छब्भाए, सिद्धाणोगाहणा भवे ॥६३॥

तत्थ सिद्धा महाभागा, लोगग्गम्मि पइट्ठिया ।
भवपपंचओ मुक्का, सिद्धिं वरगइं गया ॥६४॥

उस्सेहो जस्स जो होइ, भवम्मि चरिमम्मि उ ।
तिभागहीणो तत्तो य, सिद्धाणोगाहणा भवे ॥६५॥

एगत्तेण साईया; अपज्जवसियावि य ।
पुहत्तेण अणाइया; अपज्जवसियावि य ॥६६॥

अरूविणो जीवघणा; नाणदंसणसन्निया ।
अउलं सुहं संपन्ना; उवमा जस्स नत्थि उ ॥६७॥

लोगेगदेसे ते सव्वे; नाणदंसणसन्निया ।
संसारपारनित्थिण्णा; सिद्धिं वरगइं गया ॥६८॥

संसारत्था उ जे जीवा; दुविहा ते वियाहिया ।
तसा य थावरा चेव; थावरा तिविहा तहिं ॥६९॥

पुढवी आउजीवा य, तहेव य वणस्सई ।
इच्चेए थावरा तिविहा; तेसिं भेए सुणेह मे ॥७०॥

दुविहा पुढवीजीवा य; सुहुमा बायरा तहा ।
पज्जत्तमपज्जत्ता, एवमेए दुहा पुणो ॥७१॥

बायरा जे उ पज्जता; दुविहा ते वियाहिया ।
सण्हा खरा य बोधव्वा, सण्हा सत्तविहा तहिं ॥७२॥

किण्हा नीला य रुहिरा य; हालिद्दा सुक्किला तहा ।
पण्डुपणगमट्टिया, खरा छत्तीसईविहा ॥७३॥

इत्थी पुरिससिद्धा य, तहेव य नपुंसगा।
सलिंगे अन्नलिंगे य, गिहिलिंगे तहेव य ॥५०॥

उक्कोसोगाहणाए य, जहन्नमज्झिमाइ य।
उड्ढं अहे य तिरियं च, समुद्दम्मि जलम्मि य ॥५१॥

दस य नपुंसएसु, वीसं इत्थियासु य।
पुरिसेसु य अट्ठसयं, समएणेगेण सिज्झई। ॥५२॥

चत्तारि य गिहलिंगे, अन्नलिंगे दसेव य।
सलिंगेण अट्ठसयं, समएणेगेण सिज्झई ॥५३॥

उक्कोसोगाहणाए य, सिज्झन्ते जुगवं दुवे।
चत्तारि जहन्नाए, मज्झे अट्ठुत्तरं सयं ॥५४॥

चउरुड्ढलोए य दुवे समुद्दे, तओ जणे वीसमहे तहेव य।
सयं च अट्ठुत्तरं तिरियलोए, समएणेगेण सिज्झई धुवं ॥५५॥

कहिं पडिहया सिद्धा, कहिं सिद्धा पइट्ठिया।
कहिं बोन्दिं चइत्ताणं, कत्थ गन्तूण सिज्झई ॥५६॥

अलोए पडिहया सिद्धा, लोयग्गे य पइट्ठिया।
इहं बोन्दिं चइत्ताणं, तत्थ गन्तूण सिज्झई ॥५७॥

बारसहिं जोयणेहिं; सव्वट्ठस्सुवरिं भवे।
ईसिपब्भारनामा उ; पुढवी छत्तसंठिया ॥५८॥

पणयालसयसहस्सा; जोयणाणं तु आयया।
तावइयं चेव वित्थिण्णा; तिगुणो साहिय परिरओ ॥५९॥

अट्ठजोयणबाहुला सा; मज्झम्मि वियाहिया।
परिहायन्ती चरिमन्ते; मच्छिपत्ताउ तणुयरी ॥६०॥

अज्जुणसुवण्णगमई; सा पुढवी निम्मला सहावेण।
उत्ताणगच्छत्तगसंठिया य; भणिया जिणवरेहिं ॥६१॥

संखंककुंदसंकासा; पण्डुरा निम्मला सुहा ।
सीयाए जोयणे तत्तो, लोयन्तो उ वियाहियो ॥६२॥

जोयणस्स उ जो तत्थ, कोसा उवरिमो भवे ।
तस्स कोसस्स छब्भाए, सिद्धाणोगाहणा भवे ॥६३॥

तत्थ सिद्धा महाभागा, लोगग्गम्मि पइट्ठिया ।
भवपपंचओ मुक्का, सिद्धिं वरगइं गया ॥६४॥

उस्सेहो जस्स जो होइ, भवम्मि चरिमम्मि उ ।
तिभागहीणो तत्तो य, सिद्धाणोगाहणा भवे ॥६५॥

एगत्तेण साईया; अपज्जवसियावि य ।
पुहत्तेण अणाइया; अपज्जवसियावि य ॥६६॥

अरूविणो जीवघणा; नाणदंसणसन्निया ।
अउलं सुहं संपन्ना; उवमा जस्स नत्थि उ ॥६७॥

लोगेगदेसे ते सव्वे; नाणदंसणसन्निया ।
संसारपारनित्थिण्णा; सिद्धिं वरगइं गया ॥६८॥

संसारत्था उ जे जीवा; दुविहा ते वियाहिया ।
तसा य थावरा चेव; थावरा तिविहा तहिं ॥६९॥

पुढवी आउजीवा य, तहेव य वणस्सई ।
इच्चेए थावरा तिविहा; तेसिं भेए सुणेह मे ॥७०॥

दुविहा पुढवीजीवा य; सुहुमा बायरा तहा ।
पज्जत्तमपज्जत्ता, एवमेए दुहा पुणो ॥७१॥

बायरा जे उ पज्जता; दुविहा ते वियाहिया ।
सण्हा खरा य बोधव्वा, सण्हा सत्तविहा तहिं ॥७२॥

किण्हा नीला य रुहिरा य; हालिद्दा सुक्किला तहा ।
पण्डुपणगमट्टिया, खरा छत्तीसईविहा ॥७३॥

हिरिली सिरिली सस्सिरिली, जावई के य कन्दली ।
पलण्डु लसणकन्दे य, कन्दली य कुडुवए ॥६८॥

लोहिणी हूयथी हय, कुहगा य तहेव य ।
किण्हे य वज्जकन्दे य, कन्दे सूरणए तहा ॥६६॥

अस्सकण्णी य बोधव्वा, सीहकण्णी तहेव य ।
मुसुण्ढी य हलिद्दा य, णेगहा एवमायओ ॥१००॥

एगविहमणाणत्ता, सुहुमा तत्थ वियाहिया ।
सुहुमा सव्वलोगम्मि, लोगदेसे य बायरा ॥१०१॥

संतइं पप्पणाईया, अपज्जवसियावि य ।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसियावि य ॥१०२॥

दस चेव सहस्साइं; वासाणुक्कोसिया भवे ।
वणस्सईण आउं तु, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥१०३॥

अणन्तकालमुक्कोसं; अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
कायठिई पणगाणं, तं कायं तु अमुचओ ॥१०४॥

असंखकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
विजढम्मि सए काए, पणगजीवाण अन्तरं ॥१०५॥

एएसिं वण्णओ चेव, गन्धओ रसफासओ ।
संठाणदेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥१०६॥

इच्चेए थावरा तिविहा, समासेण वियाहिया ।
इत्तो उ तसे तिविहे, वुच्छामि अणुपुव्वसो ॥१०७॥

तेऊ वाऊ य बोधव्वा, उराला य तसा तहा ।
इच्चेए तसा तिविहा, तेसिं भेए सुणेह मे ॥१०८॥

दुविहा तेऊजीवा उ, सुहुमा बायरा तहा ।
पज्जत्तमपज्जत्ता, एवमेए दुहा पुणो ॥१०६॥

बायरा जे उ पज्जत्ता, णेगहा ते वियाहिया ।
इंगाले मुम्मुरे अगणी, अच्चिजाला तहेव य ॥११०॥

उक्काबिज्जू य बोधव्वा, णेगहा एवमायओ ।
एगविहमणाणत्ता, सुहुमा ते वियाहिया ॥१११॥

सुहुमा सव्वलोगम्मि, लोगदेसे य बायरा ।
इत्तो कालविभागं तु, तेसिं वुच्छं चउव्विहं ॥११२॥

संतइं पप्पणाईया, अपज्जवसियावि य ।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसियावि य ॥११३॥

तिण्णेव अहोरत्ता, उक्कोसेण वियाहिया ।
आउठिई तेऊणं, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥११४॥

असंखकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
कायठिई तेऊणं, तं कायं तु अमुञ्चओ ॥११५॥

अणन्तकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
विजढम्मि सए काए, तेउजीवाण अन्तरं ॥११६॥

एएसिं वण्णओ चेव, गन्धओ रसफासओ ।
संठाणदेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥११७॥

दुविहा वाउजीवा उ, सुहुमा बायरा तहा ।
पज्जत्तमपज्जत्ता, एवमेए दुहा पुणो ॥११८॥

बायरा जे उ पज्जत्ता, पञ्चहा ते पकित्तिया ।
उक्कलिया मण्डलिया, घणगुञ्जा सुद्धवाया य ॥११९॥

संवट्टगवाया य, णेगहा एवमायओ ।
एगविहमणाणत्ता, सुहुमा तत्थ विआहिआ ॥१२०॥

सुहुमा सव्वलोगम्मि, लोगदेसे य वायरा ।
इत्तो कालविभागं तु, तेसिं वुच्छं चउव्विहं ॥१२१॥

पुढवी य सक्करा वालुया, उवले सीला य लोणूसे ।
अय-तम्ब तउय-सीसग रुप्प-सुवण्णे य वइरे य ॥७४॥

हरियाले हिंगुलुए, मणोसिला सासगंजण पवाले ।
अब्भपडलब्भवालुय, वायरकाए मणिविहाणे ॥७५॥

गोमेज्जए य रुयगे; अंके फलिहे य लोहियक्खे य ।
मरगय-मसारगल्ले, भुयमोयग-इन्दनीले य ॥७६॥

चन्दण-गेरुय हंसगब्भे, पुलए सोगन्धिए य बोधव्वे ।
चन्दप्पहवेरुलिए, जलकन्ते सूरकन्ते य ॥७७॥

एए खरपुढवीए, भेया छत्तीसमाहिया ।
एगविहमणाणत्ता, सुहुमा तत्थ वियाहिया ॥७८।

सुहुमा सव्वलोगम्मि, लोगदेसे य वायरा ।
इत्तो कालविभागं तु, तेसिं वुच्छं चउव्विहं ॥७९॥

संतइं पप्पणाईया, अपज्जवसियाविय ।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसियावि य ॥८०॥

बावीससहस्साइं, वासाणुक्कोसीया भवे ।
आउठिई पुढवीणं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ॥८१॥

असंखकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
कायठिई पुढवीणं, तं कायं तु अमुंचओ ॥८२॥

अणन्तकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
विजढम्मि सए काए, पुढविजीवाण अन्तरं ॥८३॥

एएसिं वण्णओ चेव, गन्धओ रसफासओ ।
संठाणदेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥८४॥

दुविहा आऊजीवा उ, सुहुमा वायरा तहा ।
पज्जत्तमपज्जत्ता, एवमेए दुहा पुणो ॥८५॥

वायरा जे उ पज्जत्ता, पंचहा ते पकित्तिया ।
सुद्धोदए य उस्से, हरतणु महिया हिमे ॥८६॥

एगविहमणाणत्ता, सुहुमा तत्थ वियाहिया ।
सुहुमा सव्वलोगम्मि, लोगदेसे य वायरा ॥८७॥

सन्तइं पप्प-णाईया, अपज्जवसियावि य ।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसियावि य ॥८८॥

सत्तेव सहस्साइं, वासाणुक्कोसिया भवे ।
आउठिई आऊणं, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥८९॥

असंखकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
कायट्ठिई आऊणं, तं कायं तु अमुञ्चओ ॥९०॥

अणन्तकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
विजढम्मि सए काए, आऊजीवाण अन्तरं ॥९१॥

एएसि वण्णओ चेव, गन्धओ रसफासओ ।
संठाणदेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥९२॥

दुविहा वणस्सईजीवा, सुहुमा बायरा तहा ।
पज्जत्तमपज्जत्ता, एवमेए दुहा पुणो ॥९३॥

बायरा जे उ पज्जत्ता, दुविहा ते वियाहिया ।
साहारणसरीरा य, पत्तेगा य तहेव य ॥९४॥

पत्तेगसरीराओऽणेगहा ते पकित्तिया ।
रुक्खागुच्छा य गुम्मा य, लया वल्ली तणा तहा ॥९५॥

वलय पव्वगा कुहुणा, जलरूहा ओसही तहा ।
हरियकाया बोधव्वा, पत्तेगाइ वियाहिया ॥९६॥

साहारणसरीराओऽणेगहा गे पकित्तिया ।
आलुए मूलए चेव, सिंगबेरे तहेव य ॥९७॥

हिरिली सिरिली सस्सिरिली, जावई के य कन्दली ।
पलण्डु लसणकन्दे य, कन्दली य कुडुवए ॥९८॥

लोहिणी हूयथी हय, कुहगा य तहेव य ।
किण्हे य वज्जकन्दे य, कन्दे सूरणए तहा ॥९९॥

अस्सकण्णी य बोधव्वा, सीहकण्णी तहेव य ।
मुसुण्ढी य हलिद्दा य, णेगहा एवमायओ ॥१००॥

एगविहमणाणत्ता, सुहुमा तत्थ वियाहिया ।
सुहुमा सव्वलोगम्मि, लोगदेसे य बायरा ॥१०१॥

संतइं पप्पणाईया, अपज्जवसियावि य ।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसियावि य ॥१०२॥

दस चेव सहस्साइं, वासाणुक्कोसिया भवे ।
वणस्सईण आउं तु, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥१०३॥

अणन्तकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
कायठिई पणगाणं, तं कायं तु अमुंचओ ॥१०४॥

असंखकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
विजढम्मि सए काए, पणगजीवाण अन्तरं ॥१०५॥

एएसिं वण्णओ चेव, गन्धओ रसफासओ ।
संठाणदेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥१०६॥

इच्चेए थावरा तिविहा, समासेण वियाहिया ।
इत्तो उ तसे तिविहे, वुच्छामि अणुपुव्वसो ॥१०७॥

तेऊ वाऊ य बोधव्वा, उराला य तसा तहा ।
इच्चेए तसा तिविहा, तेसिं भेए सुणेह मे ॥१०८॥

दुविहा तेऊजीवा उ, सुहुमा बायरा तहा ।
पज्जत्तमपज्जत्ता, एवमेए दुहा पुणो ॥१०९॥

बायरा जे उ पज्जत्ता, णेगहा ते वियाहिया ।
इंगाले मुम्मुरे अगणी, अच्चिजाला तहेव य ॥११०॥

उक्काविज्जू य बोधव्वा, णेगहा एवमायओ ।
एगविहमणाणत्ता, सुहुमा ते वियाहिया ॥१११॥

सुहुमा सव्वलोगम्मि, लोगदेसे य बायरा ।
इत्तो कालविभागं तु, तेसिं वुच्छं चउव्विहं ॥११२॥

संतइं पप्पणाईया, अपज्जवसियावि य ।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसियावि य ॥११३॥

तिण्णेव अहोरत्ता, उक्कोसेण वियाहिया ।
आउठिई तेऊणं, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥११४॥

असंखकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
कायठिई तेऊणं, तं कायं तु अमुञ्चओ ॥११५॥

अणन्तकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
विजढम्मि सए काए, तेउजीवाण अन्तरं ॥११६॥

एएसिं वण्णओ चेव, गन्धओ रसफासओ ।
संठाणदेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥११७॥

दुविहा वाउजीवा उ, सुहुमा बायरा तहा ।
पज्जत्तमपज्जत्ता, एवमेए दुहा पुणो ॥११८॥

बायरा जे उ पज्जत्ता, पञ्चहा ते पकित्तिया ।
उक्कलिया मण्डलिया, घणगुञ्जा सुद्धवाया य ॥११९॥

संवट्टगवाया य, णेगहा एवमायओ ।
एगविहमणाणत्ता, सुहुमा तत्थ विआहिआ ॥१२०॥

सुहुमा सव्वलोगम्मि, लोगदेसे य बायरा ।
इत्तो कालविभागं तु, तेसिं वुच्छं चउव्विहं ॥१२१॥

सन्तइं पप्प-णाईया, अपज्जवसियावि य ।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसियावि य ॥१२२॥

तिण्णेव सहस्साइं, वासाणुक्कोसिया भवे ।
आउठिई वाऊणं, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥१२३॥

असंखकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
कायठिई वाऊणं, तं कायं तु अमुञ्चओ ॥१२४॥

अणन्तकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
विजढम्मि सए काए, वाऊजीवाण अन्तरं ॥१२५॥

एएसिं वण्णओ चेव, गन्धओ रसफासओ ।
संठाणदेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥१२६॥

उराला तसा जे उ, चउला ते पकित्तिया ।
वेइन्दिय तेइन्दिय, चउरो पंचिन्दिया चेव ॥१२७॥

वेइन्दिया उ जे जीवा, दुविहा ते पकित्तिया ।
पज्जत्तमपज्जत्ता, तेसिं भेए सुणेह मे ॥१२८॥

किमिणो सोमंगला चेव, अलसा माइवाहया ।
वासीमुहा य सिप्पिया, संखा संखणगा तहा ॥१२९॥

पल्लोयाणुल्लया चेव, तहेव य वराडगा ।
जलूगा जालगा चेव, चन्दणा य तहेव य ॥१३०॥

इइ वेइन्दिया एएऽणेगहा एवमायओ ।
लोगेगदेसे ते सव्वे, न सव्वत्थ वियाहिया ॥१३१॥

संतइं पप्प-णाईया, अपज्जवसियावि य ।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसियावि य ॥१३२॥

वासाइं वारसा चेव, उक्कोसेण वियाहिया ।
वेइन्दिय आउठिई, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥१३३॥

संखिज्जकालमुक्कोसं; अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
बेइन्दियकायठिई; तं कायं तु अमुञ्चओ ॥१३४॥

अणन्तकालमुक्कोसं; अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
बेइन्दियजीवाणं, अन्तरं च वियाहियं ॥१३५॥

एएसिं वण्णओ चेव, गन्धओ रसफासओ ।
संठाणदेसओ वावि, विहाणाई सहस्ससो ॥१३६॥

तेइन्दिया उ जे जीवा, दुविहा ते पकित्तिया ।
पज्जत्तमपज्जत्ता; तेसिं भेए सुणेह मे ॥१३७॥

कुन्थुपिवीलिउदंसा; उक्कलुद्देहिया तहा ।
तणहारकट्ठहारा य; मालूगा पत्तहारगा ॥१३८॥

कप्पासट्ठिम्मिजा या; तिंदुगा तउसमिंजगा ।
सदावरी य गुम्मी य, बोधव्वा इन्दगाइया ॥१३९॥

इन्दगोवगमाईया-णेगहा एवमायओ ।
लोगेगदेसे ते सव्वे; न सव्वत्थ वियाहिया ॥१४०॥

संतइं पप्प-णाईया; अपज्जवसियावि य ।
ठिइं पडुच्च साईया; सपज्जवसियावि य ॥१४१॥

एगूणपण्णहोरत्ता; उक्कोसेण वियाहिया ।
तेइन्दियआउठिई; अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥१४२॥

संखिज्जकालमुक्कोसं; अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
तेइन्दियकायठिई; तं कायं तु अमुञ्चओ ॥१४३॥

अणन्तकालमुक्कोसं; अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
तेइन्दियजीवाणं; अन्तरं च वियाहिया ॥१४४॥

एएसिं वण्णओ चेवः गन्धओ रसफासओ ।
संठाणदेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥१४५॥

चउरिन्दिया उ जे जीवा, दुविहा ते पकित्तिया ।
पज्जत्तमपज्जत्ता, तेसिं भेए सुणेह मे ॥१४६॥

अन्धिया पोत्तिया चेव, मच्छिया मसगा तहा ।
भमरे कीडपयंगे य, ढिंकुणे कंकणे तहा ॥१४७॥

कुक्कुडे सिंगरीडी य, नन्दावत्ते य विच्छिए ।
डोले भिंगारी य, विरली अच्छिवेहए ॥१४८॥

अच्छिले माहए अच्छि, रोडए विचित्ते चित्तपत्तए ।
उहिंजलिया जलकारी य, नीयया तंबगाइया* ॥१४९॥

इय चउरिन्दिया एए, ऽणेगहा एवमायओ ।
लोगेगदेसे ते सव्वे, न सव्वत्थ वियाहिया ॥१५०॥

संतइं पप्प-णाईया, अपज्जवसियावि य ।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसियावि य ॥१५१॥

छच्चेव य मासाऊ, उक्कोसेण वियाहिया ।
चउरिन्दियआउठिई, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥१५२॥

संखिज्जकालमुक्कोसं, अन्तो मुहुत्तं जहन्नयं ।
चउरिन्दियकायठिई, तं कायं तु अमुञ्चओ ॥१५३॥

अणन्तकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
विजढम्मि सए काए, अन्तरं च वियाहियं ॥१५४॥

एएसिं वण्णओ चेव, गन्धओ रसफासओ ।
संठाणदेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥१५५॥

पंचिन्दिया उ जे जीवा, चउविहा ते वियाहिया ।
नेरइया तिरिक्खा य, मणुया देवा य चाहिया ॥१५६॥

---

* लोगस्स एगदेसंमि, ते सव्वे परिकित्तिया ।

नेरइया सत्तविहा, पुढवीसु सत्तसु भवे ।
रयणाभा सक्कराभा, वालुयाभा य आहिया ॥१५७॥

पंकाभा धूमाभा, तमा तमतमा तहा ।
इइ नेरइया एए, सत्तहा परिकित्तिया ॥१५८॥

लोगस्स एगदेसम्मि, ते सव्वेउ वियाहिया ।
एत्तो कालविभागं तु, तेसिं वोच्छं चउव्विहं ॥१५९॥

संतइं पप्प-णाईया, सपज्जवसियावि य ।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसियावि य ॥१६०॥

सागरोवममेगं तु, उक्कोसेण वियाहिया ।
पढमाए जहन्नेणं, दसवाससहस्सिया ॥१६१॥

तिण्णेव सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया ।
दोच्चाए जहन्नेणं, एगं तु सागरोवमं ॥१६२॥

सत्तेव सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया ।
तइयाए जहन्नेणं, तिण्णेव सागरोवमा ॥१६३॥

दससागरोवमा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया ।
चउत्थीए जहन्नेणं, सत्तेव सागरोवमा ॥१६४॥

सत्तरस-सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया ।
पंचमाए जहन्नेणं; दस चेव सागरोवमा ॥१६५॥

बावीस सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया ।
छट्ठीए जहन्नेणं, सत्तरस सागरोवमा ॥१६६॥

तेत्तीस-सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया ।
सत्तमाए जहन्नेणं, बावीसं सागरोवमा ॥१६७॥

जा चेव य आउठिई, नेरइयाणं वियाहिया ।
सा तेसिं कायठिई, जहन्नुक्कोसिया भवे ॥१६८॥

अणन्तकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
विजढम्मि सए काए, नेरइयाणं तु अन्तरं ॥१६९॥

एएसिं वण्णओ चेव, गन्धओ रसफासओ ।
संठाणदेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥१७०॥

पंचन्दियतिरिक्खाओ, दुविहा ते वियाहिया ।
समुच्छिमतिरिक्खाओ, गब्भवक्कन्तिया तहा ॥१७१॥

दुविहा ते भवे तिविहा, जलयरा थलयरा तहा ।
खहयरा य बोधव्वा; तेसिं भेए सुणेह मे ॥१७२॥

मच्छा य कच्छभा य, गाहा य मगरा तहा ।
सुंसुमारा य बोधव्वा, पंचहा जलयराहिया ॥१७३॥

लोएगदेसे ते सव्वे, न सव्वत्थ वियाहिया ।
एत्तो कालविभागं तु, तेसिं वोच्छं चउव्विहं ॥१७४॥

संतइं पप्प-णाईया, अपज्जवसियावि य ।
ठिइं पडुच्च साईया, अपज्जवसियावि य ॥१७५॥

एगा य पुव्वकोडी, उक्कोसेण वियाहिया ।
आउठिई जलयराणं, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥१७६॥

पुव्वकोडिपुहत्तं तु, उक्कोसेण वियाहिया ।
कायठिई जलयराणं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ॥१७७॥

अणन्तकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
विजढम्मि सए काए, जलयरायणं अन्तरं ॥१७८॥

एएसिं वण्णओ चेव, गन्धओ रसफासओ ।
संठाणदेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥१७९॥

चउप्पया य परिसप्पा, दुविहा थलयरा भवे ।
चउप्पया चउविहा, तं मे कित्तयओ सुण ॥१८०॥

एगखुरा दुखुरा चेव, गण्डीपयसणप्पया ।
हयमाइ गोणमाइ, गयमाइ-सीहमाइणो ॥१८१॥

भुओरग परिसप्पा य, परिसप्पा दुविहा भवे ।
गोहाई अहिमाई य, एक्केक्काऽणेगहा भवे ॥१८२॥
लोएगदेसे ते सव्वे, न सव्वत्थ वियाहिया ।
एत्तो कालविभागं तु, तेसिं[1] वोच्छं[2] चउव्विहं ॥१८३॥
संतइं पप्प-णाईया, अपज्जवसियावि य ।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसियावि य ॥१८४॥
पलिओवमाइं तिण्णि उ, उक्कोसेण वियाहिया ।
आउठिई थलयराण, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥१८५॥
पलिओवमाइ तिण्णि उ, उक्कोसेण उ साहिया ।
विजढम्मि सए काए, खहयराणं तु अन्तरं ॥१८६॥
पुव्वकोडिपुहत्तेणं, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ।
कायठिई थलयराणं, अन्तर तेसिमं भवे ॥१८७॥
कालमणन्तमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
विजढम्मि सए काए, थलयराणं तु अन्तरं ॥१८८॥
चम्मे उ लोमपक्खी य, तइया समुग्गपक्खिया ।
विजयपक्खी य बोधव्वा, पक्खिणो य चउव्विहा ॥१८९॥
लोगेगदेसे ते सव्वे, न सव्वत्थ वियाहिया ।
इत्तो कालविभागं तु, तेसिं वोच्छं चउव्विहं ॥१९०॥
संतइं पप्प-णाईया, अपज्जवसियावि य ।
ठिई पडुच्च साईया, सपज्जवसियावि य ॥१९१॥
पलिओवमस्स भागो, असंखेज्जइमो भवे ।
आउठिई खहयराणं, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥१९२॥
असंखभागं पलियस्स, उक्कोसेण उ साहिया ।
पुव्वकोडीपुहत्तेणं, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया
विजढम्मि सए काए, खहयराणं तु अन्तरं ॥१९३॥
कायठिई खहयराणं, अन्तरं तेसिमं भवे ।
अणन्तकालमुक्कोसं; अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ॥१९४॥

एएसिं वण्णआ चेव, गन्धओ रसफासओ ।
संठाणदेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥१९५॥

मणुया दुविहभेया उ, ते मे कित्तयओ सुण ।
संमुच्छिमा य मणुया, गब्भवक्कन्तिया तहा ॥१९६॥

गब्भवक्कन्तिगा जे उ, तिविहा ते वियाहिया ।
कम्मअकम्मभूमा य, अन्तरद्दीवया तहा ॥१९७॥

पन्नरस तीसविहा, भेया दु अट्ठवीसइं ।
संखा उ कमसो तेसिं, इई एसा वियाहिया ॥१९८॥

संमुच्छिमाण एसेव, भेओ होइ वियाहिओ ।
लोगस्स एगदेसम्मि, ते सव्वे वि वियाहिया ॥१९९॥

संतइं पप्प-णाईया, अपज्जवसियावि य ।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसियावि य ॥२००॥

पलिओवमाउ तिन्नि त्रि, उक्कोसेण विआहिया ।
आउठिई मणुयाणं, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥ २०१॥

पलिओवमाइं तिण्णि उ, उक्कोसेण उ वियाहिया ।
पुव्वकोडिपुहत्तेणं; अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥२०२॥

कायठिई मणुयाणं, अन्तरं तेसिमं भवे ।
अणन्तकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं
विजढम्मि सए काए, मणुयाण तु अन्तरं ॥२०३॥

एएसिं वण्णओ चेव, गन्धओ रस फासओ ।
संठाणदेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥२०४॥

देवा चउव्विहा वुत्ता, ते मे कित्तयओ सुण ।
भोमिज्ज-वाणमन्तर-जोइस-वेमाणिया तहा ॥२०५॥

दसहा उ भवणवासी, अट्ठहा वाणचारिणो ।
पंचविहा जोइसिया, दुविहा वेमाणिया तहा ॥२०६॥

असुरा नागसुवण्णा, विज्जू अग्गी वियाहिया ।
दीवोदहिदिसा वाया, थणिया भवणवासिणो ॥२०७॥

पिसायभूया जक्खा य, रक्खसा किन्नरा किंपुरिसा ।
महोरगा य गन्धव्वा, अट्ठविहा वाणमन्तरा ॥२०८॥

चन्दा सूरा य नक्खत्ता, गहा तारागणा तहा ।
ठिया विचारिणो चेव, पंचहा जोइसालया ॥२०९॥

वेमाणिया उ जे देवा, दुविहा ते वियाहिया ।
कप्पोवगा य बोधव्वा, कप्पाईया तहेव य ॥२१०॥

कप्पोवगा बारसहा, सोहम्मोसाणगा तहा ।
सणंकुमारमाहिन्दा, बम्भलोगा य लन्तगा ॥२११॥

महासुक्का सहस्सारा, आणया पाणया तहा ।
आरणा अच्चुया चेव, इइ कप्पोवगा सुरा ॥२१२॥

कप्पाईया उ जे देवा, दुविहा ते वियाहिया ।
गेविज्जाणुत्तरा चेव, गेविज्जा नवविहा तहिं ॥२१३॥

हेट्ठिमा-हेट्ठिमा चेव, हेट्ठिमामज्झिमा तहा ।
हेट्ठिमा उवरिमा चेव, मज्झिमा-हेट्ठिमा तहा ॥२१४॥

मज्झिमा-मज्झिमा चेव, मज्झिमा-उवरिमा तहा ।
उवरिमा-हेट्ठिमा चेव, उवरिमा-मज्झिमा तहा ॥२१५॥

उवरिमा उवरिमा चेव, इय गेविज्जगा सुरा ।
विजया वेजयन्ता य, जयन्ता अपराजिया ॥२१६॥

सव्वत्थसिद्धगा चेव, पंचहाणुत्तरा सुरा ।
इय वेमाणिया एएऽणेगहा एवमायओ ॥२१७॥

लोगस्स एगदेसम्मि, ते सव्वे वि वियाहिया ।
इत्तो कालविभागं तु, तेसिं वुच्छं चउव्विहं ॥२१८॥

एएसिं वण्णओ चेव, गन्धओ रसफासओ ।
संठाणदेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥१९५॥

मणुया दुविहभेया उ, ते मे कित्तयओ सुण ।
संमुच्छिमा य मणुया, गब्भवक्कन्तिया तहा ॥१९६॥

गब्भवक्कन्तिगा जे उ, तिविहा ते वियाहिया ।
कम्मअकम्मभूमा य, अन्तरदीवया तहा ॥१९७॥

पन्नरस तीसविहा, भेया दु अट्ठवीसइं ।
संखा उ कमसो तेसिं, इई एसा वियाहिया ॥१९८॥

संमुच्छिमाण एसेव, भेओ होइ वियाहिओ ।
लोगस्स एगदेसम्मि, ते सव्वे वि वियाहिया ॥१९९॥

संतइं पप्प-णाईया, अपज्जवसियात्रि य ।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसियावि य ॥२००॥

पलिओवमाउ तिन्नि त्रि, उक्कोसेण विआहिया ।
आउठिई मणुयाणं, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥२०१॥

पलिओवमाइं तिण्णि उ, उक्कोसेण उ वियाहिया ।
पुव्वकोडिपुहत्तेणं; अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥२०२॥

कायठिई मणुयाणं, अन्तरं तेसिमं भवे ।
अणन्तकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं
विजढम्मि सए काए, मणुयाण तु अन्तरं ॥२०३॥

एएसिं वण्णओ चेव, गन्धओ रस फासओ ।
संठाणदेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥२०४॥

देवा चउव्विहा वुत्ता, ते मे कित्तयओ सुण ।
भोमिज्ज-वाणमन्तर-जोइस-वेमाणिया तहा ॥२०५॥

दसहा उ भवणवासी, अट्ठहा वाणचारिणो ।
पंचविहा जोइसिया, दुविहा वेमाणिया तहा ॥२०६॥

असुरा नागसुवण्णा, विज्जू अग्गी वियाहिया ।
दीवोदहिदिसा वाया, थणिया भवणवासिणो ॥२०७॥

पिसायभूया जक्खा य, रक्खसा किन्नरा किंपुरिसा ।
महोरगा य गन्धव्वा, अट्ठविहा वाणमन्तरा ॥२०८॥

चन्दा सूरा य नक्खत्ता, गहा तारागणा तहा ।
ठिया विचारिणो चेव, पंचहा जोइसालया ॥२०९॥

वेमाणिया उ जे देवा, दुविहा ते वियाहिया ।
कप्पोवगा य बोधव्वा, कप्पाईया तहेव य ॥२१०॥

कप्पोवगा बारसहा, सोहम्मोसाणगा तहा ।
संणकुमारमाहिन्दा, बम्भलोगा य लन्तगा ॥२११॥

महासुक्का सहस्सारा, आणया पाणया तहा ।
आरणा अच्चुया चेव, इइ कप्पोवगा सुरा ॥२१२॥

कप्पाईया उ जे देवा, दुविहा ते वियाहिया ।
गेविज्जाणुत्तरा चेव, गेविज्जा नवविहा तहिं ॥२१३॥

हेट्ठिमा-हेट्ठिमा चेव, हेट्ठिमामज्झिमा तहा ।
हेट्ठिमा उवरिमा चेव, मज्झिमा-हेट्ठिमा तहा ॥२१४॥

मज्झिमा-मज्झिमा चेव, मज्झिमा–उवरिमा तहा ।
उवरिमा-हेट्ठिमा चेव, उवरिमा-मज्झिमा तहा ॥२१५॥

उवरिमा उवरिमा चेव, इय गेविज्जगा सुरा ।
विजया वेजयन्ता य, जयन्ता अपराजिया ॥२१६॥

सव्वत्थसिद्धगा चेव, पंचहाणुत्तरा सुरा ।
इय वेमाणिया एएऽणेगहा एवमायओ ॥२१७॥

लोगस्स एगदेसम्मि, ते सव्वे वि वियाहिया ।
इत्तो कालविभागं तु, तेसिं वुच्छं चउव्विहं ॥२१८॥

संतइं पप्प-णाईया, अपज्जवसियावि य ।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसियावि य ॥२१९॥
साहीयं सागर एक्कं, उक्कोसेणं ठिई भवे ।
भोमेज्जाणं जहन्नेणं, दसवाससहस्सिया ॥२२०॥
पलिओवमदो ऊणा, उक्कोसेण ठिई भवे ।
असुरिंद वजित्ताणं, जहन्ना दसवाससहस्सगा ॥२२१॥
पलिओवममेगं तु; उक्कोसेण ठिई भवे ।
वन्तराणं जहन्नेणं; दसवाससहस्सिया ॥२२२॥
पलिओवममेगं तु, वासलक्खेण साहियं ।
पलिओवमट्ठभागो, जोइसेसु जहन्निया ॥२२३॥
दो चेव सागराइं, उक्कोसेण वियाहिया ।
सोहम्मम्मि जहन्नेणं, एगं च पलिओवमं ॥२२४॥
सागरा साहिया दुन्नि, उक्कोसेण वियाहिया ।
ईसाणम्मि जहन्नेणं, साहियं पलिओवमं ॥२२५॥
सागराणि य सत्तेव, उक्कोसेणं ठिई भवे ।
सणंकुमारे जहन्नेणं, दुन्नि ऊ सागरोवमा ॥२२६॥
साहिया सागरा सत्त, उक्कोसेणं ठिई भवे ।
माहिन्दम्मि जहन्नेणं, साहिया दुन्नि सागरा ॥२२७॥
दस चेव सागराइं, उक्कोसेणं ठिई भवे ।
बम्भलोए जहन्नेणं; सत्त ऊ सागरोवमा ॥२२८॥
चउद्दस सागराइं, उक्कोसेणं ठिई भवे ।
लन्तगम्मि जहन्नेणं, दस उ सागरोवमा ॥२२९॥
सत्तरस सागराइं; उक्कोसेण ठिई भवे ।
महासुक्के जहन्नेणं, चौदस सागरोवमा ॥२३०॥
अट्ठारस सागराइं, उक्कोसेणं ठिई भवे ।
सहस्सारम्मि जहन्नेणं, सत्तरस सागरोवमा ॥२३१॥

सागरा अउणवीसं तु, उक्कोसेणं ठिई भवे ।
आणयम्मि जहन्नेणं, अट्ठारस सागरोवमा ॥२३२॥
वीसं तु सागराइं, उक्कोसेणं ठिई भवे ।
पाणयम्मि, जहन्नेणं, सागरा अउणवीसई ॥२३३॥
सागरा इक्कवीसं तु, उक्कोसेणं ठिई भवे ।
आरणम्मि जहन्नेणं, वीसई सागरोवमा ॥२३४॥
बावीसं सागराइं, इक्कोसेण ठिई भवे ।
अच्चुयम्मि जहन्नेणं, सागरा इक्कवीसई ॥२३५॥
तेवीस सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
पढमम्मि जहन्नेणं, बावीसं सागरोवमा ॥२३६॥
चउवीस सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
विइयम्मि जहन्नेणं, तेवीसं सागरोवमा ॥२३७॥
पणवीस सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
तइयम्मि जहन्नेणं, चउवीसं सागरोवमा ॥२३८॥
छवीस सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
चउत्थम्मि जहन्नेणं, सागरा पणुवीसई ॥२३९॥
सागरा सत्तवीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे ।
पञ्चमम्मि जहन्नेणं, सागरा उ छवीसइ ॥२४०॥
सागरा अट्ठवीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे ।
छट्ठम्मि जहन्नेणं, सागरा सत्तवीसई ॥२४१॥
सागरा अउणतीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे ।
सत्तमम्मि जहन्नेणं, सागरा अट्ठवीसई ॥२४२॥
तीसं तु सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
अट्ठमम्मि जहन्नेणं, सागरा अउणतीसई ॥२४३॥

सागरा इक्कतीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे ।
नवमम्मि जहन्नेणं, तीसई सागरोवमा ॥२४४॥

तेत्तीसा सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
चउसुं पि विजयाईसु, जहन्नेणेक्कतीसई ॥२४५॥

अजहन्नमणुक्कोसा, तेत्तीसं सागरोवमा ।
महाविमाणे सव्वट्ठे, ठिई एसा वियाहिया ॥२४६॥

जा चेव उ आउठिई, देवाणं तु वियाहिया ।
सा तेसिं कायठिई, जहन्नमुक्कोसिया भवे ॥२४७॥

अणन्तकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
विजढम्मि सए काए, देवाणं हुज्ज अन्तरं ॥२४८॥

अणन्तकालमुक्कोसं, वासपुहुत्तं जहन्नयं ।
आणयाईण कप्पाण, गेविज्जाणं तु अन्तरं ॥२४९॥

संखिज्जसागरुक्कोसं, वासपुहुत्तं जहन्नयं ।
अणुत्तराण य देवाणं, अन्तरं तु वियाहिया ॥२५०॥

एएसिं वण्णओ चेव, गन्धओ रसफासओ ।
संठाणदेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥२५१॥

संसारत्था य सिद्धा य, इय जीवा वियाहिया ।
रूविणो चेवरूवी य, अजीवा दुविहावि य ॥२५२॥

इय जीवमजीवे य, सोच्चा सद्दहिऊण य ।
सव्वनयाणमणुमए, रमेज्ज संजमे मुणी ॥२५३॥

तओ बहूणी वासाणि, सामण्णमणुपालिय ।
इमेण कम्मजोगेण, अप्पाणं संलिहे मुणी ॥२५४॥

बारसेव उ वासाइं, संलेहुक्कोसिया भवे ।
संवच्छरमज्झिमिया, छम्मासा य जहन्निया ॥२५५॥

पढमे वासचउक्कम्मि, विगई-निज्जूहण करे।
विईए वासउक्कम्मि, विचित्तं तु तवं चरे ॥२५६॥

एगन्तरमायामं, कट्टु संवच्छरे दुवे।
तओ संवच्छरद्धं तु, नायविगिट्ठं तवं चरे ॥२५७॥

तओ संवच्छरद्धं तु, विगिट्ठं तु तवं चरे।
परिमियं चेव आयामं, तम्मि संवच्छरे करे ॥२५८॥

कोडीसहियमायामं, कट्टु संवच्छरे मुणी।
मासद्धमासिएणं तु, आहोरेण तवं चरे ॥२५९॥

कन्दप्पमाभिओगं च, किव्विसियं मोहमासुरुत्तं च।
एयाउ दुग्गईओ, मरणम्मि विराहिया होन्ति ॥२६०॥

मिच्छादंसणदत्ता, सनियाणा उ हिंसगा।
इय जे नरन्ति जीवा, तेसिं पुण दुल्लहा बोही ॥२६१॥

सम्मद्दंसणरत्ता, अनियाणा सुक्कलेसमोगाढा।
इय जे मरन्ति जीवा, तेसिं सुलहा भवे बोही ॥२६२॥

मिच्छादंसणरत्ता, सनियाणा कण्हलेसमोगाढा।
इय जे मरन्ति जीवा, तेसिं पुण दुल्लहा बोही ॥२६३॥

जिणवयणे अणुरत्ता, जिणवयणं जे करेन्ति भावेण।
अमला असङ्किलिट्ठा, ते होन्ति परित्तसंसारी ॥२६४॥

वालमरणाणि वहुसो, अकाममरणाणि चेव य बहूयाणि।
मरिहिन्ति ते वराया, जिणवयणं जे न जाणन्ति ॥२६५॥

बहुआगमविन्नाणा, समाहिउप्पायमा य गुणगाही।
एएणं कारणेणं; अरिहा आलोयणं सोउं ॥२६६॥

कन्दप्पकुकुयाइं तह, सीलसहाव-हासविगहाइं।
विम्हावेन्तो य परं, कन्दप्पं भावणं कुणई ॥२६७॥

मन्ताजोगं काउं, भूईकम्मं च जे पउजन्ति ।
साय रस इड्ढिहेउं, अभिओगं भावणं कुणई ॥२६८॥

नाणस्स केवलीणं, धम्मायरियस्स संवसाहूणं !
माई अवण्णवाई, किव्विसियं भावणं कुणई ॥२६९॥

अणुवद्धरोसपसरो, तह य निमित्तम्मि होइ पडिसेवी ।
एएहिं कारणेहिं, आसुरियं भावणं कुणई ॥२७०॥

सत्थगहणं विसभक्खणं च, चलणं च जलपवेसो य ।
अणयारभण्डसेवी, जम्मणमरणाणि वंधन्ति ॥२७१॥

इय पाउकरे वुद्धे, नायए परिंनिव्वुए ।
छत्तीसं उत्तरज्झाए, भवसिद्धीयसंवुडे ॥ त्ति बेमि ॥२७२॥

॥ जीवाजीवविभत्ती अज्झयणं समत्तं ॥३६॥

॥ इति उत्तराज्भयणं सुत्तं समत्तं ॥

॥ श्री मद्देववाचकक्षमाश्रमणनिर्मितं ॥

॥ श्री नन्दीसूत्रम् ॥

जयइ जग जीव जोणी वियाणओ, जगगुरु जगाणंदो ।
जगणाहो जगवंधू, जयइ जगप्पियामहो भयवं ॥१॥

जयइ सुआणं पभवो, तित्थयराणं अपच्छिमो जयइ ।
जयइ गुरू लोगाणं, जयइ महप्पा महावीरो ॥२॥

भद्दं सव्व जगुज्जोयगस्स, भद्दं जिणस्स वीरस्स ।
भद्दं सुरासुरनमंसियस्स, भद्दं धुयरयस्स ॥३॥

गुण भवण गहण सुय रयण भरिय दंसण; विसुद्धरत्थागा ।
संघ नगर ! भद्दं ते, अखंडचारित्तपागारा ॥४॥

संजम-तव-तुंबारयस्स, नमो सम्मत्त–पारियल्लस्स ।
अप्पडिचक्कस्स जओ, होउ सया संघचक्कस ॥५॥

भद्दं सील पडागूसियस्स, तव-नियम-तुरय-जुत्तस्स ।
संघरहस्स भगवओ; सज्झायसुनंदिघोसस्स ॥६॥

कम्मरय जलोह–विणिग्गयस्स, सुयरयण-दीहनालस्स ।
पच-महव्वय थिरकन्नियस्स, गुणकेसरालस्स ॥७॥

सावग-जण-महुअरि-परिवुडस्स, जिण-सूर-तेय-बुद्धस्स ।
संघपउमस्स, भद्द, समण-गण सहस्स-पत्तस्स ॥८॥

तव–संजममयलंछण, अकिरिय-राहुमुह-दुद्धरिस निंच्चं ।
जय संघ-चंद ! निम्मल-सम्मत्त विसुद्ध-जोण्हागा ॥९॥

पर-तित्थिय-गह-पह नासगस्स; तवतेय-दित्त-लेसस्स ।
नाणु–ज्जोयस्स जए, भद्दं दम-संघ सूरस्स ॥१०॥

भद्दं धिइ–वेला परिगयस्स, सज्झाय-जोग-मगरस्स ।
अक्खोहस्स भगवओ; संध-समुद्दस्स रुंदस्स ॥११॥

सम्म-दंसण-वर-वइर,–दढ-रूढ-गाढावगाढ-पेढस्स ।
धम्म वररयणमंडिय-चामीयरमेहलागस्स ॥१२॥

निय-मूसिय-कणय सिलाय-लुज्जल-जलंत-चित्तकूडस्स ।
नंदणवण-मणहरसुरभि-सीलगंधद्धुमायस्स ॥१३॥

जीवदया-सुदर-कंद-रुदरिय-मुणिवर-मइंद-इन्नस्स ।
हेउ-सय धाउ-पगलंत, रयणदित्तोसहि-गुहस्स ॥१४॥

संवर-वर-जल-पग-लिय-उज्झर-पविराय-माणहारस्स ।
सावग-जण-प्पउर-रेवंत-मोर-नच्चंत-कुहरस्स ॥१५॥

विणय-नय-पवर-मुणिवर-फुरंत विज्जुज्जलंत-सिहरस्स ।
विविह-गुण-कप्प-रुक्खग-फलभर-कुसुमाउल-वणस्स ॥१६॥

नाण-वर-रयण-दिप्पंत-कंत-वेरुलिय-विमल-चलस्स ।
वंदामि विणय-पणओ संघ-महामंदर-गिरिस्स ॥१७॥

गुण-रयणुज्जल-कडयं सील-सुगन्धि तव-मंडिउद्देसं ।
सुयबारसंगसिहरं संघ महामंदरं वंदे ॥१८॥

नगर रह चक्क पउमे चंदे सूरे समुद्द मेरुम्मि ।
जो उवमिज्जइ समयं; तं संघगुणायरं वंदे ॥१९॥

[वंदे] उसभं अजियं संभवमभिनंदण सुमइ सुप्पभ सुपासं ।
ससि पुप्फदंत सीयल सिज्जंसं वासपुज्जं च ॥२०॥

विमलमणंत य धम्मं सन्ति कुंथुं अरं च मल्लिं च ।
मुनिसुव्वय-नमि नेमिं पासं तह वद्धमाणं च ॥२१॥

पढमित्थ इंदभूई; बीए पुण होइ अग्गिभूइत्ति ।
तइए य वाउभूई; तओ वियत्ते सुहम्मेय ॥२२॥

मंडिअ-मोरिय-पुत्ते अकंपिअे चेव अयल-भाया य ।
मेयज्जे य पहासे (य); गणहरा हुंति वीरस्स ॥२३॥

निव्वुइ-पह-सासणयं जयइ सया सव्व-भाव-देसणयं ।
कु-समय-मय-नासणयं; जिणिंदवर वीर-सासणयं ॥२४॥

सुहम्मं अग्गिवेसाणं; जंबुनामं च कासवं ।
पभवं कच्चायणं वंदे; वच्छं सिज्जंभवं तहा ॥२५॥

जसभद्दं तुङ्गियं वन्दे; संभूयं चेव माढरं ।
भद्दबाहुं च पाइन्नं; थूलभद्दं च गोयमं ॥२६॥

एलावच्चसगोत्तं वंदामि; महागिरिं सुहत्थिं च ।
तत्तो कोसियगोत्तं; वहुलस्स सरिव्वयं वन्दे ॥२७॥

हारिय गुत्तं साइं च; वंदिमो हारियं च सामज्जं ।
वन्दे कोसिय-गोत्तं संडिल्लं अज्ज-जीयधरं ॥२८॥

तिसमुद्दखायकित्तिं, दीव–समुद्देसु गहिय पेयालं ।
वन्दे अज्जसमुद्दं, अक्खुभिय–समुद्दगंभीरं ॥२९॥

भाणगं करगं झरगं, पभावगं दंसण-गुणाणं ।
वंदामि अज्ज–मंगु, सुय-सागर-पारगं धीरं ॥३०॥

वंदामि अज्ज-धम्मं, तत्तो वंदे य भद्दगुत्तं च ।
तत्तो य अज्ज- वइरं, तव-नियम-गुणेहिं वइर–समं ॥३१॥

वंदामि अज्ज–रक्खिय–खवणे रक्खिय–चरित्त-सव्वस्से ।
रयण-करंडग-भूओ, अणुओगो रक्खिओ जेहि ॥३२॥

नाणम्मि दंसणम्मि य; तव-विणए णिच्च-काल मुज्जुत्तं ।
अज्जं नंदिलखवणं, सिरसा वन्दे पसन्नमणं ॥३३॥

वड्ढउ वायगवंसो, जसवंसो अज्ज नागहत्थीणं ।
वागरण-करण-भंगिय; कम्मपयडी-पहाणाणं ॥३४॥

जच्चंजण–धाउ-समप्पहाणं, मुद्दिय–कुवलय–निहाणं ।
वड्ढउ वायगवंसो, रेवइ-नक्खत्त-नामाणं ॥३५॥

अयलपुरा णिक्खन्ते, कालियसुय आणुओगिए धीरे ।
बंभद्दीवगसीहे, वायगपय–मुत्तमं पत्ते ॥३६॥

जेसिं इमो अणु-ओगो; पयरइ अज्जावि अड्ढभरहम्मि ।
बहु-नयर-निग्गय-जसे, ते वंदे खंदिलायरिए ॥३७॥

तत्तो हिमवन्त-महंत,-विक्कमे धिइ-परक्कम-मणंते ।
सज्झाय मणंतधरे, हिमगंते वंदिमो सिरसा ॥३८॥

कालिय-सुय-अणु-ओगस्स धारए धारए यं पुव्वाणं ।
हिमवंत खमासमणे वंदे णागज्जुणायरिये ॥३९॥

मिउमद्दव-संपन्ने, आणुपुव्वि वायगत्तणं पत्ते ।
ओहसुय-समायारे; नागज्जुण वायए वंदे ॥४०॥

गोविंदाणं पि नमो, अणुओगे विउलधारणिं दाणं।
णिच्चं खंति-दयाणं, परुवणे दुल्लभिं-दाणं ॥४१॥

तत्तो थ भूयदिन्नं, निच्चं तव-संजमे अनिव्विण्णं।
पंडिय-जणसम्माणं, वंदामो संजमविहिण्णु ॥४२॥

वर-कणग तविय चंपग-विमउलवर-कमल-गब्भ-सरिवन्ने।
भविय-जणहियदइए, दयागुण विसारए धीरे ॥४३॥

अड्ढभरहप्पहाणे, बहुविह-सज्झाय-सुमुणिय-पहाणे।
अणुओगिय-वर-वसमे, नाइल-कुल-वंस-नंदिकरे ॥४४॥

जगभूयहिय-प्पगब्भे, वंदेहं भूयदिन्न-मायरिए।
भवभव-वुच्छेय-करे, सीसे नागज्जुण रिसीणं ॥४५॥

सुमुणिय निच्चा निच्चं, सुमुणिय सुत्तत्थ-धारयं वन्दे।
सब्भावुब्भावणया, तत्थं लोहिच्चणामाणं ॥४६॥

अत्थ-महत्थक्खाणिं, सुसमण-वक्खाण-कहण-निव्वाणिं।
पयईए महुरवाणिं, पयओ पणमामि दूसगणिं ॥४७॥

तव-नियम-सच्च, संजम विणयज्जव-खंति-मद्दवरयाण।
सील-गुणगद्दियाणं, अणुओग-जुगप्पहाणाणं ॥४८॥

सुकुमाल-कोमल-तले; तेसिं पणमामि लक्खणपसत्थे।
पाए पावयणीणं, पडिच्छयसयएहि पणिवइए ॥४९॥

जे अन्ने भगवन्ते, कालियसुय-अणु-ओगिए धीरे।
ते पणमिऊण सिरसा; नाणस्सा परुवणं वोच्छं ॥५०॥

सेल-घण, कुडग, चालणि, परिपूणग, हंस, महिस, मेसे य।
मसग, जलूग, विराली, जाहग; गो भेरी, आभारी ॥५१॥

सा समासओ तिविहा पन्नत्ता, तं जहा जाणिया, अजाणिया; दुव्वियड्ढा जाणिया जहा—

खीरमिव जहा हंसा, जे घुट्टन्ति इह गुरुगुणसमिद्धा ।
दोहे य विवज्जंति, तं जाणसु जाणियं परिसं ॥५२॥

अजाणिया जहा—
जा होइ पगइमहुरा, मियछावय-सीह-कुक्कुडय-भूआ ।
रयणमिव असंठविया, अजाणिया सा भवे परिसा ॥५३॥

दुव्वियड्ढा जहा—
न य कत्थई निम्माओ, न य पुच्छइ परिभवस्स दोसेणं ।
वत्थिव्व वायपुण्णो, कुट्टइ गामिल्लय-दुव्वियड्ढं ॥५४॥

(से किं तं नाणं)

सूत्र-१ नाणं पञ्चविहं पन्नतं, तं जहा आभिणि बोहियनाणं सुयनाणं, ओहिनाणं, मणपज्जवनाणं, केवलनाणं ॥

सूत्र-२ तं समासओ दुविहं पण्णत्तं, तं जहा-पच्चक्खं च परोक्खं च ॥

सूत्र-३ से किं तं पच्चक्खं ? पच्चक्खं दुविहं पण्णत्तं; तं जहा-इंदियपच्चक्खं, नोइंदियपच्चक्खं च ॥

सूत्र-४ से किं तं इंदियपच्चक्खं ? इंदियपच्चक्खं पञ्चविहं पण्णत्तं, तं जहा सोइंदियपच्चक्खं, चक्खिंदियपच्चक्खं; धाणिंदिय-पच्चक्खं, जिब्भिंदियपच्चक्खं, फासिंदियपच्चक्खं, "से तं इंदिय-पच्चक्खं" ॥

सूत्र-५ से किं तं नोइंदियपच्चक्खं ? नो० तिविहं पण्णत्तं, तं जहा-ओहिनाणपच्चक्खं, मणपज्जवनाणपच्चखं, केवल-नाणपच्चक्खं ॥

सूत्र-६ से किं तं ओहिनाणपच्चक्खं ? ओहिनाण-पच्चक्खं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा भवपच्चइयं च खाओवसमियं च ॥

सूत्र-७ से किं तं भवपच्चइयं ? भवपच्चइयं दुण्हं, तं जहा-देवाण य, नेरइयाण य ॥

समासओ चउव्विहं पण्णत्तं तं जहा-दव्वओ, सित्तओ कालओ, भावओ। तत्थ दव्वओ णं केवलनाणी सव्वदव्वाइं जाणइ पासइ। खित्तओ णं केवलनाणी सव्वं खित्तं जाणइ पासइ। कालओ णं केवलनाणी सव्वं कालं जाणइ पासइ। भावओ णं केवलनाणी सव्वे भावे जाणइ पासइ।

अह सव्वदव्वपरिणाम, भावविण्णत्तिकारणमणंतं।
सासयमप्पडिवाइ, एगविहं केवलं नाणं ॥६६॥

सूत्र-२३ केवलनाणेणऽन्थे, नाउं जे तत्थ पण्णवणजोगे।
ते भासइ तित्थयरो, वाइजोगसुयं हवइ सेसं ॥६७॥

"से त्तं केवलनाण, से त्तं नोइंदियपच्चक्खं, से त्तं पच्चक्खनाणं" ॥

सूत्र-२४ से किं तं परोक्खनाणं ? परोक्खनाणं दुविहं पन्नत्तं, तं जहा-आभिणिबोहियनाणपरोक्खं च, सुयनाणपरोक्खं च, जत्थ आभिणिबोहियनाणं तत्थ सुयनाणं, जत्थ सुयनाणं तत्था-ऽभिणिबोहियनाणंदोऽवि, एयाइं अण्णमण्णमणुगयाइं, तहवि पुण इत्थ आयरिया नाणत्तं पण्णवयंति अभिनिवुज्झइत्ति, अभिणिबो-हियनाणं, सुणेइत्ति सुयं, पइपुव्व जेग सुय न मई सुयपुव्विया ॥

सूत्र-२५ अविसेसिया मई मइनाणं च मइअन्नाणं च। विसेसिया सम्मदिट्ठिस्स मई मइनाणं मिच्छदिट्ठिस्स मई मइ-अन्नाणं। अविसेसियं सुयं सुयनाणं च सुयअन्नाणं च। विसेसियं सुयंसम्मदिट्ठिस्स सुयंसुयनाणं, मिच्छदिट्ठिस्स सुयं सुयअन्नाणं ॥

सूत्र-२६ से किं तं आभिणिबोहियनाणं ? आभिणिबोहिय-नाणं दुविह पण्णत्तं, तं जहा-सुयनिस्सियं च, असुयनिस्सियं च। से किं तं असुयनिस्सियं ? असुयनिस्सिय चउव्विहं पण्णत्तं, तं जहा—

उप्पत्तिया वेणइया, कम्मया, परिणामिया।
बुद्धी चउव्विहा वुत्ता, पंचमा नोवलब्भई ॥६८॥

पुव्वमदिट्ठिमस्सुयमवेइयतक्खणविसुद्धगहियत्था ।
अव्वाहियफलजोगा, बुद्धी उप्पत्तिया नाम ॥६९॥

भरह, सिल, मिंढ, कुक्कुड, तिल वालुय, हत्थि, अगड वणसंडे ।
पायस, अइया, पत्ते, खाडहिला, पंच पिअरो य ॥७०॥

भरहसिल, पणिय, रुक्खे, खुड्डग, पड, सरड, काय उच्चारे ।
गय, घयण, गोल, खंभे, खुड्डग, मग्गि, त्थि, पइ, पुत्ते ॥७१॥

महुसित्थ, मुद्दि, अंके य, नाणए भिक्खु, चेडगनिहाणे ।
सिक्खा य, अत्थसत्थे, इच्छा य महं, सयसहस्से ॥७२॥

भरनित्थरणसमत्था, तिवग्गसुत्तत्थगहियपेयाला ।
उभओ लोगफलवई, विणयसमुत्था वहइ बुद्धी ॥७३॥

निमित्ते, अत्थसत्थे य, लेहे, गणिए य, कूव, अस्से य ।
गद्दभ, लक्खण, गंठी, अगए, रहिए य, गणिया य ॥७४॥

सीआ साडी दीहं च तणं, अवसव्वयं च कुञ्चस्स ।
निव्वोदए य गोणे, घोडगपडणं च रुक्खाओ ॥७५॥

उवओगदिट्ठसारा, कम्मपसंगपरिघोलणविसाला ।
साहुक्कारफलवई, कम्मसमुत्था हवइ बुद्धी ॥७६॥

हेरण्णिए, करिसए, कोलिय, डोवे य, मुत्ति, घय, पवए ।
तुन्नाए; वड्ढइय, पूयइ, घड, चित्तकारे य ॥७७॥

अणुमाणहेउदिट्ठंतसाहिया वयविवागपरिणामा ।
हियनिस्सेयसफलवई, बुद्धी परिणामिया नाम ॥७८॥

अभए, सिट्ठि; कुमारे, देवी, उदिओदए; हवइ राया ।
साहू य नंदिसेणे, धणदत्ते, सावग, अमच्चे ॥७९॥

खमए, अमच्चपुत्ते, चाणक्के, चेव थूलभद्दे य ।
नासिकसुन्दरिनन्दे, वइरे, परिणामिया बुद्धी ॥८०॥

एगट्ठिया नाणाघोसा नाणावंजणा पंच नामधिज्जा भवन्ति, तं जहा-आउट्टणया, पच्चाउट्टणया, अवाए, बुद्धी, विण्णाणे। 'से त्तं अवाए' ॥

सूत्र-३३ से किं तं धारणा ? धारणा छव्विहा पण्णत्ता, तं जहा-सोइंदियधारणा; चक्खिंदियधारणा; घाणिंदियधारणा; जिब्भिंदियधारणा. फासिंदियधारणा, नोइन्दियधारणा। तीसे णं इमे एगट्ठिया नाणाघोसा नाणावंजणा पंच नामधिज्जा भवन्ति, तं जहा-धरणा; धारणा; ठवणा; पइट्ठा; कोट्ठे; 'से त्तं धारणा' ॥

सूत्र-३४ उग्गहे इक्कसमइए, अन्तोमुहुंत्तिया ईहा, अन्तोमुहुत्तिए अवाए, धारणा संखेज्जं वा कालं असंखेज्जं वा कालं।

सूत्र-३५ एवं अट्ठावीसइविहस्स आभिणिबोहियनाणस्स वंजणुग्गहस्स परूवणं करिस्सामि पडिबोहगदिट्ठंतेण मल्लगदिट्ठंतेण य। से किं तं पडिबोहगदिट्ठंतेणं ? पडिबोहगदिट्ठंतेणं से जहानामए केइ पुरिसे कंचि पुरिसं सुत्तं पडिबोहिज्जा, अमुगा अमुगत्ति, तत्थ चोयगे पन्नवयं एवं वयासी किं एगसमयपविट्ठा पुग्गलागहणमागच्छंति ? दुसमयपविट्ठा पुग्गलागहणमागच्छंति? जावदसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति ? संखिज्जसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छन्ति ? असंखिज्ज समयपविट्ठ पुग्गला गहणमागच्छन्ति ? एवं वयंतं चोयगं पण्णवए एवं वयासी-नो एगसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छन्ति नो दुसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छन्ति, जाव नो दससमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छन्ति, नो संखिज्जसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छन्ति, असंखिज्जसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छन्ति, "से त्तं पडिगबोहगदिट्ठंतेणं"। से किं तं मल्लगदिट्ठंतेणं ? मल्लगदिट्ठंतेणं से जहानामए केइ पुरिसे आवागसीसाओ मल्लगं गहाय तत्थेनं

उदगबिंदु पक्खेविज्जा; से नट्ठे अण्णेऽवि पक्खित्ते सेऽवि नट्ठे, एवं पक्खिप्पमाणेसु पक्खिप्पमाणेसु होही से उदगबिंदू, जे ण तं मल्लगं रावेहिइत्ती, होही से उदगबिंदू जे णं तंसि मल्लगंसि ठाहिति, होही से उदगबिंदू; जे णं तं मल्लगं भरिहिति; होही से उदगबिंदू, जे णं तं मल्लगं पवाहेहिति; एवामेव पक्खिप्पमाणेहिं पक्खिप्पमाणेहिं अणन्तेहिं पुग्गलेहिं जाहे तं वंजणं पूरियं होइ, ताहेहुंति करेइ, नो चेव णं जाणइ के एस सद्दाइ ? तओ ईहं पविसइ; तओ जाणइ, अमुगे एस सद्दाइ, तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगयं हवइ, तओ-धारणं पविसइ, तओ णं धारइ संखिज्जं वा कालं, असंखिज्जं वा कालं। से जहानामए केइ पुरिसे अव्वत्तं सद्दं सुणिज्जा, तेणं सद्दोत्ति उग्गहिए, नो चेव णं जाणइ के वेस सद्दाइ; तओ ईहं पविसइ; तओ जाणई अमुगे एस सद्दे, तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगय हवइ; तओ धारणं पविसइ, तओ णं धारेइ संखेज्जं वा कालं असंखेज्जं वा कालं। से जहानामए केइ पुरिसे अव्वत्तं रूवं पासिज्जा तेण रूवेत्ति उग्गहिए नो चेव णं जाणइ वेस रूवित्ति; तओ ईहं पविसइ, तओ जाणइ अमुगे एस रूवे तओ अवायं पविसइ; तओ से उवगयं हवइ, तओ धारणं पविसइ, तओ णं धारेइ संखेज्जं वा कालं असंखेज्जं वा कालं। से जहानामए केइ पुरिसे अव्वत्तं गंधं अग्घाइज्जा तेण गंधत्ति उग्गहिए, नो चेव णं जाणइ के वेस गंधेत्ति; तओ ईहं पविसइ, तओ जाणइ अमुगे एस गंधे, तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगयं हवइ; तओ धारणं पविसइ, तओ णं धारेइ संखेज्जं वा कालं असंखेज्जं वा काल। से जहानामए केइ पुरिसे अव्वत्तं रसं आसाइज्जा तेणं रसोत्ति उग्गहिए, नो चेव णं जाणइ के वेस रसेत्ति, तओ ईहं पविसइ, तओ जाणइ-अमुगे एस रसे, तओ अवायं पविसइ; तओ

से उवगयं हवइ, तओ धारणं पविसइ, तओ णं धारेइ संखिज्जं वा कालं असंखिज्जं वा कालं। से जहानामए केइ पुरिसे अव्वत्तं फासं पडिसंवेइज्जा, तेणं फासेत्ति उग्गहिए, नो चेव णं जाणइ के वेस फासओत्ति; तओ ईहं पविसइ तओ जाणइ अमुगे एस फासे, तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगयं हवइ, तओ धारणं पविसइ, तओ णं धारेइ संखेज्जं वा कालं, असंखेज्जं वा कालं। से जहानामए केइ पुरिसे अव्वत्तं सुमिणं पासिज्जा तेणं सुमिणेत्ति उग्गहिए; नो चेव णं जाणइ के वेस सुमिणेत्ति, तओ ईहं पविसइ, तओ जाणइ अमुगे एस सुमिणे तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगयं हवइ, तओ धारणं पविसइ, तओ णं धारेइ संखेज्जं वा कालं, असंखेज्जं का कालं।

"से त्तं मल्लगदिट्ठतेण"

सूत्र - ३६ तं समासओ चउव्विहं पण्णत्तं, तं जहा दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ। एत्थ दव्वओ णं आभिणिबोहियनाणी आएसेणं सव्वाइंदव्वाइं जाणइ, त पासइ। खेत्तओ णं आभिणिबोहियनाणी आएसेणं सव्वं खेत्तं जाणइ; न पासइ। कालओ णं आभिणिबोहियनाणी आएसेणं सव्वं कालं जाणइ, न पासइ! भावओ णं आभिणिबोहियनाणी आएसेणं सव्वे भावे जाणइ, न पासइ।

उग्गह ईहाऽवाओ य, धारणा एव हुंति चत्तारि।
आभिणिबोहिय-नाणस्स भेयवत्थू समासेणं ॥८२॥

अत्थाणं उग्गहणम्मि उग्गहो तह वियालणे ईहा।
ववसायम्मि अवाओ, धरणं पुण धारणं बिंति ॥८३॥

उग्गह इक्कं समयं, ईहावाया मुहुत्तमद्धं तु।
कालमसंखं संखं, च धारणा होइ नायव्वा ॥८४॥

पुट्ठं सुणेइ सद्दं, रूवं पुण पासइ अपुट्ठं तु ।
गंधं रसं च फासं च, बद्धपुट्ठं वियागरे ॥८५॥

भासासमसेढीओ सद्दं, जं सुणेइ मीसियं सुणइ ।
वीसेढी पुण सद्दं, सुणेइ नियमा पराघए ॥८६॥

ईहा अपोह वीमंसा, मग्गणा य गवेसणा ।
सन्ना सई मई पन्ना, सव्वं आभिणिबोहियं ॥८७॥

"से त्तं आभिणिबोहियनाणपरोक्खं [से त्तं मइनाणं]" ॥

सूत्र-३७ से किं तं सुयनाणपरोक्खं ? सुयनाणपरोक्ख चोद्दसविहं पण्णत्तं, तं जहा-अक्खरसुयं, अणक्खरसुयं; सण्णिसुयं; असण्णिसुयं, सम्मसुयं, मिच्छासुयं; साइयं, अणाइयं सपज्जवसियं अपज्जवसियं, गमियं, अगमियं, अंगपविट्ठं, अणंगपविट्ठं ॥

सूत्र-३८ से किं तं अक्खरसुयं ? अक्खरसुयं तिविहं पण्णत्तं, तं जहा सन्नक्खरं, वंजणक्खरं, लद्धिअक्खरं । से किं तं सन्नक्खरं ? सन्नक्खर अक्खरस्स संठाणागिई, से त्तं सन्नक्खरं । से किं तं वंजणक्खरं ? वंजणक्खरं अक्खरस्स वंजणाभिलावो, 'से त्तं वजणक्खर' । से किं तं लद्धिअक्खरं ? लद्धिअक्खरं अक्खरलद्धियस्स लद्धिअक्खरं समुप्पजइ, तं जहा-सोइंदिय लद्धि-अक्खरं चक्खिदिय-लद्धिअक्खरं; घाणिंदिय-लद्धिअक्खपं रस-णिंदिय-लद्धिअक्खरं, फासिंदिय-लद्धिअक्खरं, नोइन्दिय-लद्धि-अक्खरं, 'से त्तं लद्धिअक्खर, से त्तं अक्खरसुयं ॥' से किं तं अणक्खरसुयं ? अणक्खरसुयं अणेगविहं पण्णत्तं, तं जहा—

ऊससियं नीससियं, निच्छूढं खासियं च छीयं च ।
निस्सिंघियमणुसारं, अणक्खरं छेलियाईयं ॥८८॥

'से त्तं अणक्खरसुयं' ।

सूत्र-३६ से किं तं सण्णिसुयं ? सण्णिसुयं तिविहं पण्णत्तं, तं जहा-कालिओवएसेणं, हेऊवएसेणं, दिट्ठिवाओवएसेणं, से किं तं कालिओवएसेणं ? कालिओवएसेणं जस्स णं अत्थि ईहा, अवोहो, मग्गणा, गवेसणा, चिन्ता, वीमंसा, से णं सण्णीति लब्भइ, जस्स णं नत्थि ईहा, अवोहो, मग्गणा, गवेसणा, चिन्ता, वीमंसा; सेणं असण्णीत्ति लब्भइ, 'से त्तं कालिओवएसेणं'। से किं तं हेऊवएसेणं ? हेऊवएसेणं जस्स णं अत्थि अभिसंधारणपुव्विया करणसत्तो से णं सण्णीति लब्भइ। जस्स णं नत्थि अभिसंधारणपुव्विया करणसत्ती से णं असण्णीति लब्भइ, 'से त्तं हेऊवएसेणं'। से किं तं दिट्ठिवाओवसेणं ? दिट्ठिवाओवएसेणं सण्णिसुयस्स खओवसमेणं सण्णी लब्भइ, असण्णिसुयस्स खओवसमेणं असण्णी लब्भइ, 'से त्तं दिट्ठिवाओवएसेणं, से त्तं सण्णिसुयं, से त्तं असण्णिसुयं' ॥

सूत्र-४० से किं तं सम्मसुयं ? सम्मसुयं जं इमं अरिहंतेहिं भगवन्तेहिं उप्पण्णनाणदंसणधरेहिंतेलुक्कनिरिक्खयमहियपूइएहिं, तीयपडुप्पण्णमणागयजाणएहिं सव्वण्णूहिं सव्वदरिसीहिं पणीयं दुवालसंगं गणिपिडगं, तं जहा-आयारो, सूयगडो, ठाणं, समवाओ, विवाहपण्णत्ती, नायाधम्मकहाओ, उवासगदसाओ, अंतगडदसाओ, अणुत्तरोववाइयदसाओ, पण्हावागरणाइं, विवागसुयं, दिट्ठिवाओ, इच्चेयं, दुवालसंगं गडिपिडगं चोद्दसपुव्विस्स सम्मसुयं, अभिण्णदसपुव्विस्स सम्मसुयं, तेण परं भिण्णेसु भयणा, 'से तं सम्मसुयं' ॥

सूत्र-४१ से किं तं मिच्छासुयं ? मिच्छासुयं जं इमं अण्णाणिएहि मिच्छादिट्ठिएहिं सच्छंदबुद्धिमइविग्गप्पियं, तं जहा-भारहं, रामायणं, भीमासुरुक्खं; कोडिल्लयं; सगडभद्दियाओ; खोड (घोडग) मुहं; कप्पासियं; नागसुहुमं; कणगसत्तरी; वइसेसियं;

बुद्धवयणं, तेरासियं, काविलियं, लोगाययं, सट्ठितंतं, माढरं, पुराणं, वागरणं, भागवयं, पायंजली, पुस्सदेवयं, लेहं, गणियं, सउणरुयं; नाडयाइं; अहवा बावत्तरिकलाओ, चत्तारि य वेया संगोवंगा; एयाइं मिच्छादिट्ठिस्स मिच्छत्तपरिग्गहियाइं मिच्छासुयं एयाइं चेव समदिट्ठिस्स सम्मत्तपरिग्गहियाइं सम्मसुयं, अहवा मिच्छ-दिट्ठिस्सवि एयाइं चेव सम्मसुयं; कम्हा ? सम्मत्तहेउत्तणओ; जम्हा ते मिच्छदिट्ठिया तेहिं चेव समएहिं चोइया समाणा केइ सपक्खदिट्ठिओ चयंति, "से त्तं मिच्छासुयं" ॥

सूत्र-४२ से किं तं साइयं सपज्जवसियं, अणाइयं, अपज्ज-वसियं च ? इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं वुच्छित्तिनयट्ठयाए साइयं सपज्जवसियं, अवुच्छित्तिनयट्ठयाए अणाइयं अपज्जव-सियं; तं समासओ चउव्विहं पण्णत्तं, तं जहा-दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ। तत्थ दव्वओ णं सम्मसुयं एगं पुरिसं पडुच्च साइयं सपज्जवसियं, बहवे पुरिसेय पडुच्च अणाइयं अपज्जवसियं, खेत्तओ णं पंच भरहाइं पंचेरवयाइं पडुच्च साइयं सपज्जवसियं, पंच महाविदेहाइं पडुच्च अणाइयं अपज्जवसियं, कालओ णं उस्सप्पिणिं ओसप्पिणिं च पडुच्च साइयं सपज्जवसियं, नो उस्सप्पिणिं नो ओसप्पिणिं च पडुच्च अणाइयं अपज्जवसियं, भावओ णं जे जया जिणपन्नत्ता भावा आघविज्जंति, पण्णविज्जं-ति, परूविज्जंति, दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति, ते तया भावे पडुच्च साइयं सपज्जवसियं खाओवसमियं पुण भावं पडुच्च अणाइयं अपज्जवसियं, अहवा भवसिद्धियस्स सुयं साइयं सपज्जवसियं च, अभवसिद्धियस्स सुयं अणाइयं अप-ज्जवसियं [च], सव्वागासपएसग्गं सव्वागासपएसेहिं अणन्त-गुणियं पज्जवक्खरं निप्फज्जइ, सव्वजीवाणं पि य णं अक्खरस्स अणन्तभागो, निच्चुग्घाडियो। जइ पुण सोऽवि आवरिज्जा तेणं

जीवो अजीवत्तं पाविज्जा,—सुट्ठुवि मेहसमुदए, होइ पभा चंदसूराणं, "से त्तं साइयं सपज्जवसियं, से त्तं अणाइयं अपज्जवसियं" ॥

सूत्र-४३ से किं तं गमियं ? गमियं दिट्ठिवाओ, से किं तं अगमियं ? अगमियं, कालियं, सुयं, "से त्तं गमियं, से त्तं अगमियं"। अहवा तं समासओ दुविहं पण्णत्तं, तं जहा-अंगपविट्ठं, अंगबाहिरं च। से किं तं अंगबाहिरं ? अंगबाहिरं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा-आवस्सयं च, आवस्सयवइरित्तं च। से किं तं आवस्सयं ? आवस्सयं छव्विहं पण्णत्तं, तंजहा-समाइयं, चउवीसत्थओ, वंदणयं, पडिक्कमणं, काउस्सग्गो, पच्चक्खाणं, "से त्तं आवस्सयं"। से किं तं आवस्सयवइरित्तं ? आवस्सयवइरित्तं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा-कालियं च, उक्कालियं च। से किं तं उक्कालियं ? उक्कालियं, अणेगविहं पण्णत्तं, तं जहा-दसवेयालियं, कप्पियाकप्पियं, चुल्लकप्पसुयं, महाकप्पसुयं, उववाइयं, रायपसेणियं, जीवाभिगमो, पण्णवणा, महापण्णवणा, पमायप्पमायं, नन्दी, अणुओगदाराइं, देविंदत्थओ, तंदुलवेयालियं, चन्दाविज्झयं, सूरपण्णत्ती, पोरिसिमण्डलं, मण्डलपवेसो, विज्जाचरणविणिच्छओ, गणिविज्जा, झाणविभत्ती, मरणविभत्ती, आयविसोही, वीयरागसुयं, संलेहणा सूयं, विहारकप्पो, चरणविही, आउरपच्चक्खाणं, महापच्चक्खाणं, एवमाइ; "से त्तं उक्कालियं"। से कि तं कालिदं ? कालियं अणेगविहं पण्णत्तं, तं जहा—उत्तरज्झयणाइं, दसाओ, कप्पो, ववहारो, निसीह, महानिसीहं, इसिभासियाइं, जम्बूदीवपन्नत्ती, दीवसागरपन्नत्ती, चन्दपन्नत्ती, खुड्डिया-विमाणपविभत्ती, महल्लिया-विमाणपविभत्ती, अंगचूलिया, वग्गचूलिया, विवाहचूलिया; अरुणोववाए; वरुणोववाए; गरुलोववाए, धरणोववाए, वेसमणोववाए, वेलंधरोववाए,

देविंदोववाए, उट्ठाणसुयं, समुट्ठाणसुयं, नागपरियावणियाओ, निरयावलियाओ, कप्पियाओ, कप्पवडंसियाओ, पुप्फियाओ, पुप्फचूलियाओ, वण्हीदसाओ [आसीविसभावणाणं, दिट्ठिविस-भावणाणं, सुमिणभावणाणं, महासुमिणभावणाणं, तेयग्गिनिस-ग्गाणं], एवमाइयाइं चउरासीइं पइन्नगसहस्साइं भगवओ अर-हओ उसहसामिस्स आइतित्थयरस्स, तहा सखिज्जाइं पइन्नग-सहस्साइं मज्झिमगाणं जिणवराणं, चोद्दसपइन्नगसहस्साइं भग-वओ वद्धमाणसामिस्स, अहवा जस्स जत्तिया सीसा उप्पत्ति-याए, वेणइयाए कम्मयाए, पारिणामियाए, चउव्विहाए बुद्धीए उववेया, तस्स तत्तियाइं परण्णगसहस्साइं, पत्तेयबुद्धावि तत्तिया चेव। 'से त्तं कालियं, से त्तं आवस्सयवइरित्तं, से त्तं अणंगपविट्ठं' ॥

सूत्र-४४ से किं तं अंगपविट्ठं ? अंगपविट्ठं दुवालसविहं पण्णत्तं, तं जहा-आयारो, सूयगडो, ठाणं, समवाओ, विवाहपन्नत्ती, नायाधम्मकहाओ, उवासगदसाओ, अन्तगडदसाओ, अणु-त्तरोववाइयदसाओ, पण्हावागरणाइं, विवागसुयं, दिट्ठिवाओ ॥

सूत्र-४५ से किं तं आयारे ? आयारे णं समणाणं निग्गं-थाणं आयार गोयर विणय वेणइय सिक्खा भासा अभासा चरण करण जायामायावित्तीओ आघविज्जंति, से समासओ पञ्चविहे पण्णत्ते, तं जहा-नाणायारे, दंसणायारे, चरित्तायारे, तवायारे, वीरियायारे, आयारे णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणु-ओगदारा, संखिज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखिज्जाओ पडिवत्तीओ, से णं अंगट्ठयाए पढमे अङ्गे, दो सुयक्खंधा, पणवीसं अज्झयणा, पञ्चासीइ उद्देसणकाला, पञ्चासीइ समुद्देसणकाला, अट्ठारस पयसहस्साइं पयग्गेणं, संखिज्जा अक्खरा, अणन्ता गमा,

अणन्ता पच्जवा, परित्ता तसा, अणन्ता थावरा, सासयकड-निबद्ध निकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति, पन्नविज्जंति, परूविज्जंति, दंसिज्जंति, निदिंसिज्जति, उवदंसिज्जति, से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया, एवं चरणकरणपरूवणा आघाविज्जइ; 'से त्तं आयारे' (१) ॥

सूत्र ४६ से किं तं सूयगडे ? सूयगडे णं लोए सूइज्जइ; अलोए सूइज्जइ, लोयालोए सूइज्जइ जीवा सूइज्जंति, अजीवा सूइज्जन्ति, जीवाऽअजीवा सूइज्जन्ति, ससमए सूइज्जइ परसमए सूइज्जइ; ससमयपरसमए सूइज्जइ; सूयगडे णं असीयस्स किरियावाइसयस्स चउरासीइए अकिंरियावाइणं; सत्त ट्ठीए अण्णाणियवाईणं बत्तीसाए वेणइयवाईणं, तिण्हं तेसट्ठाणं; पास-डियसयाणं वूहं किच्चा ससमए ठाविज्जइ, सूयगडे णं परित्ता वायणा संखिज्जा अणुओगदारा; संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखिज्जाओ संगहणीओ; संखिज्जाओ पडिवत्तीओ, से णं अंगट्ठयाए बिइए अगे दो सुयक्खधा; तेवीसं अज्झयणा; तित्तीसं उद्देसणकाला तित्तोसं समुद्देसणकाला, छत्तीसं पयसहस्साइं पयग्गेणं, संखिज्जा अक्खरा, अणन्ता गमा, अणन्ता पज्जवा, परित्ता तसा अणन्ता थावरा, सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जन्ति, पन्नाविज्जन्ति, परूविज्जन्ति, दंसिज्जन्ति, निदंसिज्जन्ति, उवदंसिज्जन्ति, से एवं आया; एवं नाया एवं विण्णाया, एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ, 'से तं सूयगडे' (२) ॥

सूत्र-४७ से किं तं ठाणे ? ठाणे णं जीवा ठाविज्जन्ति; अजीवा ठाविज्जन्ति, जीवाजीवा ठाविज्जन्ति, ससमए ठाविज्जइ;

परसमए ठाविज्जइ; ससमयपरसमए ठाविज्जइ; लोए ठावि- ज्जइ; अलोए ठाविज्जइ; लोयालोए ठाविज्जइ। ठाणे णं टंका; कूडा; सेला; सिहारिणो, पब्भारा, कुंडाइं, गुहाओ, आगरा, दहा; नईओ, आघविज्जंति । (ठाणे णं एगाइयाए एगुत्तरियाए वुड्ढीए दसट्ठाणगविवड्ढियाणं भावाणं परूवणा आघविज्जइ।) ठाणे णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा; संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तिओ; से णं अंगट्ठयाए तइए अंगे, एगे सुयक्खंधे, दसअज्झयणा; एगवीसं उद्देसणकाला एगवीसं समुद्देसणकाला, बावत्तरी पयसहस्सा पयग्गेणं; संखेज्जा अक्खरा, अणन्ता गमा, अणन्ता पज्जवा; परित्ता तसा अणन्ता थावरा; सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपन्नत्ता भावा आघविज्जंति; पन्नविज्जंति, परूविज्जंति, दंसिज्जंति निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति। से एवं आया; एवं नाया, एवं विण्णाया, एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ; "से त्तं ठाणे" (३) ॥

सूत्र ४८ से किं तं समवाए? समवाए णं जीवा समासिज्जन्ति, अजीवा समासिज्जन्ति, जीवाजीवा समासिज्जन्ति, ससमए, समासिज्जइ, परसमए समासिज्जइ, ससमयपरसमए समासिज्जइ, लोए समासिज्जइ, अलोए समासिज्जइ, लोयालोए समासिज्जइ। समवाए णं एगाइयाणं एगुत्तरियाणं ठाणसयविवड्ढियाणं भावाणं परूवणा आघविज्जइ, दुवालसविहस्स य गणिपिडगस्स पल्लवग्गे समासिज्जइ; समवायस्सणं परित्ता वायणा, संखिज्जा अणुओगदारा, संखिज्जा वेढा; संखिज्जा सिलोगा, संखिज्जाओ निज्जुत्तिओ, संखिज्जाओ संगहणीओ, संखिज्जाओ, पडिवत्तीओ, से णं अंगट्ठयाए चउत्थे अंगे, एगे सुयक्खंधे, एगे उद्देसणकाले, एगे समुद्देसणकाले, एगे चोयाले

सयसहस्से पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणन्ता गमा; अणन्ता पज्जवा, परित्ता तसा, अणन्ता थावरा सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जन्ति, पन्नविज्जन्ति; परूविज्जन्ति, दंसिज्जन्ति, निदंसिज्जन्ति, उवदंसिज्जन्ति, से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया, एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ। 'से त्तं समवाए' (४) ॥

सूत्र-४६ से किं तं विवाहे ? विवाहे णं जीवा विआहिज्जंति, अजीवा विआहिज्जंति जीवाजीवा विआहिज्जंति, ससमए विआहिज्जंति, परसमए विआहिज्जंति; ससमए परमसए विआहिज्जंति लोए विआहिज्जंति, अलोए विआहिज्जंति लोयालोए विआहिज्जंति; विवाहस्स णं परिता वायणा, संखिज्जा अणुओगदारा, संखिज्जा वेढा, संखिज्जा सिलोगा, संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखिज्जाओ संगहणीओ, संखिज्जाओ पडिवत्तीओ, से णं अंगट्ठयाए पञ्चमे अङ्गे, एगे सुयक्खंधे; एगे साइरेगे अज्झयणसए, दस उद्देसगसहस्साइं, दस समुद्देसगसहस्साइं; छत्तीसं वागरणसहस्साइं, दो लक्खा अट्ठासीइं पयसहस्साइं पयग्गेणं, संखिज्जा अक्खरा, अणन्ता गमा, अणन्तापज्जवा परित्ता तसा; अणन्ता थावरा, सासयकडनिबद्ध-निकाइया जिणपन्नत्ता भावा, आघविज्जंति, पन्नविज्जंति, परूविज्जंति, दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति, से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया, एवं चरण-करण-परूवणा आघविज्जइ; 'से त्तं विवाहे' (५) ॥

सूत्र-५० से किं तं नायाधम्मकहाओ ? नायाधम्मकहासु णं नायाणं नगराइं, उज्जाणाइं, चेइयाइं, वणसंडाइं, समोसरणाइं, रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ, इहलोइय-परलोइया, इड्ढिविसेसो, भोगपरिच्चाया; पव्वज्जाओ, परिआया,

सुयपरिग्गहा, तवोवहाणाइं, संलेहणाओ, भत्तपच्चक्खाणाइं, पाओवगमणाइं, देवलोगगमणाइं, सुकुलपच्चायाईओ, पुणबोहिलाभा, अन्तकिरियाओ य आघविज्जन्ति, दस धम्मकहाणं वग्गा, तत्थ णं एगमेगाए धम्मकहाए पंच-पंच-अक्खाइयासयाइं, एगमेगाए अक्खाइयाए पंच-पंच-उवक्खाइया-सयाइं एगमेगाए उवक्खाइयाए पंच-पंच-अक्खाइय-उवक्खाइयासयाइं, एवमेव सपुव्वावरेणं अद्धुट्ठाओ कहाणगकोडीओ हवन्तित्ति समक्खायं। नायाधम्मकहाणं परित्ता वायणा, संजिज्जा अणुओगदारा, संखिज्जा वेढा, संखिज्जा सिलोगा संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ संखिज्जाओ संगहणीओ, संखिज्जाओ पडिवत्तीओ से णं अंगट्ठयाए छट्ठे अंगे, दो सुयक्खंधा, एगूणवीसं अज्झयणा, एगूणवीसं उद्देसणकाला, एगूणवीसं समुद्देसणकाला, संखेज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणन्ता गमा, अणन्ता पज्जवा, परित्ता तसा, अणन्ता थावरा, सासय-कड-निवद्ध-निकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जन्ति, पण्णविज्जन्ति, परूविज्जन्ति, दंसिज्जन्ति, निदंसिज्जन्ति, उवदंसिज्जन्ति, से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया, एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ, 'से त्तं नायाधम्मकहाओ' (६) ॥

सूत्र ५१ से किं तं उवासगदसाओ ? उवासगदसासु णं समणोवासयाणं नगराइं, उज्जाणाइं, चेइयाइं, वणसंडाइं, समोसरणाइं, रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ इहलोइयपरलोइया इड्ढिविसेसा, भोगपरिच्चाया, पव्वज्जाओ, परिआगा, सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइं, सीलव्वयगुणवेरमण-पच्चक्खाणपोसहो ववास-पडिवज्जणया, पडिमाओ, उवसग्गा, संलेहणाओ, भत्तपच्चक्खाणाइं, पाओवगमणाइं, देवलोगगमणाइं, सुकुलपच्चाआईओ, पुणबोहिलाभा, अन्तकिरियाओ आघवि-

ज्जंति; उवासगदसाणं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओग-दारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिव-त्तीओ । से णं अंगट्ठयाए सत्तमे अंगे एगे सुयक्खन्धे, दस अज्झयणा, दस उद्देसणकाला, दस समुद्देसणकाला, संखेज्जा पयसहस्सा पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणन्ता गमा, अणन्ता पज्जवा, परित्ता तसा, अणन्ता थावरा, सासय-कड-निबद्धनिकाइया जिणपण्णत्ता, भावा आघविज्जंति, पन्नविज्जंति, परूविज्जन्ति, दंसिज्जन्ति, निदंसिज्जन्ति, उवदंसिज्जन्ति, से एवं आया, एवं नाया एवं विन्नाया, एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ 'से त्तं उवासगदसाओ' ॥७॥

सूत्र ५२ से किं तं अंतगडदसाओ ? अंतगडदसासु णं अंतगडाण नगराइं, उज्जाणाइं, चेइयाइं वणसंडाइं समोसरणाइं, रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ, इहलोइयपर-लोइया इड्ढिविसेसा, भोगपरिच्चा, पव्वज्जाओ, परिआगा, सुयपरि-ग्गहा, तवोवहाणाइं, संलेहणाओ, भत्तपच्चक्खाणाइं पाओवगम-णाइं, अन्तकिरियाओ आघविज्जन्ति, अन्तगडदसासु णं परित्ता वायणा; संखिज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा-सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ, संखे-ज्जाओ पडिवत्तीओ, से णं अङ्गट्ठयाए अट्ठमे अङ्गे, एगे सुयक्खंधे, अट्ठ वग्गा, अट्ठ उद्देसणकाला अट्ठ समुद्देसणकाला संखेज्जा पय-सहस्सा पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणन्ता गमा, अणन्ता पज्जवा, परित्ता तसा, अणन्ता थावरा, सासय-कड-निबद्धनिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जन्ति, पन्नविज्जन्ति, परूविज्जन्ति, दंसिज्जन्ति, निदंसिज्जन्ति, उवदंसिज्जन्ति, से एवं आया, एवं नाया, एवं विन्नाया, एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ; 'से त्तं अन्तगडदसाओ' (८) ॥

सूत्र-५३ से किं तं अणुत्तरोववाइयदसाओ ? अणुत्तरोववाइदसासु णं अणुत्तरोववाइणं नगराइं, उज्जाणाइं चेइयाइं, वणसंडाइं, समोसरणाइं, रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया; धम्मकहाओ, इहलोइयपरलोइया इड्ढिविसेसा, भोगपरिच्चागा, पव्वज्जाओ, परिआगा, सुयपरिग्गहा, तवोवहाणाइं पडिमाओ, उवसग्गा, संलेहणाओ, भत्तपच्चक्खाणाइं, पाओवगमणाइं अणुत्तरोववाइ यत्ते उववत्ति, सुकुलपच्चायाईओ, पुणबोहिलाभा, अंतकिरियाओ आघविज्जंति, अणुत्तरोववाइयदसासु णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ, से णं अंगट्ठयाए नवमे अंगे, एगे सुयक्खंधे, तिन्नि वग्गा, तिन्नि उद्देसणकाला, तिन्नि समुद्देसणकाला, संखेज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं संखेज्जा अक्खरा, अणन्ता गमा; अणन्ता पज्जवा, परित्ता, तसा, अणन्ता थावरा, सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति, पण्णविज्जंति; परूविज्जंति, दंसिज्जन्ति, निदंसिज्जन्ति, उवदंसिज्जन्ति, से एवं आया एवं नाया, एवं विण्णाया, एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ। 'से त्तं अणुत्तरोववाइयदसाओ' (९) ॥

सूत्र-५४ से किं तं पण्हावागराणाइं ? पण्हावागरणेसु णं अट्ठुत्तरं पसिणसयं, अट्ठुत्तरं अपसिणसयं; अटठुत्तरं पसिणापसिणसयं, तं जहा-अगुट्ठपसिणाइं, बाहुपसिणाइं' अद्दागपसिणाइं अन्नेवि विचित्ता विज्जाइसया; नागसुवण्णेहिं सद्धिं दिव्वा संवाया आघविज्जंति पण्हावागरणाणं परित्ता वायणा संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ; संखेज्जाओ पडिवत्तीओ

से णं अङ्गट्ठयाए दसमे अङ्गे एगे सुयक्खंधे, पणयालीसं अज्झयणा, पणयालीसं उद्देसणकाला पणयालीसं समुद्देसणकाला, संखेज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं; संखेज्जा अक्खरा; अणन्ता गमा, अणन्ता पज्जवा, परित्ता तसा, अणन्ता थावरा, सासयकडनिबद्ध-निकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जन्ति, पणविज्जन्ति, परूविज्जन्ति, दंसिज्जन्ति, निदंसिज्जन्ति; उवदंसिज्जन्ति, से एवं आया, एवं नाया; एवं विण्णाया, एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ, से त्तं पण्हावागरणाइं' (१०) ॥

दस सुहविवागा

सूत्र ५५ से किं तं विवागसुयं ? विवागसुए णं सुकड-दुक्कडाणं कम्माणं फलविवागे आघविज्जइ, तत्थ णं दस दुहविवागा, से किं तं दुहविवागा ? दुहविवागेसु णं दुह-विवागाणं नगराइं, उज्जाणाइं, वणसंडाइं, चेइयाइं समोसरणाइं, रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ, इहलोइय-परलोइया इड्ढिविसेसा, निरयगमणाइ, संसारभवपवंचा; दुहपरं-पराओ, दुकुलपच्चायाईओ, दुल्लबोहियत्तं, आघविज्जइ; से त्तं दुहविवागा'। से किं त्तं सुहविवागा ? सुहविवागेसु ण सुह-विवागाणं नगराइं, उज्जाणाइं, वणसंडाइं, चेइयाइं; समोसरणाइं, रायाणो, अम्मापियरो; धम्मायरिया धम्मकहाओ, इहलोइयपर-लोइया इड्ढिविसेसा, भोगपरिच्चागा, पव्वज्जाओ; परियागा, सुयपरिग्गहा, तवोवहाणाइं; संलेहणाइं, भत्तपच्चक्खाणाइं; पा-ओवगमणाइं, देवलोगगमणाइं, सुहपरम्पराओ, सुकुलपच्चायाईओ, पुणबोहिलाभा, अन्तकिरियाओ आघविज्जन्ति, विवागसुयस्स णं परित्ता वायणा संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जा निज्जुत्तीओ संखिज्जाओ संगहणीओ, संखिज्जाओ पडिवत्तीओ, से णं अङ्गट्ठयाए इक्कारसमे

अङ्गे, दो सुयक्खंधा, वीसं अज्झयणा, वीसं उद्देसणकाला, वीसं समुद्देसणकाला, संखिज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणन्ता गमा; अणन्ता पज्जवा, परित्ता तसा, अणन्ता थावरा, सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति, पन्नविज्जंति, परूविज्जंति, दंसिज्जति, निदंसिज्जंति, से एवं आया, एवं नाया, एवं विन्नाया, एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ; "से त्तं विवागसुयं (११)

सूत्र-५६ से किं तं दिट्ठिवाए ? दिट्ठिवाए णं सव्वभावपरूवणा आघविज्जइ, से समासओ पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा-परिकम्मे, सुत्ताइं, पुव्वगए, अणुओगे चूलिया। से किं तं परिकम्मे ? परिकम्मे सत्तविहे पण्णत्ते, तं जहा-सिद्धसेणिया परिकम्मे, मणुस्ससेणिया परिकम्मे, पुट्ठसेणिया परिकम्मे, ओग ढसेणिया परिकम्मे, उवसंपज्जसेणिया परिकम्मे, विप्पजहणसेणिया परिकम्मे; चुयाचुयसेणिया परिकम्मे। से किं तं सिद्धसेणिया परिकम्मे ? सिद्धसेणिया परिकम्मे चउद्दसविहे पण्णत्ते, तं जहा-माउगापयाइं, एगट्ठियपयाइं, अट्ठ पयाइं पाढोआगासपयाइं, केउभूयं, रासिबद्धं, एगगुणं, दुगुणं, तिगुणं केउभूयं, पडिग्गहो, संसारपडिग्गहो, नंदावत्तं, सिद्धावत्तं, "से त्तं सिद्धसेणिया परिकम्मे" (१)। से किं तं मणुस्ससेणिया परिकम्मे ? मणुस्ससेणिया परिकम्मे चउद्दसविहे पण्णत्ते, तं जहा-माउगापयाइं, एगट्ठियपयाइं, अट्ठपयाइं पाढोआगासपयाइं केउभूयं रासिबद्धं, एगगुणं, दुगुणं, तिगुणं केउभूयं पडिग्गहो, संसारपडिग्गहो, नंदावत्तं मणु-सावत्तं "से त्तं मणुस्ससेणिया परिकम्मे" (२)।

से किं तं पुट्ठसेणिया परिकम्मे ? पुट्ठसेणिया परिकम्मे इक्कारसविहे पण्णत्ते, त जहा-पाढोआगासपयाइं, केउभूयं,

रासिबद्धं, एगगुणं, दुगुणं, तिगुणं, केउभूयं, पडिग्गहो संसार-पडिग्गहो, नंदावत्तं, पुट्ठावत्तं, "से त्तं पुट्ठसेणिया परिकम्मे" (३)। से किं तं ओगाढसेणिया परिकम्मे? ओगाढसेणिया परिकम्मे इक्कारसविहे पण्णत्ते, तं जहा-पाढोआगासपयाइं, केउभूयं रासिबद्धं एगगुणं, दुगुणं, तिगुणं, केउभूयं, पडिग्गहो, संसारपडिग्गहो, नंदावत्तं; ओगाढवत्तं, "से त्तं ओगाढसेणिया परिकम्मे" (४)। से किं तं उवसंपज्जणसेणिया परिकम्मे? उवसंपज्जणसेणिया परिकम्मे इक्कारसविहे पण्णत्ते, तं जहा-पाढोआगासपयाइं केउभूयं रासिबद्धं, एगगुणं, दुगुणं, तिगुणं, केउभूयं पडिग्गहो, संसारपडिग्गहो, नंदावत्तं उवसंपज्जणा-वत्त, "से त्तं उवसंपज्जणसेणिया परिकम्मे" (५)।

से किं तं विप्पजहणसेणिया परिकम्मे? विप्पजहणसे-णिया परिकम्मे इक्कारसविहे पण्णत्ते, तं जहा-पाढोआगास-पयाइं, केउभूयं, रासिबद्धं, एगगुणं; दुगुणं, तिगुणं, केउभूयं, पडिग्गहो संसारपडिग्गहो, नंदावत्तं, विप्पजहणावत्तं, "से त्तं विप्पजहणसेणिया परिकम्मे" (६)।

से किं तं चुयाचुयसेणिया परिकम्मे? चुयाचुयसेणिया परिकम्मे इक्कारसविहे पन्नत्ते, तं जहा पाढोआगासपयाइ, केउ-भूयं रासिबद्धं, एगगुणं, दुगुणं, तिगुणं,केउभूयं पडिग्गहो, संसारपडिग्गहो नंदावत्तं चुयाचुयवत्तं, "से त्तं चुयाचुय-सेणिया परिकम्मे" (७)।

छ चउक्कनइयाइं, सत्त तेरासियाइं, से तं परिकम्मे (१)

से किं तं सुत्ताइं? सुत्ताइं बावीसं पन्नत्ताइं, तं जहा-उज्जुसुयं, परिणयापरिणयं, बहुभंगियं विजयचरियं, अणंतरं, परंपरं आसाणं, सजूहं, सभिण्णं, आहय्वायं; सोवत्थियावत्तं, नंदावत्तं, बहुलं, पुट्ठापुट्ठं, वियावत्तं, एवंभूयं दुयावत्तं वत्तमाण-पयं, समभिरूढं, सव्वओभद्दं, पस्सासं, दुप्पडिग्गहं, इच्चइयाइं

बावीसं सुत्ताइं छिन्नछेयनइयाणि ससमयसुत्तपरिवाडीए; इच्चेइयाइं बावीसं सुत्ताइं अच्छिन्नच्छेयनयाणि आजीविय-सुत्तपरिवाडीए, इच्चेइयाइं बावीसं सुत्ताइं तिगणइयाणि तेरासिय सुत्तपरिवाडीद; इच्चेइयाइं बावीसं सुत्ताइं चउक्कनइयाणि ससमयसुत्तपरिवाडीए; एवामेव सपुव्वावरेणं अट्ठासीई सुत्ताइं भवन्तित्ति मक्खायं; 'से त्तं सुत्ताइ" (२) ॥

से किं तं पुव्वगए ? पुव्वगए चउद्दसविहे पण्णत्ते; तं जहा-उप्पायपुव्वं; अग्गाणीयं; वीरियं; अत्थिनत्थिप्पवायं; नाण-प्पवायं; सच्चप्पवायं; आयप्पवायं, कम्मप्पवायं; पच्चक्खा-णप्पवायं विज्जाणुप्पवायं अबंझं; पाणाउ किरियाविलासं; लोकविंदुसारं। उप्पायपुव्वस्स णं दस वत्थू चत्तारि चूलिया-वत्थू ; पण्णत्ता। अग्गाणीयपुव्वस्स णं चोद्दस वत्थू ; दुवालस चूलियावत्थू पण्णत्ता; वीरियपुव्वस्स णं अट्ठ वत्थू ; अट्ठ चूलियावत्थू पण्णत्ता। अत्थिनत्थिप्पवायपुव्वस्स णं अट्ठारस वत्थू ; दस चूलियावत्थू पण्णत्ता। नाणप्पवायपुव्वस्स णं बारस वत्थू पण्णत्ता। सच्चप्पवायपुव्वस्स णं दोण्णि वत्थू पण्णत्ता। आयप्पवायपुव्वस्स णं सोलस वत्थू पण्णत्ता। कम्मप्पवायपुव्वस्स णं तीसं वत्थू पण्णत्ता। पच्चक्खाण-पुव्वस्स णं वीसं वत्थू पण्णत्ता। विज्जाणुप्पवायपुव्वस्स णं पन्नरस वत्थू पण्णत्ता। अवंझपुव्वस्स णं बारस वत्थू पण्णत्ता। पाणाउपुव्वस्स णं तेरस वत्थू पण्णत्ता। किरियाविसीलं पुव्वस्स णं तीसं वत्थू पण्णत्ता। लोकविंदुसारपुव्वस्स णं पणवीसं वत्थू पण्णत्ता;

दस चोद्दस अट्ठऽट्ठारसेव बारस दुवे य वत्थूणि।
सोलस तीसा वीसा; पन्तरस; अणुप्पवायम्मि ॥८९॥
बारस इक्कारसमे बारसमे तेरसेव वत्थूणि।
तीसा पुण तेरसमे; चोद्दसमे पणवीसाओ ॥९०।

चत्तारि दुवालस अट्ठ, चेव दस चेव चुल्लवत्थूणी।
आइल्लाण चउण्हं, सेसाणं चूलिया नत्थि ॥६१॥

'सेत्तं पुव्वगए' (३)। से किं तं अणुओगे? अणुओगे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा मूलपढमाणुओगे, गंडियाणुओगे य। से किं तं मूलपढमाणुओगे? मूलपढमाणुओगे णं अरहंताणं भगवन्ताणं पुव्वभवा, देवलोगगमणाइं, आउं चवणाइं जम्मणाणि अभिसेया रायवर-सिरीओ पव्वज्जाओ, तवा य उग्गा, केवलनाणुप्पयाओ, तित्थपवत्तणाणि य, सीसा गणा गणहरा अज्जपवत्तिणीओ संघस्स चउव्विहस्सजं च परिमाणं, जिणमणपज्जवओहिनाणी, सम्मत्तसुयनाणिणो य वाई, अणुत्तरगई य, उत्तरवेउव्विणो य मुणिणो, जत्तिया सिद्धा, सिद्धिपहो जह देसिओ, जच्चिरं च कालं, पाओवगया जे जहिं जत्तियाइं भत्ताइं [अणसणाए] छेइत्ता अन्तगडे, मुणिवरुत्तमे, तिमिरओघविप्पमुक्के, मुक्खसुहमणुत्तरं च पत्ते, एवमन्ने य एवमाइभावा मूलपढमाणुओगे कहिया, 'से त्तं मूलपढमाणुओगे'। से किं तं गंडियाणुओगे? गंडियाणुओगे कुलगरगंडियाओ, तित्थयरगंडियाओ, चक्कवट्टिगंडियाओ, दसारगंडियाओ, बलदेवगंडियाओ, वासुदेवगंडियाओ, गणधरगंडियाओ, भद्दबाहुगंडियाओ, तवोकम्मगंडियाओ, हरिवंसगंडियाओ, उस्सप्पिणीगंडियाओ, ओसप्पिणीगंडियाओ, चित्तंतरगंडियाओ अमर नर तिरिय गइ गमण विविहपरियट्टणेसु एवमाइयाओ गंडियाओ आघविज्जन्ति, पण्णविज्जन्ति। 'से त्तं गंडियाणुओगे, से त्तं अणुओगे' ॥४॥

से किं तं चूलियाओ? चूलियाओ आइल्लाणं चउण्हं पुव्वाणं चूलिया सेसाइं पुव्वाइं अचूलिआइं, 'से त्तं चूलियाओ (५)'। दिट्ठिवायस्स णं परित्ता वायणा संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ, संखि-

ज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ। से णं अंगट्ठयाए बारसमे अंगे, एगे सुयक्खंधे, चोद्दस पुव्वाइं संखेज्जा वत्थू, संखेज्जा चूलवत्थू, संखेज्जा पाहुडा, संखेज्जापाहुडपाहुडा, संखेज्जाओ पाहुडियाओ; संखेज्जाओ पाहुडपाहुडियाओ, संखेज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणन्ता गमा, अणन्ता पज्जवा; परित्ता तसा अणन्ता थावरा, सासयकडनिबद्धनिकाइयाजिणपन्नत्ता भावा आघविज्जन्ति, पण्णविज्जन्ति, परूविज्जन्ति, दंसिज्जन्ति, निदंसिज्जन्ति, उवदंसिज्जन्ति। से एवं आया, एवं नायाया, एवं विण्णाया एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जन्ति, 'से त्तं दिट्ठिवाव' ॥१२॥

सूत्र-५७ इच्चेइयंमि दुवालसंगे गणिपिडगे अणन्ता भावा, अणन्ता अभावा, अणन्ता हेऊ, अणन्ता अहेऊ, अणन्ता कारणा, अणन्ता अकारणा, अणन्ता जीवा, अणन्ता अजीवा, अणन्ता भवसिद्धिया, अणन्ता अभवसिद्धिया, अणन्ता सिद्धा, अणन्ता असिद्धा पण्णत्ता—

भावमभावा हेऊमहेउ, कारणमकारणे चेव।
जीवाजीवा भवियमभविया सिद्धा असिद्धा य ॥६२॥

इच्जेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं तीए काले अणन्ता जीवा आणाए विराहित्ता चाउरंतं संसारकंतारं अणुपरियट्टिंसु, इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं पडुप्पण्णकाले परित्ता जीवा आणाए विराहित्ता चाउरंतं संसारकंतारं अणुपरियट्टन्ति। इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं अणागए काले अणन्ता जीवा आणाए-विराहित्ता चाउरंतं संसारकंतारं अणुपरियट्टिस्सन्ति। इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं तीए काले अणन्ता जीवा आणाए आराहित्ता चाउरंतं संसारकंतारं वीईवइंसु। इच्चेइयं

दुवालसंगं गणिपिडगं पडुप्पण्णकाले परित्ता जीवा आणाए आराहित्ता चाउरंतं संसारकंतारं वीईवयंति। इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं अणागए काले अणन्ता जीवा आणाए आराहित्ता चाउरंतं संसारकंतारं वीईवइस्सन्ति। इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं न कयाइ नासी, न कयाइ न भवइ; न कयाइ न भविस्सइ, भुविं च; भवइ य भविस्सइ य, धुवे; नियए, सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए, निच्चे। से जहानामए पंचअत्थिकाए न कयाइ नासी; न कयाइ नत्थि, न कयाइ न भविस्सइ भुविं च, भवइ य, भविस्सइ य, धुवे, नियए, सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए, निच्चे, एवामेव दुवालसंगं गणिपिडगं न कयाइ नासी, न कयाइ नत्थि; न कयाइ न भविस्सइ, भुविं च, भवइ य, भविस्सइ य; धुवे; नियए, सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए निच्चे। से समासओ चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ। तत्थ दव्वओ णं सुयनाणी उवउत्ते सव्वदव्वाइं जाणइ पासइ खित्तओ णं सुयनाणी उवउत्ते सव्वखेत्तं जाणइ पासइ, कालओ णं सुयनाणी उवउत्ते सव्वं कालं जाणइ पासइ, भावओ णं सुयनाणी उवउत्ते सव्वे भावे जाणइ पासइ ॥

सूत्र ५८ अक्खर सन्नी सम्मं, साइयं खलु सपज्जवसियं च।
गमियं अंगपविट्ठं, सत्तवि एए सपडिवक्खा ॥६३॥

आगमसत्थग्गहणं, जं बुद्धिगुणेहिं अट्ठहिं दिट्ठं।
बिंति सुवनाणलभं, तं पुव्वविसारया धीरा ॥६४॥

सुस्सूसइ, पडिपुच्छइ, सुणेह, गिण्हइ य ईहए याऽवि।
तत्तो अपोहए वा, वा धारेइ करेइ वा सम्मं ॥६५॥

मूअं हुंकारं वा, वाढक्कार पडिपुच्छ वीमंसा।
तत्तो पसगपारायणं च परिणिट्ठं सत्तपए ॥६६॥

सुत्तत्थो खलु पढमो, बीओ निज्जुत्तिमीसिओ भणिओ।
तइओ य निरवसेसो, एस विही होइ अणुओगे ॥६३॥

से त्तं अंगपविट्ठं; से त्तं सुयनाणं, से त्तं परोक्खनाणं,
से त्तं नन्दी ॥

॥ इअ नंदीसुत्तं समत्तं ॥

॥ श्री अनुत्तरोववाइयदशांगसूत्रम् ॥

तेणं कालेणं, तेण समएणं रायगिहेणामं णयरे होत्था- सेणियनामं राया होत्था, चेलणा देवीए, गुणसिलाए चेइए- वण्णओ ॥१॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे, अज्जऽसुहेम्मस्स समोसरणं, परिसा णिग्गया धम्मकहिओ परिसापडिगया ॥२॥

जम्बू जाव पज्जुवासइ एवं वासी जइ णं भन्ते! समणेण जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अङ्गस्स अंतगडदसाण अयमट्ठे पण्णत्ते- नवमस्स णं भन्ते! अंगस्स अणुत्तरोववाइयदसाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते? ॥३॥

तएण से सुहम्मे अणगारे, जम्बू अणगारं एवं वयासी- एवं खलु जंबू! समणेणं जाव संपत्तेणं नवमस्स अंगस्स अणुत्तरोववाइयदसाणं तिण्णि वग्गा पण्णत्ता ॥४॥

जइ णं भन्ते। समणेणं जाव संपत्तेणं नवमस्स अंगस्स अणुत्तरोववाईयदसाणं तओ वग्गा पण्णत्ता, पढमस्स णं भन्ते! वग्गस्स अणुत्तरोववाईयदसाणं [समणेणं जाव संपत्तेणं] कइ अज्झयणा पण्णत्ता? ॥५॥

एवं खलु जम्बू! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोववाइय- दसाणं पढमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—

जालि मयालि, उवयालि, पुरिससेणे य, वारिसेणे य।

दीहदंते य, लट्ठदंते य, वेहल्ले, वेहासे, अभये तियकुमारे ॥१॥६

जइ णं भंते ! समणेणं जाव सपत्तेणं अणुत्तरोववाइय दसाणं पढमस्स बग्गस्स दस अज्झयण, पण्णत्ता, पढमस्स णं भन्ते ! अज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ? ॥७॥

एवं खलु जम्बू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे रिद्धीत्थिमिय समिद्धे, गुणसिलए चेइए सेणिए राया, धारिणी देवी; सीहो सुमिणंपासित्ताणं पटिबुद्धा जाव जालि कुमारे जाए, जहा मेहो जाव अट्ठट्ठओ दाओ; जाव उप्पि-पासए जाव विहरइ ॥८॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं समणं भगवं महावीरे जाव समो-सड़े, सेणिओ णिग्गओ, जालि जहा मेहो तहा जालीवि णिग्गओ, तहेव णिक्खन्तो, जहा मेहो, एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ ॥६॥

तएणं से जाली अणगारे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव आगच्छइ २ त्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ २ त्ता एवं वयासी इच्छामिणं भन्ते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाय समाणे गुण-रयणं संवच्छरं तवोकम्मं उवसंपजित्ताणं विहरित्तए ? अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबन्ध करेह ॥१०॥

तएणं से जाली अणगारे समणेणं भगवया महावीरेण अब्भणुण्णाय समणे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ २ त्ता गुणरयणं संवच्छरं तवो कम्म उपसंपजित्ताणं विहरइ। तं जहा- (१) पढमं मासं चउत्थं चउत्थेणं अणिक्खित्तेणं तवो कम्मेणं दियट्ठाणु कट्टुय सूराभिमुहे आयावणभूमिए आयावेमाणे रत्तिं वीरासणेणं अवाउडढेणय। (२) दोच्चं मासं छट्ठे छट्ठेणं अणि-क्खित्तेणं तवो कम्मेणं दियट्ठाणुकट्टुए सूराभिमुहे आयावण-भूमीए आयावेमाणे; रत्तिं वीरासणेणं अवाउड्ढेणय। (३) तच्चं

मासं अट्ठमं अट्ठमेणं अणिक्खित्तेण तवो कम्मेणं दियट्ठाणुकट्टुए सूराभिमुहे, आयावण-भूमीअे आयावेमाणे, रत्तिं वीरासणेणं अवाउड्ढेणय। (४) चउत्थं मासं दसमं दसमेण अनिक्खित्तेणं तवो कम्मेणं दियट्ठाणुकट्टुए सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे रत्तिं वीरासणेणं अवाउड्डेणय। (५) पंच मासं बारसमं बारसमेणं अनिक्खित्तेणं तवो कम्मेणं दियट्ठाणुकट्टुए सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे रत्तिं वीरासणेणं अवाउड्डेणय। (६) छट्ठं मासं चउद्दसमेणं २ अणिक्खित्तेणं तवो कम्मेणं दियट्ठाणु-कट्टुए सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे रत्तिं वीरासणेणं अवाउड्ढेणय। (७) सत्तमं मासं सोलसमं सोलसमेणं अनिक्खित्तेणं तवो कम्मेणं दियट्ठाणुकट्टुए सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे रत्तिं वीरासणेणं अवाउड्ढेणय। (८) अट्ठमं मासं अट्ठारसमं अट्ठारसमेणं अनिक्खित्तेणं तवो कम्मेणं दियाट्ठण्णु-कट्टुए सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे, रत्तिं वीरासणेणं अवाउड्डेणय। (९) णवमं मासं वीसइमं वीसइमेणं अनिक्खित्तेणं तवो कम्मेणं दियट्ठाणु-कट्टुए सूराभिमुहे आयावणभूमीए, रत्तिं वीरासणेणं अवाउडडेणय। (१०) दसमं मासं बावीसाए बावीसईमेणं अनिक्खित्तेणं तवो कम्मेणं दियट्ठाणुकट्टुए सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणेणं रत्तिं वीरासणेणंअवउडडेणय। (११) एकारसमं मासं चउवीसाए चउवीसइमेणं अणिक्खित्तेणं तवो कम्मेणं दियट्ठाणु-कट्टुए सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे रत्ति वीरासणेणं अवाउड्ढेणय। (१२) बारसमं मासं छव्वीसाए छव्वीसईमेणं अनिक्खित्तेणं तवो कम्मेणं दियट्ठाणु-कट्टुए सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे रत्तिं वीरासणेणं अवाउड्डेणय। (१३)तेरसमं मासं अठावीसाए अठावीसईमेणं अनिक्खित्तेणं तवो कम्मेणं दियट्ठाणु कट्टुए सूराभिमुहे आयावणभूमीए

आयावेमाणे रत्तिं वीरासणेणं अवाउड्ढेणय। (१४) चउदसमं मासं तीसइ तीसईमेणं अनिक्खित्तेणं तवो कम्मेणं दियट्ठाणु-कट्टुए सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे रत्तिं वीरासणेणं अवाउड्ढेणय। (१५) पन्नरममं मासं बत्तीसएमं बत्तीसईमेणं अनिक्खित्तेणं तवो कम्मेणं दियट्ठाणुकट्टुए सूराभिमुहे आयावण भूमीए आयावेमाणे रत्तिं वीरासणेणं अवाउड्ढेणय। (१६) सोलमं मासं चोत्तीसएम चोत्तीसईमेणं अनिक्खित्तेणं तवो कम्मेणं दियट्ठाणु-कट्टुए सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे रत्तिं वीरासणेणं अवाउड्ढेणय ॥११॥

तएणं से जाली अणगारे गुणरयणं संवच्छरं तवो कम्मं अहासूतं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं समकाएणं फासिता पालित्ता सोहित्ता तिरित्ता किहइत्ता आणाए आराहित्ता ॥१२॥

जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ वंदइत्ता नमंसइत्ता बहुहिं चउत्थ छट्ठ अट्ठम दसम दुबालसेहिं मासेहिं अधमासखमणेहिं विचित्तेहि तवो कम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥१३॥

तएणं से जाली अणगारे तेणं उरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गइएणं एवं जा चेव जहा खंदस्स वत्तव्वया सा चेव चिंतणा आपुच्छणा थेरेहिं सद्धिं विपुलं तहेव दुरूहंति णवरं सोलस वासाइं साम्मणण परियग्गं पाउणित्ता काउमासे कालं किच्चा उड्ढं चंदिमाई सोहम्मीसाण जाव आरणच्चुए कप्पे नव य गेवेज्ज विमाणपत्थडे उड्ढं दूरं वीतीवतित्ता विजयविमाणे देवत्ता उववण्णे ॥१४॥

तत्तेणं ते थेरा भगवन्तो जालिं अणगारं कालगयं जाणित्ता, परिनिव्वाणवत्तियं काउसग्गं करेइ, पत्तचीवराइ गिण्हंति तहेव उत्तरन्ति जाव इमे से आयारभंडए ॥१६॥

भन्तेत्ति ! भगवं गोयमे जाव एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पियाणं अन्तेवासी जालीनामं अणगारं पगइ भद्दए, से णं जाली अणगारे कालमासे कालं किच्चा कहिं गए कहिं उववण्णे ? । एवं खलु गोयमा ! ममं अन्तेवासी तहेव जहा खंदयस्स जाव कालगयेउड्ढ चंदिमाई जाव विजएविमाणे देवत्ताए उववण्णे ॥१६॥

जालिस्स णं भन्ते ! देवस्स केवइयं कालं ठिइ-पण्णत्ता गोयमा ! बत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥१७॥

से णं भन्ते ! ताओ देवलोगाओ आउक्खाएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं चयं चइत्ता कहिं गच्छइ कहिं उवज्जन्ति ? । गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिस्सन्ति जाव सव्वदुक्खाणं अन्तं करिस्सई ॥१८॥

एवं खलु जम्बू ? समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोववाइयदसाणं पढमस्स वग्गस्स पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ॥

एवं सेसाणवि नवण्हं भणिअव्वं । नवरं सत्त धारिणि-सुआ वेहल्लवेहासा चेल्लणाए । आइल्लाणं पंचण्हं सोलस वासाइं सामण्णपरियाओ, तिण्हं बारस वासाइं दोण्हं पंच वासाइं आइल्लाणं पंचण्हं आंणुपुव्वीए उववाए, विजए विजयन्ते जयन्ते अपराजिए सव्वट्ठसिद्धे दीहदंते सव्वट्ठसिद्धे, अणुक्कमेणं सेसा अभओ विजये । सेसं जहा पढमे ! अभयस्स नाणत्तं-रायगिहे नगरे, सेणिए राया, नन्दा देवी माया, सेसं तहेव ।

एवं खलु जम्बू ! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोववाइय-दसाणं पढमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ॥

॥ इति पढमवग्गस्स दस अज्झयणा समत्ता ॥

॥ द्वितीय-वर्गः ॥

जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपतेणं अणुत्तरोववाइयदसाणं पढमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, दोच्चस्स णं भंते ! वग्गस्स अणुत्तरोववाइयदसाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ? ॥१॥

एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव सपत्तेणं अणुत्तरोववाइयदसाणं दोच्चस्स वग्गस्स तेरस अज्झयणा पण्णत्ता तं जहा—

दीहसेणे, महासेणे, लट्ठदंते य, गूढदंते य ।
सुद्धदंते य, हल्ले, दुमे, दुमसेणे महादुमसेणे य आहिए ॥१॥
सीहे य, सीहसेणे य, महासीहसेणे य आहिए ।
पुन्नसेणे य बोधव्वे, तेरसमे होंति अज्झयणे ॥२॥

जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोववाइयदसाणं दोच्चस्स वग्गस्स तेरस अज्झयणा पण्णत्ता, दोच्चस्सणं भंते ! वग्गस्स पढमस्स अज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?॥

एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए सेणिए राया धारिणी देवी सीहो सुमिणे जहा जाली तहा जम्मं, बालत्तणं कलाओ णवरं दीहसेणे कुमारे सव्वे ववत्तव्वया, जहा-जालिस्स जाव अंतं काहिंति ॥१॥

एवं तेरसण्हवि रायगिहे नयरे सेणिओप्पिया, धारिणी माया तेरसण्हवि सोलसवासा परियाओ मासीयाए सलेहणाए आणुपुव्वीए उववाओ विजये दोन्नि विजयंते दोन्नि, जयंते दोन्नि, अपराजिते दोन्नि, सेसा महादुमसेणं माइए पंच सव्वट्ठसिद्धे ॥२॥

एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोववाइयदसाणं दोच्चस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, मासियाए संलेहणाए दोसुवि वग्गेसु ॥ त्ति बेमि ॥ बीओ वग्गो सम्मत्तो ॥२॥

॥ तृतीय-वर्गः ॥

जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोववाइयदसाणं दोच्चस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते; तच्चस्स णं भंते ! वग्गस्स अणुत्तरोववाइयदसाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ? ॥१॥

एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोववाइयदसाणं तच्चस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—

धण्णे य, सुनक्खत्ते य, इसिदासे य आहिते ।
पेल्लए, रामपुत्ते य, चंदिमा, पिट्ठिमाइया ॥१॥

पेढालपुत्ते अणगारे, नवमे पोट्टिले वि य ।
विहल्ले; दसमे वुत्ते; एते अज्झयणा आहिया ॥२॥

जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोववाइय दसाणं तच्चस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ? ॥ ३ ॥

एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं काकंदी नामं नयरी होत्था, रिद्धत्थिमिय समिद्धा, सहसंबवणे उज्जाणे सव्वो उयसमिद्धे जियसत्तूराया ॥ ४ ॥

तत्थ णं काकंदीए नयरीए भद्दा णामं सत्थवाही परिवसइ, अड्ढा जाव अपरिभूया ॥ ५ ॥

तीसे णं भद्दाए सत्थवाहीए पुत्ते धन्ने नामं दारए होत्था; अहीण जाव सुरूवे, पंचधाइ-परिग्गहिए; तं जहा खीरधाए जहा महब्बले जाव बावत्तरिं कलाओ अहिज्जति जाव अलं भोगसमत्थे जाए यावि होत्था ॥ ६ ॥

तएणं से भद्दा सत्थवाही धण्णदारयं उम्मुक्कबालभावं जाव भोगसमत्थं वा विजाणित्ता बत्तीसं पासाय वडिंसए कारेइ २ त्ता

अब्भुग्गय-भूसिए जाव तेसिं मज्झे एगं भवणं अणेग खंभ-सय-सन्निविट्ठं जाव बत्तीसाए इब्भवरकन्नगाणं एगदिवसेणं पाणिं गिण्हावेई २ त्ता बत्तीसओ दाओ जाव उप्पिं पासाय वडिंसए फुट्टेएहिं जाव विहरइ ॥ ७॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे सओ-सढे, परिसा निग्गया, राया जहा कोणिओ तहा जियसत्तू णिगाओ ॥ ८ ॥

तएणं तस्स धण्णदावयस्स तं महया जणासद्दं जहा जमाली तहा णिग्गओ; णवरं पायविहारेणं जाव जं णवरं अम्मयं भद्दं सत्थवाहिं आपुच्छामि; तएणं अहं देवाणुप्पियाणं अंतिए जाव पव्वयामि जाव जहा जमाली तहा आपुच्छइ; मुच्छिया, वुत्तपडिवुत्तिया, जहा महव्बले जाव जाहे नो संवा ईय, जहा थावच्चापुत्तस्स जहा जियसतू आपुच्छइ, छत्त चामराओ सयमेव जियसतूनिक्खमणं करेइ, जहा थावच्चा-पुत्तस्स कण्हो, जाव पव्वइए, अणगारे जाए; इरियासमिए जाव गुत्त बंभयारी ॥ ९ ॥

तएणं से धण्णे अणगारे, जं चेव दिवसं मुंडे भवित्ता जाव पव्वइयाए तं चेव दिवसं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-एवं खलु इच्छामिणं भंते! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समणे जावज्जीवाए छट्ठं छट्ठेणं अणिक्खित्तेणं आयंबिले-परिग्गहिएणं तवो कम्मेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरित्तए, छट्ठस्सवि य णं पारणगंसि कप्पइ मे आयंबिलं पडिग्गाहित्तए, णो चेव णं अणायंबिलं, तंपि य संसट्ठेणं णो चेव णं असंसट्ठेणं, तंपि थ णं उज्झियम्मियं, णो चेव णं अणुज्झियधम्मियं, तंपि य णं जं अन्ने वहवे समणमाहणे अतिहि-किवण वणिमग्गा णावकंखंति ? अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंध करेह ॥ १० ॥

तएणं से धण्णे अणगारे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे हट्ठ-तुट्ठ जावज्जीवाए छट्ठं-छट्ठेणं अणिखित्तेणं तवो-कम्मेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥११॥

तएणं से धण्णे अणगारे पढम-छट्ठखमणं-पारणंयसि पढमाए पोरसिए सज्झायं करेति जहा गोयमसामी तहेव आपुच्छंति जाव जेणेव काकंदी णयरी तेणेव उवागच्छइ २ त्ता काकंदीए नयरीए उच्चनीच जाव अडमाणे आयंविलं जाव नावकंखंती ॥१२॥

तएणं से धण्णे अणगारे ताए आभुज्जताए पययाए पयत्ताए पग्गहियाए एसणाए, एसमाणे जइ भत्तं लब्भइ तो पाणं ण लब्भइ, अह पाणं लब्भइ तो भत्तं ण लब्भइ ॥१३॥

तएणं से धन्ने अणगारे अदीणे अविमणे अकलुसे अविसाई अपरितंत जोगी जयण घडण-जोगचरित्ते अहापज्जत्त समुदाणं पडिगाहित्ति २ त्ता काकंदीओ णयरीओ पडिणिक्खमइ २ त्ता जहा गोयमो तहा पडिदंसेइ ॥१४॥

तएणं से धण्णे अणगारे, समणं भगवं महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे अमुच्छिए जाव अणज्झोववन्ने बिलमिव पणगभूएणं अप्पाणेणं आहारं आहारिइ २ त्ता, संजमेणं-तवसा-अप्पाणं-भावेमाणे विहरइ ॥१५॥

तएणं समणं भगवं महावीरे अण्णया कयाइ काकंदीओ णयरीओ सहसंववणाओ उज्झाणाओ पडिणिक्खमइ २ त्ता वहिया जणवय विहारं विहरइ ॥ १६॥

तएण से धण्णे अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस्स अंगाइं अहिज्जति त्ता, संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विरहइ ॥१७॥

तएणं से धण्णे अणगारे तेणं ओरालेणं जहा खंद ओ जाव सुहुयहुयासणे इव तेयसा जलंते उवसोभेमाणे चिट्ठंति ॥१८॥

धन्नस्स णं अणगारस्स पायाणं अयमेयारूवे तवरूव लावण्णे होत्था से जहा नामए सुक्खछल्लीइ वा, कट्ठपाउयाइ वा, जरग्ग ओवाहणाइ वा; एवामेव धन्नस्स अणगारस्स पाया सुक्का मुक्खा लुक्खे निमंसा अट्ठिचम्मछिरत्ताए पन्नायंति, नो चेवणं मंससोणियत्ताए ॥१९॥

धन्नस्स णं अणगारस्स पायंगुलीयाणं अयमेयारूवे तवरूवलावण्णे होत्था से जहानामए कलसंगलियाइ वा मुग्गमाससंगलियाइ वा, तरुणिया छिण्णा उण्हे दिण्णा सुक्कासमाणी मिलायमाणी मिलायमाणी चिट्ठंति, एवामेव धन्नस्स पायंगुलियाओ सुक्काओ, जाव णो मंससोणियत्ताए ॥२०॥

धन्नस्स अणगारस्स जंघाण अयमेयारूवे- से जहानामए काकजंघाइ वा, कंकजंघाइ वा, ढेणियालियाजंघाइ वा, जाव णो सोणियत्ताए ॥२१॥

धन्नस्स णं जाणूणं अयमेयारूवे से जहानामए—काली पोरेइ वा, मयूरपोरेइ वा, ढेणियालियापोरेइ वा, एवं जाव सोणियत्ताए ॥२२॥

धण्णस्स णं उरुस्स जहा नामए-सामकरिल्लेइ वा, बोरिकरिल्लेइ वा, सल्लइयकरिल्लेइ वा, सामलीकरिल्लेइ वा, तरुणाय छिन्नाउण्हे दिण्णा जाव चिट्ठइ, एवामेव धन्नस्स उरू, जाव सोणियत्ताए ॥२३॥

धन्नस्स णं कडिपत्तस्स इमेयारूवे, से जहा नामए उट्टपाएइ वा, जरग्गपाएइ वा, महिसपाएइ वा, जाव णो सोणियत्ताए ॥२४॥

धन्नस्स णं उदरभायणस्स अयमेयारूवे से जहा नामए सुक्कदइएइ वा, भज्जणयकभल्लिइ वा, कट्ठकोलंबएइ वा, एवामेव उदरसुक्कं लुक्खं निम्मंसं ॥२५॥

धन्नस्स णं पांसुलियकडयाणं अयमेयारूवे से जहा नामए थासयावलीइ वा, पाणावलीइ वा, मुंडावलीइ वा, एवामेव० ॥२६॥

धण्णस्स पिट्ठकरंडगाणं अयमेयारूवे से जहा नामए कन्नावलीइ वा, गोलावलीइ वा वट्टयावलीइ वा, एवामेव० ॥२७॥

धण्णस्स उरकडयस्स अयमेयारूवे से जहा नामए- चित्त-कट्टरेइ वा, वियणपत्तेइ वा, तालियंटपत्तेइ वा, एवामेव० ॥२८॥

धन्नस्स, बाहाणं ण जहा नामाए समिसंगलियाइ वा वाहाया संगलियाइ वा, अगत्थियसंगलियाइ वा एवामेव० ॥२९॥

धण्णस्स हत्थाणं अयमेयारूवे से जहा नामए-सुक्क-छगणियाइ वा, वडपत्तेइ वा, पलासपत्तेइ वा, एवामेव० ॥३०॥

धन्नस्स हत्थंगुलियाणं से जहा नामए कलायसंगलियाइ वा, मुग्गमाससंगलियाइ वा, तरुणिया छिन्ना आयवेदिण्णा सुक्का समाणी एवामेव० ॥३१॥

धन्नस्स गीवाए से जया नामाए करगगीवाइ वा, कुंडियागोवाइ वा [कोत्थवणाइ वा] उच्चट्टवणएइ वा; एवामेव० ॥३२॥

धन्नस्स णं हणुयाए से जहा नामए-लाउयफलेइ वा, हकुवफलेइ वा, अंबगट्ठियाइ वा, एवामेव० ॥३३॥

धन्नस्स णं उट्ठाणं से जहा नामए-सुक्कजलोइ वा, सिलेसगुलियाइ वा, अलत्तगगुलियाइ वा [अंबाडग पेसीयाइ वा], एवामेव० ॥३४॥

धन्नस्स जिब्भाइ से जहा नामए वडपत्तेइ वा पलासपत्तेइ वा, (उंबरपत्तेइ वा), सागपत्तेइ वा, एवामेव० ॥३५॥

धन्नस्स नासाए से जहा नामए अंबग-पेसियाइ वा, अंबाडगपेसियाइ वा, माउलिंगपेसियाइ वा, तारुणियाइ वा, एवामेव० ॥३६॥

धण्णस्स अच्छीणं से जहा नामए-वीणाछिड्डेइ वा, बद्धीसगछिडेइ वा, पाभाइयतारगाइ वा, एवामेव० ॥३७॥

धन्नस्स कन्नाणं, से जहा नामए मुलछल्लियाइ वा, वालुंकच्छल्लियाइ वा, कारेल्लयछल्लियाइ वा; एवामेव० ॥३८॥

धन्नस्स णं अणगारस्स सीसस्स अयमेवारूवे से जहा तरुणगलाउएइ वा, तरुणगएलालुएइ वा, सिण्हालएइ वा, तरुणए जाव चिट्टंति, एवामेव धन्नस्स अणगारस्स सासं सुक्कं-भुक्खं-लुक्खं निमसं अठिचम्मछिरत्ताए पन्नायइ नो चे वणं मंससोणियत्ताए ॥३९॥

एवं सवत्थमेव णवरं उदर-भायणं, कन्ना जिहा उट्ठा, एएसिं अट्ठी न भण्णइ, चम्मछरित्ताए पन्नायंति इति भणंति ॥४०॥

धन्न णं अणगारे सुक्केणं भुक्खेणं पायजंघोरुणा विगततडि-करालेणं कडिकडाहिणं पिट्ठमणुस्सिएणं उदरभायणेणं जोइज्ज-माणेहिं पासुलियकरंडएहिं अक्खसुत्तमालाइ वा गणिज्जमाणाहिं पिट्ठकरंडगसंधिहिं गंगातरंग-भूएणं; उरकडग-देसभाएण सुक्कं-सप्पसमाणेहिं बाहाहिं सिढिल कडाली विव लंबंतेहिं य अग्ग-हत्थेहिं कंपणवाइओ विव वेवमाणीए; सीसघडिए पम्मानवदन-कमले उब्भडघडमुहे उब्भडनयणकोसे ॥४१॥

जीवं जीवेणं गच्छइ; जीव जीवेणं चिट्ठइ, भासं भासित्ता गिलाइ भासं भासमाणे गिलाइ भासं भासिस्सामित्ति गिलायइ, से जहा नामए-इंगालसगडियाइ वा, जहा खंदओ तहा हुयासणे इव भास-रासिपलिछन्ने, तवेणं ते.णं तवतेय-सिरिए उवसोभेमाणे चिट्ठइ ॥४२॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णयरे, गुणसिलए चेइए, सेणिए राया। समणे भगवं महावीरे समोसट्ठे परिसा णिगया सेणिओ णिगओ, धम्मकहा, परिसा पडिगया ॥४२॥

तएणं सेणिए राया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म समण भगवं वंदइ नमंसइ वंदइत्ता नमंसित्ता एवं वयासी-इमेसि णं भंते! इंदभूइपामोक्खाणं चउदसण्हं समणसाहस्सीणं कइरे अणगारे महादुक्करकारए चेव महाणिज्जरतराए चेव? ॥४४॥

एवं खलु सेणिया ! इमीसिं इंदभूइपामोक्खाणं चउद्सण्हं समणसाहस्सीणं धन्ने अणगारे महादुक्करं कारए चेव; महा-निज्जरतराए चेव ॥४५॥

से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ इमेसिं चउद्स हिंसमणसाहस्सीणं धन्ने अणगारे महादुक्करकारए चेव महानिज्जरतराए चेव ॥४६॥

एवं खलु सेणिया ! तेणं कालेणं तेणं समएणं काकंदी नामं नयरी होत्था, जाव उप्पिं पासयवडिंसए विहरइ। तत्तेणं अहं अण्णया कयाइ पुव्वाणुपुव्वीए चरेमाणे गामाणुगामं दुइज्जमाणे जेणेव काकंदी नयरी जेणेव सहसंववणे तेणेव उज्जाणे उवाग-च्छइ २ त्ता अहापडिरूवं उग्गहं उगाहित्ता संजमेणं तवसा जाव विहरामि। परिसा णिग्गया; तं चेव जाव पव्वइए जाव बिलमेव जाव आहारंति, धन्नस णं अणगारस्स पादाणं सरीरवन्नओ सव्वो जाव उवसोभेमाणे २ चिट्ठइ। से तेणट्ठेणं सेणिया। एवं वुच्चइ इमेसिं चउद्सण्हं समणसाहस्सीणं धन्ने अणगारे महा-दुक्करं कारएचेव महानिज्जरतराए चेए ॥४७॥

तत्ते णं सेणियराया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए एयमट्ठं सोचा निसम्महट्ठतुट्ठे समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ वंदइ नमंसइ २ त्ता जेणेव धन्ने अणगारे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता, धन्नं अणगारं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहीणं करेइ वंदेइ नमंसइ वंदइत्ता नमंसइत्ता एवं वयासी— धन्ने सिणं तुमं देवाणुप्पिया ! सुपुण्णे सुकयत्थे सुकयलक्खणे सुलद्धेणं देवाणुप्पिया ! तव मणुस्सए जम्मजीवियफले त्ति कट्टु, वंदइ नमंसइ २ त्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो जाव वंदइ २ त्ता जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगए ॥४८॥

तएणं तस्स धन्नस्स अणगारस्स अन्नया कयाइ पुव्व-रत्तावरत्तकाले समयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमोयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए, मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था, एवं खलु अहं इमेणं ओरालेणं जहा खंदओ तहेव चिन्ता आपुच्छणं, थेरेहिं सद्धिं विपुलं दुरुहइ! मासियाए संलेहणाए नवमास-परियाओ जाव कालमासे कालं किच्चा उड्ढं चंदिम जाव नवे-यगेविज्जविजयविमाणपत्थडे उड्ढं दुरंविइवइत्ता सव्वट्ठसिद्धे विमाणे देवत्ताए उववन्ने ॥४६॥

थेरा तहेव उत्तरंति जाव इमेसे आयारभंडए ॥५०॥

भन्ते त्ति, भगवं गोयमे तहेव पुच्छइ जहा खंदयस्स भगवं वागरेति जाव सव्वट्ठसिद्धे विमाणे उववन्ने ॥५१॥

धन्नस्स णं भन्ते! देवस्स केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता? गोयमा! तेत्तीसं सागरोवमाइं ट्ठिति पन्नत्ता ॥५२॥

से णं भन्ते! ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ट्ठितिक्खएणं कहिं गच्छन्ति कहिं उववज्जेहिंति? गोयमा! महाविदेहवासे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ परिणिव्वाहिइ सव्वदुक्खाणमंतं करेहिइ ॥५३॥

एवं खलु जम्बू! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे ॥५४॥

॥ पढमं अज्झयणं सम्मत्तं ॥

जइ णं भन्ते! उक्खेवओ एवं खलु जम्बू! तेणं कालेणं तेणं समएणं काकंदी नयरी होत्था, भद्दा सत्थवाही परिवसइ ॥१॥

तीसे णं भद्दाए सत्थवाही पुत्ते सुनक्खते नामं दारए होत्था, अहिण जाव सुरूवे, पंचधाइ परिक्खित्ते जहा धन्ने तहेव बत्तीस्सओ दाओ जाव उप्पिं पासाएवडिंसए विहरइ ॥२॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसड्ढे जहा धन्ने तहा सुणक्खत्तेवि निक्खंत्ते जहा थावच्चापुत्तस्स तहा निक्खमणं जाव अणगारे जाए इरियासमिए जाव गुत्त बंभयारिए ॥३॥

तएणं से सुनक्खत्ते अणगारे जं चेव दिवसं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडे जाव पव्वइए तं चेव दिवसं अभिग्गहं तहेव बिलमिव पणगभूएणं आहारं आहारेइ, संजमेणं जाव विहरइ ॥४॥

समणं जाव वहिया जणवयविहारं विहरइ। एक्कारस्स अंगाइं अहिज्जइ, संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥५॥

तएणं से सुनक्खत्ते अणगारे तेणं उरालेणं जहा खंदओ ॥६

तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए, सेणिए राया सामीसमोसढे परिसा णिग्गया, राया निग्गओ धम्मकहा राया पडिग्गहो परिसा पडिगया ॥७॥

तएणं तस्स सुनक्खत्तस्स अन्नया कयाइ पुव्वरत्ता जाव धम्म जागरियं जाव खंदयस्स वहुवासओ परियाओ ॥८॥

गोयम पुच्छा जाव सव्वट्ठसिद्धे विमाणे देवत्ताए उव-वण्णे। जाव महाविदेहवासं सिज्झिहिति ॥९॥

॥ इति बीयं अज्झयणं सम्मत्तं ॥

एवं खलु जम्बू ! सुनक्खत्तगमेणं सेसावि अट्ठ भाणियव्वा, णवरं आणुपुव्वीए दोन्नि रायगिहे, दोन्नि साइए, दोन्नि वाणि-यग्गामे नवमो हत्थिणापुरे दसमो रायगिहे ॥१॥

नवण्हं भद्दाओ जणणिओ, नवण्हंवि बत्तीसा दाओ, नवण्हं निक्खमणं थावच्चापुत्तस्स सरिसं, वेहल्ल प्पिया करेइ; नवमास धण्णे वेहल्ल छमासा परियाओ, सेसाणं वहुवासाइं, मासं संलेहणा सव्वे महाविदेहवासे सिज्झिहिति। एवं दस अज्झय-णाणि। एवं खलु जम्बू ! समणेणं भगवया महावीरेणं अणुत्तरो-

ववाइयदसाणं तच्चस्स वग्गस्स अयमट्ठे पन्नत्ते। अणुत्तरोववाइ-यदसाओ सम्मत्तओ ॥ अणुत्तरोववाइयदसाणं एगो सुयखन्धो तिनि वग्गा तिसु दिवसेसु उद्दीसिज्जंति, पढमे वग्गे दस उद्देसागा, बीयवग्गे तेरस्स उद्देसगा, तइए वग्गे दस उद्देसगा, सेसं जहा धम्मकहा नायव्वं ॥ इति ॥

॥ दशाश्रुतस्कंध चित्तसमाधि पंचमी दशा ॥

नमो सुयदेवयाए भगवतीए ॥ सुयंमे आउसं तेणं भगवया एवमक्खायं, इह खलु थेरेहिं भगवन्तेहिं दस चित्तसमाहि-ठाणा पन्नत्ता। कयरा खलु ताइं थेरेहिं भगवन्तेहिं दस चित्त-समाहिठाणा पन्नत्ता? इमाइं खलु ताइं थेरेहिं भगवन्तेहिं दश चिंत्तसमाहिठाणा पन्नत्ता, तं जहा—तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणिय गामे नगरे होत्था। एत्थम् नगरवण्णओ भाणियव्वो ॥१॥

तस्स णं वाणियग्गामस्स नगरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए दूतिपलासए नामं चेइए होत्था, चेइए वण्णओ भाणियव्वो ॥२॥

जियसत्तू राया, तस्स धारिणी नामं देवी, एवं सव्वं समो-सरणं भाणियव्वं जाव पुढवि सिलापट्टए सामी समोसढे परिसा निग्गया, धम्मो कहिओ, परिसा पडिगया ॥३॥

अज्जो! इति समणे भगवं महावीरे समणाणं समणीणं निग्गंथा निग्गंथीओय आमंतित्ता एवं वयासी-इह खलु अज्जो! निग्गंथाणं वा निग्गंत्थीणं वा इरिया समियाणं, भासा समियाणं, एसणा समियाणं, आयाणभंडमत्तनिक्खेवणा समियाणं, उच्चारपासवणखेलजलसिंघाणपारिट्ठावणिया समियाणं, मण-समियाणं, वयसमियाणं, कायसमियाणं, मणगुत्तियाणं, वयगुत्तियाणं, कायगुत्तियाणं, गुतिंदियाणं, गुत्तबभयारीणं,

आयट्ठीणं, आयहियाणं, आयजोगीणं, आयपव्वमाणं पक्खिए पोसहिएसु समाहिपत्ताणं ज्झियमाणाणं इमाइ दस चित्त-समाहिट्ठाणाइं असमुप्पण्णपुव्वाइं समुप्पज्जित्था. तं जहा-धम्म-चिन्ता वा ते असमुप्पण्णपुव्वाइं समुप्पज्जेज्जा सव्व धम्मं जाणित्तए ॥१॥

सण्णि जाइ सरणेणं सण्णि ,ण्णाणं वा से असमुप्पण्ण-पुव्वे समुप्पज्जेज्जा अप्पणो पोराणियं जाइ सुमरित्तए ॥२॥

सुमिण दंसणे वा से असमुप्पणपुव्वे समुप्पज्जेज्जा, अहातच्चं सुमिणं पासित्तए ॥३॥

देवदंसणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जेज्जा दिव्वं देवड्ढिं दिव्वं देवजुइ दिव्व देवाणुभावं पासित्तए ॥४॥

ओहिणाणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जेज्जा, ओहिणा लोगं जाणित्तए ॥५॥

ओहि दंसणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जेज्जा ओहिणा लोयं पासित्तए ॥६॥

मणपज्जवनाणे वासे असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जेज्जा अन्तो-माणोस्स खित्तेसु, अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु सन्नीणंपंचिंदियाणं पज्जत्तगाणं मणीगए भावे जाणित्तए ॥७॥

केवलनाणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जेज्जा केवल-कप्पं लोयालोयं जाणित्तए ॥८॥

केवलदंसणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जेज्जा केवल-कप्पं लोयालोयं पासित्तए ॥९॥

केवलमरणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जेज्जा सव्वदुक्खप्पहाणाए ॥१०॥

ओयं चित्तं समादाय, ज्झाणं समुप्पज्जइ ।
धम्मेट्ठिओ अविमणो, निव्वाणमभिगच्छइ ॥१॥

ण इमं चित्तं समादाए, भुज्जोलोयंसि जायइ ।
अप्पणो उत्तमं ट्ठाणं, सण्णी णाणेण जाणइ ॥२॥

अहातच्चं तु सुमिणं, खिप्पं पासेवि संवुडे ।
सव्वं वा ओहं तरंति, दुक्ख दोय विमुच्चइ ॥३॥

पंताइं भयमाणस्स, विवित्तं सयणासणं ।
अप्पाहारस्स दंतस्स, देवा दंसेंति ताइणो ॥४॥

सव्वकामविरत्तस्स, खमओ भयभेरवं ।
तओ से ओही भवइ, संजयस्स तवस्सिणो ॥५॥

तवसा अवहट्ठुलेस्सस्स, दंसणं परिसुज्झइ ।
उड्ढं अहे तिरियं च, सव्वमणुपस्सति ॥६॥

सुसमाहिए लेस्सस्स, अवितक्कस्स भिक्खुणो !
सव्वओ विप्पमुक्कस्स, आया जाणइ पज्जवे ॥७॥

जया से नाणावरणं, सव्वं होइ खयं गयं ।
तओ लोगमलोगं च जिणो जाणाति केवली ॥८॥

जया से दरिसणावरणं, सव्वं होइ खयं गयं ।
तओ लोगमलोगं च, जिणो पासति केवली ॥६॥

पडिमाए विसुद्धाए, मोहणिज्जे खयं गयं ।
असेसं लोगमलोगं च, पासेति सुसमाहिए ॥१०॥

जहा मत्थए सूइए, हंताए हम्मइ तले ।
एवं कम्माणि हम्मंति; मोहणिज्जे खयं गए ॥११॥

सेणावतिंमि निहते, जहा सेणा पणस्सइ ।
एवं कम्माणि णस्सन्ति, मोहणिज्जे खयं गए ॥१२॥

धूमहीणो जहा अग्गी, खीयति से निरिंधणे ।
एवं कम्माणि खीयंति, मोहणिज्जे खयं गए ॥१३॥

सुक्कमूले जहा रुक्खे, सिंच्चमाणेण रोहति ।
एवं कम्माण रोहंति; मोहणिज्जे खयं गए ॥१४॥

जहा दड्ढाणं बीयाणं, न जायन्ति पुण अंकुरा ।
कम्मबीएसु दड्ढेसु, न जायन्ति भवंकुरा ॥१५॥
चिच्चा ओरालियं बोंदिं; नामं गोयं च केवली ।
आउयं वेयणिज्जं च, छित्ता भवति णीरए ॥१६॥
एवं अभिसमागम्म, चित्तमादाय आउसो ।
सेणि सुद्धिमुवागम्म, आयसुद्धिमुवागई ॥ त्ति बेमि ॥१७॥

॥ इति दशाश्रुतस्कन्धचित्तसमाधि नाम पंचमी दशा ॥

॥ चउसरण पइण्णा ॥

सावज्जजोगविरई[1], उक्कित्तण[2], गुणवओ अ पडिवत्ती[3] ।
खलिअस्स निंदणा[4], वणतिगिच्छ[5], गुणधारणा[6] चेव ॥१॥

चारित्तस्स विसोही कीरइ सामाइएण किल इहयं ।
सावज्जेअरजोगाण वज्जणासेवणत्तणओ ॥२॥

दंसणयार विसोही चउवीसायत्थएण किच्चइ य ।
अच्चब्भुअगुणकित्तणरूवेण जिणवरिंदाणं ॥३॥

नाणाईआ उ गुणा तस्संपन्नपडिवत्तिकरणाओ ।
वंदणएणं विहिणा कीरइ सोही उ तेसिं तु ॥४॥

खलिअस्स य तेसि पुणो विहिणा जं निंदणाइ पडिकमणं ।
तेण पडिक्कमणेणं तेसिंपि अ कीरए सोही ॥५॥

चरणाईयारा (इयाइया) णं जहक्कम्मं वणतिगिच्छरूवेणं ।
पणिकमणासुद्धाणं सोही तह काउसग्गेणं ॥६॥

गुणधारणरूवेणं पच्चक्खाणेण तवइआरस्स ।
विरिआयारस्स पुणो सव्वेहिवि कीरए सोही ॥७॥

गय[1] वसह[2] सीह[3] अभिसेअ[4] दाम[5] ससि[6] दिणयर[7] झयं[8] कुंभ[9] ।
पउमसर[10] सागर[11] विमाण-भवण[12] रयणुच्चय[13] सिहिं[14] च ॥८॥

अमरिंदनरिंदमुणिंदवंदिअं वंदिउं महावीरं ।
कुसालाणुबन्धि बन्धुरमज्झयणं कित्तइस्सामि ॥९॥

चउसरणगमण[1] दुक्कडगरिहा[2] सुकडाणुमोअणा[3] चेव ।
एस गणो अणवरयं कायव्वो कुसलहेउत्ति ॥१०॥

अरहंतसिद्धसाहूकेवलिकहिओ सुवावहो धम्मो ।
एए चउरो चउगइहरणा सरणं लहइ धन्नो ॥११॥

अह सो जिणभत्ति-भरुच्छरंत-रोमंच-कुंचुअ-करालो ।
पहरिसपण उम्मीसं सोसंमि कयंजली भणइ ॥१२॥

रागद्दोसारीणं हंता कम्मट्ठगाइ अरिहंता ।
विसय-कसायारीणं अरिहंता हुंतु मे सरणं ॥१३॥

रायसिरिमुवक्कमि-(सि)-त्ता तवचरणं दुच्चरं अणुचरित्ता ।
केवलसिरिमरिहंता अरिहंता हुंतु मे सरणं ॥१४॥

थुइ वंदणमरिहंता अमरिंद-नरिंदपूअमरिहंता ।
सासयंसुहमरहंता अरिहंता हुंतु मे सरणं ॥१५॥

परमणगयं मुणन्ता जोइंदमहिंदझाणमरहता ।
धम्मकहं अरिहंता अरिहंता हुंतु मे सरणं ॥१६॥

सव्वजिआणमहिंसं अरहंता सच्चवयणमरहंता ।
बंभव्वयमरहंता अरिहंता हुंतु मे सरणं ॥१७॥

ओसरणमवसरित्ता चउतीसं अइसए निसेवित्ता ।
धम्मकहं च कहंता अरिहंता हुंतु मे सरणं ॥१८॥

एगाइ गिराऽणेगे संदेहे देहिणं समंछित्ता ।
तिहुयणमणुसासंता अरिहंता हुंतु मे सरणं ॥१९॥

वयणामएण भुवणं निव्वाचिता गुणेसु ठावंता ।
जिअलोअमुद्धरन्ता अरिहंता हुंतु मे सरणं ॥२०॥

अब्भुयगुणवन्ते निअजससहरपसाहि अदिअंते।
निअयमणाइ अणन्ते पडिवन्नो सरणमरिहते ॥२१॥

उज्झिअजरमरणाणं समत्तदुक्खत्तसत्त-सरणाणं।
तिहुअणजणसुहयाणं अरिहंताणं नमो ताणं ॥२२॥

अरिहंत-सरण-मल-सुद्धिलद्ध-सुविसुद्ध-सिद्धबहुमाणो।
पणय-सिर-रइय-कर-कमलसेहरो सहरिसं भणइ ॥२३॥

कम्मट्ठक्खयसिद्धा साहाविअनाणदंसणसमिद्धा।
सव्वट्ठलद्धिसिद्धा ते सिद्धा हुंतु मे सरणं ॥२४॥

तिअलोअमत्थयत्था परमपयत्था अचिंतसामत्था।
मंगलसिद्धपयत्था सिद्धा सरणं सुहपसत्था ॥२५॥

मुलूक्खयपडिवक्खा अमूढलक्खा सजोगिपच्चक्खा।
साहविअत्त सुक्खा सिद्धा सरणं परममुक्खा ॥२६॥

पडिपिल्लिअ पडिणीया समग्गझाणग्गिदड्ढ भववीआ।
जोईसरसरणीया सिद्धा सरणं सुमरणीया ॥२७॥

पाचियपरमाणंदा गुणनीसंदा विभिन्न (विइण्ण) भवकंदा।
लहुईकय-रविचन्दा सिद्धा सरणं खविअदंदा ॥२८॥

उवलद्धपरमवभा दुल्लहलंभा विमुक्कसंरंभा।
भुवणघरधरणखंभा सिद्धा सरणं निरारंभा ॥२९॥

सिद्धसरणेण नववंभहेउसाहुगुणजणिअ बहुमाणो (अणुराओ)।
मेइणिमिलंत सुपसत्थमत्थओ तत्थिमं भणइ ॥३०॥

जिअलोअवंधुणो कुगइसिंधुणो पारगा महाभागा।
नाणाइएहिं सिवसुक्खसाहगा साहुणो सरणं ॥३१॥

केवलिणो परमोही विउलमई सुअहरा जिणमयंमि।
आयरिअउवज्झाया ते सव्वे साहुणो सरणं ॥३२॥

चउदस-दस-नवपुव्वी दुवालसिक्कारसंगिणो जे अ।
जिणकप्पाहालंदिअ परिहार विसुद्धि-साह अ ॥३३॥

खीरासव-महुआसवसंभिन्नस्सो अकुट्ठबुद्धि अ।
चारणवे उव्विपयाणुसारिणो साहुणो सरणं ॥३४॥

उज्झियवइरविरोहा निच्चमदोहा पसंतमुहसोहा।
अभिमयगुणसंदोहा हयमोहा साहुणो सरणं ॥३५॥

खंडिअसिणेहदामा अकामधामा निकामसुहकामा।
सुपुरिसमणाभिरामा आयारामा मुणी सरणं ॥३६॥

मिल्हिअ विसयकसाया उज्झियघरघरणिसंग सुहसाया।
अकलिअहरिसविसाया साहू सरणं गयपमाया ॥३७॥

हिंसाइदोससुन्ना कयकारुन्ना सयंभुरुप्पन्ना (प्पुण्णा)।
अजरामरपहखुन्ना साहू सरणं सुकयपुन्ना ॥३८॥

कामविडवणचुक्का कलिमलमुक्का विचि[मु]क्कचोरिक्का!
पावरय-सुरयरिक्का साहू गुणरयणचच्चिका ॥३९॥

साहुत्तसुट्ठिया जं आयरिआई तओ य ते साहू।
साहू भणिएण गहिया तम्हा ते साहुणो सरणं ॥४०॥

पडिवन्न साहुरणो सरणं काउं पुणोवि जिणधम्मं।
पहरिसरोमं चपवचकुंचुअंचि अतणू भणइ ॥४१॥

पवरसुकएहिं पत्त पत्तेहिवि नवरि केहिवि न पत्तं।
तं केवलिपन्नत्तं धम्मं सरणं पवन्नोऽहं ॥४२॥

पत्तेण अपत्तेण य पत्ताणि अ जेण नरसुरसुहाइं
मुक्खमुहं पुण पत्तेण नवरि धम्मो स मेस रणं ॥४३॥

निद्दलिअकलुसकम्मो कयसुहजम्मो खलीकय-अहम्मो।
पमुहपरिणामरम्मो सरणं होउ जिणधम्मो ॥४४॥

कालत्तएवि न मयं जम्मण-जरमरणवाहिसय समयं।
अमयं व बहुमयं जिणमयं च सरणं पवन्नोऽहं ॥४५॥

पसमिअकामपमोहं दिट्ठादिट्ठेसु नकलिअविरोहं।
सिवसुहफलयममोहं धम्मं सरणं पवन्नोऽहं ॥४६॥

नरय गइगमणरोहं गुणसंदोहं पवाइनिक्खोहं।
निहणिअवम्महजोहं धम्मं सरणं पवन्नोऽहं ॥४७॥

भासुर सुवन्न-सुन्दर रयणालंकार गारव-महग्घं।
निहमिव दोगच्चहरं धम्मं जिणदेसिअं वंदे ॥४८॥

चउसरण गमणसंचिअ सुचरिअरो मंचअंसियसरीरो।
कयदुक्कडगरिहा असुहकम्मक्खयकंखिरो भणई ॥४९॥

इहभविअमन्नभविअं मिच्छत्तपवत्तणं जमहिगरणं।
जिणपवयणपडिकुट्ठं दुट्ठं गरिहामि तं पावं ॥५०॥

मिच्छत्ततमंधेणं अरिहताइसु अवन्नवयणं जं।
अन्नाणेण विरइयं इण्हिं गरिहामि तं पावं ॥५१॥

सुअधम्म-संघसाहुसु पावं पडिणीअयाइ ज रइअं।
अन्नेसु अ पावेसुं इण्हिं गरिहामि तं पावं ॥५२॥

अन्नेसु अ जीवेसु मित्ती करुणाइ-गोयरेसु कयं।
परिआवणाइ दुक्खं इण्हिं गरिहामि तं पावं ॥५३॥

जं मणवयकाएहिं कयकारिअ-अणुमईहिं आयरियं।
धम्मविरुद्धमसुद्धं सव्वं गरिहामि तं पावं ॥५४॥

अह सो दुक्कडगरिहादलिउक्कडदुक्कडो फुडं भणइ।
सुकडाणुरायसमु न्नपुन्नपुलयं - कुरकरालो ॥५५॥

अरिहंतं अरिहंतेसु जं च सिद्धत्तणं च सिद्धेसु।
आयारं आयरिए उज्झायत्तं उवज्झायए ॥५६॥

साहूण साहुचरिअं च देसविरइं च सावयजणाणं ।
अणुमन्ने सव्वेसिं सम्मत्तं समदिट्ठीणं ॥५७॥
अहवा सव्वं चिअ वीयरायवयणाणुसारि जं सुकयं ।
कालत्तएवि तिविहं अणुमोरमो तयं सव्वं ॥५८॥
सुहपरिणामी निच्चं चउसरणगमाइ आयारं जीवो ।
कुसलपयडीउ वंधई बंद्धाउ सुहाणुवंधा ॥५९॥
मंदाणुभावा बद्धा तिव्वणुभावाउ कुणइ ता चेव ।
असुहाउ निरणुबंवाउ कुणइ तिव्वाउ मंदाउ ॥६०॥
ता एयं कायव्वं बुहेहि निच्चंपि संकिलेसम्मि ।
होइ तिकालं सम्मं असंकिलेसंमि सुकयफलं ॥६१॥
चउरंगो जिणधम्मो न कओ चउरंगसरणमवि न कयं ।
चउरंगभवुच्छेओ न कओ हा हारिओ जम्मो ॥६२॥
इअ जीवपमायमहारिवीर-भद्दंतमे अमज्झयणं ।
झाएसु तिसंझमवंझ कारणं निव्वुइ-सुहाणं ॥६३॥
॥ चउसरणं समत्तं ॥ १ ॥

॥ श्रीतत्त्वार्थसूत्रम् ॥

सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणिं मोक्षमार्गः ॥१॥ तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम् ॥२॥ तन्निसर्गादधिगमाद्वा ॥३॥ जीवाऽजीवाऽस्त्रव-बन्धसंवरनिर्जरामोक्षास्तत्त्वम् ॥४॥ नामस्थापनाद्रव्यभावतस्त-न्यासः ॥५॥ प्रमाणनयैरधिगमः ॥६॥ निर्देशस्वामित्वसाध-नाधिकरणस्थितिविधानतः ॥ ७ ॥ सत्संख्याक्षेत्रस्पर्शनकालान्तर भावाल्पबहुत्वैश्च ॥८॥ मतिश्रुतावधिमनः पर्यायकेवलानि ज्ञानम् ॥९॥ तत्प्रमाणे ॥१०॥ आद्ये परोक्षम् ॥११॥ प्रत्यक्षमन्यत् ॥१२॥

मति स्मृतिः संज्ञा चिन्ताऽभिनिबोध इत्यनर्थान्तरम् ॥१३॥ तदिन्द्रियानिन्द्रियनिमित्तम् ॥१४॥ अवग्रहेहाऽपायधारणा ॥१५॥ बहु-बहुविध-क्षिप्रानिश्रिताऽसंदिग्ध ध्रुवाणां सेतराणाम् ॥१६॥ अर्थस्य ॥१७॥ व्यञ्जनस्याऽवग्रहः ॥१८॥ न चक्षुरनिन्द्रियाभ्याम् ॥१९॥ श्रुतं मतिपूर्वंद्वयनेकद्वादशभेदम् ॥२०॥ द्विविधोऽवधिः ॥२१॥ तत्र भवप्रत्ययो नारकदेवानाम् ॥२२॥ यथोक्तनिमित्त, षड्विकल्प शेषाणाम् ॥२३॥ ऋजुविपुलमती मनःपर्यायः ॥२४॥ विशुद्धयप्रतिपाताभ्यां तद्विशेषः ॥२५॥ विशुद्धिक्षेत्रस्वामिविषयेभ्योऽवधिमन पर्यायंयोः ॥२६॥ मतिश्रुतयोर्निबन्धः सर्वद्रव्येष्वसर्वपर्यायेषु ॥२७॥ रूपिष्ववधेः ॥२८॥ तदनंतभागे मनः पर्यायस्य ॥२९॥ सर्वद्रव्यपर्यायेषु केवलस्य ॥३०॥ एकादीनिं भाज्यानि-युगपदेकस्मिन्ना चतुर्भ्यः ॥३१॥ मतिश्रुता वधयो (प्रतिश्रुतविभङ्गा) विपर्ययश्च ॥३२॥ सदसतोरविशेषाद् यदृच्छोपलब्धेरुन्मत्तवत् ॥३३॥ नैगमसङ्ग्रहव्यवहारर्जु सूत्रशब्दा (शब्दसमभिरूढैवभूता नयाः ॥३४॥ अद्यव्दौ द्वि-त्रिभेदौ ॥३५॥ इति प्रथमोऽध्यायः ॥

॥ अथ द्वितीयोऽध्यायः ॥

औपशमिकक्षायिकौ भावौ मिश्रश्च जीवस्य स्वतत्त्वमौदयिकपारिमाणिकौ च ॥ १ ॥ द्विनवाष्टादशेकविंशतित्रभेदा यथाक्रमम् ॥ २ ॥ सम्यक्त्वचारित्रे ॥ ३ ॥ ज्ञानदर्शनदानलाभभोगोपभोगवीर्याणि च ॥ ४ ॥ ज्ञानाज्ञानदर्शनदानादिलब्धयश्चतुस्त्रित्रिपञ्चभेदाः [यथाक्रमं] सम्यक्त्वचारित्र संयमाऽसंयमाश्च ॥ ५ ॥ गतिकषायालिङ्गमिथ्या दर्शनाऽज्ञानासंयताऽसिद्धत्वलेश्याश्चतुश्चतुस्त्र्येकैकैकैकपड्भेदाः ॥ ६ ॥ जीवभव्याभव्यात्वादीनि च ॥७॥

उपयोगो लक्षणम् ॥ ८ ॥ स द्विविधोऽष्टचतुर्भेदः ॥ ९ ॥ संसारिणो मुक्ताश्च ॥१०॥ समनस्का अमनस्का ॥११॥ संसारिणस्त्रस-स्थावराः ॥१२॥ पृथिव्यम्बुवनस्पतयः स्थावराः ॥१३॥ तेजो-वायू द्वीन्द्रियादयश्च त्रसाः ॥१४॥ पञ्चेन्द्रियाणि ॥१५॥ द्विविधानि ॥१६॥ निर्वृत्युपकरणे द्रव्येन्द्रियम् ॥१७॥ लब्ध्यु-पयोगौ भावेन्द्रियम् ॥१८॥ उपयोगः स्पर्शादिषु ॥१९॥ स्पर्श-नरसनघ्राणचक्षुः श्रोत्राणि ॥२०॥ स्पर्शरसगन्धरूपशब्दास्ते-षामर्थाः ॥२१॥ श्रुतमनिन्द्रियस्य ॥२२॥ वाय्वन्तानामेकम् ॥ २३ ॥ कृमिपिपीलिकाभ्रमरमनुष्यादीनामेकवृद्धानि ॥ २४ ॥ संज्ञिनः समनस्काः ॥२५॥ विग्रहगतौ कर्मयोगः ॥२६॥ अनु-श्रेणि गतिः ॥२७॥ अविग्रहा जीवस्य ॥२८॥ विग्रहवती च संसारिणः प्राक् चतुर्भ्यः ॥२९॥ एकसमयोऽविग्रहः ॥३०॥ एकं द्वौ वाऽनाहारकः ॥३१॥ सम्मूर्च्छनगर्भोपपाता जन्म ॥ ३२ ॥ सचित्तशीतसंवृत्ताः सेतरा मिश्राश्चैकशस्तद्योनयः ॥३३॥ जरा-य्वण्डपोतजानां गर्भः ॥३४॥ नारकदेवानामुपपात. ॥३५॥ शे-षाणां सम्मूर्च्छनम् ॥३६॥ औदारिक वैक्रियाऽऽहारक तैजसका-र्मणानि शरीराणि ॥३७॥ परं परं सूक्ष्मम् ॥३८॥ प्रदेशतोऽ-संख्येयगुणं प्राक्तैजसात् ॥३९॥ अनन्तगुणे परे ॥४०॥ अप्रति-घाते ॥४१॥ अनादिसम्बन्धे च ॥४२॥ सर्वस्य ॥४३॥ तदादीनी भाज्यानि युगपदेकस्याऽऽचतुर्भ्यः ॥ ४४ ॥ निरुपभोगमन्त्यम् ॥४५॥ गर्भसम्मूर्च्छनजमाद्यम् ॥४६॥ वैक्रियमौपपातिकम् ॥४७॥ लब्धिप्रत्ययं च ॥ ४८ ॥ शुभं विशुद्धमव्याघाति चाहारकं चतु-र्दशपूर्वधरस्यैव ॥ ४९ ॥ तैजसमपि ॥५०॥ नारकसम्मूर्छिनो नपुंसकानि ॥५१॥ न देवाः ॥५२॥ औपपातिकचरमदेहोत्तम-पुरुषाऽसङ्ख्येयवर्षायुषोऽनपवर्त्यायुषः ॥ ५३ ॥ इति द्वितीयोऽ-ध्यायः ।

।। अथ तृतीयोऽध्यायः ।।

रत्नशर्करावालुकापङ्कधूमतमोमहातमःप्रभा भूमयो घनाम्बुवाताकाशप्रतिष्ठाः सप्ताधोऽधः पृथुतराः ।।१।। तासु नारकाः ।।२।। नित्याशुभतरलेश्यापरिणामदेहवेदनाविक्रियाः ।।३।। परस्परोदीरितदुखाः ।। ४ ।। संक्लिष्टासुरोदीरितदुःखाश्च प्राक् चतुर्थ्याः ।। ५ ।। तेष्वेकत्रिसप्तदशसप्तदशद्वाविंशतित्रयस्त्रिंशत्सागरोपमा सत्त्वानां परा स्थितिः ।। ६ ।। जंबूद्वीपलवणादयः शुभनामानो द्वीपसमुद्राः ।। ७ ।। द्विर्द्विर्विष्कम्भाः पूर्वपूर्वपरिक्षेपिणो वलयाकृतयः ।।८।। तन्मध्ये मेरुनाभिर्वृत्तो योजनशतसहस्रविष्कम्भो जम्बूद्वीपः ।।९।। तत्र भरत है मवतहरिविदेहरम्यकहैरण्यवतैरावतवर्षाः क्षेत्राणि ।।१०।। तद्विभाजिन पूर्वापरायता हिमवन्महाहिमवन्निषधनीलरुक्मिशिखरिणो वर्षधरपर्वताः ।।११।। द्विर्धातकीखण्डे ।।१२।। पुष्करार्धे च ।।१३।। प्राग् मानुषोत्तरान् मनुष्याः ।।१४।। आर्या म्लेच्छाश्च ।।१५।। भरतैरावतविदेहाः कर्मभूमयोऽन्यत्र देवकुरूत्तरकुरुभ्यः ।।१६।। नृस्थिती परापरे त्रिपल्योपमान्तमुहूर्ते ।।१७।। तिर्यग्योनीनां च ।।१८।। इति तृतीयोऽध्यायः ।।

।। अथ चतुर्थोऽध्यायः ।।

देवाश्चतुर्णिकायाः ।।१।। तृतीयः पीतलेश्य ।।२।। दशाष्टपञ्चद्वादशविकल्पाः कल्पोपपन्नपर्यन्ताः ।।३।। इन्द्रसामानिकत्रायस्त्रिंशपारिषद्यात्मरक्षलोकपालानीकपकीर्णकाभियोग्यकिल्विषिकाश्चैकशः ।। ४ ।। त्रायस्त्रिंशलोकपालवर्ज्या व्यंतरज्योतिष्का ।।५।। पूर्वयोर्द्वीन्द्राः ।।६।। पीतान्तलेश्याः ।।७।। कायप्रवीचारा आ ऐशानात् ।।८।। शेषा स्पर्शरूपशब्दमनः प्रवी-

चारा द्वयोर्द्वयोः ॥९॥ परेऽप्रवीचाराः ॥१०॥ भवनवासिनोऽ-
सुरनागविद्युत्सुपर्णाऽग्निवातस्तनितोदधिद्वीपदिक्कुमाराः ॥११॥
व्यंतरा किन्नरकिम्पुरुषमहोर गगान्धर्वयक्षराक्षसभूतपिशाचा
॥ १२ ॥ ज्योतिष्काः सूर्याचन्द्रमसौ ग्रहनक्षत्रप्रकीर्णतारकाश्च
॥ १३ ॥ मेरुप्रदक्षिणा नित्यगतयो नृलोके ॥१४॥ तत्कृतः काल-
विभागः ॥१५॥ बहिरवस्थिताः ॥१६॥ वैमानिकाः ॥१७॥ क-
ल्पोपपन्ना कल्पातीताश्च ॥१८॥ उपर्युपरि ॥१९॥ सौधर्मैशान-
सनत्कुमारमाहेन्द्रब्रह्मलोकलान्त कमहाशुक्रसहस्रारेष्वानतप्राण-
तयोरारणाच्युतयो--र्नवसु ग्रैवेयकेषु विजय वैजयन्त-जयन्ताऽ-
पराजितेषु सर्वार्थसिद्धे च ॥२०॥ स्थितिपभावसुखद्युतिले-
श्याविशुद्धीन्द्रियावधिविषयतोऽधिका ॥ २१ ॥ गतिशरीरपरि-
ग्रहाऽभिमानतो हीनाः ॥२२॥ उच्छ्वासाहारवेदनोपपातानुभा-
वतश्च साध्या ॥२३॥ पीतपद्मशुक्ललेश्या द्वित्रिशेषेषु ॥२४॥
प्राग्ग्रैवेयकेभ्यः कल्पाः ॥२५॥ ब्रह्मलोकालया लोकान्तिका
॥ २६ ॥ सारस्वतादित्यवह्न्यरुणगर्दतोयतु षिताव्याबाधरुतोऽ-
रिष्टाश्च ॥२७॥ विजयादिषु द्विचरमाः ॥२८॥ औपपातिकम-
नुष्येभ्यः शेषास्तिर्यग्योनयः ॥२९॥ स्थितिः ॥३०॥ भवनेषु
दक्षिणार्धाधिपतीनां पल्योपममध्यर्धम् ॥३१॥ शेषाणां पादोने
॥३२॥ असुरेन्द्रयोः सागरोपममधिक च ॥३३॥ सौधर्मादिषु
यथाक्रमम् ॥३४॥ सागरोपमे ॥३५॥ अधिके च ॥३६॥ सप्त
सनत्कुमारे ॥३७॥ विशेषस्त्रिसप्तदशकादशत्रयोदशपञ्चदशभि-
रधिकानि च ॥३८॥ आरणाच्युतादूर्ध्वमेककेन नवसु ग्रैवेयकेषु
विजयादिषु सर्वार्थसिद्धे च ॥३९॥ अपरापल्योपममधिकं च
॥४०॥ सागरोपमे ॥४१॥ अधिके च ॥४२॥ परतः परतः
पूर्वापूर्वाऽवन्तरा ॥४३॥ नारकाणां च द्वितीयादिषु ॥४४॥
दशवर्षसहस्राणि प्रथमायाम् ॥४५॥ भवनेषु च ॥ ४६ ॥ व्यन्त-

राणां च ॥४७॥ परा पल्योपमम् ॥४८॥ ज्योतिष्काणामधिकम् ॥४९॥ ग्रहाणामेकम् ॥५०॥ नक्षत्राणामर्द्धम् ॥५१॥ तारकाणां चतुर्भागः ॥५२॥ जघन्या त्वष्टभागः ॥५३॥ चतुर्भागः शेषाणाम् ॥५४॥ इति चतुर्थोऽध्यायः ॥

॥ अथ पञ्चमोऽध्यायः ॥

अजीवकाया धर्माऽधर्माकाशपुद्गलाः ॥ १ ॥ द्रव्याणि जीवाश्च ॥२॥ नित्यावस्थितान्यरूपीणि ॥३॥ रूपिणः पुद्गलाः ॥४॥ आऽकाशादेकद्रव्याणि ॥५॥ निष्क्रियाणि च ॥६॥ असङ्ख्येयाः प्रदेशा धर्माऽधर्मयोः ॥७॥ जीवस्य च ॥८॥ आकाशस्याऽनन्ताः ॥९॥ सङ्ख्येयाऽसङ्ख्येयाश्च पुद्गलानाम् ॥१०॥ नाऽणोः ॥११॥ लोकाकाशेऽवगाहः ॥१२॥ धर्माऽधर्मयोः कृत्स्ने ॥१३॥ एकप्रदेशादिषु भज्यपुद्गलानाम् ॥१४॥ असङ्ख्येयभागादिषु जीवानाम् ॥१५॥ प्रदेश संहारविसर्गाभ्यां प्रदीपवत् ॥१६॥ गतिस्थित्युपग्रहो धर्माऽधर्मयोरुपकारः ॥१७॥ आकाशस्याऽवगाहः ॥१८॥ शरीरवाङ्मनःप्राणापानाः पुद्गलानाम् ॥१९॥ सुखदु खजीवितमरणोपग्रहाश्च ॥२०॥ परस्परोपग्रहो जीवानाम् ॥२१॥ वर्त्तना परिणामः क्रियापरत्वापरत्वे च कालस्य ॥२२॥ स्पर्शरसगन्धवर्णवन्तः पुद्गलाः ॥२३॥ शब्दबन्धसौक्ष्म्यस्थौल्य संस्थानभेदतमश्छायातपोद्योतवन्तश्च ॥२४॥ अणवः स्कन्धाश्च ॥२५॥ सङ्घातभेदेभ्य उत्पद्यन्ते ॥२६॥ भेदादणुः ॥२७॥ भेदसंघाताभ्यां चाक्षुषाः ॥२८॥ उत्पादव्ययध्रौव्ययुक्तं सत् ॥२९॥ तद्भावाव्ययं नित्यम् ॥३०॥ अर्पितानर्पितसिद्धेः ॥३१॥ स्निग्धरूक्ष त्वाद्बन्धः ॥३२॥ न जघन्यगुणानाम् ॥३३॥ गुणसाम्ये सदृशानाम् ॥३४॥

द्वयधिकादिगुणानां तु ॥३५॥ बन्धे समाधिको पारिणामिकौ ॥३६॥ गुणपर्यायवद् द्रव्यम् ॥३७॥ कालश्चेत्येके ॥३८॥ सोऽनन्तसमयः ॥३९॥ द्रव्याश्रया निर्गुणा गुणाः ॥४०॥ तद्भावः परिणामः ॥४१॥ अनादिरादिमांश्च ॥४२॥ रूपिष्वादिमान् ॥४३॥ योगोपयोगौ जीवेषु ॥४४॥ इति पञ्चमोऽध्यायः ॥

॥ अथ षष्ठोऽध्यायः ॥

कायवांमनःकर्म योगः ॥ १ ॥ स आश्रवः ॥ २ ॥ शुभः पुण्यस्य ॥ ३ ॥ अशुभः पापस्य [शेषं पापम्] ॥ ४ ॥ सकषायाकषापयोः सांपरायिकेर्यापथयो ॥ ५ ॥ इन्द्रियकषायाव्रतक्रियाः पञ्चचतुःपञ्चपञ्चविंशतिसंख्याः पूर्वस्य भेदाः ॥ ६ ॥ तीव्रमंदज्ञाताज्ञातभाववीर्याधिकरणविशेषेभ्यस्तद्विशेषः (विशेषात्तद्विशेषः) ॥७॥ आधिकरणंजीवाऽजीवाः॥८॥आद्यसंरम्भसमारम्भारंभयोगकृतकारिताऽनुमतकषायविशेषैस्त्रिस्त्रिस्त्रिश्चतुश्चैकशः॥९॥ निर्वर्तनानिक्षेपसंयोगनिसर्गा द्विचतुर्द्वित्रिभेदाः परम् ॥१०॥ तत्प्रदोषनिह्नवमात्सर्यान्तरायासादनोपघाता ज्ञानदर्शनावरणयाः ॥११॥ दुःखशोकतापाक्रन्दनवधपरिदेव-नान्यात्मपराभयस्थान्यसद्वेद्यस्य—॥१२॥ भूतव्रत्यनुकम्पा दानं सरागसंयमादियोगक्षांतिः शौचमिति सद्वेद्यस्य ॥ १३ ॥ केवलिश्रुतसंङ्घधर्मदेवावर्णवादो दर्शनमोहस्य ॥ १४ ॥ कषायोदयात्तीव्रात्मपरिणामश्चारित्रमोहस्य ॥१५॥ बह्वारम्भपरिग्रहत्वं च नारकस्यायुषः ॥१६॥ माया तैर्यग्योनस्य ॥१७॥ अल्पारम्भपरिग्रहत्वं स्वभावमार्दवार्जवं च मानुषस्य ॥१८॥ निःशीलव्रतत्वं च सर्वेषां ॥१९॥ सरागसंयमसंयमाऽसंयमाऽकामनिर्जरा बालतपांसि देवस्य ॥२०॥ योगवक्रता विसंवादनं चाशुभस्य नाम्मः ॥२१॥ विपरीतं शुभस्य ॥२२॥ दर्शनविशुद्धिर्विनयसम्पन्नता शीलव्रतेष्वजतिचारऽभीक्ष्णं ज्ञानोपयोगसंवेगौ

शक्तितस्त्यागतपसी सन्घसाधुसमाधिवैयावृत्त्यकरणमर्हदाचार्य-बहुश्रुतप्रवचनभक्तिरावश्यकापरिहाणि मार्गप्रभावना प्रवचनवत्सलत्वमिति तीर्थंकृत्त्वस्य ॥२३॥ परात्मनिन्दाप्रशंसे सद्सद्गुणाच्छादनोद्भावने च नीचैर्गोत्रस्य ॥२४॥ तद्विपर्ययो नींचैर्वृत्यनुत्सेकौ चोत्तरस्य ॥२५॥ विघ्नकरणमन्तरायस्य ॥ २६ ॥
॥ इति षष्ठोऽध्याय; ॥

॥ अथ सप्तमोऽध्यायः ॥

हिंसाऽनृतस्तेया ब्रह्मपरिग्रहेभ्योविरतिर्व्रतम् ॥१॥ देशसर्वतोऽणुमहती ॥ २ ॥ तत्स्थैर्यार्थं भावना: पञ्च पञ्च ॥ ३ ॥ हिंसादिष्विहामुत्र चापायावद्यदर्शनम् ॥ ४ ॥ दु:खमेव वा ॥ ५ ॥ मैत्री-प्रमोद-कारुण्य-माध्यस्थ्यानि सत्त्वगुणादिकक्लिश्यमानाऽविनेयेषु ॥ ६ ॥ जगत्कायस्वभावौ च संवेगवैराग्यार्थम ॥ ७ ॥ प्रमत्तयोगात् प्राणव्यपरोपणं हिंसा ॥ ८ ॥ असदभिधानमनृतम् ॥ ९ ॥ अदत्तादानं स्तेयम् ॥१०॥ मैथुनमब्रह्म ॥११॥ मूर्छा परिग्रह: ॥१२॥ नि.शल्यो व्रती ॥१३॥ अगार्यनगारश्च ॥१४॥ अणुव्रतोऽगारी ॥१५॥ दिग्देशाऽनर्थदण्डविरतिसामायिकपौषधोपवासोपभोगपरिभोगपरिमाणाऽतिथिसंविभागव्रतसम्पन्नश्च ॥१६॥ मारणान्तिकीं संलेखनां जोषिता ॥१७॥ शङ्काकांक्षाविचिकित्साऽन्यदृष्टिप्रशंसासंस्तावा: सम्यग्दृष्टेरतिचारा: ॥१८॥ व्रतशीलेषु पञ्च पञ्च यथाक्रमम् ॥१९॥ बन्धवधच्छविच्छेदाऽतिभारारोपणाऽन्नपाननिरोधा: ॥२०॥ मिथ्योपदेश-रहस्याभ्याख्यान-कूटलेखक्रिया-न्यासापहार साकारमंत्रभेदा: ॥२१॥ स्तेनप्रयोग-तदाहृतादान-विरुद्धराज्यातिक्रम - हीनाधिकमानोन्मान - प्रतिरूपकव्यवहारा: ॥ २२ ॥ परविवाहकरणेत्वरपरिगृहीताऽपरिगृहीतागमनाऽनङ्ग-क्रीडातीव्रकामाभिनिवेशा: ॥ २३ ॥ क्षेत्रवास्तुहिरण्यसुवर्णधन-

धान्यदासीदासकुप्यप्रमाणातिक्रमाः ॥२४॥ ऊर्ध्वाधस्तिर्यग्व्यतिक्रमः क्षेत्रवृद्धिस्मृत्यन्तधोनानि ॥२५॥ आनयनप्रेष्यप्रयोगशब्दरूपानुपातपुद्गलप्रक्षेपाः ॥२६॥ कन्दर्पकोत्कुच्यमौखर्याऽसमीक्ष्याधिकरणोपभोगाधिकत्वानि ॥२७॥ यौगदुःप्रणिधानानादरस्मृत्यनुपस्थापनानि ॥२८॥ अप्रत्यवेक्षिताप्रमार्जितोत्सर्गादानर्निक्षेपसंस्तारोपक्रमणानादरस्मृत्यनुपस्थापनानि ॥२९॥ सचित्तसम्बद्धसम्मिश्रीऽभिषवदुष्पक्वाहारा ॥३०॥ सचित्तनिक्षेपपिधानपरव्यपदेशमात्सर्यकालातिक्रमाः ॥३१॥ जीवितमरणाशंसामित्रानुरागसुखानुबन्धनिदानकरणानि ॥३२॥ अनुग्रहाय स्वस्यातिसर्गो दानम् ॥३३॥ विधिद्रव्यदातृपात्रविशेषात्तद्विशेषः ॥३४॥

॥ इति सप्तमोऽध्यायः ॥

॥ अथष्टमोऽध्यायः ॥

मिथ्यादर्शनाऽविरति प्रमाद-कषाययोगा बन्धहेतवः ॥१॥ सकषायत्वाज्जीवः कर्मणो योग्यान्पुद्गलानादत्ते ॥ २ ॥ स बन्धः ॥ ३ ॥ प्रकृति-स्थित्यनुभावप्रदेशास्तद्विपधयः ॥ ४ ॥ आद्या ज्ञान-दर्शनावरणवेदनीय-मोहनीयाऽयुष्क-नामगोत्राऽन्तरायाः ॥ ५ ॥ पंचनवद्व्यष्टाविंशतिचतुर्द्विचत्वारिंशद्द्विपंचभेदाः यथाक्रमम् ॥६॥ मत्यादीनां ॥७॥ चक्षुरचक्षुरवधिकेवलानां निद्रानिद्रा-निद्राप्रचलाप्रचलाप्रचला स्त्यानगृद्धि वेदनीयानि च ॥ ८ ॥ सदसद्वेद्ये ॥ ९ ॥ दर्शनचारित्रमोहनीयकषायवेदनीयाख्यास्त्रिद्विषोडशनवभेदाः सम्यक्त्वमिथ्यात्वतदुभयानि कषायनोकषायावनन्तानुबंध्यप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानावरणसंज्वलनविकल्पाश्चैकशः क्रोध-

मानमायालोभा हास्यरत्यरतिशोकभयजुगुप्सास्त्रीपुनपुंसकभेदाः ॥१०॥ नारकतैर्यग्योनमानुपदैवानि ॥११॥ गतिज तिशरीरांगोपाङ्गनिर्माणबन्धनसंघातसंस्थान संहननस्पर्शरस गन्धवर्णाणुपूर्व्यगुरुलघूपघातपराघातातपोद्योतोच्छ्वासविहायोगतयः प्रत्येकशरीर त्रससुभगसुस्वरशुभसूक्ष्मपर्याप्तस्थिरादेययशांसि सेतराणि तीर्थकृत्त्वं च ॥१२॥ उच्चैर्नीचैश्च ॥१३॥ दानादीनाम् [अन्तरायः] ॥१४॥ आदितस्तिसृणामंतरायस्य च त्रिंशत्सागरोपमकोटीकोटयः परा स्थितिः ॥ १५ ॥ सप्ततिर्मोहनीयस्य ॥१६॥ नामगोत्रयोर्विंशतिः ॥१७॥ त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाण्यायुष्कस्य (त्रयस्त्रिंशत्सागराण्यधिकान्यायुष्कस्य) ॥ १८ ॥ अपरा द्वादशमुहूर्त्तम् वेदनीयस्य ॥१९॥ नामगोत्रयोरष्टौ ॥२०॥ शेषाणामन्तर्मुहूर्त्तम् ॥२१॥ विपाकोऽनुभावः॥ २२॥ स यथानाम ।२३। ततश्च निर्जरा ॥२४॥ नामप्रत्ययाः सर्वतो योगविशेषात्सूक्ष्मैकक्षेत्रावगाढस्थिता सर्वात्मप्रदेशेष्वनन्तानन्त प्रदेशा ॥२५॥ सद्वेद्यसम्यक्त्वहास्यरतिपुरुषवेदशुभायुर्नामगोत्राणि पुण्यम् ॥ २६ ॥

॥ इति अष्टमोऽध्यायः ॥

॥ अथ नवमोऽध्यायः ॥

आश्रवनिरोधः संवरः ॥१॥ स गुप्तिसमितिधर्मानुप्रेक्षापरिषहजयचारित्रैः ॥२॥ तपसा निर्जरा च ॥३॥ सम्यग्योगनिग्रहो गुप्ति ॥४॥ ईर्याभाषैषणादाननिक्षेपोत्सर्गाः समितयः ॥५॥ उत्तमः क्षमामार्दवार्जवशौचसत्यसंयमतपस्त्यागाऽऽकिञ्चन्य ब्रह्मचर्याणि धर्मः ॥ ६ ॥ अनित्याशरणसंसारैकत्वान्यत्वाशुचित्वाऽश्रवसंवरनिर्जरालोकबोधिदुर्लभधर्मस्वाख्यातस्वतत्त्वानुचिंतनमनुप्रेक्षाः ॥७॥ मार्गाऽच्यवन निर्जरार्थं परिषोढव्याः परिषहाः ॥८॥ क्षुत्पिपासा

शीतोष्णदंशमशकनाग्न्यार तिस्त्रीचर्यानिषद्याशय्याक्रोशवध याचनाऽलाभरोगतृणस्पर्शमलसत्कार पुरस्कार प्रज्ञाऽज्ञानाऽदर्शनानि।६। सूक्ष्मसम्परायच्छद्मस्थवीतरागयोश्चतुर्दश ॥१०॥ एकादश जिने ॥११॥ बादरसम्पराये सर्वे ॥१२॥ ज्ञानावरणे प्रज्ञाऽज्ञाने ॥१३॥ दर्शनमोहान्तराययोरदर्शनालाभौ ॥१४॥ चारित्रमोहे नाग्न्यारतिस्त्रीनिषद्याक्रोशयाचनासत्कारपुरस्काराः ॥ १५ ॥ वेदनीये शेषाः ॥१६॥ एकादयो भाज्या युगपदैकोनविंशतेः ॥१७॥ सामायिक-छेदोपस्थाप्य परिहारविशुद्धि – सूक्ष्मसम्परायथाख्यातानि चारित्रम् ॥ १८ ॥ अनशनावमौदर्यवृत्तिपरिसंख्यान-रसपरित्यागविविक्तशय्यासनकायक्लेशा बाह्यं तपः ॥१६॥ प्रायश्चित्त-विनयवैयावृत्यस्वाध्यायव्युत्सर्गध्यानान्युत्तरम् ॥२०॥ नवचतुर्दश-पञ्चद्विभेदं यथाक्रमं प्राग्ध्यानात् ॥२१॥ आलोचनप्रतिकमणतदुभयविवेकव्युत्सर्गतपश्छेदपरिहारोपस्थापनानि ॥ २२ ॥ ज्ञानदर्शनचारित्रोपचाराः ॥ २३ ॥ आचार्योपाध्यायतपस्विशैक्षकग्लानगणकुलसंघसाधुसमनोज्ञानाम् ॥२४॥ वाचनाप्रच्छनाऽनुप्रेक्षाऽऽम्नायधर्मोपदेशाः ॥२५॥ बाह्याभ्यन्तरोपध्योः ॥२६॥ उत्तमसंहननस्यैकाग्रचिन्तानिरोधो ध्यानम् ॥२७॥ आमुहूर्त्तात् ॥२८॥ आर्त्तरौद्रधर्म्मशुक्लानि ॥२६॥ परे मोक्षहेतू ॥३०॥ आर्त्तममनोज्ञानां सम्प्रयोगे तद्विप्रयोगाय स्मृति समन्वाहारः ॥३१॥ वेदनायाश्च ॥३२॥ विपरीत मनोज्ञानाम् ॥३३॥ निदानं च (कामोपहतचित्तानां पुनः) ॥३४॥ तदविरतदेशविरतप्रमत्तसंयतानाम् ॥३५॥ हिंसाऽनृतस्तेयविषयसंरक्षणेभ्यो रौद्रमविरतदशविरतयोः ॥३६॥ आज्ञाऽपायविपाकसंस्थानविचयया धर्ममप्रमत्तसंयतस्य ॥३७॥ उपशान्तक्षीणकषाययोश्च ॥३८॥ शुक्ले चाद्ये पुर्वविदः ॥३६॥ परे केवलितः ॥४०॥ पृथक्त्वैकत्ववितर्कसूक्ष्मक्रियाप्रति

पातिव्युपरतक्रियाऽनिवृत्तीनि ॥४१॥ तत् त्र्येककाययोगाऽयोगानाम् ॥४२॥ एकाश्रये सवितर्के पूर्वे ॥ ४३ ॥ अविचारं द्वितीयम् ॥४४॥ वितर्कः श्रुतम् ॥४५॥ विचारोऽर्थव्यञ्जनयोर्योगसंक्रान्तिः ॥४६॥ सम्यग्दृष्टिश्रावकविरतानन्तवियोजकदर्शनमोहक्षपकोपशमकोपशान्तमोहक्षपकक्षीणमोहजिनाः क्रमशोऽसङ्ख्येयगुणनिर्जराः ॥ ४७ ॥ पुलाकवकुशकुशीलनिर्ग्रन्थस्नातका निर्ग्रन्थाः ॥४८॥ संयमश्रुतप्रतिसेवनातीर्थलिङ्गलेश्योपपातस्थानविकल्पतः साध्याः ॥४९॥ इति नवमोऽध्यायः ॥

॥ अथ दशमोऽध्यायः ॥

मोहक्षयाज्ज्ञानदर्शनावरणान्तरायक्षयाच्च केवलम् ॥ १ ॥ वन्धहेत्वभावनिर्जराभ्याम् ॥२॥ कृत्स्नकर्मक्षयो मोक्षः ॥३॥ औपशमिकादिभव्यत्वाभावाच्चान्यत्र केवलसम्यक्त्वज्ञानदर्शनसिद्धत्वेभ्यः ॥ ४ ॥ तदनन्तरमूर्ध्वं गच्छत्या लोकान्तात् ॥५॥ पूर्वप्रयोगादसङ्गत्वाद्वन्धच्छेदात्तथागतिपरिणामाच्च तद्गतिः ॥६॥ क्षेत्रकालगतिलिङ्गतीर्थचारित्रप्रत्येकबुद्धबोधितज्ञानावगाहनान्तरसङ्ख्याल्पबहुत्वतः साध्याः ॥ ७ ॥ इति दशमोऽध्यायः ॥

॥ इति तत्त्वार्थसूत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ भक्तामरस्तोत्रम् ॥

भक्तामरप्रणतमौलिमणिप्रभाणा-
मुद्द्योतकं दलितपापतमोवितानम् ।
सम्यक् प्रणम्य जिनपादयुगं युगादा-
वालम्बनं भवजले पततां जनानाम् ॥ १

यः संस्तुतः सकलवांमयतत्त्वबोधा-
दुद्भूतबुद्धिपटुभिः सुरलोकनाथैः ।
स्तोत्रैर्जगत्त्रितयचित्तहरैरुदारै-
स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम् ॥ २ ॥

बुद्ध्या विनाऽपि विबुधार्चितपादपीठ !
स्तोतुं समुद्यतमतिर्विगतत्रपोऽहम् ।
बालं विहाय जलसंस्थितमिन्दुबिम्ब
मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम् ॥ ३ ॥

वक्तुं गुणान् गुणसमुद्र ! शशाङ्ककान्तान्,
कस्ते क्षमः सुरगुरुःप्रतिमोऽपि बुद्ध्या ।
कल्पांतकालपवनोद्धतनक्रचक्रं,
को वा तरीतुमलमम्बुनिधिं भुजाभ्याम् ॥ ४ ॥

सोऽहं तथापि तव भक्तिवशान्मुनीश,
कर्तुं स्तवं विगतशक्तिरपि प्रवृत्तः ।
प्रीत्यात्मवीर्यमविचार्य मृगो मृगेन्द्रं,
नाभ्येति किं निजशिशोः परिपालनार्थम् ॥ ५ ॥

अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम,
त्वद्भक्तिरेव मुखरीकुरुते बलान्माम् ।
यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति,
तच्चारुचूतकलिकानिकरैकहेतुः ॥ ६ ॥

त्वत्संस्तवेन भवसन्ततिसन्निबद्धं,
पापं क्षणात्क्षयमुपैति शरीरभाजाम् ।
आक्रान्तलोकमलिनीलमशेषमाशु,
सूर्यांशुभिन्नमिव शार्वरमन्धकारम् ॥ ७ ॥

मत्वेति नाथ तव संस्तवनं मयेद-
मारभ्यते तनुधियाऽपि तव प्रभावात् ।
चेतो हरिष्यति सतां नलिनीदलेषु,
मुक्ताफलद्युतिमुपैति ननूदबिन्दुः ॥ ८ ॥

आस्तां तव स्तवनमस्तसमस्तदोषं,
त्वत्संकथाऽपि जगतां दुरितानि हन्ति ।
दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रभैव,
पद्माकरेषु जलजानि विकाशभाञ्जि ॥ ९ ॥

नात्यद्भुतं भुवनभूषण ! भूतनाथ !,
भूतैर्गुणैर्भुवि भवन्तमभिष्टुवन्तः ।
तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा,
भूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति ॥१०॥

दृष्ट्वा भवन्तमनिमेषविलोकनीयं,
नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षुः ।
पीत्वा पयः शशिकरद्युतिदुग्धसिन्धोः
क्षारं जलं जलनिधेरशितुं क इच्छेत् ॥११॥

यैः शान्तरागरुचिभिः परमाणुभिस्त्वं,
निर्मापितस्त्रिभुवनैकललामभूत ! ।
तावन्त एव खलु तेऽप्यणवः पृथिव्यां,
यत्ते समानमपरं न हि रूपमस्ती ॥१२॥

वक्त्रं क्व ते सुरनरोरगनेत्रहारि,
निःशेषनिर्जितजगत्त्रितयोपमानम् ।
बिम्बं कलङ्कमलिनं क्व निशाकरस्य,
यद्वासरे भवति पाण्डुपलाशकल्पम् ॥१३॥

सम्पूर्णमण्डलशशाङ्ककलाकलाप !

शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव लंघयन्ति ।
ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वर नाथमेकं,
कस्तान्निवारयति सञ्चरतो यथेष्टम् ॥१४॥

चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशाङ्गनाभि-
र्नीतं मनागपि मनो न विकारमार्गम् ।
कल्पान्तकालमरुत्ता चलिताचलेन,
किं मन्दराद्रिशिखरं चलितं कदाचित् ॥१५॥

निर्धूमवर्तिरपवर्जिततैलपूर:,
कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटीकरोषि ।
गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानां,
दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ ! जगत्प्रकाश: ॥१६॥

नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्य:,
स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगन्ति ।
नाम्भोधरोदरनिरुद्धमहाप्रभाव:,
सूर्यातिशायिमहिमाऽसि मुनीन्द्र ! लोके ॥१७॥

नित्योदयं दलितमोहमहान्धकारं,
गम्यं न राहुवदनस्य न वारिदानाम् ।
विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्पकान्ति,
विद्योतयज्जगदपूर्वशशाङ्कबिम्बम् ॥१८॥

किं शर्वरीषु शशिनाऽह्नि विवस्वता वा,
युष्मन्मुखेन्दुदलितेषु तमस्सु नाथ ! ।
निष्पन्नशालिवनशालिनि जीवलोके,
कार्यं कियज्जलधरैर्जलभारनम्रै: ॥१९॥

ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं,
नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु ।

तेज.स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं,
नैवं तु काचशकले किरणाकुलेऽपि ॥२०॥

मन्ये वरं हरिहरादय एव दृष्टा,
दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति।
किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्य:,
कश्चिन्मनो हरति नाथ भवान्तरेऽपि ॥२१॥

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान् ;
नान्यासुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता।
सर्वा दिशो दधति-भानि-सहस्ररश्मि,
प्राच्येव दग्जनयमि स्फुरदंशुजालम् ॥२२॥

त्वामामनन्ति मुनयः परमं पुमांस-
मादित्यवर्णममलं तमसः पुरस्तात्।
त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्युं,
नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनीन्द्र ! पन्थाः ॥२३॥

त्वामव्ययं विभुमचिन्त्यमसंख्यमाद्यं,
ब्रह्माणमीश्वरमनन्तमनंगकेतुम्।
योगीश्वरं विदितयोगमनेकमेकं,
ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदन्ति सन्तः ॥२४॥

बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चितबुद्धिबोधात् ,
त्वं शङ्करोऽसि भुवनत्रयशङ्करत्वात्।
धातासि धीर ! चित्रमार्गविधेर्विधानाद्,
व्यक्तं त्वमेव भगवन् ! पुरुषोत्तमोऽसि ॥२५॥

तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्त्तिहराय नाथ,
तुभ्यं नमः क्षितितलामलभूषणाय।
तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय,
तुभ्यं नमो जिन ! भवोदधिशोषणाय ॥२६॥

को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषै-
स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश ! ।
दोषैरुपात्तविबुधाश्रयजातगर्वैः
स्वप्नांतरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि ॥२७॥

उच्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयूख-
माभाति रूपममलं भवतो नितान्तम् ।
स्पष्टोल्लसत्किरणमस्ततमोवितानं,
बिम्बं रवेरिव पयोधरपार्श्ववर्ति ॥२८॥

सिंहासने मणिमयूखशिखाविचित्रे,
विभ्राजते तव वपुः कयकावदातम् ।
बिम्बं वियद्विलसदंशुलतावितानं,
तुङ्गोदयाद्रिशिरसीव सहस्ररश्मेः ॥२९॥

कुन्दावदातचलचामरचारुशोभं,
विभ्राजते तव वपुः कनधौतकान्तम् ।
उद्यच्छशाङ्कशुचिनिर्झरवारिधार-
मुच्चैस्तट सुरगिरेरिव शातकौम्भम् ॥३०॥

छत्रत्रयं तव विभाति शशाङ्ककान्त-
मुच्चैः स्थितं स्थगितभानुकरप्रतापम् ।
मुक्ताफलप्रकरजालविवृद्धशोभ,
प्रख्यापयत्त्रिजगतः परमेश्वरत्वम् ॥३१॥

गम्भीरताररवपूरितदिग्विभाग-
स्त्रैलोक्यलोकशुभसङ्गमभूतिदक्ष ।
सद्धर्मराजजयघोषणघोषकः सन्,
खे दुन्दुभिर्ध्वनति ते यशसः प्रवादी ॥३२॥

मन्दारसुन्दरनमेरुसुपारिजात-
सन्तानकादिकुसुमोत्करवृष्टिरुद्धा ।
गन्धोदबिन्दुशुभमन्दमरुत्प्रपाता;
दिव्या दिवः पतित ते वचसां ततिर्वा ॥३३॥

शुभ्रप्रभावलयभूरिविभा विभोस्ते,
लोकत्रयद्युतिमतां द्युतिमाक्षिपन्ती ।
प्रोद्यद्दिवाकरनिरन्तरभूरिसंख्या,
दीप्तिर्जयत्यपि निशामपि सोमसौम्याम् ॥३४॥

स्वर्गापवर्गगमसार्गविमार्गणेष्ट-
सद्धर्मतत्त्वकथनैकपटुस्त्रिलोक्याम् ।
दिव्यध्वनिर्भवति ते विशदार्थसर्व-
भाषास्वभावपरिणामगुणैः प्रयोज्यः ॥३५॥

उन्निद्रहेमनवपङ्कजपुञ्जकान्ति-
पर्युल्लसन्नखमयूखशिखाऽभिरामौ ।
पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र ! धत्तः
पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति ॥३६॥

इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनेन्द्र !,
धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य ।
यादृक् प्रभा दिनकृतप्रहतान्धकारा,
तादृक् कुतो ग्रहगणस्य विकाशिनोऽपि ॥३७॥

श्च्योतन्मदाविलविलोलकपोलमूल-
मत्तभ्रमद्भ्रमरनादविवृद्धकोपम् ।
ऐरावताभमिभमुद्धतमापतन्तं,
दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रितानाम् ॥३८॥

भिन्नेभकुम्भगलदुज्ज्वलशोणिताक्त-
मुक्ताफलप्रकरभूषितभूमिभागः ।
द्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोऽपि,
नाक्रामति क्रमयुगाचलसंश्रितं ते ॥३९॥

कल्पान्तकालपवनोद्धतवह्निकल्पं,
दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्स्फुलिङ्गम् ।
विश्वं जिघत्सुमिव सन्मुखमापतन्तं,
त्वन्नामकीर्तनजलं शमयत्यशेषम् ॥४०॥

रक्तेक्षणं समदकोकिलकण्ठनीलं,
क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापतन्तम् ।
आक्रामति क्रमयुगेन निरस्तशङ्क-
स्त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुंसः ॥४१॥

वल्गत्तुरंगगजगर्जितभीमनाद-
माजौ बलं बलवतामपि भूपतीनाम् ।
उद्यद्दिवाकरमयूखशिखापविद्धं,
त्वत्कीर्तनात्तम इवाशु भिदामुपैति ॥४२॥

कुन्ताग्रभिन्नगजशोणितवारिवाह-
वेगावतारतरणातुरयोधभीमे ।
युद्धे जयं विजितदुर्जयजेयपक्षा-
स्त्वत्पादपङ्कजवनाश्रयिणो लभन्ते ॥४३॥

अम्भोनिधौ क्षुभितभीषणनक्रचक्र-
पाठीनपीठभयदोल्बणवाडवाग्नौ ।
रङ्गत्तरङ्गशिखरस्थितयानपात्रा-
स्त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद् व्रजन्ति ॥४४॥

उद्भुतभीषणजलोदरभारभुग्नाः
शोच्यां दशामुपगताश्च्युतजीविताशाः ।
त्वत्पादपङ्कजरजोऽमृतदिग्धदेहा,
मर्त्या भवन्ति मकरध्वजतुल्यरूपाः ॥४५॥

आपादकण्ठमुरुशृखलवेष्टिताङ्गा,
गाढंबृहन्निगडकोटिनिघृष्टजंघाः ।
त्वन्नाममंत्रमनिशं मनुजा स्मरन्तः,
सद्यः स्वयं विगतबंधभया भवन्ति ॥४६॥

मत्तद्विपेन्द्रमृगराजदवानलाहि-
संग्रामवारिधिमहोदरबन्धनोत्थम्
तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव
यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीत ॥४७॥

स्तोत्रसृजं तव जिनेन्द्र ! गुणैर्निबद्धां
भक्तया मया रुचिरवर्णविचित्रपुष्पाम्
धत्ते जनो य इह कण्ठगतामजसृं,
तं मानतुङ्गमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥४८॥

॥ इति मानतुङ्गाचार्यविरचितं स्तोत्रम् ॥

॥ श्रीसिद्धसेनदिवाकरप्रणीतम् ॥

॥ श्रीकल्याणमन्दिरस्तोत्रम् ॥

(वसन्तनिलका वृतम्)

कल्याणमन्दिरमुदारमवद्यमेदि,
भीताभयप्रदमनिन्दितमंघ्रिपद्मम् ।
संसारसागरनिमज्जदशेषजन्तु-
पोतायमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य ॥१॥

यस्य स्वयं सुरगुरुर्गरिमाम्बुराशेः,
स्तोत्रं सुविस्तृतमतिर्न विभुर्विधातुम् ।
तीर्थेश्वरस्य कमठस्मयधूमकेतो-
स्तस्याहमेष किल संस्तवनं करिष्ये ॥२॥

सामान्यतोऽपि तव वर्णयितुं स्वरूप-
मस्मादृशाः कथमधीश ! भवंत्यधीशाः ।
धृष्टोऽपि कौशिकशिशुर्यदि वा दिवान्धो,
रूपं प्ररूपयति किं किल धर्मरश्मेः ॥३॥

मोहक्षयादनुभवन्नपि नाथ ! मर्त्यो,
नूनं गुणान् गणयितुं न तव क्षमेत ।
कल्पान्तवान्तपयसः प्रकटोऽपि यस्मान्-
मीयेत केन जलधेर्ननु रत्नराशिः ॥४॥

अभ्युद्यतोऽस्मि तव नाथ ! जडाशयोऽपि,
कर्तुं स्तवं लसदसंख्यगुणालयस्य ।
बालोऽपि किं न निजबाहुयुगं वितत्य,
विस्तीर्णतां कथयति स्वधियाऽम्बुराशेः ? ॥५॥

ये योगिनामपि न यान्ति गुणान्तवेश,
वक्तुं कथं भवति तेषु ममावकाशः ?
जाता तदेवमसमीक्षितकारितेयं,
जल्पन्ति वा निजगिरा ननु पक्षिणोऽपि ॥६॥

आस्तामचिन्त्यमहिमा जिन ! संस्तवस्ते,
नामापि पाति भवतो भवतो जगन्ति ।
तीव्रातपोपहतपान्थजनान्निदाघे,
प्रीणाति पद्मसरसः सरसोऽनिलोऽपि ॥७॥

हृद्वर्त्तिनि त्वयि विभो ! शिथिलीभवन्ति,
जन्तोः क्षणेन निविडा अपि कर्मबन्धाः ।
सद्यो भुजङ्गमया इव मध्यभाग-
मभ्यागते वनशिखण्डिनि चन्दनस्य ॥८॥

मुच्यन्त एव मनुजाः सहसा जिनेन्द्र,
रौद्रैरुपद्रवशतैस्त्वयि वीक्षितेऽपि ।
गोस्वामिनि स्फुरिततेजसि दृष्टमात्रे,
चोरैरिवाशु पशवः प्रपलायमानैः ॥९॥

त्वं तारको जिन ! कथं ? भविनां त एव,
त्वामुद्वहन्ति हृदयेन यदुत्तरन्त ।
यद्वा दृतिस्तरति यज्जलमेष नून-
मन्तर्गतस्य मरुतः स किलानुभावः ॥१०॥

यस्मिन् हरप्रभृतयोऽपि हतप्रभावाः,
सोऽपि त्वया रतिपतिः क्षपितः क्षणेन ।
विध्यापिता हुतभुजः पयसाथ येन,
पीतं न किं तदपि दुर्धरवाडवेन ? ॥११॥

स्वामिन्ननल्पगरिमाणमपि प्रपन्ना-
स्त्वां जन्तवः कथमहो हृदये दधानाः ।
जन्मोदधिं लघु तरन्त्यतिलाघवेन,
चिन्त्यो न हन्त महतां यदि वा प्रभावः ॥१२॥

क्रोधस्त्वया यदि विभो ! प्रथमं निरस्तो,
ध्वस्तास्तदा बत कथं किल कर्मचौराः ? ।
प्लोषत्यमुत्र यदि वा शिशिराऽपि लोके,
नीलद्रुमाणि विपिनानि न किं हिमानी ॥१३॥

त्वां योगिनो जिन ! सदा परमात्मरूप-
मन्वेषयन्ति हृदयाम्बुजकोशदेशे ।
पूतस्य निर्मलरुचेर्यदि वा किमन्य-
दक्षस्य सम्भवि पदं ननु कर्णिकायाः ॥१४॥

ध्यानाज्जिनेश ! भवतो भविनः क्षणेन,
देहं विहाय परमात्मदशां व्रजन्ति ।
तीव्रानलादुपलभावमपास्य लोके,
चामीकरत्वमचिरादिव धातुभेदाः ॥१५॥

अन्तः सदैव जिन ! यस्य विभाव्यसे त्वं,
भव्यैः कथं तदपि नाशयसे शरीरम् ।
एतत्स्वरूपमथ मध्यविवर्तिनो हि,
यद्विग्रहं प्रशमयन्ति महानुभावाः ॥१६॥

आत्मा मनीषिभिरयं त्वदभेदबुद्धया
ध्यातो जिनेन्द्र ! भवतीह भवत्प्रभावः ।
पानीयमप्यमृतमित्यनुचिन्त्यमानं,
किं नाम नो विषविकारमपाकरोति ॥१७॥

त्वामेव वीततमसं परवादिनोऽपि,
नूनं विभो ! हरिहरादिधिया प्रपन्नाः ।
किं काचकामलिभिरीश ! सितोऽपि शंखो,
नो गृह्यते विविधवर्णविपर्ययेण ॥१८॥

धर्मोपदेशसमये सविधानुभावा-
दास्तां जनो भवति ते तरुरप्यशोकः ।
अभ्युद्गते दिनपतौ समहीरुहोऽपि,
किं वा ! विबोधमुपयाति न जीवलोकः ॥१९॥

चित्रं विभो ! कथमवाङ्मुखवृन्तमेव,
विष्वक् पतत्यविरला सुरपुष्पवृष्टिः ? ।
त्वद्गोचरे सुमनसां यदि वा मुनीश !,
गच्छन्ति नूनमध एव हि बन्धनानि ॥२०॥

स्थाने गंभीरहृदयोदधिसंभवायाः,
पीयूषतां तव गिरः समुदीरयन्ति ।
पीत्वा यतः परमसंमदसङ्गभाजो,
भव्या व्रजन्ति तरसाऽप्यजरामरत्वम् ॥२१॥

स्वामिन् ! सुदूरमवनम्य समुत्पतन्तो,
मन्ये वदन्ति शुचयः सुरचामरौघाः ।
येऽस्मै नतिं विदधते मुनिपुङ्गवाय,
ते नूनमूर्ध्वगतयः खलु शुद्धभावाः ॥२२॥

श्यामं गभीरगिरमुज्ज्वलहेमरत्न-
सिंहासनस्थमिह भव्यशिखण्डिनस्त्वाम् ।
आलोकयन्ति रभसेन नदन्तमुच्चै-
श्चामीकराद्रिशिरसीव नवाम्बुवाहम् ॥२३॥

उद्गच्छता तव शितिद्युतिमण्डलेन,
लुप्तच्छदच्छविरशोकतरुर्बभूव ।
सान्निध्यतोऽपि यदि वा तव वीतराग !,
नीरागतां व्रजति को न सचेतनोऽपि ॥२४॥

भो भो प्रमादमवधूय भजध्वमेन-
मागत्य निर्वृतिपुरीं प्रति सार्थवाहम् ।
एतन्निवेदयति देव ! जगत्त्रयाय,
मन्ये नदन्नभिनभः सुरदुन्दुभिस्ते ॥२५॥

उद्द्योतितेषु भवता भुवनेषु नाथ !,
तारान्वितो विधुरयं विहताधिकारः ।
मुक्ताकलापकलितोच्छ्वसितातपत्र-
व्याजात्त्रिधा धृततनुर्ध्रुवमभ्युपेतः ॥२६॥

स्वेन प्रपूरितजगत्त्रयपिण्डितेन,
कान्तिप्रतापयशसामिव संचयेन ।
माणिक्यहेमरजतप्रविनिर्मितेन,
सालत्रयेण भगवन्नभितो विभासि ॥२७॥

दिव्यस्रजो जिन ! नमत्त्रिदशाधिपाना-
मुत्सृज्य रत्नरचितानपि मौलिबन्धान् ।
पादौ श्रयन्ति भवतो यदि वा परत्र,
त्वत्सङ्गमे सुमनसो न रमन्त एव ॥२८॥

त्वं नाथ ! जन्मजलधेर्विपराङ्मुखोऽपि,
यत्तारयस्यसुमतो निजपृष्ठलग्नान् ।
युक्तं हि पार्थिवनिपस्य सतस्तवैव,
चित्रं विभो ! यदसि कर्मविपाकशून्यः ॥२९॥

विश्वेश्वरोऽपि जनपालक ! दुर्गतस्त्वं,
किंवाक्षरप्रकृतिरप्यलिपिस्त्वमीश ! ।
अज्ञानवत्यपि सदैव कथंचिदेव
ज्ञानं त्वयि स्फुरति विश्वविकाशहेतुः ॥३०॥

प्राग्भारसंभृतनभांसि रजांसि रोष,
दुत्थापितानि कमठेन शठेन यानि ।
छायापि तैस्तव न नाथ ! हता हताशो,
ग्रस्तस्त्वमीभिरयमेव परं दुरात्मा ॥३१॥

यद्गर्जदूर्जितघनौघमदभ्रभीमं,
भ्रश्यत्तडिन्मुसलमांसलघोरधारम् ।
दैत्येन मुक्तमथ दुस्तरवारि दध्रे,
तेनैव तस्य जिन ! दुस्तरवारिकृत्यम् ॥३२॥

ध्वस्तोर्ध्वकेशविकृताकृतिमर्त्यमुण्ड-
प्रालम्बभृद्भयदवक्त्रविनिर्यदग्निः ।
प्रेतव्रजः प्रतिभवन्तमपीरितो यः,
सोऽस्याऽभवत्प्रतिभवो भवदुःखहेतुः ॥३३॥

धन्यास्त एव भुवनाधिप ! ये त्रिसन्ध्य-
माराधयन्ति विधिवद्विधुतान्यकृत्याः ।
भक्त्योल्लसत्पुलकपक्ष्मलदेहदेशाः,
पादद्वयं तव विभो ! भुवि जन्मभाजः ॥३४॥

अस्मिन्नपारभववारिनिधौ मुनीश !,
मन्ये न मे श्रवणगोचरतां गतोऽसि ।
आकर्णिते तु तव गोत्रपवित्रमन्त्रे,
किं वा विपद्विषधरी सविधं समेति ॥३५॥

जन्मान्तरेऽपि तव पादयुगं न देव !,
मन्ये मया महितमीहितदानदक्षम् ।
तेनेह जन्मनि मुनीश ! पराभवानां,
जातो निकेतनमहं मथिताशयानाम् ॥३६॥

नूनं न मोहतिमिरावृतलोचनेन,
पूर्वं विभो ! सकृदपि प्रविलोकितोऽसि ।
मर्माविधो विधुरयन्ति हि मामनर्थाः,
प्रोद्यत्प्रबन्धगतयः कथमन्यथैते ? ॥३७॥

आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोऽपि,
नूनं न चेतसि मया विधृतोऽसि भक्त्या ।
जातोऽस्मि तेन जनबान्धव ! दुःखपात्रं,
यस्मात्क्रियाः प्रतिफलन्ति न भावशून्याः ॥३८॥

त्वं नाथ ! दुःखिजनवत्सल ! हे शरण्य !,
कारुण्यपुण्यवसते ! वशिनां वरेण्य ! ।
भक्त्या न ते मयि महेश ! दयां विधाय,
दुःखांकुरोद्दलनतत्परतां विधेहि ॥३९॥

निःसंख्यसारशरणं शरणं शरण्य-
मासाद्य सादितरिपुप्रथितापदातम् ।
त्वत्पादपङ्कजमपि प्रणिधानवन्ध्यो,
वध्योऽस्मि चेद् भुवनपावन ! हा हतोऽस्मि ॥४०॥

देवेन्द्रवन्द्य ! विदिताखिलवस्तुसार !,
संसारतारक ! विभो ! भुवनाधिनाथ ! ।
त्रायस्व देव ! करुणाह्रद ! मां पुनीहि,
सीदन्तमद्य भयदव्यसनाम्बुराशेः ॥४१॥

यद्यस्ति नाथ ! भवदंघ्रिसरोरुहाणां,
भक्तेः फलं किमपि सन्ततिसंचितायाः ।
तन्मे त्वदेकशरणस्य शरण्य ! भूयाः,
स्वामी त्वमेव भुवनेऽत्र भवान्तरेऽपि ॥४२॥

इत्थं समाहितधियो विधिवज्जिनेन्द्र,
सान्द्रोल्लसत्पुलककंचुकिताङ्गभागाः ।
त्वद्बिम्बनिर्मलमुखाम्बुजबद्धलक्ष्या,
ये संस्तवं तव विभो ! रचयंति भव्याः ॥४३॥

जननयनकुमुदचन्द्र-प्रभास्वराः स्वर्गसंपदो भुक्त्वा ।
ते विगलितमलनिचया, अचिरान्मोक्षं प्रपद्यन्ते ॥४४॥

॥ श्रीरत्नाकरपंचविंशतिः ॥

[उपजातिवृत्तम्]

श्रेयः श्रियां मंगलकेलिसद्म !, नरेन्द्रदेवेन्द्रनतांघ्रिपद्म ! ॥
सर्वज्ञ ! सर्वातिशयप्रधान !, चिरञ्जयज्ञानकलानिधान ! ॥१॥

जगत्त्रयाधार ! कृपावतार !, दुर्वारसंसारविकारवैद्य ।
श्रीवीतराग ! त्वयि मुग्धभावा द्विज्ञप्रभो विज्ञपयामि किंचित् ॥२॥

किं वाललीलाकलितो न वालः, पित्रोः पुरो जल्पति निर्विकल्पः ॥
तथा यथार्थं कथयामि नाथ !, निजाशयं सानुशयस्तवाग्रे ॥३॥

दत्तं न दानं परिशीलितं च, न शालिशीलं च तयोऽभितप्तम् ॥
शुभो न भावोऽप्यभवद् भवेऽस्मिन्, विभो मया भ्रांतमहो मुधैव ॥४॥

दग्धोऽग्निना क्रोधमयेन दष्टो, दुष्टेन लोभाख्यमहोरगेण ॥
ग्रस्तोऽभिमानाजगरेण मायाजालेन बद्धोऽस्मि कथं भजे त्वाम् ॥५॥

कृतं मयाऽमुत्र हितं न चेह, लोकेऽपि लोकेश ! सुखं न मेऽभूत ॥
अस्मादृशां केवलमेव जन्म, जिनेश ! जज्ञे भवपूरणाय ॥६॥

मन्ये मनो यन्न मनोज्ञवृत्त ! त्वदास्यपीयूषमयूखलाभात् ॥
द्रुतं महानन्दरसं कठोर-मस्मादृशां देव तदश्मतोऽपि ॥७॥

त्वत्तः सुदुःपापमिदं मयाऽऽप्तं, रत्नत्रयं भूरिभवभ्रमेण ॥
प्रमादनिद्रावशतो गतं तत् , कस्याऽग्रतो नायक ! पूत्करोमि ॥८॥

वैराग्यरङ्गः परवञ्चनाय, धर्मोपदेशो जनरञ्जनाय ॥
वादाय विद्याऽध्ययनं च मेऽभूत् , कियद् ब्रुवे हास्यकरं स्वमीश ॥९॥

परापवादेनमुखं सदोषं, नेत्रं परस्त्रीजनवीक्षणेन ॥
चेतः परापायविचिन्तनेन, कृतं भविष्यामि कथं विभोऽहं ॥१०॥
विडम्बितं यत्स्मरघम्मरार्ति-दशावशात्स्वं विषयांधलेन ॥
प्रकाशितं तद्भवता ह्रियैव, सर्वज्ञ । सर्वं स्वयमेव वेत्सि ॥११॥

ध्वस्तोऽन्यमन्त्रैः परमेष्ठिमन्त्रः, कुशास्त्रवाक्यैर्निहतागमोक्तिः ॥
कर्तुं वृथाकर्मकुदेवसङ्गा दवांछि हे नाथ । मतिभ्रमो मे ॥१२॥
विमुच्य दृग्लक्ष्यगतं भवन्तं, ध्याता मया मूढधिया हृदन्तः ।
कटाक्षवक्षोजगभीरनाभी-कटीतटीयाः सुदृशां विलासाः ॥१३॥

लोलेक्षणावक्त्रनिरीक्षणेन, यो मानसे रागलवो विलग्नः ।
न शुद्धसिद्धान्तपयोधिमध्ये, धौतोप्यगात्तारक कारणं किं ॥१४॥
अङ्गं न चङ्गं न गणो गुणानां, न निर्मलः कोऽपि कलाविलासः ।
स्फुरत्प्रभा न प्रभुता च कापि, तथाप्यहंकारकदर्थितोऽहं ॥१५॥

आयुर्गलत्याशु न पापबुद्धि-र्गतं वयो नो विषयाभिलाषः ।
यत्नश्च भैषज्यविधौ न धर्मे, स्वामिन्महामोहविडम्बना मे ॥१६॥
नात्मा न पुण्यं न भवो न पापं, मया विटानां कटुगीरपीयं ।
अधारि कर्णेत्वयि केवलार्के परिस्फुटे सत्यपि देवधिग्माम् ॥१७॥

न देवपूजा न च पात्रपूजा न श्राद्धधर्मश्च न साधुधर्मः ।
लब्ध्वापि मानुष्यमिदं समस्तं, कृतं मयाऽरण्यविलापतुल्यं ॥१८॥
चक्रे मया सत्स्वपि कामधेनुकल्पद्रुमचिन्तामणिषु स्पृहार्तिः ।
न जैनधर्मे स्फुटशर्मदेऽपि, जिनेश मे पश्य विमूढभावं ॥१९॥
सद्भोगलीला न च रोगकीला, धनागमो नो निधनागमश्च ।
दारा न कारा नरकस्य चित्ते, व्यचिन्ति नित्यं मयकाऽधमेन ॥२०॥
स्थितं साधोर्हृदि साधुवृत्तात्, परोपकारान्न यशोऽर्जितं च ।
कृतं न तीर्थोद्धरणादिकृत्यं, मया मुधा हारितमेव जन्म ॥२१॥

वैराग्यरङ्गो न गुरूदितेपु, न दुर्जनानां वचनेषु शान्तिः ।
नाध्यात्मलेशो मम कोऽपि देव, तार्यः कथङ्कारमयम्भवाब्धिः ॥२२

पूर्वे भवेऽकारि मया न पुण्य-मागाभिजन्मन्यपि नो करिष्ये ।
यदीदृशोऽहं मम तेन नष्टा, भूतोद्भवद्भाविभवत्रयीश ! ॥२३॥

किंवा मुधाऽहं वहुधा सुधाभुक्, पूज्य त्वदग्रे चरितं स्वकीयं ।
जल्पामि यस्मात् त्रिजगत्स्वरूप, निरूपकस्त्वं कियदेतदत्र ॥२४॥

शार्दूल—दीनोद्धारधुरन्धरस्त्वदपरो नास्ते मदन्यः कृपापात्रं नात्र जने जिनेश्वर ! तथाऽप्येतां न याचे श्रियम् ।
किं त्वर्हन्निदमेव केवलमहो सद्वोधिरत्नं शिवं ।
श्रीरत्नाकर मंगलैकनिलय ! श्रेयस्करं प्रार्थये ॥२५॥

॥ श्रीअमितगतिसूरिविरचितप्रार्थनापञ्चविंशतिः ॥

[उपजातिवृत्तम्]

सत्त्वेषु मैत्री गुणिपु प्रमोदं, क्लिष्टेपु जीवेपु कृपापरत्वम् ।
माध्यस्थभावं विपरीतवृत्तौ, सदा ममात्मा विदधातु देव । ॥१॥

शरीरतः कर्तुमनन्तशक्तिं, विभिन्नमात्मानमपास्तदोषम् ।
जिनेन्द्र ! कोषादिव खड्गयष्टिं, तव प्रसादेन ममास्तु शक्तिः ॥२॥

दुःखे सुखे वैरिणि बन्धुवर्गे, योगे वियोगे भवने वने वा ।
निराकृताऽशेपममत्वबुद्धेः, समं मनो मेऽस्तु सदापि नाथ ! ॥३॥

यः स्मर्यते सर्वमुनीन्द्रवृन्दैः, यः स्तूयते सर्वनरामरेन्द्रैः ।
यो गीयते वेदपुराणशास्त्रैः स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ॥४॥

यो दर्शनज्ञानसुखस्वभावः, समस्तसंसारविकारबाह्य. ।
समाधिगम्यः परमात्मसंज्ञः, स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ॥५॥

निषूदते यो भवदुःखजालम्, निरीक्षते यो जगदन्तरालम्।
योऽन्तर्गतो योगिभिरीक्षणीयः, स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ॥६॥

विमुक्तिमार्गप्रतिपादको यो, यो जन्ममृत्युव्यसनाद् व्यतीतः।
त्रिलोकलोकी विकलोऽकलङ्कः,स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ॥७॥

क्रोडीकृताशेषशरीरिवर्गाः, रागादयो यस्य न सन्ति दोषाः।
निरिन्द्रियो ज्ञानमयोऽनपायः, स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ॥८॥

या व्यापको विश्वजनीनवृत्तिः, सिद्धो विबुद्धो धुतकर्मबन्धः।
ध्यातो धुनीते सकलं विकारं, स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ॥९॥

न स्पृश्यते कर्मकलङ्कदोषैः, यो ध्वान्तसंघैरिव तिग्मरश्मिः।
निरंजनं नित्यमनेकमेकं, तं देवमाप्त शरणं प्रपद्ये ॥१०॥

विभासते यत्र मरीचिमालिन्यविद्यमाने भुवनावभासि।
स्वात्मस्थितं बोधमयप्रकाशं, तं देवमाप्तं शरणं प्रपद्ये ॥११॥

विलोक्यमाने सति यत्र विश्वं, विलोक्यते स्पष्टमिदं विविक्तम्।
शुद्धं शिवं शान्तमनाद्यनन्तं, तं देवमाप्तं शरणं प्रपद्ये ॥१२॥

येन क्षता मन्मथमानमूर्च्छा-विषादनिद्राभयशोकचिन्ताः।
क्षय्योऽनलेनेव तरुप्रपञ्च-स्तं देवमाप्तं शरणं प्रपद्ये ॥१३॥

प्रतिक्रमण-[प्रभुसमीपे स्वात्मचिन्तनं]

विनिन्दनालोचनगर्हणैरहं, मनोवचःकायकषायनिर्मितम्
निहन्मि पापं भवदुःखकारणं, भिषग्विषं मन्त्रगुणैरिवाखिलम्।१४।

अतिक्रमं यं विमतेर्व्यतिक्रमं, जिनाऽतिचारं सुचरित्रकर्मणः।
व्यधामनाचारमपि प्रमादतः, प्रतिक्रमं तस्य करोमि शुद्धये ॥१५॥

न संस्तरोऽश्मा न तृणं न मेदिनी,विधानतो नो फलको विनिर्मितः।
यतो निरस्ताक्षकषायविद्विषः, सुधीभिरात्मैव सुनिर्मलो मतः।१६॥

न संस्तरो भद्र ! समाधिसाधनं, न लोकपूजा न च संघमेलनम् ।
यतस्ततोऽध्यात्मरतोभवाऽनिशं, विमुच्य सर्वामपिवाह्यवासनाम्१७

न सन्ति बाह्या मम केचनार्थाः, भवामि तेषां न कदाचनाहम् ।
इत्थं विनिश्चित्य विमुच्य बाह्यं, स्वस्थः सदा त्वंभव भद्र ! मुक्त्यै १८

आत्मानमात्मन्यविलोक्यमान स्त्वं दर्शनज्ञानमयो विशुद्धः ।
एकाग्रचितः खलु यत्र तत्र, स्थितोपि साधुर्लभते समाधिम् ॥१९॥

एकः सदा शाश्वतिको ममात्मा, विनिर्मलः साधिगमस्वभावः ।
बहिर्भवाः सन्त्यपरे समस्ताः न शाश्वताः कर्मभमाः स्वकीयाः॥२०॥

यस्यास्ति नैक्यं वपुषापि सार्धं, तस्यास्ति किं पुत्रकलत्रमित्रैः ।
पृथक्कृते चर्मणि रोमकूपाः, कुतो हि तिष्ठन्ति शरीरमध्ये ॥२१॥

संयोगतो दुःखमनेकभेदं, यतोऽश्नुते जन्म वने शरीरी ।
ततस्त्रिधासौ परिवर्जनीयो, यियासुनानिर्वृतिमात्मनीनाम् ॥२२॥

सर्वं निराकृत्य विकल्पजालं, संसारकान्तारनिपातहेतुम् ।
विविक्तमात्मानमवेक्ष्यमाणो, निलीयसे त्वं परमात्मतत्त्वे ॥२३॥

स्वयंकृतं कर्म यदात्मना पुरा फलं तदीयं लभते शुभाशुभम् ।
परेण दत्तं यदि लभ्यते स्फुटं, स्वयंकृतं कर्म निरर्थकं तदा ॥२४॥

विमुक्तिमार्गं प्रतिकूलवर्तिना, मया कषायाक्षवशेन दुर्धिया ।
चारित्रशुद्धेर्यदकारि लोपनं, तदस्तु मिथ्या मम दुष्कृतं प्रभो ॥२५॥

॥ श्रीचिन्तामणिपार्श्वनाथस्तोत्रम् ॥

[शार्दूलविक्रीडितवृत्तम्]

किं कर्पूरमयं सुधारसमयं किं चन्द्ररोचिर्मयं
किं लावण्यमयं महामणिमयं कारुण्यकेलीमयम् ॥

विश्वानन्दमयं महोदयमयं शोभामयं चिन्मयं
शुक्लध्यानमयं वपुर्जिनपतेर्भूयाद् भवालम्बनम् ॥१॥

पातालं कलयन् धरां धवलयन्नाकाशमापूरयन्
दिक्चक्रं क्रमयन् सुरासुरनरश्रेणिं च विस्मापयन् ॥
ब्रह्माण्ड सुखयन् जलानि जलधेः फेनच्छलालोयन्
श्रीचिन्तामणिपार्श्वसंभवयशोहंसश्चिरं राजते ॥२॥

पुण्यानां विपणिस्तमोदिनमणिः कामेभकुम्भे सृणि
र्मोक्षे निस्सरणिः सुरेन्द्रकरिणी ज्योति-प्रकाशारणिः ॥
दाने देवमणिर्नतोत्तमजनश्रेणिः कृपासारिणी
विश्वानन्दसुधाघृणिर्भवभिदे श्रीपार्श्वचिन्तामणिः ॥३॥

श्रीचिन्तामणिपार्श्वविश्वजनतासञ्जीवनस्त्वं मया
दृष्टस्तात ! तत श्रियः समभवन्नाशक्रमाश्चक्रिणः ॥
मुक्तिः क्रीडति हस्तयोर्बहुविधं सिद्धं मनोवाञ्छितं
दुर्दैवं दुरितं च दुर्दिनभयं कष्टं प्रणष्टं मम ॥४॥

यस्य प्रौढतमप्रतापतपनः प्रोद्दामधामा जग-
ज्जङ्घाल कलिकालकेलिदलनो मोहान्ध्यविध्वंसकः ॥
नित्योद्द्योतपदं समस्तकमलाकेलीगृहं राजते
स श्रीपार्श्वजिनो जने हितकृतौ चिन्तामणिः पातु माम् ॥ ५ ॥

विश्वव्यापितमो हिनस्ति तरणिर्बालोऽपि कल्पाङ्कुरो
दारिद्र्याणि गजावलीं हरिशिशुः काष्ठानि वह्नेः कणः ॥
पीयूषस्य लवोऽपि रोगनिवहं यद्वत्तथा ते विभो
मूर्तिः स्फूर्तिमती सती त्रिजगतीकष्टानि हर्तुं क्षमा ॥ ६ ॥

श्रीचिन्तामणिमन्त्रमोंकृतियुतं ह्रींकारसाराश्रितं
श्रीमर्हन्नमिऊणपाशकलितं त्रैलोक्यवश्यावहम् ।

द्वेधाभूतविषापहं विषहरं श्रेयःप्रभावाश्रयं
सोल्लासं वसुहाङ्कितं जिन! फुलिङ्गानन्ददं देहिनाम् ॥ ७ ॥

ह्रीं श्रींकारवरं नमोक्षरपरं ध्यायन्ति ये योगिनो
हृत्पद्मे विनिवेश्य पार्श्वमधिपं चिन्तामणीसंज्ञकम् ॥
भाले वामभुजे च नाभिकरयोर्भूयो भुजे दक्षिणे
पश्चादष्टदलेषु ते शिवपदं द्वित्रैर्भवैर्यान्त्यहो ॥ ८ ॥

स्रग्धरा- नो रोगा नैव शोका न कलहकलना नारिमारिप्रचारो
नैवाधिर्नासमाधिर्न च दरदुरिते दुष्टदारिद्रता नो ॥
नो शाकिन्यो ग्रहा नो न हरिकरिगणा व्यालवैतालजाला
जायन्ते पार्श्वचिन्तामणिनतिवशतः प्राणिनां भक्ति-
भाजाम् ॥ ९ ॥

शार्दूल-गीर्वाणद्रुमधेनुकुम्भमणयस्तस्याङ्गणे रङ्गिणो
देवा दानवमानवाः सविनयं तस्मै हितध्यायिनः ॥
लक्ष्मीस्तस्य वशाऽवशेव गुणिनां ब्रह्माण्डसंस्थायिनी
श्रीचिन्तामणिपार्श्वनाथमनिशं संस्तौति यो ध्यायति ।१०।

मालिनी-इति जिनपतिपार्श्वः पार्श्वपार्श्वाख्ययक्षः
प्रदलितदुरितौघः प्रीणितप्राणिसार्थः ।
त्रिभुवनजनवाञ्छादानचिन्तामणीकः
शिवपदतरुवीजं वोधिवीजं ददातु ॥११॥



॥ मेरी भावना ॥

जिसने राग द्वेष कामादिक जीते, सब जग जान लिया।
सब जीवों को मोक्ष मार्ग का, निःस्पृह हो उपदेश दिया॥
बुद्ध वीर जिन हरिहर ब्रह्मा, या उसको स्वाधीन कहो।
भक्तिभाव से प्रेरित हो, यह चित्त उसी में लीन रहो॥

विषयों की आशा नहिं जिनके, साम्यभाव धन रखते हैं।
निज पर के हित साधन में जो, निशदिन तत्पर रहते हैं॥
स्वार्थत्याग की कठिन तपस्या बिना खेद जो करते हैं।
ऐसे ज्ञानी साधु जगत के, दुःखसमूह को हरते हैं॥

रहे सदा सत्संग उन्हीं का ध्यान उन्हीं का नित्य रहे।
उन्हीं जैसी चर्या में यह, चित्त सदा अनुरक्त रहे॥

नहीं सताऊँ किसी जीव को, झूठ कभी नहिं कहा करूँ।
परधन वनिता पर न लुभाऊँ, संतोषामृत पिया करूँ॥

अहंकार का भाव न रक्खूं, नहीं किसी पर क्रोध करूँ।
देख दूसरों की बढ़ती को कभी न ईर्ष्याभाव धरूँ॥

रहे भावना ऐसी मेरी, सरल सत्य व्यवहार करूँ।
बने जहां तक इस जीवन में औरों का उपकार करूँ॥

मैत्रीभाव जगत में मेरा, सब जीवों से नित्य रहे।
दीन दुखी जीवों पर मेरे उर से करुण-स्रोत बहे॥

दुर्जन-क्रूर-कुमार्गरतों पर क्षोभ न मेरे को आवे।
साम्यभाव रक्खूं मैं उन पर ऐसी परिणति हो जावे॥

गुणी जनों को देख हृदय में मेरे प्रेम उमड़ आवे।
बने जहां तक उनकी सेवा करके यह मन सुख पावे॥

होऊँ नहीं कृतघ्न कभी मैं, द्रोह न मेरे उर आवे।
गुणग्रहण का भाव रहे नित, दृष्टि न दोषों पर जावे॥
कोई बुरा कहो या अच्छा, लक्ष्मी आवे या जावे।
लाखों वर्षों तक जीवूँ या मृत्यु आज ही आजावे॥
अथवा कोई कैसा ही भय या लालच देने आवे।
तो भी न्याय मार्ग से मेरा कभी न पद डिगने पावे॥
होकर सुख में मग्न न फूले दुख में कभी न घबरावे।
पर्वत नदी स्मशान भयानक अटवी से नहिं भय खावे॥
रहे अडोल अकम्प निरंतर, यह मन दृढ़तर बन जावे।
इष्टवियोग अनिष्टयोग में सहनशीलता दिखलावे॥
सुखी रहें सब जीवजगत के, कोई कभी न घबरावें।
वैर पाप अभिमान छांड जग नित्य नये मंगल गावे॥
घर घर चर्चा रहे धर्म की, दुष्कृत दुष्कर हो जावे।
ज्ञानचरित उन्नत कर अपना मनुजजन्मफल सब पावे॥
ईतिभीति व्यापे नहिं जग में, वृष्टि समय पर हुआ करे।
धर्मनिष्ठ होकर राजा भी न्याय प्रजा का किया करे॥
रोग मरी दुर्भिक्ष न फैले, प्रजा शान्ति से जिया करे।
परम अहिंसा धर्म जगत में फैल सर्व हित किया करे॥
फैले प्रेम परस्पर जग में, मोह दूर पर रहा करे।
अप्रिय, कटुक, कठोर शब्द नहिं, कोई मुख से कहा करे॥
बनकर सब "युग वीर" हृदय से देशोन्नतिरत रहा करें।
वस्तुस्वरूप विचार खुशी से सब दुख संकट सहा करें॥